

ালা (১৯৪৮) প্রার্থ প্রায়েশ করে করিছের স্থানিকর করেছের প্রায়েশ করেছের প্রায়েশ করেছের বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ কর্মান করেছের বিশ্ববিদ্যালয় করিছের বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয়

भागभीश काशान विवासिता ।

भाषाके राज्यसद्ध राज्यान कर्म, प्राप्त । (विद्या) MERCHAN LA J. ार प्रशिक्त होते हे**. धूर्म**ार ক্তিয়ে হ'লো ৮৫ - আভিচাৰ কৰি আৰু 思想了解,写《白烟》代写的《书》包字译《鹤娘春 वरिकारी, इतिहास विश्विद्यानी, युन्त्वतीय विष्यान्यभाविष्ययः सम्बद्धाः न्याः । सः । सः । सः । ন, সাতে ভিমন্তার বাছিয়া, টো আছে জয়ার विकास राम् क्योर एत्सके । विकासकडा তিদি এদেশীয় কেংকর সকাতীয় ওলা শিক্ষার ভাষেশ্যক্ষণ নিশার যে স্পিক্ষেত্রত 網幣 不管 化安定性 广山 化十二 भवना भागित ३१ माहित्। 😁 🗸 🧦 দিয়াটেজন, যে এটাংগা হৈছে , क्राफ़िक पर भाग विकास समाने हैं है। एक स हरू 🖟 १९ीम (साम्बर्ध १५८३) तारे १ मुख्य हिन मुग्नक होता. १९५८कमा जीम्बद्धांगर रह स्वर्थहरू क्षीरह दर्भरम् । वक्तामके । हाराइक्रिया क विष्या भाग करिक्ष विष्यक्षेत्रकात करिक्टल THE ASSESSMENT THE APPROXIMENTAL BELLETING TO LEGIS

ांक्क शाराजा नक मानाम शोराज ক্রিয়া হামাশ্র কার শিক্ষানা 📢য়েশ ফ षादे अलाता केल्प किहिते भेनले हे है है । 🐃 "हिर्ग व"लग्री ध्राम, महिंसुक एक क्रिया वाल ম্বাচে, বকলেই 🕒 ইম্বাটে তাৰীয় বুচ্চল हा बहेटन, रेहा कन्याल समाविक बाहारे लिकि ক্ষতিয়ালেক্ত, লক্ষতিকাত্ৰপথিৱে সক্ষত্ৰী কই क्षि है। द्वायिने सामान सम्बन्धि अस्त क्षिए क्षाक्रा मध्यक अन्यान अनुके ता गाम क्षाप्रस मान को हो जो हम महाने प्रकार निवास के हैं। इस विक्र कार किका कहाहै राधार्वविश्वाद अवस्था প্রিয় একে বালে উপছে ৷ ক্রেন্ডের বালেচক অভাৰ ৰমুনায়েৰ ৮ না পাছত প্ৰশাসনা কুৰিয়া भारत करियारिक, दब राजिक्षाचिक कालीक भागाम शैष्ट्रकार के प्रशिक्ष सम्बद्ध अ**विक्र** कि कार्टनत रहने। परिचानि का वि क्कामाहित्यत् अत्वर्धः हुई शत् व्यनुवाना त उन्भारता के प्रकार के प्राप्त करा के की है। **्या** १४४ तेषुर प्रात्यान, श्रद्धाः भवतीन द्याः 🍓 रेक्ट्यांचन अनाव अमृतान करें 🛪 क्षेत्र १७ छाके रहेर्गका १ ४६ दो । उत्तर white of their others thanking in their विकास करना विकास कर कर के जाने किया है। THE PROPERTY OF STREET

এবিষয়ে প্রগাচকপে মনোনিবেশ করিয়। বিষেদনা করিয়াছেন, এবং প্রন ক্লেছ विषेत्र कहे त्य कामान माभाद्रशकाल विद्या-প্রচারের যথার্থ পথ নির্ণয় করিছাছেন। আছু-क्ष्मकोर्ड देशक्राक मारद्वल सर[्]गत हिन्द्-कारक क्यांबर अहीटका छी- छाडामाबद शा-বৈভোগিক বিভৱগের সংগোধে সম্বন্ধতা করে-न, जाइग्रङ्क राजकिएशत ग्रामभौत कार्या-म्भीलस्मद्र कार्यमाक्छ। दिस्टर वियय अन्-রার প্রকাশ কবিভাছেন। কিন্তু ইয়া অ-जाक दर्शासक विषया, त्य दिनि जन्मान ड ७६ **যৎসার ভারতন্তি রাজকাতে: নিং** ত বাজিয়া ক্ষেত্র এদেশ পরিভ্যার কালে গ্রাপনার ষ্ট্রীম্ব্রাছ প্রকাশ কবিলেন,এবণ যে চাতি আন भामि वर्ष कान निकिल ब्रियत अध्याजन ই**চন** কাইতে পাবিবেক, ভাঁ**ই**াড় এক স্থ ষ্ট্র। পারিটোধিক নিতে স্থীর ১ হইলেন।

बर्पणीय जायात अमनीतम वाजिरहरक मोधात्रकाल विना अह इ इ उसा क्ये बहे লঞ্জাবিত লছে, ইছা এই পত্নিকান পাৰ্যাৰ প্রতিপর নরা গিয়াছে। সম্পতি এবিবর যে কোন কোন বাজ-সংক্রাত্ম হবা বিশেষভঃ শিক্ষাসমাজ সম্প্রকীয় প্রধান ব্যক্তির জনত ক্ষ চইয়াছে, ইয়া অতি শুভ চিক্: বীটন नाहहर भव्रम विष्णादमारी, धवः जित्तिसव প্রধান বিশ্ববিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিয়া প্র ধান প্রধান উপাধি প্রাপ্ত হইয়াছেন। এতা-দশ মধানার ব্যক্তির কথা সকলকেই প্রামাতি ক বলিয়া স্বাহার করিতে হয়। জীহার ওমে-जाक मारहर्वव मुकील नाता अञ्चलात कम-ज्ये के इसे, रश व्हार्टम कर्म व्यानस्मित्रे हैं वर्दि -बद्ध मरनारवान स्टेट्डएड, अवर हेन्त्राकी रव এদেশায় লোকের স্বছাতীয় ভাষা হইবেক.এ অভিপ্ৰায় এইকণে বিভালোকদিণের মুপু ক-लिलेंड वा(शाद्यव न्याय संगीक (वार्थ बहेता मानिट्ड हे ।

প্রকার প্রের্গকারী দ্বাপরের। ছাত্ররিরাক আগন ছাত্রবিরাক আগন ছাত্রবিরাক্তর হাত্রনিকার উদ্দুবারী হওরা অতি
কিন্তর। বিশ্ব ভাষায় কি প্রকার ভত্ত্রাবার্থিত পারে আছাত্রাক্তর বিশ্ব করা আছিল।

প্রায়, গ্রণ্মেন্টের কার্য্য ভাচার সম্পর্ণ বি-**ादर्शमण्डे स्ट्रेटड क्ष्मग्रं ह**े दाक्रः লা ভাষা শিক্ষার কোন উপায় হুইল ন': সংবাদ-পত্র-সম্পাদকেরা যত চীৎকার করান, আর অনা ব্যক্তিই বাইছার কর্ত্ব্যন্ত। প্রক্ষ যত যুক্তি প্লদান করুন, কিছুতেই ভালার: म्रोहरू में श्राम ना : তাহারা বধির হইয়া বুকিয়ালোন । ু**ঙ্**কাণে কি**ন্দকালেছে বা**-क्या किकात विश्वन न्याह वर्छ, किन्न तम প্রায় পাঠের শৃত্বলা নাম মাত নিয়মী নাই, উপযুক্ত শিক্ষক নাই,পাঠ্য গ্ৰন্থৰ মাই **এर॰ कि इ उद्दिश्य उद्घावशा**त्र के जिल्ला . বাঙ্গলা শিক্ষা করু, আরু মা চ্যু ৫০ প্র কার ছাত্রদিগেবই স্বেডাধীন। ভারারাণ **ওিতদিগকে** প্রা**ত্তই করেনা,** ফলর **८म् कारुटक्या क**ित्रक्ष स्थाद्याद्यकर्त्य स्थापक कदिवादछ (बाक मार्टे । इंडाइड लाहाव (पत् (य श्रकात बाल्शिक मस्रापन), आग अठाक है ३ है एक है। दि स्कार शब-भ-४०। य বাঞ্চল াঠশালাতে যে ওাকান অব্যাহনের রীতি আতে ভাষাও কাদি বংশামন্যাবেশে য়তঃ ভথার ক্ষিতিত হুটবার মার এক বিষম **প্রেক্তব ঘটিয়াছে** (বিংবাল) কাষা শিক্ষা। **एक है। त्यारक है। अला**च अनुवाध, कावन उस्त-টা বিধিষ**প্রকার বিদ**্যান্ত্যান, এবং উপজাবি কা উপার্জ্জনের আশু উপায় হইতে পারে। হিন্দ কালেজের প্রচলিত নিয়মানুসারে কোন বালকৈর বহুংক্রম অফবর্যের অধিক হইলে ভাহার আর তথায় প্রবেশ করিবার অবি কার থাকে না, হতরাং যাহারদিগের কিঞিৎ বিশেষ রূপে বিদ্যাশিক্ষার বাসনা থাকে, ১০ भारता मध्यवसम्ब बराध्याम सहैतम बाक्रका आयः শিক্ষার অনুরোধে কি প্রকারে আর বাঞ্চলা পাঠশালায় বন্ধ থাকিতে পারে ৷ এমভকোন ভাবিষাং আশোও নাই যে তাহার উপর 🙉 ৰ্ক্তর করিয়া স্বীয় ভাষা শিক্ষাতে নিরস্তর নি-**মুক্ত থাকিবেক।** এবিষয়ে রাজ-পরুষদি গর व्यवस्थानात् कथा कि कहित। श्रुट्य 🛎-कात निव्रम्भ हिल, (य ८४ ८४लक वाक्रणः 🧦 -काप मार्काष्ट्रके इहेत्त, डाहारक हेर्ब की **প্রধার্মের নিমিত্ত বিনা বেতনে বিভাগ**ন ब्रिट्नाव निवस्क कहा बाहेरवक । किन्न कि

আক্ষেপ্র বিষয় ! তাহার: এই যথকিঞ্ছিং কুপা বিভারণ করাও গুরু ভার বোধ ক**্রিল**-ন : বাঞ্চলা ভাষায় ভাষারদিলের যে এন-নিক্ষ অনানং মাছে, তাহা আরু গোপন রা-থিকেও মত্র কণিজেন ন'। যদিও এক ণে অ নেকানেক বিহন্ত লোক ইকা জঙ্গাকার করেন, ্য স্থাদেশীৰ ভাষাৰ অনুদীলন ব্যতিৰে-ত কোন দেশের আপামর সাধারণ সকল খোকের বিষ্ণোপার্কন কওয়া সম্ভাবিত মতে, কিন্তু ভামে ব্রেলিডের হাজ প্রত্যেরা ভাত্ত कुनिश्रीय कुरनसभा । केटा ६ए कॅ(छ)युनिरश्य कक्षेत्रकारण कथा ग्रिया (ठाव चारका. ংকাল ন্যান্ত ভাষার কি চিক্র প্রকাশ প্রাই ১০ছে এখনে স্বানে কেন্দ্রক্ষাত কাললা পা সন্ধান্ধ স্থানিত ধর্মসাল্লে, ভালার প্রতি **ভাঁ**ন ा तकि । । गाम १३ जनमा में कटल(एक ্জুওভ্ছতে ছাত্ৰস্ক ভ্ৰিক্স কৰিছাৱা বে ্রকার মানুহানে কাড়ার আসিরাল্ডান, ভাঙা प्राप्ताति कृतिन (संशास हैसे **कथन**हे rates a way of iteral distance from ৰিক্ষান্ত অভিস্থানে এতিয়াম প্ৰাৰম্ভ কৰিছা<mark>ছি</mark>-কেন্য মটিও এলেনের ইংরাজি বিদ্যা**লয়** ८म्म(खाल डिक्स लाहे समाना सामे, ६ 🗷 🗷 মেক অনুস্থাক বিলা অধ্যাত্যুমা, তথাপি ভাহাৰত প্ৰতিভাগেট দিশের যে ধকার যাত্র প প্রথমান্ত আছে, ঐপ ল বাঞ্জল পাঠ শালার প্রতি ভাহাব গরস্থাং শ্রুত্তক অংশ- अनाहे। छेलपङ अस नाहे, निक्क नाहे, ৫ র ব্লাবসারতারও নিয়ম নাই, অব্য ঐপকল निकास्टरबंद व्यासाक्षम निक्क वर्गाय हेराद পর অলীক কথা আর বি আুডে। সম্পতি গ্রিরামপুর-মিবাসী সংবাদ পত্র সংসাদক এ বিষয়ে তাঁহার্দিগ্রে যে প্রকার তিরকার ক্ৰিয়াছেন, ভাগু অভিনান। ইং: কাহার অবিদিত আছে, যে এইক্ষণে যে সকল শি ^৯ক্ষক ঔ**দমস্ব** পাঠশালায় অধ্যাপকত। কর্ম্বে নিয়ন্ত আছে, ভালারদিগের ছার্ল প্রকার্য্য কেল্ড প্রকার মধ্য বিধানে সম্পাদিক হঠবার নচে ৷ ত হার: যদি **অবিঞামে** শতবংসর উপদেশ দিতে থাকে, তথাপি কিছুট উপ-. 12. ইংব্যক্তি ভাষায় করে দশিংক মা।

শিক্ষকত ! সমেত্ৰ উপত্তশ নিমিত্ব পূৰ্ব माभाव मरकाशिक करेगारक, अवर किला मार्ग भारत मानाधिक त्रहता है कि बाब हते তেছে: কিন্তু এপৰ্যন্ত উপদৃশ্ব বাছলা বি-करू थालित कार डेलाइ करेंग भी, अधिक हेड, अभिकारे भाष्ट्र (ग छ। इ. सः भारेरसप ৰাঙ্গলা ভাষণা উপনেশ্ কৰিবাৰ হন্ত চেক্টা; मकक के विकल क केटवा का बातात है। हा कि नि मानिय ग्रामारवृत छात्रावधात्रम निविष्ठ वक द्वारम र कांगी। एकान प्रांतन निगक प्रांटक, ক্ষিত্ৰ ঐ একশ্ৰত ৰাঞ্জন, পা স্থালাল বিষ্ণু एममक्ष कि निराम आहम् । तद्रक खश्चकार क्षमान आध एउपा विवाहत. (ए हेन्स्कि विमालित्यत उद्धावन एक जाहाट वक्र जाव শিক্ষার নামতা করিতে পারিলে জ্রাট কছেন न।। जरद स्म क्षित्रात कर्षाहां वी विर्यास्त প্রতি ভারাবধারণের ভারার্পণ প্রায়ে, সেত टकाम कार्याकृत कर्ने हाहा भा, खादन उन्होंका व्यटनटक नहें श्रक्ताधरभङ्ग विस्ताय भीतन विभरत এলাদশ অন্বাগ ও উৎসাহ নীই যে অপে-मात्रमिर्वत जिल्लीया कर्य सम्माय गण्लक কবিয়াপ্ত **এবিষয়ে ধ্ৰোচিত মনোধোৰ** ও আন পাকার করিবেন। বর্গ কোন কোন স্তাল কাহৎশরিক পর্যাক্ষা কালীমণ্ড ভাঁহার্মি গকে উপস্থিত দেব। যার না। বস্তুত এসম্ দ্য পাঠশালার স্কার্য্যের কোন শব্দলা নাই, ত্রাগাতে রাজি ও এবালিগোন কিছু জনবার মাই, এবং ভাছ' 'নয় ৬ই'লেও যে ভাগেরচের কিছ ক্তিব্লি বোধ হাইবে **এম**ত ক্ষ্মান হয় ভারেনাদিধের যত্নভাবে ভারার প্র-शासन महल बहेरहरह मां, हेशांख मंद्रा ২০ কি জামি যদি ভাঁচাতা এককালে *বলি* া বদেন, যে এদেশীয় লোকের ব্যঞ্জা ডা-गाप्र विकास्त्रभागास्त्र का की कार्यक ह-কিন্তু একথাতে ভাঁহারদিগের অঞ্ क्वरत्व निष्क **जावरे क्षकाम भारेत्य, का**त्रत ণে কাৰ্যোর যেমন উপায় আৰ্শাক, তথ্যকৈ-ातक लाहा कथनहै भिक्ष बहराह शास्त्रचा ।

वार। इन्डेक, श्रकां विराशन विद्यान वीवन विवास वास शुक्रवितास अश्रकात्र समूरमार अ सवारणा स्मित्री सिन्नासंतर्भ वजुरे स्थान

रक्षां अधिकारक । किन्नु अकरन विस्तार-राशिकोहेन् गारहक रक्षणधानुनीतम विषय क्ष्मिन श्वतान शकान कहिलाका, एन्ह्र এঞ্জার ধতকিঞ্ছি আশার সঞ্চার হইতেছে বেজাগার বত্র দার: এবিষয়ের প্রতীকার হ-ঠানত ১ই যে পারে। স্কান্তঃ মৃত্যুগণ স্থা-হাৰ ও ভাসৰ মাং ছাদিনে; চেটে ভার শিক্ষকতা (কোঁটেপদেশ নিচার এক 🤏 र्थक किसाधित मध्यापिण का कहेता, तक्षका যায় শিকোপ্যোগ্য এর স্কল প্রস্তুত ম **হ**ইবে, নিক্টি সভাবপারক নিলাক স্টা: मक्षेत्र अविक्रमण पृत्यक राजा विश्वास ल मस्स भाकेमालाह अद्वादयातः कतिर ५ व्याह्य मा ধাশিবেয়, এবং ড্ডাক্রণ্র ধশিকিত ছাত্রে-ক্রাই কেলার বিচালকারের প্রধান শ্রধান গদ প্রাধির অধিকারী নাচ্টাবাদ, ভতকালা ঐ नकट भारताला मध्यानरेन्द्र आस्याक्रम भिक्ष श्वेरताम मा, खाउतार रामभीश रागात्मत विमा লাভ বিবেশ্য এব ,ভাঙার ভানমাঙ্গিক বিবিধ धाकाह उच्चान विभार (य मानाभका वृ আশ্ আছে তাঃ সুৰ্ফটবেক না:

-20'2 6 3 C 000-

च्रात्रम मः (वडा

श्रथ्यप्रविधानम् श्राहेणान् वाटक अच्या भूक्य

> কণ্যদিং * অযুচজারহাতীদ্দন্দ সাহান্ধ্যত

> > a : :

১ প্রেটিছে প্রণাণ বিশাৎ দৈবসতীনাং। অগ্নিং সূত্রেভি-রচে।ভিত্রীনহে সং সীনিদ্রাজ-লৈতে।

. व शक्तिवासक्रमानाः वेषः ' त्यनगर्धमः । त्यरावः कामग्रमानानाः, ' भूतवाव' तृष्ट्रवाव ' तिष्याः । त्रणतन्तिः।

ছোর জবির পুল কণুনাদ :

ধান 'বা' সুজ্ঞান্ত্ৰমন্ত্ৰ্যায় 'হজান' মধ্যে 'আছিন' 'সুক্লোভিট সুক্লাকলৈ 'বচ্চাভিচ' বাকৈনে প্ৰ-মিমতে প্ৰেমতে প্ৰকৰ্ত্তৰ বাচামতে 'কানেন' ছাল্যান 'ইব' কান্দি 'বান' আছিন স্বীন' সক্ষাক্ত ' সকলে ন্যান্তি - তান আছিল প্ৰকৃত্তনা হাচামতে।

া ক ক্ষিত্র ও গজমান গণ। দেবকা দিশের নিকটি আভ্রন্তির পোর্তনি। করিতেছ যে বন্ধ সংবাক প্রক্রান্তপ ভোমরা,ভোমার-দিশেন অনুধানের নিমিত্ত ভামরা, চলা ও গ্রিক স্থাকরপ বাকা স্বাহ্য গোল্যন প্রক্রি করিল্ডছি যে ভারিকে ভানা আদিরান এক ভোদানে শুক ক্রিভেক্ত

~ 1, c

२ जनीरमा शक्षिः भीतरक मरहा वृषे श्विषेटशावित्य । ११३-त्रो अना मुग्ने हेश्सिटः वर वार्ष्ट्रिय मुख्या

্ষ্পিট্রের সংগ্রেপার কর্তির কর্তির করিছিল।
করিছে করে করিছে করে করিছে কর

অনুধান (তেনতা বালেজি গার) পান
ক বালে করি। গেছা (লা অনি) লাকিক
কিন্তু আনতা ভোগার প্রিটিটি করিকে।
লাক্ত আনতা করি এই স্কানি আন
আন্তর্ভালে আসম্মন্ত করি। আকার
লিক্তির আক্রাক্ত করি।
লিক্তির ব্যাক্তর বালি
লিক্তির বালি

824

० श्र हो मुख्यते वीस्टर्स्ट्रार्डा द्वर विश्वदर्यम्बर । स्टर्स्स मृत्याः विवेदस्याक्रद्याः मृदि स्मृत्यः छ। सर्वाः ।

৩ হে আরো 'হোডারুৎ' হোমনিশাদকৎ 'নিত্ত দস্থ' সর্বজ্ঞাৎ 'নুত্তং' দেবানাৎ নৌতো প্রবৃত্তৎ 'ভ আবাং 'প্রানুধীয়াটে প্রকাচন সকুণা কুমাচ ' মাছত মাছত 'সাহত' মাধ্যম সাইমানালা ' চেড ' জং - এজাছ' ইংবাহত 'বিবোদ্ধি' (রাবিশা চব্যিত ৷ সার্বিশি তালা না বাং সাম্যত ' বিভি ' সাহজ্য ৷ ' স্কুশাবি তালাখাম্ প্রাথিন প্রশোধারি শীহার্থ্য

ত তেখা মনিক্সান্ত সাক্ষ্য দেবলুক অগ্নি । সংস্কৃত লোম চেক ব্ৰণ্থ কৰি, মত্ৰ ১ সককোতে বিভাষাম যে ভূমি তেখালাও লীপি সকল সংশ্যা হাকাৰে বিভাগ হাই। ১০ছে চ্ভালাৰ বৃশ্বি সকল স্কৃত্যাকৰ ছেই প্ৰচাৰকাল প্ৰজ্ঞাক কৰিছেছে।

8: 0

ও দেব। শৃত্যু বর্কবেণ মিতে। অধ্যাম কং দুভা প্রার্থিকতে। বিশ্বা সংখ্যাতি ক্ষতি ভ্রম্যবন। পর্যে দেবশ্যাত্যা।

ক্ৰিয়া হ'ব কিন্তু বাংলা হুব ক্ষেত্ৰ হ'ব প্ৰতিক্ৰিয়া হ'ব ক্ষেত্ৰ কাৰ্টিছে ক্ৰিয়াৰ বাংলা কাৰ্টিছে ক্ৰিয়া ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ বাংলা কৰা হ'ব ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ কাৰ্টিছে ক্ষুত্ৰ বাংলা কৰা হ'ব ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ কাৰ্টিছে ক্ষুত্ৰ বাংলা কৰা ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ বাংলা ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ

প্রক্রির প্রাণাল বিধ্যু গুলি ব্যালারে এরলন্মার ন্যালার এই রেবা, প্রব ক্ষাল কর্প ব্রিথ ক্রিন র্ডের এব ক্ষাল্য তেক্স,ক্রেক্সিরের স্থাব্দ ক্রেন ক্ষাল্য তেক্সেরের স্ক্রিক। ন্রাপ্রাণ্য ক্রেন ক্রেন স্থান

4 - P

ও মজোকে। ঠান গৃহপতিররে দুতোবিশামসি। তের বিং সং-গতানি ব্রতাধুবা যানি দেব। সঞ্জ ক্র মান্তান

া

৫ চে আছে 'জিল মেছা চলচেছু: লোচলব্না: আলাহা দিশা বৈছয়াবস্থান প্রনা
গ্রনাত প্রায়েশ শালন দ্ভাবদেশ্ভ জাই
চলহা: 'পুনিলাদেশ বিশ্বদি সানি ৪৭
ব্রতানি পুরা ধুলানি স্থান আনুহুত বিভবদ
কেতা জানি ভাবি শ্রহান (১৯৮৮)

ক লো আমি । ভূলি হতেরি কারণ, এদ বকাদিবের আভ্যান ক'বক, থক্সানের গৃহ শাপক, নেদক্রনিশোর পূচ। পৃথিকার্ট দেবতা যে সকল ভাতি কথা করিরাজেন কৈ মম্নান লোজগাত সক্ষত হল গ্রেষ্টাটাটা

अ (इ है नेटर खु छट) यां प्रक्री रिश्वान होन्द्र को देश । तां र देश कान गुणने डिकालन महिने हान भ नहीं मही !

ুন্ধ কাৰে। মুৰ্থ্য জন্ম সুধ্য ৰাজ্য নাৰ নাৰ আনি নাৰ নাৰ নাৰ সংগ্ৰাচ কাৰণাৰ সভাৱত প্ৰতি নানুক্ত প্ৰতি আন সভাৱত প্ৰতি নুক্ত কাৰ্মিক কাৰ্ম কাৰ্ম কাৰ্ম মঞ্চিন কাৰ্ম নাৰ জিলাই জ্বাধাৰ কাৰ্মিক নাৰ নাৰ নাৰ ক্ৰিনিক কাৰ্ম নিৰ্মাহ নাৰ

17.7

५ ए॰ ्यास्टब्, संग्रहेस्स्ति प्रताकंग (गट्छ । १० विर्वितिशि - नुष्य सर्विकटर (ट्डिका॰ १४) व्य जिन्नियाः

ন কে অনুত্র ব্যক্তিন, আনু দুক্ত মুক্ত মুক

ুণ হে ক্ষয়ি। ক্ষাবতঃ দীপ্ৰমান্ ও পু-ক্ষোক্ত ওগরিশিক যে তুমি তোমাকে ক্ষম স-পান্ধ ক্ষমান সকল এইনপ হবিন্ধানাহি দান। উপাসনা ক্ষিতেছে! পাক্ত হইতে উন্ধানি ক্ষমানের। স্থাব্যট্কার দানা তোমাকে সমাক্ কপে প্রদীপ ক্ষিতেছে!

822

৮ प्रस्तिविषये उत्तानि । अ-পडेक करीय ठिक्टात । जुत्र कर्ण व्यो मृत्यार्थं क क्लान्यार्थि सिष् ।

৮ হে অর্থে ' গুল । অংশ হাংমের ইনরে দেবাঃ প্রবর্থ: 'বৃত্তং' 'অন্তরন' তীবকাঃ। তদন ছবং 'বোদেনা দিনবালি 'কালি বিশ্বরাধিনা । নানামার্থি 'উক্ষ বিশ্বরাধিনা । নানামার্থি 'উক্ষ বিশ্বরাধিনা । নানামার্থি 'উক্ষ বিশ্বরাধিনা । নানামার্থি 'উক্ষ বিশ্বরাধিনা । নানামার্থি 'বৃত্তা বিশ্বরাধিনা । তবা দেও বিশ্বরাধিনা । তবা দেও বিশ্বরাধিনা । বিশ্বরাধিনা । তবা দিনবিভাগিনা । বিশ্বরাধিনা । বিশ্বরাধিনা

৮ হে অগ্নিং অন্য দেবতারা তোমার সাহায্যে বৃত্তানুরকে অতিক্রন করিয়াছে-ন, কুদমন্তর ছালোক, ভূলোক এবং অন্ত-রিক্ষ লোককে প্রাণি সমূহের নিবাদের নিমিত্ত বিস্তৃত করিয়াছেন ৷ তুমি কণু মুনির বিষয়ে অভল্যিত প্রদাতা,ধনবান্ ও হোমযুক্ত হও ৷ যেমন গো বিষয়েছাযুক্ত সংগ্রামে অন্য শক্ত করিয়া অভীকী প্রাপক হয় ৷

850

৯ সংগীদস্ত মহা অভিশোচন্ত্র দেববীতীমঃ । বি ধূমমগ্রে অক্তর্মং মিষেধ্য সূক্ত প্রশস্ত দশ্তং ।

৯ হে 'আয়ে' জং 'সংসীমৰ' বহিছি উপৰিশ। 'মহা' সহান গণাগিকোজননি 'দেববীভমঃ' অভিশ-েন দেবান কামবলানোনি' অভিশোহৰ' নীপাৰ। হে 'নিনেখা' মেনুনি প্ৰশাস্ত উৎকৃষ্ট অংলা 'অনুনং' গামনালান '
বিশ্বেষ্ঠ দিনীবং দিনীবং '
বিশ্বেষ্ঠ দিনীবং দ ৯ হে আমি! তুমি বহিতে উপবেশন কব, মহৎ ও দেবতাভিলাৰী ভূমি দীপ্তিমান্হও৷ হে মেধাৰী উৎক্ষী আমি!
তুমি গমনশীল ও দশনীয় ধূমকে বিশেষ
কপে নিগত কর।

80:

> যংশ্ব দেবাসোমনবৈ দুধুরিহ যজি ঠং হ্র্যবাহন। যংকগোমেধ্যাতিথিন্ধনস্পৃতং যংবৃযা যমুপস্ততঃ।১১৩১১

১০ হে 'হল্যবাহন' হবিবোবাশক অল্পে' মননে ' মনোরনুপুহার 'দেবাসং দেবাই 'ঘঞ্জি' আহিশানেদ পূঞাম 'দশ্রী 'আম' জাম 'দিববাছনদেবল দেধা' গুড়বজাঃ 'মেধাডিগিই মেঘাটেই যাগকুশলৈ আছি-থিচিই দুক্ত 'কথুই' 'সম' জাম 'ধনকীকুজ্ম' ধনেন প্রথিসিভারম দধে উদিশ্লহা। তথা 'ইস্টাইন্দ্র 'মা আমনান্ত ব্যাপ্তিপ্তত সংগীদ্ধ ইতি পূক্ এইলা (১৭৩৯)

১০ হে হবিকাছক অগ্নি! সনুদায় দেবতারা পরম পূজ্য যে তুমি তোমাকে মনুর অ
নুগ্রহের নিমিত্ত এই দেবার্চনা স্থানে থারণ
করিয়াছেন, আর ধন দান দারা সকলের
তৃত্তি কারক যে তুমি তোমাকে যাগ কুশল
অতিথি বিশিক্ত কণু খাবি ধারণ করিয়াছেন 1
এবং ইন্দ্র ও স্তাতিকারী অন্য যজমান তোমাকে ধারপ্রকরিয়াছেন 1২1৩1৯1

805

১১ ষম্বন্ধিং মেধ্যাতিখিঃ কণ্-ঈবঋতাদধি। তদ্য প্রেকোদীদি-পুস্তমিমাঞ্চন্তমনিং বর্জধামদি।

১১ 'মেধ্যাভিথিং' মেধ্যাং হাগরোঝ্যাং অভিথয় ঝ জিগুলাং বস্য ভালুশং 'কথুং' এতিং' ভঙাং 'আদিভাং 'অধি' অধ্যাক্ত্য 'হব ' 'আদি ' 'মধে' দীপুৰান 'ভঙ্গা' অধ্যেষ্ট ইয়াং গমনজ্জাহাং দুঋনং 'প্রনিদি পুঃ' প্রকর্মেদীপারে ু জ্ঞা 'ভব' 'আদিব' 'ইয়াং অন্যাভিঃ প্রযুক্তাদানাং 'এটা' বর্জিয়াজি বর্জিয়ায়াং। ১১ যাগশীল ঋত্বিক্ বিশিষ্ঠ কণু
ক্ষি ক্ষ্য হইতে যে জায়িকে শাহরণ
করিয়া দীপ্ত করিয়াছেন, সেই জায়ির গমনশীল রশ্মি সকল প্রকৃষ্ঠ কপে শীপ্তি পাইতেতে ৷ এই ক্ষক্ সকল সেই জায়িকে বাড়াইতেছে, আর স্মামরাও সেই জায়িকে
বাজাইতেছি !

800

১২ রায়স্পূর্দ্ধি স্বধাবোস্তি হি তেরে দেবেষাপাং ৷ ছং বাজ-স্য শ্রুতাস্য রাজসি সর্বোমূল ম-হাঁ অসি ৷

১২ হে অয় বিশিষ্ট অয়ি! আম্বারদিগকেধন দান করা হে অয়ি! দেবতাদিগের সহিত তোমার সধ্য আহে, তুমি
শ্রবণীয় অরের ঈশার, তুমি আমারদিগকৈ
সুধী কর, তুমি অভি মহান্।

যূপঃ দেবতা

808

১৩ উৰ্জ্ উৰ্গ উত্তৰ তিণ্ঠা দেবোন সবিভা। উৰ্জ্যেবাজ স্য সনিভা যদু জি ভিৰ্মা যা ভিৰ্মি বিজ্ঞাধা মহে।

১০ হে যুপান্ধকারিনিক আরো 'গং' নঃ আমাক 'উচ্চা' কাশাৰ 'উন্ন' উমাজঃ 'উন্ন' এব 'ভিন্তা' ভিন্ত। 'দবিতা' দুর্যাঃ 'বেব্য' ন' ইয় মথা উমাজঃ কি-দ্বভি ত্রু । 'উন্ন' উম্লভঃ লন্ 'ব্যামাস' আন্দ্রা ' দ-নিজ্ঞা লাভা ক্রন 'বং' যামাও কান্দ্রান 'অভিভিন্ত।' আন্তেমান যুপ্ত অঞ্জিলিঃ 'বামানিক আন্ধ্রিশেনেক আন্দ্রাম্বান বিশেষেক আন্ধ্রাম্বান বিশেষক আন্ধ্রামান। ১৩ হে যুপকাউছিত আমি আমারদিগের রক্ষাব নিমিন্ত উন্নত হইন্না হৈতি
কর যেনন সুর্ধ্য দেবতঃ উন্নত হইন্না ছিতি
করিতেহেন ৷ তুনি উন্নত হইনা আমারদিগকে অন দান কর, যেহেত তাজা স্থার।
মুপ সেচন করে যজ্ঞ সম্পাদক ঋত্বিক্দিগের সহিত আমরা তোমাকে আহ্বানি
করিতেহি ৷

30¢

28 উटर्कानीः शाश्यर्शतानि त्कजूना विश्वर सम्बिनिर मर। कृ-थी ने उक्षाक्त्रयीय कीवटर्स विमा तम्दर्ब त्नामृद्धः।

১৪ চে যুপনিষ্ঠ অল্পে 'উর্ক্ন' উদ্রজ্ঞান নু'নর্ন আবান্ 'বেতুকা' জ্ঞানেন 'আংচনঃ' পাপান ' নি 'নিজরাম 'পাতি ' পালয়। ' বিখং' দর্মন ' আনিদ্দ ' আরাম ভক্ষক বাক্ষম ' সং' সমাকু' দত' আবিদুক। 'মঃ' আবান্ 'উর্চান্ উন্নতান 'কুণী' কবি কুল বিষয়েন 'চরঝার' লোকে চরনায় 'জাবনে 'জাবনায় চ। 'দঃ' অক্ষাক ' সুবঃ' ধন ৷ ক্রিয়েরপ্ন ' দেবেরু' বিলা' গস্ক্য।

১৪ হে যুপ স্থিত অগ্নি দেবতা! তুমি উমত হইরা জ্ঞান দারা আনার্মিগকে পাপ
হইতে রক্ষা কর, সমুদার ভক্ষক রাক্ষসকে সমাক্রপে ভক্ষ কর,লোকে বিচরণ এবং জীব
নম ধারণের নিমিত্ত আমার্মিগকে উন্নত
কর, আমার্মিগের হবি স্বরূপ ধন দেবতাদিগকে প্রদান কর।

অগ্নিকেবত:

805

১৫ পাহি নো অগ্নে রক্ষাঃ পা হি ধুর্ত্তেররাবুঃ। পাহি রীষত-উত বা জিষাংসতোবৃহন্তানোষ-বিষ্ঠা । ১০০১০। ১৫ ছে'বৃহজ্ঞারো' 'বলিছা' বুবজুর 'আয়ে' 'নাই
আলান্ 'রজন্য: বাধজাৎ রাজনালেহ' পাহি ' পালদ
তথা 'আরাবুঃ' ধনাদীনাৎ অবাত্রপাৎ 'ধৃঠেঃ' হি
নকাৎ 'পাহি ' তথা 'রীসতঃ ' রিষতঃ হিৎসকাৎ
ব্যাল্ডানেঃ' পাহি' উচ বা' আধ বা 'জিছাৎসভঃ' হলবিজ্ঞা শুলোঃ সকাশাৎ পাহি ৷১৩১ ০ ৷

১৫ হে উজ্বল কিরণমুক যুবশ্রেষ থামি!
উপদ্রব কারক রাক্ষনাদি হইতে আমারদিগকে রক্ষা কর, ধনাদির অদাতা ধূর্তলোক
হইতে রক্ষা কর, ব্যান্ত্রাদি হিংত্র জন্ত হইতে
বক্ষা কর এবং হননোদাত শত্রু হইতে রক্ষা
কর ।১।৬।১০।

809

১৬ ঘনের বিষশ্বিজ্ঞারীবৃত্ত-পুর্জ্জনে সম্পুক্। যোমর্ত্তাঃ শিশীতে অত্যক্ত, ভিশ্বা নং সরিপু-রীহত।

১৯ তে 'তপুর্কন্ত তপামানর কিবুক অংগ 'অরারু:'
অক্সাথ দেশস্য থনস্য আলাতুন্ বৈরিপঃ 'বিস্কুক'
সর্কত: 'বি 'বিশেষেণ' শ্বন্থি 'বার্থা'ইব ' মথা 'ছন'
যনেন করিনেন লঙ্গাগালাবিপুঃ 'অস্বাধুক্ অক্সাথ ভ্রম্থা সং' অন্যোগি রিপুঃ 'অস্বাধুক্ অক্সাথ জ্বেডারী ভংগালাবিলা বাংগালাবি আন্যাথ আন্যাং 'মত্যা' লক্ষঃ' অকুজিঃ' আবুইং অক্সান্ ' শ্বন্থি' তথ্যকরে বি প্রবিবাধি সাং' 'না' অস্থান্ প্রতি 'ই-প্রারকারী ভিবিনোং লাকে 'না' অস্থান্ প্রতি 'ই-প্রকরে বি

১৬ হে উজ্জুল কিরণমুক্ত অগ্নি! আনারদিনের পনের অদাত। বৈরি সকলকে
সর্ব্বতোভাবে হনন কর, যেনন দৃঢ় দপ্ত পাযাণাদি হারা ভাগুদি ভঙ্গ করে। আ
মারদিগের জোহকারী যে শক্র ভং মনাদি
হারা আমারদিগকে বাধা দেয়, আর দে
শক্র বাণ হারা আমারদিগকে প্রহার করে.
যেন সেই উভয় প্রকার শক্র আমারদিগের
হিংসা করিতে সমর্থ না হয়।

১৭ **অগিৰতে স্**বীধ্যমঞ্চি কণ্

দৌর্ভগং। অগ্নিঃ প্রার্থনিত্রোত মেধ্যতিথিমৃগ্নিঃ সাতা উপস্কৃতং।

১৭ 'অগ্নি: ' সুবীর্যাৎ' শোজনরীর্বেগালেড ১ রন্থ উদ্দিশ্য ' বব্রে ' যাচিড: । স: ' অগ্নি: ' তথায় ' মহ-প্রের্থি (গাঁডগাং' শোজন্ধরানির্বাধ, স্থান্য প্রায়ক্ত্বং উত্তিশেষ: । তথা স: 'আগ্রি: ' মিক্রা' অক্সক্তিরানি 'প্রারথ' রজিত হান্, ' উত্ত' আ' ' ড আ্থি: ' রেধ্যা-তিথি ' মেবটোইগাঃ আতিথিভিত্তেও এ প্রায়থ প্রায়থ তথা 'উপস্তত্তং' আনাম্পি নোভারথ এল্লান্থ 'সাঙ্গি' ধ্যাদি দান নিম্নিথ প্রারদিভিশেষ:।

১৭ বীর্ষ্য বিশিষ্ট ধন দানাথে দে অগ্নি
প্রার্থিত হরেন,সেই অগ্নিকণ্ গ্রাক্তি ধন দি
ক্রপ সৌভাগ্য প্রদান করিয়াছেন। সেই অগ্নি আমার্কিপুরে নিত্র সকলকে এবং পু
জনীয় অতিকি বিশিষ্ট ঋবিকেরক্ষা করিয়াছেন এবং অনা স্তোভা বজমানকেও ধনাদি
দান করিবশ্ব নিমিক্ত রক্ষা করিবাজেন।

809

১৮ অগ্নিনা উৰ্বশৃৎ যদুৎ পরা-বউউপ্রাদেবৎ হ্বামহে। অগ্নিনি-যমব্বাস্ত্যুৎ বৃহদ্রথং উৰ্বাতিং দ-স্যাবে সহঃ।

১৮ 'অগ্নিনা' সহ অববিতান্ 'উল্লেখ্ উর্জ্লনামকং 'বলুং' বলুনামকং 'উপ্লাবেবং' উপ্লেবেনামকঞ এতান রাজবীল্ 'প্রবেজঃ' দুরদেশাং 'হবামহে 'আহ্নামঃ। সচ 'অগ্নিঃ ' 'নব্ৰান্ধুন' নব্ৰান্ধুনামকং 'রুচজ্পং' সুজস্থুনামকং 'উইণিডং' উইণিডিনামকঞ এতান্ রাজ্ বীন্ 'লবং' ইছ আনমত্ন। কীল্মঃ অগ্নিং 'লসাবে' আ অনুপল্পরহেতোঃ চৌরস্য 'সহং' অগ্নিভবিতা।

১৮ অগ্নির সহবাসী উর্কাশ, যত্ত, ও উ এদেব নামক রাজবি সকলকে দূর দেশ হইতে আমরা আহ্বান ক্রি।সেই অগ্নি নববান্তু রুহদুর্থ ও উবীভি নামক রাজবি সকলকে এই যজে আনম্ন কর্মন। অগ্নি আমারদিশের উপ্রেষকারী শক্রকে বিনাশ 886

>> नि द्यार्थि मन्दिर क्या-जिर्जनीय न्दिर्छ। नीटम्ब कर्न-श्रेटकी उडिक्टावर नेम् गार्डि क्रिकेश

১৯ হে 'অলো ' জোতিং' প্রকাশরপং 'আং 'লগড়ে' বছ বিধাব 'জনায' সজামানায' মনুং' প্রজা-লাভঃ 'কি লাউছ' দেবন জলাবেলো আপিত হান্। তে অংল আম 'ভাত জাতে। ওতেন যড়েল নিমিক্সুতেন উপ্প মং'উনিডঃ' হতি ঠিজনিতিঃ সন্ 'কংগু এত লামকে মহ-দৌ 'দাদেগ' দীপ্রবান্। 'মং' পালিং 'ফুদ্দিয়া' মনু-বাাং 'এমসাভি 'নম্মুক্তি।

১৯ ছে অগ্নি! তৃমি প্রকাশ স্বরূপ, বছ
প্রকার যজনানের নিনিত্ত প্রকাপতি তোনাকে দেবতাদিগের অর্চন স্থানে স্থাপিত
কৃতিরাছেন, হে অগ্নি! যজ্জোৎপন্ন তৃমি
হবি দারা তর্পিত হইয়া কৃণু ক্ষমিকে দীপ্র
করিয়াছ, এবং মনুষ্য সকল তোমাকে নম
কার করে।

885

२० (ष्वरातमी अत्युत्तमेवत्स्ता अर्क्करमे जीमातमान अञ्चीकत्य । त्रक्कत्रिनः मनुमिनीकूमावदेकावि स्र ममुख्यिनेर नह । ১१०। ১১।

ং ন অগ্রেড ' আর্সহঃ ' জার্মারাঃ ' জেফারাঃ ' নিপার ' জামবায়ঃ' বলবভঃ ' ন্রীমান্য ' জামবায়ার আর্ড অব্যাহিঃ প্রতিভ্রমে ' ন ম প্রৈপ্তান্ত শুনারা করি লেখাঃ হ ছে অগ্রেজং ' বজাবিনঃ ' বলবতঃ ' যাতুমারতঃ ' যাতুমানা অসুরাম্ ' দানং' দর্জদা 'ইছ ' এর ' কাংনত চ মায়ুস্বীকুক তথা ' বিশ্বং' লাকং ' আমিনং ' ক্রমানং অব্যাহিকং শুক্রং স্বাহ্বাহাত ১১।

২০ অধির শিখা সকল প্রদীপ্ত বল বি-শিষ্ট ও ভবদর, এই কারণে আমারদিগের বৃদ্ধিগম্য হইবার বিষয় নহে। হে অধি। তুমি বলবান্ অসুবৃদ্ধিত্ব স্থান রূপে ভক্ষ কর, এবং ক্রমান্ত্রির ক্লেশ দায়ক সমুদায় শক্রকে ভক্ষ কর। ১১৩। ১১।

देवकव मन्त्रमाय

মধাচারী 🚎

পূর্বের লিখিত ছইরাছে যে বৈক্ষাদিণের চারি প্রধান সম্পুলার আছে ক্রিক্সের ক্রিক্সের ও তাহার শাবাং প্রশাধা ছবল কনিও সম্পুলার সমুদারের বৃত্তান্ত ক্রেমে প্রকাশ করা দিরাছে ৷ দির্ভার প্রধান সম্পুলারের নাম ব্রক্তান্ত ক্রেমে প্রকাশ করা দিরাছে ৷ দির্ভার প্রবাচার্য ভাষার প্রবর্তক. এপ্রযুক্ত লোকে এসাম্পুলারের ব্রক্তক. এপ্রযুক্ত লোকে এসাম্পুলারিক বৈক্ষবিদ্যাকে মধাচারী বলিয়া থাকে ৷ ভারতবর্ষের উত্তর পতে ভাষার করিন এসম্পুলারের লোক দেখা যার বর্তে, ক্রেম্ব অধিক নহে ৷ এদিকে ভাষার দিগের একটিও মঠ প্রভিষ্ঠিত হয় নাই ৷

अमन्त्र मात्र **औरेवक्षय च्यर** शक्का च्यार्थान-ইলার প্রবর্ত্তক মধ্যচার্য্য দাক্ষিণা-ভাের অন্তঃপাতি তুলব-দেশ-নিবাসী মধি-ভট্ট নামা এক ব্রাহ্মণের পুঞা। ১১২১ শকে ভাঁহার জলমাহর ৷ ভাঁছার ম ভারণামী লোকদিগের এই প্রকার বিশ্বাস जारक, य शवन एवं नाजायुर्व बार्मन ক্রমে ধর্ম পালনারে অবতীর্ হইয়া মধ্য हार्या नात्म अधिमक करेतन "। जिनि थ-**मटलपट**बंद मटर्र विमाण्डामि करवन, अवर নয় বৎসর ব্য়ংক্রমের সময় সনক-কুলোদ্ভব অকুতে প্রচনানা আচায়া সন্নিধানে সন্ন্যাস ধর্ম এইণ করেন! তৎপরেই গীতাভাষ্য প্রস্তুত করিয়া হিমালয়ে বদরিকাশ্রম তীর্ষে উপনীত হইষা মহর্ষি বেদব্যাসকে প্রদান ক্রিলেন 🗶 ব্যাসদেবও উচিচাকে বহু সমা **দর পূর্বক ভিনটি শালগ্রান শিলা উ**পহার **দিলেন ৷ তিনি সুত্র জ**া, উদিপি ও মব্য-তলের মঠত্রয়ে ঐ শিলাত্রয় প্রতিষ্ঠা করি-বেন, তদ্বাভিরেকে উদিপিতে আর এক কৃষ্ণ মুর্তি স্থাপনা করিলেন। তদিবয়ে এইরূপ উপাখ্যান আছে। কোন ৰণিকের এক

[্] শব্দিশন সংগ্ৰহে উহার মাম পুর্ণপ্রজ সলিয়। শিবিত আছে ১ আনান্য অনেক স্থানে উছার আন শহীর্ণ উপাধি আছে।

थान नगुजर भारत । इत्रेड नगरंत्रवत (मरम योश्टल याश्टल जूनव व्यक्ति निकास গিয়া জল মগ্ন হ'র ৷ ভাহাতে এক ক্লক-विश्रह शाशीहरूत-मृखिकात्र मध्य माहरू হইয়াছিল, মধাচাৰ্য দৈৰ জ্ঞান ৰলে জা-নিতে পারিয়। **উক্ত গ্রেছিবা স্থানরন পূর্বক** উদিপিতে প্রতিষ্ঠা করিলেন ! ভদবধি 🕏-मिशि नगत अङ्ग्रम्भू मारस्त्र व्यथान जीर्थ-ৰূপে প্রিগণিত ফ**ইল ^{*}৷ মুশ্চা**ষ্ট্য ত-থায় কিছু দিন অবস্থিতি করিয়াগীতাভাষ্য, ञ्चळाचा, क्षशंकाया, मरमार्थनियस्ताया, व्यन्-वाकानुनय विवर्त, व्ययुद्धमास्त्रतम श्रकतन, ভারত-তাৎপর্য্য নির্ণয়, ভাগরত তাৎপর্য্য, গীতা তাৎপর্যা, কুঞামূত মহার্ণব, তল্পার প্রভৃতি ৩৭ খান গ্রন্থ রচনা করেন৷ কিয়ৎ কালানন্তর দিখিজয়ে যাত্রা করিয়া শব্দরা-চার্য্য প্রভৃতি আচার্য্যদিগকে বিচারে পরাত্ত করিয়া পরিশেষে বদরিকাশ্রমে গমন পূর্ব্বক बागरमरवत मम्बिबाहारत वाम क्रिक्ट লাগিলেন†৷ মধাচারিরা কচেন অদ্যাপি তথায় অবস্থিতি করিতেছেন ৷

মধাচারিদিগের প্রস্থে মধাচার্যার এই
প্রকার উপাধ্যান আছে, তল্পধ্যে তুলবনিবাসী মধিজি ভট্টের ঔরসে জল্ম, অচ্যুত
প্রচের নিকট উপদেশ একণ, ও উদিপির
বিএক প্রতিতা এই ছুই তিনটি কথা সপ্রমাণ
বলিয়া প্রকণ করা যাইতে পারে 1

মধ্যচাহোর শিষ্য মওলীর আশু বৃদ্ধি করাইরা কথ্য বিবিধ প্রকার বিষ্ণু-মুর্তি সংস্থাপন পুরুক্ত করার অগতীকে ও গোদাবরী তারক্ষ বাক্ষাক কুলোন্ত আশু করা করাই আ

যে সময়ে যিনি অধ্যক্ষ থাকেন, ছগান জাঁচাকেই সমন্তব্য নির্বাহ করিছে হর্মারলাকানুরাগ ও যশোলাভ বিষয়ে অধ্যক্ষদিনৈর পরক্ষার জিলীয় প্রযুক্ত ব্যরের বাছকা ছ-ইয়া উঠে, সুভরাং তথাকার নির্বাহিত উপ-বন্ধ আরা নির্বাহিত উপার নাই। একারণ মন্দিরাধ্যক্ষ সন্ন্যাসিরা আবকাশ কালে দেশ পর্য্যক্ত পূর্বক বিষয়ী শিষ্যদিগের নিকট দান সংগ্রহ করিয়া এক এক সময় বহু ধন প্রাপ্ত ছন, এবং ভাহার অধিকাংশই আপন অধ্যক্ষতা কালে উদিপিয় মন্দিরে ব্যয় করেন।

এই ক্ষাট মঠ সমুদারই তলব রাজ্যে হাপিত আছে †! তদ্যাতিরেকে মধাচার্য্য পদানাভ তীর্থকৈ আর কতিপর মঠ প্রতি তার অনুমতি দিলেন, এবং তাঁহাকে পুর্ব্বো কর্যাসশালগ্রাম ও রামচক্রের কতিপর মূর্তি সমর্পণ করিয়া কহিলেন, 'আমার মত প্রচার কর,ও উদিপির দেবালয়ের আনুকুল্যাত্রের কর,ও উদিপির দেবালয়ের আনুকুল্যাত্রের সাম্বাভ করণ পদানাভ তীর্থের মঠ চতু উর বিদ্যমান আছে; তাঁহার পরক্ষারামভ শিব্যেরা ত্বাকার অব্যক্ষা তাঁহারা মধ্যে মধ্যে উদিপর দেবালয়ে গমন করেন, ক্রিন্তু তথাকার অব্যক্ষা তাঁহারা মধ্যে মধ্যে উদিপর দেবালয়ে গমন করেন, ক্রিন্তু তথাকার অব্যক্ষা ত্রেক্সনা।

সন্ধ্যাসী ও প্রাক্ষণদিগেরই এসাম্পুদা রিক লোকের গুরু হইবার অধিকার আছে। ভাঁহারা নিভাক্ত অন্তাক্ষ ব্যক্তিরেকে আর সকল জাতিকেই উপদেশ দিয়া থাকেন। প্রচ্যেক গুরুবাই কিরৎ সংবাক্ পৈতৃক শিব্য

হার অধ্যক্ত করিবের এ ঐ বর্গার মন্দিরই
অদ্যাণি বিদ্যালয়ন কাছে ৷ তাহার এত্যেক
অধ্যক্ত সম্পূ লার-অব্যক্তির কাষিত নির্মানুসারে পর্যার কাষে ৪ বং ২১ বং বং বর উদিপির মন্দিরের অধ্যক্ষতা করিবা আসিতেছেব-।

র্ক দাজিগাচোর অধ্যুগ্রাত তুলবদেশে সমুসু চট তে ১৮ জেলম অন্তরে পাগনাশিনী নদীর নিকট উদি-পি নগর।

[া] ন্যান্দৰে ও শক্রাচার্য্য উন্নয়েরই সহিত ফথা-চার্য্যের সাকান্তন্ত্র হওয় অসম্ভ্রম । ১১২১ শকে মঞ্জাচার্য্যের জন্ম হয়,দিন্ত শক্রাচার্য্য সপম শত শকে বর্জমান ছিলেন বিশ্বা অক্সর্যোধিনী প্রিকা-৪২ সন্ধ্যা ৪০৮ পৃট্টা। অভ্যান ইইবিদ্যান্ত্র উন্নয়ের প্রকার স্বকার্বর্ত্তী হবরা কোন প্রকারে বুক্তিনিছ নুহছ

১১০০০ সভসু টাকার মান নছে: বরক কথন কথান ২০০০০ সভসু টাকার অধিক বায় হয়।

[া] কানুর, পেলুকৈর, আস্মার, কলমার, কুজপুর, সিপ্তর, লোগ অংকুতি এই, আট ভানে আট মই আর্হি:

আছে, এবং ভাঁহার **গুরুত্ব পদ বিজন্ম ও** বন্ধক দিবারও অধিকার আছে 🏋 🦠

७७० नाम्भू माहिक नहीं नि चार्टिशही मिलिए जा नाम गरका भवीच गतिकामा करत्व, म ७ कम ७ उम् अर्थ मार्ग करत्व, में कर्म मु-अन करवन, अदर अक अक थंख रेगब्रिक नज পরিধান করেন। তাঁহারা বালাকালেই मञ्जान अंदन कंद्राटि नःगाद्वत्र काम न-म्लकं द्वारणन मा। मधुक्तिद्वा करका ख वक्क्ष्मा कथ (बीर बाता भव, हक, शन), शतनात हिंद्र करतम, अवर क्रीरेक्कविंगरगत নাায় নাসামূল অৰ্ধি কেল পৰ্যান্ত উৰ্জুৱেখা ৰয় চিহ্নিত ফরিলা তাহার নাসা-মূল-লগ্ন थान्त वर क्रमधाविक (तथा कात्रा नःश्रृक क्तिया एमन ; कर्द बिरम्ब धरे य तामानुक देवकरवता खेर्ज श्रुट खुत मंशा मित्रा अक तरक বণ রেখা করেন, মধাচারিরা তৎ পরিবর্তে নারায়ণ-নিবেদিত দক্ষ গল্পদ্রব্যের ভক্স স্থারা এক কুক্ৰৰণ বেখা কবিয়া তৎপ্ৰাতে হয়িটা দ্বারা এক বর্ত্তলাকার তিলক ক্রেন।

ই হারাও অপরাপর বৈশ্বিদ্ধের ন্যায় বিশ্বুকে বিশ্ব কারণ পরমেশর বলিয়া ত্বীকার করেন, এবং তাহার প্রামাণ্য দেখাইবার নিমিত্ত প্রসিদ্ধান্দ দেশাপনিবদ বহির্গত কতিপায় উপনিবদ ও অন্যান্য প্রশ্বের বচন উল্ভ করিয়া থাকেন ৷ আদৌ এক মাত্র অভিতীয় বিশ্বু হিলেন, পরে সমুদায় জগৎ তাঁহারই শরীর কইতে উৎপন্ন কইরাছে । ই হারা বিশ্বুর অশেষ প্রকার শ্বতন্ত্র ও অনির্কাচনীর উত্তম গুণ শ্বীকার করেন:, এবং কহেন যেমন এক জন শ্বতন্ত্র আছেন, শেই বপ আর এক জন প্রতন্ত্র আছেন, অর্থাৎ বিশ্বু শ্বতন্ত্র এবং জাব পরতন্ত্র পা ৷ ই হারা জীব ও পরমেশরের পৃথক সত্তা শ্বীকার ক

রাতে বৈতবাদী নামে খ্যাত ইইয়াছেই,
এবং তথ্যবুজ শঙ্করাচার্য ও রামানুক
আচার্যের মতের সহিত ই হারদিংগর মতের বৈলক্ষণ হইলাছে ৷ ই হারদিংগর ক কীবাদ্ধা নিত্য, ঈশরের অধীন, ও ভাঁহার
সহিত চিরন্তন-সম্বন্ধুক, কিন্তু উভয়ে একীভূত নহে ৷

> र्षेथा शकी ४ मृत्यक्ष नामातृक्वतमात्रथाः वथा नगाः मञ्जूषाक चटकाव्यवदेश वथाः ॥ टडाटताथहाटकी ६ वथा वथाः भूदतिवयात्रशः ७थः भीटतपटतो छिटमो मस्तरेगर विकक्ताने॥ सरवाशनिवयः

পদ্মী ও সূত্রে, কৃষ্ণ ও রন্দেনন্দ্মী ও সমুদ্ধে, অন্ধানন ক লবণে, জৌর ও অভসুত্রে এবং পুরুষ ও ইন্দ্রিনের বিদ্রান গেমন বিভিন্নতা আছে, সেই রুপ ক্লীব ও ইপর নিডাই ভিন্ন আছেন।

र हाता शत्रमाञ्चाएक कोरवत लघ निर्देश मुक्ति चौकात हें होता रेग्नुमिरगत स्याग ७ रेव क्षवित्रात नायुका छेख्यहे अवीकात করেন । ই হারদিগের মতে নারায়ণ देवकूर्छ थारम लक्की, जूमि उनीला (मदी ह নামুী পত্নী ত্রয়ের সহিত স্বগ্নীয় বেশ ভূষায় ভূবিত হইয়া অনিকাচনীয় ঐশ্বৰ্যা সুখ সড়ো-গ করেন। তিনি স্কুপাবস্থায় গুণাতীত, কিন্তু **যর্বনি ভাঁহার মায়ার সহিত সংযো**গ হয়, **ण्यम मञ्, तकः, ७**८मा ७१ क्या विकृ ও उकाः এবং শিব ৰূপে জাবিভুত হইয়া বিশের সৃষ্টি, স্থিতি, প্রলয় করিতে থাকেন! তাঁ-हाता माना इहेट छेर भन्न इहेगात्स्न, अवर मौत्रात्र त्यालारे चच कार्य मण्यापन करत्न। তত্তিম সৃতি বিষয়ে এপ্রকার আর আর উ-পাধ্যান আছে যে ত্রহ্মা, শিব ও অপরাপর त्मव भग है हात्रा विश्व-कात्रन मात्रास्टरात्र छ-नम्, लगांहे, भाष ७ जना जना जल हहेरछ জন্মিরাছেন, জার বিশ্ব-প্রধান পুরাণ সমু

^{*} একোনার্বিণ আসীৎ ন ব্রক্ষা ন চ শছরঃ: আনন্দএকএবাগ্রন্থাসীলারাহণঃ প্রস্কু:॥

[†] विकारफंश ब्याधनसंभावितानीय।

[ः] च ड८क्षाच्यान् विस्तृतिरकारहास्ट्रणसमानुगः। सम्मतिरवदाः

ৰ্থ অত্যমন্ত্রক ছিবিধণ ভ্রম্মিন্তালের ভর্মেরিকেনে।

^{*} তাঁহারা ইছার প্রমাণার্থে রেছ ও পুর বের রচন বলিয়া এই দকল বচন উন্থত করেন। যথা লকজ্ঞাপশুভ্রতেলাৎ দক্ষশক্ষ্যপশক্তিন:

ৰাত দ্বাপারত স্থান্ত্যাৎ সম্ভোগোনেশনীর হোঃ॥ গক্তপুরারে।

আজাহি প্রমন্তভোবিপ্রনোধীবোল্পালিকর ন্তন্তঃ। ভালবগোপ্রিমন।

[া] দুৰ্বা অথবা যায়া:

To barn or or definition where. कारारक्ष नगागांत्र निवास नायके व्याच MARTE 1 MARK CONSTRUCTION ্বিশাসনার ভিত্ত কলা শাহত বাস কর ৭, ও उक्रम, क्षेत्रार अर्क विरंगरय विकृत अन्य চক্রাদির চিত্র করিবেক । বিশুর নাকে আ-भग महामन्द्रिक्त सामानाचिर्वकः । अवर मद्भावाक कर्ना वर्षा न छात्र कवित्वक । पत्रा, অহিংসাও শ্রন্ধা এই তিন মানসিব ধর্ম: সত্য বচন, সং প্রামর্শ দান, মৃত্র ভাষণ, ও শাস্ত্রালোচনা,এই চারি বাচনিক ধর্মা, আর मान, अनुशंह, जानीय टीमान, वह जिन क-र्ण्याहिक धर्म । এই मश्री धर्म क्यांना मा-दत्त नीनि भारत्यत गाती अनामा भारतक देव्यव अच्या माट्यक मात्र है श्राहिष्ट्रभन्न वि-धेर शृक्षाः ও मिरवार्थन **जारह। है** हा-विषयित (मर्गामास विष्युक्तिविमोद्गः अविश निव, शार्किको ७ गानामन ७ अकिमाई मारक अदः डीडार्त्रमिरंगतं ७ पश्ची नियस्य शुक्री द्य, অতএব শৈবদিগের সহিত মধাচারিদিগের बिटमेय विजशानिका नाई। विकृत अमीन লাভ পূৰ্বক চরম সুধ প্রাপ্তিই ই হারদি-श्रित ममुनाम कामना। विकास खरनार करवंत इहेरलई काहात अमन्ना लाख इत, बड्द। जीरवचरत्रत्र चर्छक मानित्व र्य किनि

मार्थ विका मानि गणा स्टेशक व कार्य केरन

AND A SAIR MANAGEMENT OF THE

্বুকা, বৃতির কলনা কেন্দ্রণ আনমর্থ ইউরা আজ পাত করেনারেই আক্রমন বৃত্তিক ক্রমুক্ত উপে বিজ্ঞত্ব। † ঠাবারা এরিরচেত প্রামানারে এই ক্রমুক্ত প্রকোগ করেন ক্রমান আবিক কর্মানারে এই ক্রম্ব তথ্যা করেন ক্রমান্ত আবিক কর্মানারিক ক্রম্ব আর্থ তথ্যা। প্রত অর্থান ক্রমান্ত ক্রমানারিক আর্থানার নির্মান পরীর প্রতিত্র না করিচারে, তারার বোক্ষ লাক ক্রমা।

े उमिनित विश्वादत सेत जेनेडाद भूमा करेंगा थाटक स्था ३ सन विशेषका आयी । समित भटितकार : २ जेने बात, अक्षेत्र विशेषका मिन्न कर्यत २० भट्टीपूर आयी । मधि मुक्काल बाता जीवांत्र आता : ३ जेन्द्र ते, आयी । जीन रात गांत्र मिन्न : ४ जीव भूमा आयी । कीर्य कल बात : ७ जानमाह्म , अर्थार आनवार निवधार : १ जाव्य भूमा तक स्वाह भोड : भवा मान, जाविशार जन्म, जर्यार भूमा तक स्वाह भोड : भवा निवधार जाति भूमा, जर्यार अर्थार

বাজুলা কম জ লাতি নাকিনিৰ কর কৰা বিশ্ব থাতি বাহার এতি কর, তাহার আর করার কর বাহার বিশ্ব প্রাণী ত করা নাকেন্য নাকিনাকের রামিনাত সাতি এই ক্রেমিন বাজিনাকির আনিবানীর জরন কুব সচ্চোগালেরিক বাকেনা মধা-ভাবের সন্ধার থাকে এবং বৈদ্যা চাভারত, লাক রাত্র ও রামারণ লাক্ষেই করানিনিতি ক্ষেপ্তার নাক্ষা বাহার।

ं रशक्ष इस मधानार्ग जीवेटन रेजवे क्षेत्रकार क्रियन, नद्धितक्य धर्म जनवर्गन कांत्रा छ শ্**টেশ্ব 'ও ইয়াশ্চেবর পর্যা**পার বিবাদি **ভ**ঞ্জন ক্লবিৰীয় বস্তু ক্লিয়াছিলেন। প্ৰথমতঃ তিনি **ক্ষমতে কাম।** শিব মানিকের দীক্ষিত হন। **ব্রতীয়তঃ ভিনি ভ্রমার্টার্য-স্থা**পিত তার্থ 👼পাধি আহণ করেন ধ তৃতীয়তঃ মধাচা-**রিদিদের দেবালয়ে বিফুর প্রতিমৃত্তির** স**িত** শ্বিৰ, পাৰ্বতী প্রভৃতির পূকা হয়। চতুর্যতঃ ন্মাধ্র শুরুদিলের শিষ্য ও শাস্কর গুরুদিণের শিষ্য, ই হাঁশ্বা পরস্পর উভয় পক্ষীয় গুরু **দিগকে নমন্ত্রীয় ও শ্রন্ধা ভক্তি করেন,**এবং শঙ্কর-ঐতিতিত শুক্সগিরিস্থ মঠের মহন্ত উদি-শি নগরের রুফ-মন্দির্রে পূজা করিতে আই-**লৈন :িশত**এৰ এই উভয় প্ৰকার শৈব ও বৈক্ষম সম্পূর্দারী উপাসক্দিগের পরস্পর क्षेका **७ महात चारह**ाः **ध मकत** रेगत ७ र्दिकारवज्ञा शिक्षालेख एष्य करत्रमः, मार्द्युतः জ্যাই দিহাটক ভটা হস্ত ৰ লিয়া নিন্দা ও অ-वका क्रवन ।

ক্ষুম্বনীরস্থ ব্রাপীসমাজের বক্তৃতা স্কুম্বন ১৭৭০ শক

> ्मराधिय गर्छक्र शहाला मरमान साथ भन्या नस्र दस्

धरे शृक्तित मकतरे जमिला, रेहात किहूरे दांशी महर, कांतराम मकत शुपार्थ इरेशतिवर्छन अदिनाम हुत्र। मूत्रना स्माजन

^{*} ভালকা জ্বার প্রাধান্যকৈ কেলেকৈ বলিরা এই বচন প্রাধানীকরেন, বধা " মোকত বিজ্ঞানান্তব বেশ নালকৈ প্রাধানীক প্রধান কর্মানানের নাচেন-ক্রামান ব

তম প্রস্তরময় প্রাসাদ,অতি গভীর বন্ধমূলপা-কাণ্ড ভরুবর,ভুষারারত উচ্চতম শৈলশিখর, मकलरे अककारन दिल्ल इंस्टरक, क्रिक्स माज्य पाकित्वक ना। ४ नृत्यात सूरेशभर्या सीवन যৌবন কিছুরই ভিয়তা নাই। আল্য যাহা-क मुर्थ लेखर्या मरमाश्र शृक्षक कामगाशन कतिएड एप्या यात्र, कला जाशारक है निर्वृत দক্ষিদ্রতার অত্যাচারে ছঃখ ভোগ করিতে দেখিতে হয়; অদ্য যাহার সুস্তার হি-লোলে প্রক্রানন দৃষ্টি করা যায়, কল্য তাহাকে বিষম ব্যাধির যন্ত্রণায় পীড়িত ও মৃমুৰ্দেখিতে হয়; অদ্য যে জীবিত দ্ৰুঢ়িঠ বলিষ্ঠ,কল্য ভাহাকে মৃত ও ধরাতলৈ শয়িত मिथिए इस् । अहे पृथितीत मकतहे छः निका । व्यक्ता (य मकल हे क्लिय़ **कामा**विष-গের শরীরে থাকিয়া আপনারদিগের নির্দ্দি-ষ্ট কার্যা সম্পন্ন করিতেছে,সে সকল ইন্দ্রির **অ**দ্য অথবা অব্দ শতা**ন্তে এক দিবস স্বস্থ** কা-र्या इहेर**७ मि**र्ब इहेर्वहे, **हेहार७ मस्ल**ह নাই ৷ এমত এক দিবস অবৰ্কী উপস্থিত হইবেক, থখন কৰ আরু মধ্র 🛊 বিকশি কোন मक्के खावन कतिरवना, नामिका बात सूत्र-इत वा छर्तक कान वख्न तरे आधान नहे रहना. চক্ষ্ আর সুন্দর কি কুৎসিত কোন পদার্থ দর্শন করিতে না, রসনা আর মধুর বা তিজ কোন রসাক্ষাদনে সমর্থ হইবে না. এবং হস্তু আর কোমল বা কঠিন কোন বস্তরই স্পার্শী **र्वाच क्रिय मा, मक्राल्ड्यमन इड्**ला রহিবে৷ যে কাল-নিদ্রার ভঙ্গ নাই. তা-**হাতে আমরা অভিভূত হইব,এবং আমা**র-দিগের জীবন চেষ্টার এক মাত্র আধার এই শরীর শবরূপে ধরাতলে কার্ড লোফের ন্যায় নিশেষ্ট রহিবেক। এক্ষণে যে মন্তক व्यामात्रिमरशक्त मजीदात ज्वान यक्ता विता-জ করিতেছে, এবং যাহাতে আমারদিগের বুদ্ধি মৃত্তি সকলই নিহিত আছে, ভাহাও এক দিবস নদী তীরে বা কোম বিস্তীর্ণ ক্ষেত্র-মধ্যে পথিকেরা অনার্ত ও পতিত দর্শন করিয়া মানব জীবনের অবিত্যতা আলো-চনা করিবে। অধুনা বি অতি সকল আ-मात्र**ण्टिशंत भर्ती**रतत **काल्याम्बद्धारम विमास** त-হিয়াছে,সে দকলও এক দিবৰ কৰণ কোন

ক্ষেত্র ছিল্ল ভিন্ন হইরা পতিত রহিতে দুক मनुरश्रत कीवन चाकि ठक्का,कवम् কালার মৃত্য লগবে তালার কিছুই ছির नारे। जानरा निन्छ जानि ना,कछ निम् अहे মন্ত্য লোকে বদতি করিব, আমরা দীর্ঘ কাল জীবিত থাকিয়া জীবনের ক**র্দ্রব্য কর্ম** স**ম্পন্ন** করিয়া ইহ লোক চইছে যে **অবস্ত** হইব, তাহারই বা নিশ্য কি? আমরা এই সূ।ধবীতে অদ্য প্রসূত শিশুকে মৃত্য-শ্যায় শ্য়ন করিতে দেখিতেছি, পঞ্চন ব-যাঁয় বালককে মৃত্যুর গ্রাদে পতিত হুইতে দৃষ্টি করিতেছি, এবং বয়ন্ধ ব্যক্তিকেও পর-লোকে যাত্রা করিতে দেখিতেছি৷ এক দিবস আমারদিণের মৃত্যু হইবে আমরা रेशरे माज कानि, किन्हु मि घটनाव नगर যে কখন্ উপস্থিত হইবে তাহার কিছুই নিশ্চর জানি না। অদাকার এই রন্ধনীতেও আমারদিগের কাল গ্রাসে পতিত হুইবার সন্তাবনা আ**ছে, আ**র **অর্দ্ধ দণ্ড পরে** অ:-মরা সকলে একত হইয়া যে ঈশার উপা-मना कतित, (महे जामति मिर्शत स्मय वारदत উপোসনাও হইতে পারে। আমি এইকাণে যে বক্তৃতা পাঠদারা আপনারদিগের মনে মানব-জাবনের অনিত্যতার বিষয় মৃদ্রিত করিয়া দিতে ইচ্ছা করিতেছি, ইহার শেষ ভাগ পর্যান্ত পাঠ,করিতে না করিতেই আ-মার অস্তিম কাল উপস্থিত হইতেও পারে, এবং আমি এতাৰৎ কাল পৰ্যান্ত সঞ্চিত পুণ্য পাপের সহিত লোকান্তরে গমন করি-তে পারি! অতএব উপস্থিত কালেই অ-বধারিত কর্ত্তবোর অনুস্তান করা অভি আব-শ্যক, ভাবি কালের প্রতি নির্ভর পূর্ব্বক **কোন মতেই কাল বিলয় করা উচিত হ**য় না৷ জীবন গত হট্যার পুরে**বট জীবনে**র সার্থকতা সম্পাদন করা অভি কর্ত্তকা। পর-মেশ্বর যে মহৎ অভিপ্রায়ে আনারদিগকে এই অমূল্য জীবন প্রদান করিয়াছেন, সে অভিপ্রায় অবগত হুইয়া তদনুসারে কার্যা করা অতি প্রয়োজনীয়; যাহা কণ্ডবা বেধ্রি **হয় শীঘ্রই তাহা সম্পাদন করা উঠিত,কার**ণ আমারদিগের জীবন অতি চঞ্চল,এবং কথন্ কা**হার মৃত্যু হইবে তাহার কিছুই** স্থির

নাই। পরকাণে অবধারিত মৃত্যু হইবে শানিতে পারিলে আমরা **যেরপ আ** চরণ করিছে প্রবৃত্ত হই, এক্ষণেও সে-ই **ৰূপ** আচরণ করা কর্ত্তব্য । দূরব**ড**ী মৃত্যুর নিমিত্তে আসন্ধমৃত্যু ব্যক্তির ন্যায় প্রস্তুত হইতে দেখা করা উচিত। যদিও শামরা এইক্ষণে মৃত্যুকে দেখিতে না পাই-তেছি, তথাপি আমার্দিগের নিশ্চর জানি-**তে হইবে, আমরা জীবনের পথে যত অগ্র-**সর হইতেছি,ততই শমন নিঃশক্ পদ সঞ্চারে व्यागमन शूर्वक व्यामात्रमित्रत निकरेय इ-रेटक्टर व्यामहा अहे मश्माद्ध धन मान य-শোপার্জনার্থে নিরন্তর ব্যস্ত থাক। প্রযুক্ত পশ্চাৎ অবলোকন করিবার অবকাশ পাই ना, मुख्ताः मृष्ट्रा (य जामात्रमित्नत्र निकटि আসিয়া উপস্থিত হুইতেছে, তাহা উপলব্ধি क्त्रि मः যদি আমরা আপনারদিগের পুরেভাগে সর্বদা দৃটি না করিয়া সময়ে সমযে পশ্চাৎ ভাগে দৃতি করিবার অভ্যাস করিতাম, তাহা হইলে একণে অসম্পন্ন কৰ্ত্তব্য হইয়া যেৰূপ নিশ্চিম্ন চিত্তে কাল যা-পন করিতেছি, এব্ধপ স্মাচরণ কখনই করি-তাম না। অভএব ভাবি **কালকে অ**পেকা না করিয়া বর্ডমান হইতেই আপনার্দিগের কর্ত্তব্য কর্ম্মের অবধারণ করা উচিভ, এবং তাহা অবধারণ কবিয়া জ্জ্রপ আচরণ করি-তে প্ৰাণপণে যত্ন শৰা উচিত, কোন মতেই কাল বিলয় করা বিহ্তি নহে, কারণ আমা-तिन्दिशंत कीवन चिक ठक्षण, अवर कथन् का-ার মজ্য হইৰে তাহার কিছুই ভিন্ন নাই । ^{র ৮ আমর।} নি**শ্চর জানিতে পারি যে পর্নে-**শ্রকে সর্বাস্তঃকরণের সহিত প্রাতি ও শ্রাদ্ধা কল' উচিত, এবং ভাঁছার অমস্ত গুণ চিস্তন পুর্বক শুদ্ধ অন্তঃকরণে উপাসনা করা কর্ত্তব্য, গবে এই সকল অবশ্য কর্ত্তব্য কর্ম্মের অনু-क्षाम कविएक क्यांशि यरपूत देशियना जाथवा খালগৌণ করা উচিত হয় না। পরমেশ্র যে আমার্দিগের উপাস্য এবং শ্রদ্ধা ও প্রীতির আম্পেদ, ইফা এই অনস্ত বিশের কাৰ্য্য এবং মানৰ জীৰনের সমুদায় বিষয় সালোচনা করিলেই অনায়ানে উপলক্ষি হইবে ৷ আনরা সকলেই ক্ষাত আছি এবং विकात अ कीवरमत्र कार्यमालाहमा भूर्यक সিদ্ধান্ত করিয়াছি যে পরমেশর করুণামর, তাঁহার কর্ণার সীমা নাই ৷ আমরা তাঁহা इन्टेंट इं अरे चमूना कीवन, चमूना दुक्ति वृक्ति, त्रकलरे व्याश्च रूरेगाहि । जिन चामात्रिरशंत्र कीवत्वत कीवन, नत्रत्वत्र-नवन, **এ**दং महनत मन इरतन, छाँहोत **फ**-জত্র কয়ণা ভোতে আমরা নিরম্ভর সম্ভ-রণ করি ৷ ভিনি আমারদিগের থখা-র্থ মঞ্চল বেক্তা এবং পবিত্র সুখ দাতা; তিনি আমারদিগের পিডা মাতা, জা-তা সকল হইতে প্রিয়তর ; তাঁহার সদুশ আমারদিগের প্রিরতম বন্ধু আর কেছই নাই। আমরা তাঁহা হইতে পিতা মাত! প্রভৃতি সুহুদর্গকে লাভ হুরিয়াছি,তিনি আ মার্দিগের পিভার পিভাএবং বন্ধুর বন্ধু হ য়েন৷ এই সংসারের সমস্ত প্রিয়তম ব্য ক্তির সহিত্ত এক সময়ে আমার্চিগের বিচ্ছে-দ হইবে, কিন্তু ভাঁহার সহিত কোন কালেই বিক্ষেদ হইটাকা, ভাঁহার সহিত আমার্দি গের চির সমস্ক। তিনিই স্থামণরদিলের স **ম্পদ, তিনিই আমা**রদিগের সৌভাগ্য, অত এৰ প্ৰীতি পূৰ্ব্বক ভাঁহার প্ৰীতি পূৰ্ণ পৰিত্ৰ আনন দৰ্শন কর এবং তাঁহার প্রিয়কায় **সাধনাথে অবিজ্ঞান্ত যত্ন পা**ও। লোক বা ব্রিপদ ভয়ে,ধন বা যশোপাজ্ঞ ক্লার ব্যাঘাৎ সন্তাবনায়, ঐ সকল গুরুতর কর্তব্য কর্ম সাধনে ভাবি কালকে অপেক্ষা করিয়া কোন মতে ক্ষান্ত থাকিবে না,কারণ আমারদিগের জীবন অতি চঞ্ল, এবং কখন্ কাহার মৃত্য হুইবে তাহার কিছুই স্থির নাই ! পরমেশ্র আমারদিশের উপাস্য এবং প্রীতির পর-मान्भाम, इंहा यथन अजीख इहेरब, उथनहें ह ইতে যাবৎ জীবন তাঁহার উপাসনাতে-তদীয় প্রীতিতে মগ্ন হওয়া উচিত,অদা কল্য ক্রিয়া কাল হর•িক্রা কর্ত্তব্য নছে, কারণ আমারদিগের জীবনের কোন ছিরতা নাই এবং শমন সর্কাদাই পশ্চাতে উপস্থিত আহে। যদি মনুব্যকে আপনার সদৃশ প্রীতি করা এবং যথাসায়্য স্বদেশের উপকার করা कर्डवा कुर्धा कुरम क्रानि,कृदव श्रामात्रविदशत লোভাদি বিপু্নিক্লকে ৰশীভূত করিয়া

এবং স্বার্থপরতাকে বিসজ্জন দিয়া পরের ७ चरमरमत छेशकादार्थ यञ्जकता छेठिछ, লোক বা বিপদ নিন্দা বাজপমান ভট্যে ভাহা-তে ক্ষান্ত পাকা কথনই কৰ্ডব্য নহে ৷ জাবি জীবনের প্রতিনির্ভর পূর্বক উপযুক্ত কাল अञीकात्र विवास कता अनू हिन्छ । जेमादत्र त প্রিয়কার্য্য অথবা জীবনের কর্ত্তব্য কর্ম্ম স• স্পন্ন করিলে যদি আমারদিগকে কোন খো-রতর বিপদে পতিত হইতে হয়, কিয়া কোন গুরুতর চুংখ ও ক্লেশ সহ্য করিতে হয়, ত-খাপি কর্ত্তব্য সাধনে পরাংমুখ হওয়া উচিত নহে, চুঃখ বা বিপদ ভূয়ে কণ্ডব্য কর্ম্ম হইতে বিরত হওয়া কাপুরুবের লক্ষণ। ধৈর্য্যান্ত ধারণ পূর্বাক ছুঃখ ও বিপদের সহিত যুদ্ধ করিতে সসজ্জ হও, কারণ যিনি ইহারদিগের সহিত সম্প্র মুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতে পারেন,ডি-নিই প্রকৃত শুর ৷ আন-দস্ত্রণ পরমেশ্বরেতে প্রীতি কর এবং তাঁহার করুণার প্রতি নির্ভর পূর্বকে নিংশক্ষ হইয়া পরের ও স্বদেশের উপকারে রত হও, কোন মতেই ভীত হইও ন: "আনন্ধঃ ব্লাবেখান্ন বিভেতি ক্দাচন "৷ শুভ কাৰ্ফো কদাপি কাল বিলম্ব করিও না, কারণ আমারদিগের জীবন **অভি** চঞল, এবং কখন্ কাছার মৃত্যু হইবে তা-হার কি**ছুই স্থির নাই!**

--

মহাভারত

আদিপর্ব

বিতীয় অধ্যায়—পর্বসংগ্রহ

১৮ সংখ্যক পত্রিকার ২৩০ পৃষ্ঠের পর

ক্ষিণণ কহিলেন, হে স্ত্তনন্দন! তুমি
যে সমন্ত পঞ্চক তীর্থের উল্লেখ করিয়াছ,
আমরা তাহার স্থান ওকাবিশেষ বিবরণ
জানিতে বাঞ্চা করি ৷ উগ্রস্তাবাং কহিলেন,
হে সাধু আন্ধাণ গণ! আমি সমন্তপঞ্চক
বৃত্তান্ত ও অন্যান্য নাম্প্রিক কথা কীর্তন
করিতেহি, আপনারা ক্রেক্তিক কথা কীর্তন
স্কল্পত্রারি ক্রেক্তিক বিধ কোব্রেক্তিক করিয়া ভূ-

शास्त्रः कवित्रकून धुःम कतित्राहित्नन। সেই অনল তুলা তৈজনী ঋষি নিজ বীৰ্ষো ममल कविश् कृत उद्याम कतिया ममल्य-श्रुटक शक्ष ऋधित हुम करत्रम। आमत्रा শুনিয়াছি, তিনি ক্রোধে অন্ধ হইয়া সেই নেই রুধির হুদে রুধির দার[্] পিতৃ**লোকে**র তর্পণ ক্রিয়া করেন। 'অনস্তর ঋচীক প্রভৃতি পিড়গণ তাঁহার নিকটে আসিয়া কহিলেন, হে মহাভাগ রাম: আমরা তোমার এই ৰূপ পিতৃভক্তিও বিক্ৰম দৰ্শনে অতিশ্য প্রসন্ন হইয়াছি,ইচ্ছানুরুপ বর প্রার্থনা কর। রাম কহিলেন, হে পিতৃগণ! যদি আপ নারা **আমার প্রতি** প্রসন্ন হইয়া থাকেন ? আমাকে অনুগ্রহ করিতে ইচ্ছা হইয়া ঘাকে, তবে এই বর দেন, যে আমি রোষপরবর্শ হইয়া ক্রিয়কুল সংহার ছারা যে পাপঞ্জ হইয়াছি, যেন তাহা হইতে মুক্ত হই, এবং चामात धहे इन मक्न ठीर्थ बर्ट जुम छल বিখ্যাত হয় ৷ পিতৃগণ যথাপ্রার্থিত বর প্র **पान शूर्वक कमय** विश्वा छ। हाटक निरम করিলেন, তখন তিনি ক্ষান্ত হইলেন ৷

সেই পঞ্চ রূধির চুদের অদূরে যে দেশ আছে তাহাকে পরন পরিত্র সমন্ত্রপঞ্চক কহে। পণ্ডিতেরা কংগন,যে দেশ যে চিষ্ণে চিষ্ণুত, তন্দ্বারাই সে দেশের নাম নির্দ্ধেশ করাউচিত। কলি ও মাপরের অন্তরে সম্ তপঞ্চকে কুরু পাশুর সৈনোর মুক্ক গ্রন্থা ছিল। অন্টাদশ অক্টোহিনী সেনা যুক্কবা সনার সেই ভূদোষ বক্জিত কেত্রে সমা-গত ও সেই স্থানেই নিধন প্রাপ্ত হয়। হে ব্রাক্ষণ গণ! সেই দেশের নামের এই ব্যুৎপত্তি। সে দেশ পরিত্র ও রমনীয়া হে ব্রুত্র পরায়ণ মহর্ষি গণ! উক্ত দেশ বিলো-কে যেরপ বিশ্বাতে সে সমুদায় নিবেদন করি লাম।

ক্ষমিণণ কহিলেন, দে স্থত নক্ষন ! তুমি বে অক্টোহিণী শক্ষ প্রয়োগ কবিলে প্রামর। তাহার যথার্থ অর্থ শ্রাবণের বাসনা করি 1 তোমার অবিদিত কিছুই নাই; অতএব কড পদাতি, কত অর্থ, কত র্থ, ও কত গক্তে

^{*} হিংশা ভের, মিধ্যা প্রস্তৃতি।

এক অকেটিনী হয়, তাহা সৰিশেষ বৰ্ণন কর। উপ্রশ্রেকাঃ কহিলেন; এক রথ, এক গল্প, পাঁচ জন পদাতি, তিন অশ্ব, ইহাতে এক পত্তি হয়; তিন পত্তিতে এক সেনামুখ্য जिन (मनामूर्थ अक खन्ता, जिन खरना अक গণ: তিন গণে এক বাহিনী; তিন বাহি-নীতে এক পৃতনা; তিন পৃতনাতে এক চমু; তিন চমুতে এক অনিকিনী, আর দশ অনী-किमीटच अक अध्याहिनी इस्र। ममुनादस. এক অক্ষোহিনীতে ২:৮৭০ এক বিংশতি স-হক্র অফী শত সপ্ততি সংখ্যক রখ; তাবং मरश्रक शब्द: ১०৯७৫० धक नक नग् मह्य তিন শত পঞ্চাশ জন পদাতি; আর ৬৫৬১০ পঞ্চ যটি সহত্ৰ ছয় শক্ত দশ অশ্ব থাকে ৷ আমি আপনারদিগকে যে অক্টোহ্ণীর কথা ক্ছিয়াছিলান, সংখ্যাতত্ত্ব বেতারা তাহার এইৰূপ সংখ্যা নিৰ্দেশ করিয়াছেন। কৌরব ও পাওবদিগের এই ৰূপ অঠাদশ অকৌ-হিণী সমস্পঞ্চে একত হইয়াছিল; এবং কৌরবদিগকে উপলক্ষ মণ্ড করিয়া, অদ্ভূত শক্তিকাল প্রভাবে সেই স্থানেই নিধন প্রাপ্ত হয়; পরনাক্রবেক্তা ভীন্নদেব দশ দিবস যুদ্ধ करतन। उৎপরে দ্রোণাচার্য্য পাঁচ দিন কুরু সৈন্য রক্ষা করেন। শত্রুষাভী কর্ণ ছুই দিন युक्त करहन। भना व्यक्त पिरम माळ। ७९-পরেই গদা যুক্ত ্রেই দিবসের নিশাগনে चक्यामा. इंडरकी उङ्गणाहार्या जिन करन ারান্দর্শ করিয়া বিশ্বস্তচিত্তে নিজাগত সমস্ত মুধির্জিব সৈন্য সংখ্যর করেন ।

হে পৌনক! আমি আপনকার যজে যে ভারত কার্ত্তন আরম্ভ করিভেছি ব্যাস পিছা গামানু বৈসক্ষাখন জনমেজ মের যজে তাং কার্ত্তন করিছাছিলেন! এই ইভিছা-সের আনভাগে, নছানুভাব নর পতি গণের নুদঃ ও সির্মের সবিস্তর বর্ণনা নিমিন্ত, পৌন্য, পৌলেগম ও আতিক এই তিন পর্ব্ব আছে ৷ এই প্রত্ত বিচিত্র অর্থ, পদ,ও আটি গান এবং বছবিধ আচার নিয়মে পরিপূর্ণ। যেমন, নোকার্থির। এক মাত্র উপায় বোধে বৈরাগ্য অবলয়ন করিয়া থাকেন; সেইকুপ প্রাজনবেরা এক মাত্র ভৌছাস প্রয়ের বিষ্

উপাসনা করেন। যেমন সমুদার জ্ঞাতব্য পদার্থ মধ্যে আছা।এবং সমস্ভ প্রের বস্তু মধ্যে জীবন শ্রেক ; সেইরূপ এই প্রম পরিত্র ইতিহাস সর্ব্ধ শান্ত্র শ্রেক। যেমন আহার ব্যতিবেকে শরীর ধারণের আর উপায় নাই; সেইরূপ এই ইতিহাস গ্রন্থেক্ত কথা ব্যতিরেক ভূমগুলে আর কথানাই। যেমন অভ্যুদরাকাক্ষিক ভূত্যেরা সৎকুলজাত প্র-ভূর সেবা করে; সেইরূপ করিগণ জ্ঞান লাভ বাসনার এই ভারতের সেবা করিয়া থাকেন। যেমন সমুদায় লোকিক ও বৈ-দিক বাক্য স্বর ও ব্যঞ্জনে অর্পত্ত; সেইরূপ এই উৎক্রক্ট ইতিহাস প্রস্থে শ্রেরং সাধনী বৃদ্ধি অর্পতি আছে।

এইক্ষণে আপনারাসেই অশেষ প্রজ্ঞার আকর, সুচারু ৰূপে রচিত, অতকণীয় বিধ-য়ের মীমাংশা যুক্ত,বেদার্থ ভূণিত ভারতাখ্য ইতিহাসের পর্বর সংগ্রহ শ্রবণ করুণ। সর্বর প্রথমে, অনুক্রমণিকা পর্বা; দিতীয় পর সংগ্রন্থ পর্বা; তৎপরে পৌষ্যা, পৌলোম. আন্তীক, ও আদি বংশাবতরণ পর্যন; তৎপ-রে পরমান্ত সম্ভব পর্বা; ডৎস্থাবণে শরী রের রোমাঞ্ছয় ৷ তৎপরে, জত্গৃহ দাহ; তৎপরে হিড়িম্ব বধ; ছৎপরে বক বধ; তৎপরে চৈত্র রথ; তৎপরে ক্রৌপদী স্বয়ধর: তৎপরে বৈবাহিক পর্বা ; তৎপরে বিত্তর। গমন ও রাজ্য লা🖲 পর্বা; তৎপরে অর্জ্রন বনবাস; তৎপরে সুভদা হরণ; সুভদা হর-ণের পর যৌতুকাছরণ পর্বা; তৎপরে ধা গুরদাহ ও ময়দানর দর্শন পর্বব। তৎপরে সভাপকা; তৎপরে মন্ত্রণাপকা; ভৎপরে জরাসন্ধাবধঃ তৎপরে দিগিজয় পর্বা, দিথি-জয়ের পর রাজস্থা পর্বা; তৎপরে অর্ঘান্তি-হরণ; ভৎপরে শিশুপাল বধ; ভৎপরে দ্যুত পর্বা; তৎপরে অনুদ্যুত পর্বা; ডং--পরে অরণ্য পর্বা; তৎপরে কিম্মীর বধ পর্ব্ব; তৎপরে অর্জ্যুনাভিগমন পর্ব্ব; তৎ-পরে কিরাত পর্বা; এই পর্বে মহাদেবের महिल अर्क्कुरन्द्र कुक वर्तिल आरह। उद-পরে ধীমান্ 📆 ঠিরের তীর্থ যাতা পর্বা; তৎপরে জটা ক্রিম পর্বা; তৎপরে যক্ষ-যুক্; তৎপক্তি লাকাভিগমন; তৎপ-

রে নলোপাখ্যান পর্বা; তৎ প্রবণে ধর্মলাড ও করুণ রসের উদয় হয় ৷ তৎপরে পতি-ব্রতা মাহাক্য; তৎপরে প্রমান্ত্রত নাবি-তী মাহাত্ম; তৎপরে নিবাতক্র্বচ মুক্ক; তৎপরে অজগর পর্বা; তৎপরে মার্কণ্ডেয় সমস্যা; তৎপরে ফ্রৌপদী সভ্যভামা সম্বাদঃ তৎপরে ঘোষ যাত্রা; তৎপরে মৃগ ব্বপ্ন; ভৎপরে ব্রীহিদ্রৌণিক; কৎপরে ইন্দ্রছামু পর্বাঃ তংপরে জয়দ্ধ কর্তৃক বন হইতে দ্রৌপদী হরণ; তৎপরে রামোগাখ্যান; তহপরে কুণ্ডলাহরণ; তৎপরে অরণাহর। পর্বা; তৎপরে বিরাট পর্বা; তৎপরে পা-গুর প্রবেশ; তৎপরে সময় পালন; তৎ-পরে ক্চিক ব্ধ; তৎপরে গোগ্রছণ; তৎ পরে অভিমন্যুও উত্তরার বিবাহ পর্বঃ ভৎপরে প্রমান্ত উদ্যোগ পর্বা; ভৎপ-রে সঞ্জয় যাত্রাঃ তৎপরে চিন্তা প্রযুক্ত ধৃত-রাষ্ট্রের জাগরণ; তৎপরে পরমগুছ সনৎ-সুজাত পর্বা; ইহাতে আত্ম জ্ঞানের কথা ষাছে। তৎপরে যান সন্ধি; তৎপরে ভগৰদ্যাত্রা; ভৎপরের মাতলীয়োপাধ্যান; তৎপরে গালব চরিত; তৎপরে সাবিত্রী উপাখ্যান : नामरनरवाशाच्यान : रेवरना-भारतानः जानम्द्याभारतानः उरभरत **ঘোড়শ রাজিক পর্বা; তৎপরে ক্লফের সভ**∂ व्यदिगः उ९ शद्र विष्ठुवाशुक्त भामनः, उ९-পরে কৃষ্ণপ্রত্যাখ্যান ও বিছ্লাপুত্র দর্শন; ভৎপরে সৈন্যোদ্যোগ ও শ্বেতোপাখ্যান ; তৎপরে নহাত্মা কুর্নের বিবাদ; তৎপরে মন্ত্র নিশ্চয় পুর্ব্ধক কার্যা চিন্তন; ভৎপরে সেনাপতি নিয়োগাখ্যান; তৎপরে খেত बामूरमब महाम ; তৎপরে कुङ्ग গা ওব रৈন্য নির্যাণঃ তৎপরে দৈন্য সংখ্যা; তৎপরে অম্বর্ণক উলুক নামক দুতের আগমন; তৎপরে অয়োপাখ্যান; তৎপরে অন্ত ভীগ্রাভিষেক পর্বাঃ তৎপরে জন্ম দ্বীপ সমি-বেশ পর্বা; জংপরে ভূমি পর্বা; তৎপরে ঘীপ বিস্তার কথন পর্বা; তৎপরে ভগবদ্গী-তা পর্ব্ব; তৎপরে ভীয় বঞ্পর্ব্ব; তৎপুরে দ্রোণাভিষেক; তৎপরে সংশ্রহ্ম তৎপরে অভিমন্যু বধ পর্বঃ তৎপ का शर्या; करशरत कराज्य वयः

ঘটোৎকচ বধঃ তৎপরে পরমাস্ত্ত স্থোণ বধ পর্বা: তৎপরে নারায়ণাস্ত্র ত্যাগ পর্বা, তৎপরে কর্ণ পর্ব্ব; তৎপরে শল্য পর্ব্ব্য তৎ-পরে হুদ প্রবেশ; তৎগরে গদা মুদ্ধ পর্যব; তৎপরে অতি বীঙ্কণ দোগ্ডিক পর্বা; তৎ-পরে অতি নিদারুণ এধাক পর্বা; তৎপরে क्रम क्षमानिक शक्तः उरशहत जो विमान পর্বা; তথপরে কুরুবংশীয়দিগের উর্দ্ধদে-হিক ক্রিয়া পর্বা; ভৎপরে ত্রাহ্মণ বেশ ধারি চার্কাক রাক্ষদের নিগ্রহ পর্বা; তৎপরে শান্তি পর্বা: এই পরের রাজধর্মানুশাসন उ व्यानकर्म উक्त इहेनाटह । उद्दर्भरत মোক ধর্ম পর্বা; তৎপরে শুক প্রশ্নাভি গমন; বৃদ্ধ প্রশানুশাসন: ছ্র্রাসার প্রা-তুর্ভার ও মায়। সয়াদ পর্যা; তৎপরে অ:-নুশাসনিক পর্বা; তৎপরে ধীমান্ ভাছোর স্বর্গারোচণ পর্বা; তৎপুরে সর্বা পাপক্ষ্য-কারি অশ্বমেধ পর্যন্ত উৎপরে অধ্যাজ্ বিদ্যা প্রতিপাদক অনুগাতা পর্বা; তৎপরে আশ্রম বাস পর্বা; তৎপরে পুদ্র দর্শন পর্বা; তৎপরে নারদাগমন পর্বা; তৎপরে অতি দারুণ মৌসল পর্বা; তৎপরে মহাপ্র-স্থান; তৎপরে স্বর্গারোহণ পর্ব্ব; তৎপরে থিল নামক ছরিবংশ পর্বা; ভাহাতে বিষ্ণু পর্বা,শিশুস্থ্যা,কণস বুধু, ও প্রমাদ্ভুক ভবিষা পর্বা উক্ত হইয়াছেক মহাত্মা ব্যা-সদেব এই শত পর্বে কীর্ত্তন করিয়াছিলেন; পরুর লোমহর্য পুদ্র উপ্রভাবাঃ নৈমিয়া-तर्गा यथाकरम अधीनम शर्क की ईन करत-ন৷ ভারত সংক্ষেপ ৰূপ পৰা সংগ্রহ উক্ত इट्टा ।

পৌষ্য, পৌলোম, আন্তীক, আদিবংশাবতরণ, সম্ভব, জত্গৃহ, হিড়ির বধ, বক
বব. কৈরবণ, নৌপদা স্থানর, বৈবাহিক,
বিছ্রাগমন, রাজ্যলাভ, অর্জ্যুন বনবাস,
মুভত্রাহরণ, ঘোতুকানমন, ধাওবদাহ, ময়
দর্শন, এই সমস্ভ আদি পর্যের অন্তর্গত ৷
পৌষ্য পর্যের উতদ্ধের মাহান্মা ও গোলোমে ভ্ত বংশ বিস্তার বিশ্ব আছে ৷
আন্তিকি পর্যের সমুদার সর্প কুল ও গরুড়ের
উৎপত্তি, ক্ষীর সমুদ্য মধন, উচ্চঃশ্রবার
ক্ষম, রাজা ক্ষমেজরের সর্প-স্তানুষ্ঠান

क्षिकित उन्छत्रकदश्मीत महा सा मरभव की-र्छन चार्डः। अञ्चव अट्क चर्णव व छाकुल, व्यनः (मा दीत भुक्ष ९ महर्षि देवशास्त्रत উৎপত্তি; দেৱতা গণের অংশাবছরে; সপ্ত গল্পক, পক্ষী, ও অন্য জ্বা নানা জীবের छेद्रद. १२ छत्रष्टत नामानुमारत लाहक ভারতকুল প্রসিদ্ধ হুহুখাছে, ওপঃপরায়ণ कृष मूचित खा श्राटम, छुनात्यत जेतरम, माकु-ह्या शर्फ, छीकात स्वय शहनः शास्त्रग्रक शक्त भएक महाया तमूषिटवत श्रुवक्क म. ७ ভাঁহাত্দিগের স্থাগ্রোহণ, তদ্র তেজো-ভাগ সমষ্টি: ভারোব জন্ম: ভাইর রাজ্য-পরিত্যাগ, পৃক্ষাচ্যাধ্রস্থন, প্রতিজ্ঞা পালন, चीर छाड। हिल्ल्याप्त दक्षा, हिम्ल्याप्त मृज्य बब्दम लाम्छ ज्ञाबः दिक्ति दीरमात রক্ষাওভাঁহাকের জে। প্রতিপাদন; অ্ণীমা গুৰা শাপে ধৰ্মের নুরলোকে উৎপত্তি বর-मान राल देवशायाँनेत छताम कवा धृष्टहा है. পান্ড : পান্ধবদিগের উৎপত্তি আছে।

তুরোধনের বাববাবত থাতা মন্ত্রণা ধীমান্ যুবিভিনের হিতার্থে পথে ভাহাকে ्रमुक्क फावाश विष्ठ्ःतद हिटकाश्ररमण अन्। र विष्ठदेश প्रदाभर्ग खतुक निर्वाणः जानुश्रम পঞ্জপুত্র সহিত নিদ্রিতা নিধাদীর ও পুরেগ-চন নামক সোজের দাস্য বোর অরথে পা-গুর্বাদ্যোর বিভিন্ন কর্মন ও সেই স্থানে म्हावन कीम कर्क्क किष्मि वस ; घटिनेष-क्राइड क्रमः, प्रदा ८७कासि महर्षि सामस्य ব্রুর সক্ষমির ভদীয় আফেশানুবারে এক-স্তান নগারে এপক্ষণ গৃচ্ছে পাণ্ডবদিগের অ-হনতে বাসন বকরাক্ষম ব্য ওতন্দ্রিন ন-গ্রবংশি লোকের বিময় জৌপদী ও ষ্টভূনেদুর জন্ম: ত্রাহ্মণ মুখে তে।পদীর পরমান্ত জন্ম বুজার প্রবণে কে:ভূহলা-कान इहेगा बारमत जनरमन्त्रमाद की-পদা লাভাভিনাৰে স্বয়ার দর্শনার্থে পাও-বদিৰের পাঞ্চাল দেশ থাকা; গঞাতীরে গন্ধবাদ অভারপণকৈ প্রাজয় করিয়া ভালার দহিত মৈতী স্থাপন ও তৎসমীপে তপ্ত; বশিষ্ঠ ও ঔর্ষের উপাধ্যান শ্রেৰণ পূর্মক জাড় সহিত অর্জুনের পাঞ্চালান্তি-মুধ্যেমন; পাঞ্চাল নগরে সমাগত মর্কা

नृপতি সমক্ষে जका एक পূর্বক অর্জুনের দ্রৌপদী লাভ; তদ্বন্ধ কাতকোধ রাজ-शर्वत कदः मना उ कर्तत ज्ञामार्ज्युन कर्ष्क যুক্তে পরাজয়; ভাম ও অর্জুনের তাদৃশ व्यक्षतम् व वाम्यानुष दीर्गामन्दिन शास्त्र दाय कतिया कृष्ण वनवारमञ् उद माक्तादकातार्थ ভার্ববগৃহ গমন; গাঁচ জনের এক ভার্যা ছইবেক, এই নিমিত্ত জ্রপদের বিমর্ব: তত্ত্ পলকে প্ৰমান্ত পঞ্চেলাপাণান কথ-ন: লোপদার দেব বিহিত অমানুষ বিবাহ: **১তরতে টুর পাওব সমীপে বিচ্র প্রের**ণঃ বিস্তরের উপস্থিতি ও কুফ দর্শন: পাওবলি লের গাওব প্রস্ত বাস ও রাজ। জ প্রাপ নারদের আছে।য পঞ্চ এ।তার ছে পদী বিষয়ে নিষম ও প্রতিজ্ঞাং (৪,৭৮) সচিত निक्कारिमाशविके सुविधित मही अधिक व তথা হইতে অন্ত গ্রহণ পুনাক শবণালা ব্রাহ্মধের অপক্ষত গোধেন প্রত্যানখন করি। शृद्ध श्विष्ठानुगारत अध्यानव वनश्यान বনবাস কালে উলুদী নান্য নাগ কলাব স্থিত স্মৃতিমঃ তীধি প্ৰটেন ও ব্জুবাছন জন্ম তপৰি ব্ৰাহ্ম। নালে গ্ৰাহ্মেন প্রাপ্ত পঞ্চ অপ্সরার সাপেয়েণ্ডেন্ট প্রভান তীর্পে কুমেণর সহিত সমানামান চারকাতে কুষ্ণের সন্মতি ক্রমে সুভদ্ন প্রাপ্তি; দৌত্র क्षमानार्श्य क्राक्त शाख्य क्षजागणनान्त्र भद সুভদাগতে মহাতেজাঃ অভিমন্যুর জন্ম: দৌপদার পুরেলাৎপত্তি: রুক ও অর্জুন জল বিহারাথে যমুনাগুমন করিলে তথাক **উ**ज्यात हुक ७ वर्षः **वार्**क्षः **रा**खवनार এবং নয়দানৰ ও ভুজক্ষের অগ্নি দাহ হইতে ब्याक्त : मन्स्रात नामक महर्वित भाकी গতে তনয়োৎপত্তি৷ বছবিষ্ঠ আদি পৰ্যে এই সকল বিষয় বৰ্ণিত আছে ৷ মহ-विवापनाम्य धारे भारता हुई माठ मछविर-শতি অধ্যায় সংখ্যা করিয়া**ছেন ৷ মহাত্মা**-মুনি ইছাতে আট সহস্র স্কাট শক চত্র-শীত শ্লোক কহিয়াছেন।

ষ্ড। নাষক বছ ব্তাত যুক্ত শিতীয় শোলায়ত হইতেহে।

শ্রীজ্ঞাদিগের সভা নির্মাণ; কিন্তর দ-র্শন: দৈবদিনারদ কর্তৃক ইম্রাদি লোক-

পাল সভাবর্ণ রাজস্ব যজারন্ত। জরা मञ्ज दक्षः शितियुक्त निकृत द्राज्यभट्या कृष्ण কর্ত্তক উজার: পাণ্ডবদিগেব দিখিজয়: **छेश्रा**टं,कन लहेशः ताङाणिरशत ताकश्चत মহাদ্রের আগমন: রাজস্থারে এর্থ দান প্রস্তার কালে শিশুপাল বয়ঃ গচ্চে যুগিছি-রের ভাদৃশ ঐশ্বর্যা দর্শনে ছুর্য্যোধনের বিধা न ३ क्रेंब्रा; प्रख्या मध्यप जीमक्र इत्यापिता -প্রাসাণ ভূর্ব্যাধনের ক্রোধাঃ দ্যুক্ত ক্রীড়ার অনুষ্ঠান: দ্যাতকার শকুনি কর্তৃক দ্যুতে মুধিটিরের প্রাজয়; দূতার্ব ময়াপ্রম प्रश्चित्र सुषा क्लोलमीत, महाव्याका वृष्टद्वा है काईक উদ্ধার পা ওবদিধের উদ্ধার দেখিয়া মুখেলগন কর্ত লুনকারে দুভেকীড়ার্থে তা হ প্রিগের আঞ্বান ও প্রাক্তর পূর্বকে বন ্রেন্ব: মহাত্রা দ্বৈপায়ন সভাপরে এই শমপ্র ব্যাপার কঠিন করিয়াছেন। शत्त्र सक्षेत्र अधारा आहा। ছিলেন্ড্রম জনা এই পার্কা ছিস্কত্র পঞ্চ এত একাৰেল গ্লোক আছে জ'নি'বন !

অভপের ভারণ্য নামক তভারে পধা। गराजा। १८ १९५७। रम ध्यकाम कति ल भुउद्दर्शन भएनत सुनिष्ठित्राम् भगन , असूगंड দ্বিজ গণের ভর্ন পেষেণ নির্বাহার্থ বোল্য কুনির উপরেশানু সংরে মহাকা যুর্বিটিরের सूर्यास्त्राप्तनं , स्वया अत्रामाः अञ्चलारः . গুতর। ঠ কর্তৃক ভিত্তবাদি বিষ্ণুরের পরিস্থা গ্যাং পুতরাষ্ট্রপরিভাক বি**ছরের যুবিন্ঠি**র -দি স্মীপ গমন: ५७%। स्ट्रिंड आरम्स्य ७८ হারীপুনরাগমন: কর্ণের পরামর্শ ক্রমে ছৃশাতি ছুর্যোধনের বনশ্ব পা ওব বিনাশ ম-স্ত্রণা; তাহার চুষ্ট অভিপ্রার জানিতে পা-विया याप्त्रव मञ्ज स्थाधममः द्यान कर्नेक **क्र्यगुप्रकाणित वन भ्रमन** निवातणः मूर्वाङ्ड **ंউপাধ্যান: मৈতেয়ের** ধৃভরা**ই** সদ†ে আগনন; মৈতেয়ের শৃতরা ট্রকে উপদেশ कान; रेमटकराञ्ज क्रांका कृत्र्यमध्नटक नाश व्यक्तन ज्ञीनतम् कर्ज्य मध्यातम् किमीत রাক্ষস বধঃ শকুনি ছল পূর্বক দূচভে পা গুর্দিগকে পরাজয় করিয়াছে শুনিয়া রুকি বংশীয় ও পাঞ্চল**দিগের আগমন**; জাত-क्तांथ क्रस्मित्र अर्ज्यून कर्ज्य बाब्युमाः इत्यात নিকট দ্রে:পদীর বিলাপ ও পরিতাপ: क्रःशिक्षा (जोशमीतक क्रायत व्याशाम धानानः, (माच्छा च मारम्ब वर को हैन : क्र**म** वर्ड्क সপুত্রা সুভভার ভারকা নরন; ধৃষ্ট্রাণু ক র্কুক জ্রোপদী ভনয়নিগের পাঞ্চাল 🗝র নয়ন : পা ওক্দিগোর র্মনায় বৈত্রনে আ-বেশ; তথাৰ জৌপনী ও ভানেৰ দহিত যুধি-किरदत करणाश्रकथन : व्यानामावत शाखन স্মাপে আগমন ও যুগিকীরকে এভিছতি নামক বিদ্যাদান (ব্যালের অভয়পুন্র গ্রু भा अविभिद्धां का भाक तब १०५ मा अल लाखारथं महातीर्थ। ऋकंत्रस्य अवन्य क्षाप्त কিরাতেরপি মহাদেবের সাহত যুদ্ধ, 🦫 লিলোকপাল দৰ্শন অস্ত্ৰাহ, অসুদি **কার্থে ই<u>ন্</u>রুলে**কে গমন: প্রাপ্তব রুক্ত।ও প্র-বলে শৃত্রবা**রেট**ুর চিন্তা; গাওরদিশার লক म स्वर्शन सक्ति ब्रह्मम्ब प्रमान , क्वांगा छ मु'ा ষ্ঠিরের বিলাপ ও শরিতাপাং বর্মা ৬০০৮ রসজনক নলোপাখ্যান; দুম্যন্তা ও নাল্ড চারত কার্বন: যুলিজিরের রুহদকে হণ্ডে ष्यकलम्य नामर तिनाः धारु, ४/ इरेन কে লোমশ ঋনির প: গুর'দ্রণ্য নিকটি ড : धमनः वनवामधळ मङ्द्यः '११ अत्रेट् 'व निकते लागमा कड़क स्रावतांत्र कड़्यादत वृक्षाष्ट्र कथनः । अञ्चल वाकालमात् । 🐃 🖺 विनिर्धात छोपी। जिसमान छोर्थन कल -পবিত্রত্ব কাভিন: মহদিলি 👉 কর্ক প্রত कीर्य पाजाः सरायाः भा क्वांन्यात काथगाउ : कुष्ठन द्वा मान भाता करण हेन्स हस हहे কে মুক্তি। গয়াসুরের যজ্ঞ বর্ণা অগতে*ত*। পাশ্যান, ও বাতাপি ভক্ষাস্থান লাভাগে শগক্তা মুনির লোপাযুদ্ধ পারগ্রহ; কৌ-মার ব্রহ্মচারি ঋণ্যশ্রের চরিত কাওন **অতি তেজাস্থ জামনগ্না রামের চারভ কথন** , কার্ডবার্য্য ও কৈহরদির্গের ব্যাবর্থ, এড : **স তীর্থে যতুরংশা**র্দি**গের স**হিত লাভ্রেদি **গের দ**নাগন্য সুক্রারে উপাধ্যান : শহ্যা-তি রাজার মজে চাবন মৃতি কর্ত্ব অ.খনী कुमात यूनरणत सामनीथि कार्या ददनः অ্থিনীকুমারযুগলের অনুগ্রহে চারনের যৌৰৰ প্ৰাণ্ডিঃ দাল্লাতাঃ উপাধ্যানঃ ক্লৱ নামক রাজপুত্রের উপার্যান সমলিক

পুত্ত লাভ বাসনায় দোমক রাজার জন্ত नांगक भूत्कत था। रथ भूर्यक यकानूकान ও শতপুত্ৰ প্ৰাণ্ডিঃ অভূথেক্কট খেনক-পোতে।পাখ্যান : ইক্র ও অ্যার শিবি রা क्वारक धर्म किन्छामाः अकीवरकाशीयानः क्षतक यद्र कर देवशाशिक (श्रष्ठ वस्त्र श्रुख वन्ति) সহিত অফীবক্ত ম্নির বিবাদ; অফীবক্তের বন্দি পরাজয় পূর্বকে সাগর জল মহাপিতার উদ্ধার: ধনকীত ও মহাত্মা রৈভোর উ-পাখ্যান; পাগুর্দিগের গন্ধনাদন যাতা ও নারায়ণাশ্রমে বাস: গলমাদনে অ-বস্থান কালে পুস্পাহরণার্থে দ্রৌপদীর ভীম প্রেরণঃ গমন কালে ভাম কত্তক কদ-লীবন মধ্যক্ত মহাবল হন্মণ্যের দশন : शुक्रभावतभाग्यं कीरमद मत्यावतावभावनः महादल भवाउनान्छ वाक्रम शर्भत ५ मिनियान व्यक्ति प्रकातीय : कमित्यत अविक कीरपद युष्कः प्रोम लाईव अग्रेशमूत स्थानक व्याकारमञ् त्थः द्वाकाः द्वशक्तातु अक्तिप्रमाः भाखव-দিপের অংক্টি যেণের আশ্রামে গমন ও বাসং क्रोभिषीर महात्रा जागरमगटक खेलमाह ख-मानः ভাষের কৈলাসারে। হণ্ড তথায় মণিমান্ প্ততি মহাবল প্রাক্রান্ত যক্ষা-নের সহিত যুক্ত পাণ্ডবদিরোর কুবের স-হিত সমাগম - দিবাজো লাভানন্তর অজ্ঞা নের জ্ঞাত গণের সভিত সমাগম চাইনগা-भूक्रदानि निवास्करह भरवत् । भूरमामा भुक्त के स्थापन प्रितिशत शहिक ब्राह्मी स्वयं गुक्त খেকে, ন কর্ক ভারার দিংগের রাজার প্রাণ २४६ होत इत अज्ञाति अ**ज्ञातित अञ्च ननः** र कर स्थिकार एस्वरि नाइए कर्छ्क उद ८ जिल्लाक । इस्माधिन कहेर्य भा खरापरशब 环 ठवनः पहलबद्ध १४४७ छुना अका ७ বা বি াবল ব্জাগেল কর্ত্ত ভৌন প্রহণ ১ 🕆 এশ বখন প্রদাক যুবিষ্ঠিরের ভামোদ্ধার : मकाष्ट्री भारतवामरशत श्रुमक्वात कामत्रक वाम আগ্রন্থন কাম্যকস্থিত নরত্রেষ্ঠ পাওবলি-*ार पूर्वा*र्वनादर्थ इटकार **व्यागमन**ः मार्क-ে: ব্যাস্থা মাক্তের কর্তৃক বেণপুত্র পূৰ্বাভাৰ ওপাখ্যান কৰিন্ত সরস্বজাু ও তাক্ষ্য ন্ত স্থাদঃ তলনতঃ মহমোপা-श्राम केथन । इत्यमुहरण्या श्राम । पुत्रमा-

রোপাধ্যান ; পভিত্রতার উপাধ্যান ; জ-ঞ্চিরার উপাথ্যানঃ দ্রৌপদী সভাভাষা সমানঃ পাশুবদিগের দৈতবনে পুনরাগমনঃ रचाय याजा। श्रम्भव्यमन कर्ड्क पूर्वााधरमञ् বস্তুন কর্তৃক গদ্ধকা বন্ধন হইতে গুয়েলখনের মোচনঃ যুধিন্তিরের মূগ স্বপ্ন দশ্ন: কাম্যক বনে পুনর্গমন : বছ বিস্তুত ব্রাহক্তেতিক উপাথনে : দুর্বাসার উপা-খ্যান: আজন মধ্য হইতে জয়দ্রথ কর্তৃক (क्वीश्रमी इत्। मकावल मकात्वश खीम क-র্ত্তক জয়দ্রখের পঞ্চশিখাকরণ: বছ বিশ্বত রামায়ণোপাখ্যান যুদ্ধে রাম কন্তৃক রাবন वंशः সাবিজীর উপাখ্যানঃ কুওল ছয় দান ष्टाता हेन्स हहेर्ड कर्दात मृत्युः महस्त है-ক্তের কণকে এক-পুরুষ-ঘাতিনী **ম**ঙি (আন্ত বিশেষ) দান : আর্থেষ উপাধ্যান : ধ (मेंत अभुक्षानुभामनः तृत्र व्यालि श्रुप्तकः পাণ্ডবদিগের পশ্চিম দিক্রেখান ৷ আ-त्रशक शर्का धरे मगण प्रशास की ईड आ-ছে। এই গৰ্মে ছুই শত একোনসপ্তঙি व्यवांग ७ अकामम् महत्म छग मङ क्रीविति. শ্লোক আছে।

বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার

মনুযোর প্রাকৃতি নির্গ ও বাস্থ্য বস্তুর সহিত্য তাহার সমস্ক নিরূপণ

৬৮ গংখাৰ পৰিহাৰ ২২৩ পুঠের পছ
ক্ষণ শ্বর মনুষ্যকে কিব্বপ প্রকৃতি দিয়াছেন, এবং বাছাবস্তার গহিত তা হার বিবিপ শুভকর সমন্ধ নিরূপণ করিয়াছেন,
ভবিষয়ের অনুসন্ধান কর) আবশাক 1
মনুষ্যের ভোতিত প্রকৃতি 1

অন্তি, মাংস. রক্তা, নাড়ী, মতিক প্রস্কৃতি বিবিধ বর ছাল শর্মীর নির্দিত গুইয়াছে ।
তথ সনুদার্কী ভৌতিক-পদার্থ-রচিত ও ভৌতিক নিরনের অর্ধান । অপরাগর জ্বতুপদার্থের নাায় শরারও উচ্চে ভূমি হইতে পতিত হইলে আহত হয়,এবং তামি-সংমুক্ত হইলে দক্ষ হয় ৷ অতথ্য মনুষ্যের সুখ জুংখ জগতের ভৌতিক নির্মের উপর কত নির্দ্ধর জাতের ভৌতিক নির্মের উপর কত নির্দ্ধর

করে. তাহা জানিতে হইলে প্রথমতঃ ভৌ-डिक लमार्थ मञ्चारयत कार्या (मश्रिया छि)-তিক নিয়ম নিরপণ করিছে, হয়: বিতীয়ভঃ भंदीरतत कि क्षकात गठेम, के कि क्षकात नि-রুমে ভাতার কাষা নিকাচ হয়, তাহার সবিশেষ পুঞ্জি কানিতে হল তৃতীয়তঃ ভাছার স্মিত ভৌতিক নিয়মের কি প্রকার जश्या, ठाठातुर्**धैनास्त्रं**ग कदिए क्या। अ <u>মুমদায় অবগভ হুটালে আমবা ভৌতিক</u> নিয়নানুষাণী কার্য: করিখা তদুরি কত উপক্লুত হুইতে পারি ভাহার নিষ্ণয় করিছে 'পালামায়: এবং ভোতিক পদার্থের অনি-াৰ্ঘ শক্তি দারাই বা আমাবদিগৈৰ কত ভাষ হ: আর অহান গ্রুটবাকত ক্লাশর উৎপত্তি হয় তাহণত নির্দারিত করা যাইতে পারে: পশ্চাৎ এবিষয়ের নিস্তাৱিত বিৱৰণ কৰা ম্যাগৱেক,**দম্প,তি** ইয়া निका कान। छेड़िन । य शावने स (फ) फिरु लेक्स पार्ट. जाक कामत रथा निसरम नि গোগ ধবিকে না পাতিলেই ক্ল**ংখাৎপত্তি** एहा चाहा नाहित। नाक बाएक। ट-षु¦दा (लागकड़ा श्रम्भ शाकः, ऋ**द्वा**कि िस्रानः, राष्ट्रभागान्यद काया मन्नामन, हेडाकाव সহক্ত সহজে প্রকার উপকার দর্শিতেছে। ভবে যে অমি ভার। কাকারও গুত দহে কট্-मा मक्सरामा, ना महीत सभा हरोया धान मण হ'ব, অথবা অনা প্রকাব অঞ্জ ঘটনা হয়, ছাল্ল অসাবধানতা প্রযুক্ত ক্টরা থাকে। वल ७ दुक्तिहरू**लना**ज घाटा के समस्य विश् **দৈর নিবা**রণ ফুইড়ে পারে কিনা ভাল বিকেচনা করা ইচিত। এই প্রকার যুক্তি-পরক্ষারা তেমে পর্যালে চেনা করিয়া দেখি লোইছা ধ্রুব জ্ঞান হু ইবে যে প্রনেশ্র মনু-যোর সুখাভিপ্রায়েই সমস্ত ছৌতিক নিসন সংস্থাপন করিয়াছেন, এবং প্রায়েই আমা র্দিগের নিয়ম প্রতিপালনে জ্রটি প্রযুক্ত ছঃখের উৎপত্তি হয়। যদি আমরা বিশ্ব সমাটের সমুদায় ভৌতিক ও অন্যান্য লি-श्रम अভिপालान नमर्थ हरे, जार जुरमान পরম মুখাস্পদ স্বর্গলোক ছইয়া উঠে।

समूरवात भातीतिक श्रक्षा । समूचा भरीती कौर, मुख्यार भातीतिक নির্মের অধীন। পূর্বেই নির্দেশ কর।
গিয়াছে, যে শরীরী বস্তু শরীরান্তর হইতে
উৎপন্ন হয় আহার দারা সন্ধীব থাকে;
এবং ক্রমে ক্রমে তাহার রুদ্ধি হাস, ও জ্জ হব। এই সমুদার দিবর হও নিয়ম সম্পন্ন হইলে সুখোৎপতি হয়, আর তাহান।
হুইলেই তুথে প্টনালন।

अध्यक्षक वीक्र मृति प्रकाल सुन्तव इस् ভবে ভছ্ৰপত্ম শৰীরী বস্তুত সলে দ্লক্ষণ-मन्भन्न हस् स्थात तीरक्षत्र देवलक्ष्या हटेग्यः ভারা হইতে যে বস্তুর উৎপত্তি হয় ডাঃ 🔻 রও বৈলক্ষণ্য বটে। যাহার কোন কোন अमनाक्षत्र चल्क नकी रुवेशहरू, ध्यव तीक র্পত করিলে, তদুৎপর জ্বও তর্থ হংং टीन हरा। यनि कान वीर्यंत समूलाह अ०५ পরিপূর্ণ থাকে, কিন্তু কুন্থানে স্থিতি বা কান ণাস্ত্র স্বাতাহার বাতিক্রম ঘটে, অার हार् मुन्तव क्रथ शहंब्यकु मा क्रेय, थारव हर्त छम्दशन हक भरहक इस मा अद मीर्च काल अक्रीर ३ थार्ज मा। यम् .मा० বিষয়ের এই প্রকার নিয়ম ৷ অংশ সংগদ ব, পীডিত।বস্থার সন্তান হইলে সে দ্যান कथनके कुछ भूषे ए तनिष्ठं कर नाः वहक অংশে কালেই জবংগ্ৰন্ত ও মৃত্যু এটাচন দ ভিত হইয়া অপরাধী পিতা মাক্রীকে শে: কা**কুশ** করিয়া যায়ে!

ষিতীয়তঃ শরীবা জাবদিলের আপে-व्यापन श्रष्टावानुगारा छे०कृष-ऋगष्टिर পরিমিভরপ জল, তাপু, জেলুভি, ও গাদ্য म।मधी, अदर भमाम। अदशक्तिमा करा সমুদার অভিনা মরণা র নিতান্ত আবশ্যক। এই নিয়ম প্রতিপ।লন কারলে দেচের শক্তি ও মনের বুজি সম্দায় সতেজ হয়, শ্রীবের মুখ্তা বোধে চিত্তের স্পৃতি জয়ে, 🚓 व्यक्षःकत्र गर्द्धमः, अकृक्षः शास्त्रः । यञ्जभ । अञ्चलकाल मृह्य । अभूमाप्त अधिमाध ল**জনের ফল।** পশ্চাদুক্ত উদাহর নারং अ**विषय मृश्वर**श कन्यक्षम इहेर्राङ शास्त्र । शृंदर्व आय्रनं छ बीटभत अक मधाद्र श ভিকাগারে উত্তম বাষু স্ঞাবের উপায় ছিল না, এপ্রযুক্ত তথায় যত সন্তান জবিত **ভূমিষ্ঠ হইবার** পর নয় দিনের সংগ্র

হার বন্ধ অংশের মৃত্যু হউছ ? পরে অধ্য ক্ষেত্র কথার উপাদের বায়ু সঞ্চালনের উ-পাচ করে য়া দিলে উক্ত কালের মধ্যে কে-ব্লান-শতি ভাগের এক ভাগে নাতা কাল প্রাপ্রাহটনেচ নাগিল।

ত্তী ৯৩০ শরীরের সমুদায় অঞ্চলগ নিলেন চালনা করা আবিশ্যক। এনিয়ন এতিপালন করিলে শরীর সক্ষদেশ থাকে, এক ৮ এলার সমসেই দেহ জুর্ডি চম্ব, এবং বছরের প্রের আবা উপকার উদ্যাব হুছরা ভঙ্গা, প্রানি বোধ, এবং স্বলো তাসুপ্র ৪ এক স্থানি বাধ, এবং স্থানি ৪ এক স্থানিক ৪ এক স্থানি ৪ এক স্থানিক ৪ এক স্থা

বাজেন দোশর লোক এই তিবিধ শ্বিন্তা নিষ্ম জ্ঞাবিদ্যার চেমা উলাইর দেশর কালে প্রান্তা কালাইর জিলাইর কালা দুর্বা কালাইর জিলাইর কালাইর জিলাইর কালাইর জিলাইর কালাইর জালার কালাইর প্রান্তা কালাইর কালার প্রান্তা কালাই সকলার প্রান্তা কালাই কালার প্রান্তা কালাই কালার প্রান্তা কালাই কালার প্রান্তা কালাই ভালাই কালাই কালাই কালাই ভালাই ভালাই কালাই কালাই ভালাই ভালাই কালাই কালাই ভালাই ভালাই ভালাই ভালাই কালাই ভালাই ভাল

জলদীবিৰ মনুষ্য মতিরিজ আর আন क्खुमिश्राक विष्ट[ा]ट *िल श्रमान करतन नाहे, ক্রিক্ত গোলিলক্তি ৮ জ প্রের স্থিত তাহেপুর-দল প্রেছির এঞাক র সমন্ধ করিয়া দিয়া-্ডন 🙉 ভ্রেম্বনের 🖰 ্রে ভ্রেডে) সন্ম এলপার বিদা বৃত্তে 'উল পার কার্য- বার্যাতী 'খ'পনা : ইচ্ছ অনবর • ্ ভা হার্চের খাদেং ্যত্রী একুত করিয় রাখিতেছেন। সেই পুণ্ প্রেম্মর তাহারবের গাজালাদ। আদাদে অধিবার কোনাল-জ্ঞান জনাম 🥕 ান নাট,কিন্তু ভাছিনিময়ে লোম, শিপ। প্ৰ-হাদি ভারে তাকাংদের শ্রীর আয়েত ও नामा मिक विविधानियात्कामा श्रहरम्बरत्तव ক্ষান মড়িন প্রাক্তাবের প্রই সমস্ত নিমর্শন ্লখিয়া ৫১প নিশ্যা কয়া যুগৈ বহিন্তুত ন্যুদ্ধ যে ডিনি ইফা করিনো সনুষ্ঠের।

বিষয়েও এক্স করিতে পারিতেন যে ভাঁচার শনা কলাদি ভোজা দ্রব্য বিনা আয়োদে উৎপন্ন হইত, 🏰ং ভাঁহার গাত্রাচ্ছাদনও স্বভারতই ভাঁহারী শরীরে জমিতে পারিত: কিন্তু জগদীশর আমারদিগের হিতাভিঞা (सहे जाका करतन नारे) **डाहात १६ अर** ওনীয় অনুমতি আছে হৈ ভূমি ক্ষ্ণ, বীজ न প্র, শাসা ছেদন ও বন্ত্র নিশী। শাদি ব্যতিরেকে কখনত লেকি যাত্র। নিকাত হইবেক ন। ---বিনা পরিশ্রমে কখনই দেছ পুটি হইবারু বিষয় নতে ৷ কিন্তু জগদীশর বেম্ন অয় मसुरु अस रक्ष अमान तुत्रन नीर्हे 🚾 🕻 তৎসম্দায় সম্পাদন বেথ আমার্দিগোর শা-রীরিক গুনামাসক শীক্ত সমূদাং প্রদাম ক্রিরাছেন - বিচুল্চনামুসারে চ'লনাক্রি লেই ভাষাদের ক জি হয়, ও হতুৎ বিষ্ণ ম**নে**র পরিভূস্তি জনো: পুনশ্চ ছিনি শেষন মানস্কি ও শাবীরিক শুজি প্রদান করিছে-ছেন, তণুপযোগ। উ**র্বা**র। ভূমি সমুদায় বিহ স্ততঃ বিস্তার হারিয়া বাখিয়াটেন ও বচ গুণেএপাদক বাঁজ দদল সৃষ্টি কবিয়াছেন ' ভিনি আমাবদিগের ব্চন, শক্তি প্রদান कहिराइण्य, अदिविध अकान तकु दशास প্রেণ্ড[†] ভ্রেটার সৃজ্ঞন করিত দছন, আন্তর্ বুদ্ধিবলৈ জড়ার৷ উত্তরেখন্তম বাছত্র সসন প্রস্তে ক্রিন: শাত নিকারণ ও শোভাবদ্ধন করিতে পারি। প্রমুকারুণিক প্রমেশ্র আমারদিগের অ্যত্র-সম্ভূত সম ইক্রা দিয়াও সকলি দিয়া রাখিরাছেন : আপা-ভঙঃ পশুদিগকে সনুষ্ঠের অপেক্ষা সুখা 🗟 ভাগ্যধর বেথে হও কিন্ধু ने ছিবেছনু: পুর্বক মনুষ্টের কভাব ও বাহা বস্তুতে ভাঁহার উ-প্রেয়াগিতার বিধয় পর্যালোমন করিয়া **मिथितन निक्ता बहेत्य (स.जूब ५८० मनुबाई)** मर्काट छ । अब वज्र यार्क्स विश्व निश्विष्ठ ভাঁচার যে কায়িক ও মান্সিক প্রিশ্রাম ক-রিজে দয়, ভালাতেই চাঁলার এমত মহত্ব হরসাছে। জগণীখন লোকের অম বস্ত্র প্রাজেনের সহিত ভূমির উৎপাদকতা ৩৮ ণের যে প্রকার শুভকর সরস্কানিকপিত করি রাজেন, ভাগতে পৃথিবীর কর্মকন ব্যক্তির। প্রতিখিল কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ পরিশ্রেম করিলেই

সকল লোকের আহার, বার্চার ও স্পশ্টোলোপযোগাঁ গথে ই জবা প্রান্ত জ্ল ।

এক জন ইউরোপায় গাণ্ডিত লগনা কার্যা
দেখিগাছিলেন, যে প্রত্যেক ক্রা ও পুরুষ
প্রতিদিন দখা দও মাত দদি কর্মা বিশোদে
নিযুক্ত পাকে, করে লোক থাতা নির্বাহণ
প্রেমানা সম্পন্ত করে কাক ও পুরোৎপাদক
সমুক্তী প্রতিদ্ধি হার এবং ভাক।
ইংলাদ্ধি ও দরিজালা গুড়িবী হাইতে নির্বাহিত হা

করে দুল্লী প্রান্তি বিশ্বিক বিশ্বিক বিশ্বিক।

করে প্রান্তি বিশ্বিক বিশ্বিক বিশ্বিক।

করে প্রান্তি বিশ্বিক বিশ্বিক বিশ্বিক।

করে প্রান্তি বিশ্বিক বিশ্বিক বিশ্বিক বিশ্বিক।

করে বিশ্বিক বিশ্

নে কৈ কোক কভাৰতঃ দুৰাকি, বারিকের **ক**র্কার ভূমিও উর্বার ক্রিয়াক্তেন অত্ भविधाम **(कार्या)** जिल्ला हर, मूखताह া সইক্প भरत सहसे हैं अरहांकन । अर्था स्र्या কিয়াং এযুক্ত ইলিংশার কোক নত লীন, সু-इसार प्रतिक लिल्डिया अनगर्भ, किन्नु जेन्य ८८८ हिंग के (मान) (के नका कि **कि अहमद**कड़ ভূমি এরপ উঠনে করিবং দিয়াছেম,যে অংশ পরিশ্রেমেই মধিক লালোলপালি হয় : আর हिष्ण (भन्दीय (ला), रात र १ ० **ध्र निर्माद**श ४ व्यक्षिक द्योगमन व्यक्ष्माकान नाये। किन्द्र मीजन ুদ্রেশে ভূমি ক্লম্কার্য, ভালাতে স্নীত ও বী भिष्ठ विदोर्द्दनीयि **व**्यमञ्ज शाहा का का त्माक क्षा क्षा अटमश्र छण्डामण्य लाजिकारक माना मृतीत मित्रा स्था श्रद्धाः 'कर धामकर क्यारण्य ।

তথ্য প্রত্যাদিক দেশে তার দেশীর প্রেতথ্য প্রত্যাদিক, থাকু-পোষক ও প্রভালনাপ্ত বিনেবলোৎপাদক সংলার
উৎপত্তি হর্ষী থাকে। আভান্তিক শীতর
দেশে যে সকল প্রাদ্য সামগ্রী জন্মে,ভদ্মুরে,
উচ্চ দেশায় লোকের কথনই শরার দ্রুর
বাকে না, সেই রূপ অভান্ত উফ দেশোংপত্র কর্যা ছারা শীতল দেশায় লোকের কথ
নই বলাধান হয় না! উত্তর-সমুদ্র-তীর
বন্ত্রী অভান্ত হিনদেশ সমুদান্তে, রা ঐ সম্
ক্রের দ্বাপ বিশেষে বান্যাদি শীনা উৎপন্ন
হয় না; তথাকার লোকেরা কেবল মাণ্স ও
মেদ ভক্ষণ করিয়া প্রাণ ধারধ করে। জগ্ব-

गौगदतत (ए कि व्यान्डम) *(को*शन डाइ) व > ৰ'টীড়, তথ্য যেমৰ কল ফুলাদি জাৰে না, দেইৱণ শীচের প্রভাবে লো**কের** ছা कारक क्रिक कर रः। चार्यकात्रक छैका cमभौत अटनकराबन राज्जि अवार शमन कविशाहिदलयः, जीकातुनिद्शतः विष्ठा-शानः কল, মূল, শৃস্য জেল্ফন প্ৰিছ, গুক্রিন ক্ষেবল মেদ ঘাংস জংহার কবির, পাকিটে ছইম∣ছিল ৷ তীহাবা কহিখাছেৰ জ শ পৰ্ফল মূল মলে ছেদি বিকান বেপিডা **জ**্চা আন্দেকে করিলে দেহ নাজন পাম 🕆 🤈 दक्वल (मार मार्थम अवस्थिते भारतिका १८८६) र तल्यान इश् । ख्राड्य ध्राप्यकावा शद्रमान्हर्गः (कोन्नज्ञ ५ अनिक्रहर्मण कतः) বিষয়ে এই কথাই ব্ল, উচিত, যে তথ্য শস্যাদ সারা দেহ রক্ষাহণ বা বলিণ জিনি সে দেশের লোককে তাত অদান 🌣 इंड्रेस म्। छ १ । और सकता विस-ध्येतार कार्यण , । প্রীরাজ জে অপুস্থার পদাপ্তা, ও মন। क्षांक इत्रम मार्थः क्राक्रांतक्ष्र कार्यक्र मः ব্ধস্থার আচ দের সংস্থান হস : ক কিটি · 新知識 新聞子 (エトラ 取)ット 大年 ゆうご ব্যৱস্থান্ত্ৰ ভাষ্ট, শাংঁজ ক চেন্ন ভাগ্ৰাৰ দিলৈ : আত্রপারেণ সল্ভয়। ভরিত্রবির ১৭ জ্মিতে যব,গোধুন ওজঞুলাদিশ্যন ৮৫ নালন ড , মহা অপ্ৰসাধি হং পদ্ধ ম মাণ্ডৰ আৰু কা ভায়িক শ্ৰম ফল মুল ভক্ষণ কলেকেই ভারভর্যীয় লেটেকং न्त्रीत् सूभ् । सन्त धार्यः, ६५ विवयिष्टिः। মাংস অংহার করিলে অসুত্ত হয়; সার বাঞ্চ **क्षांक्रम क्**रिट्रल 'क्ष'श'गरन्त्र स्वभीच स्वा-কের যেমন ভূষি করেম এমন এবে বিত্র **रहहे नरहा : इ**रद प्रेथा स्मामन स्वाक - १ * **मिनीश त्व**ाक चारणका **प्रस्**व तरहे. ४४४ **অপ্প পরিপ্রমেহ্ কঃ১৮৮ব** স্থেক 🕬 कारकार्या मामधी तम् करीक अपन **हेरताक्रामित्**शद (सम्य अशासक्त ४१,५५७) **শীতম, ত**গার বছতের ক্রমী পুঞ্জী গোমেনট দি পশু জয়ে, আর শন, আপক্ষাকৃত গ **ংগছর, সুভর**াণ মণেস ভারা**দের** *ওলেল* **रामा,** अदश्यार अं. ३। इत्हे कथार 🖰 **লোক সুন্ত শ**রীরে থাকে। কবাশিশর ট

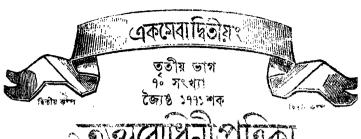
দেশ তদপেকা উক্তর, তথার খেবৰ ক্ষা
লয়ে তেমন পশুপালন হর নাঃ তদনুপারে
ভথাকার লোকে ইংরাজ ত ভালু লোকের
লাপকা অম্প নাংন কাভাব করিবো বাতে
ল ও থাকাব বাজে ৷ প্রেক কন ক্ষা-তব্ধা
পাপত উল্লাননা ক্ষিরা বৈথিরাছিলেন বে
ইংরাকেরা বছ মাংল আলার করে,করালাশেবা ভালার বন্ধ অংশের অধিক অক্ষাকবে না! অভাব কোলাবির বাভা বন্ধা
দেশ্য প্রস্কা নাবীরিক, প্রকৃতির কি মাংকরা প্রস্কা নিজ্পন করিয়া অসাম ভার ও
বিচিত্র ভাক্তি প্রকাশ করিয়া অসাম ভার ও
বিচিত্র ভাক্তি প্রকাশ করিয়াবাছেন!

शृरकाक ममस ब्लाह बादा रेश विमी-পামান প্রকাশ পাইতেছে, যে জনদীশর धन्द्रवाद भावीदिक क्षक्रिक अष्ट महस्र दाञ् वञ्च अभूभाषत्क भन्नण्यत छेशरयांकी कति-वारहन-अञ्चित्राक्ष कारण श्विदीरक मन्-(याद्र त्यांशा अ मनुषात्र भृशियीत त्यांभा क বিষা সৃষ্টি কৰিয়াছেন,এবং ঘাকাতে অঞ্চা-লমা ও শরণীব পোষণ হয়,এবং কদ্ধারা শারী दिक बाय मम्माम डेसड हव, ७४ भएए वं नावका कविथा पिवाटक्ष्या शवटमचत्र यार्।त-निर्भव (ध मंकि अभाग कविषाद्य, कोश-द। छारा পরিপ্রমার্থে নিষোজন কবিবেন, धके की शत्र व्यक्त काय । मनुत्यात मर्था क কোন কথা কৰিবে তাহ' ভাঁহার ইজাবীন वाभियाद्वम । त्कर चुमि धनम कविट्डिट्, क्ष्म व। जब्बि बाह्म क्षतिक्रक, रूक वा দগলানুবালী ভটবা মুখা পশ্চাৰ ধাৰমাল হইতোচা এনিয়ন অবংশাকবিয়া শা-গাসার বলীভাত হইলে মুখা মান্দ্য নিজা हाति, (बीर्खामा, मात्रदेव ଓ महत्रक व्यवजाय, চিব্রোপ ও পরিশেষে অকাল মৃত্যু,এই স-মন্ত্রপ্রভ্যক্ষ শান্তি বংঘটনা হয় ৷ পুনশ্ব পরি-প্রামর অভিনয় চকলে গাতু ক্ষয়, শাবীরি- १ १८ माननिक नामची शौन, कड़का, द्राप्त ७ छायूः कवं स्य। कि चारकारशद्र विस्यः লাকে এই পৰৰ অৱোক্ষনায় নিয়ম এছে मा निर्देश कृष्यामाल नम्भ स्रेटिडाई! ८७१-গাৰ্মত ঐশ্ব্যবান্ ব্যক্তি নকৰ পরিজ্ঞানকৈ पुरुष प्रज्ञान काम कृतिया जानमा श्रेडकी

হুইরা প্রথনোক্ত লাভি নীবুদানা সাথি। হর,
লার কুলিরা দিননাকিরিক পরিক্রান কলে
লেখ্যেক বছকর দ্রেশ কোন করে। প্রক্রান উভারের মধ্যেকটি শেশকী শ্রুবারী করে।
ত । থবা নির্বাধ সমুখ্যে করিকটি নান্দ্র
— অর্থাৎ পরিনিত পরিক্রান কর নান্দ্র
লোই তাহার বিশ্বানী

ा अभिनेत्रामके ।

- ০ মত প্রহণ হোগা দশ জন সভা একম সাংক্রি শ সং দইবেজারা।
- ৪ সভার নিজেপিত সমগ্রাধ অন্ত তথ্ একা মচ্চুরুরণ লোগা দুপ সম সতা একএ তুইবার অধুনি শুপ্তি গভোৱা অংশজা করিবেন আর্ছ পুলা জাল ভার সমতে উপাহিত সম্প্রাক্তি ক্রিক্তির স্থানিক আংশের স্লাল এ ক্রাক্তিক স্থানিক
- विश्वीलयं पेदेर क्या अवर्षेक मन्त्राह विश्वीलयं विश्वीलयं प्रकार दिवान स्थान विश्वीलयं प्रकार दिवान प्रकार विश्वीलयं विश्वीलयं प्रकार विश्वीलयं प्रकार स्थान विश्वीलयं विश्वीलयं विश्वीलयं विश्वालयं प्रकार स्थान विश्वीलयं विश्वेलयं विश्वेलयं विश्वीलयं विश्वेलयं विश्व



তথ্য রোখন প্রার্থকা

ক্ষণরা অনুবোধস্থকীয় না চাতেবোগগুলেন, নিলো তেলোগান্যকাত নিক্ষণ ও ভিন্ত কাছিছচিতি অথ তাতে চন্দ্ৰ কৃষ্টিন্দ্ৰ কিন্তু হৈ

शारशम मः हिटा

প্রথমসগুলস: অফ্রয়ানুবাকে দ্বিতীয়ং সূক্তং

কণ্যাঘা গায়কং ছন্দঃ মরুদ্দেবতা

537

> कीनः तः भएक्षांभाकंण्यनः बार्गः तर्थः छर्जः । कर्गाण्यक्ति अः शोषणः ।

১ কে 'কণুড' কণুগোতে 'মপনাং গ্রহণ 'কা' ব্রু নুধনি 'মার্ক্তম' মকখনসূপ্রপা' 'পার্ড' কল ' আ'ড' আভিতঃ 'প্রধানত' প্রকলে ব্রুলা কিন্তুম্বনার 'ক্রিলা বিশ্বরেশীরেম 'অন্থানিত' ভূপুবার হিত্ত ' ব্রুল' 'ম ক্রাম 'শুভম' শোভ্যানিত:

১ হে কণু গ্লোজোৎপন্ন মহার্য গণ! তো-মরা আপনারনিগোর নিমিত্ত বিহরণনীল,শ-ক্রারহিত, রথে শোভমান, মরুৎ সমূহ ৰূপ প্রবাদ বলকে সর্বতোভাবে স্তব ক্রাঃ

880

২যে পৃষ্ঠীভিশ্ব ফিভিঃ সাকং বাশীভিব্ৰঞ্জিভিঃ। ক্লীযন্ত স্ব ভানবঃ। ে যে 'একডা' পদ গুডিঃ ' গিনুষ্কাভিঃ 'মাক'
তথা ' কটিনিঃ ' আগুলৈ ১০ তথা ' যামীতিঃ কাইছ মত তথা ' অধিকিঃ ' আলভাবতীঃ মত ' অভানতঃ ' ক কিল্টানিং কাঃ 'আভাবতী ইতি সম্পন্ধ তান্ত্ৰী ই শেষঃ।

ং যে মরুকাণ পৃষ্ঠির সহিত, অক্সের দ হিত, বাকেটর সহিত, অলক্ষারের স্থিত দীপ্রিযুক্ত হইরাছিলেন আমরা ভাহারদি গকে স্তব করি।

888

इतेन्त्रभृत्याः कमाइत्खंबु
 यहामान्। नियागिक्वमृक्षरः

্ত 'এমার' মন্দ্র বিষয়ে পুলিলা কলাং 'ছয়তা ভানত্তত হ' হ' হৈ ছুনিও বিধান কলাক দুর্কার ত হানিও বিধান্ত বিধান বিক্রো পুনে পুলোমি নাই কেনিবিশাং যামন্ শংখ্যালে বিধান বিবিধান কো বিশানি বিভাগান 'জাডাডা অলক্ষ্যাতি ।

ত এই মরুকাণের হস্তত্তিত কশা সকল যে ধুনি করে সেই ধুনি এই স্থানে থাকিয়াই আমি শুনি ৷ সেই ধুনি সংগ্রামে বীর্ত্তকে অলস্কৃত করে ৷

880

8 श्र वः भक्षीय पृत्रीय (घ्रमणी-मृश्य श्रिमाती। तम्बद्धः जन्ने गायकः 6 চে অজিজাগের গুরুষারে সংক্রিম শিক্ষার । প্রশাসন্ধানী পুরুষে শিক্ষার গুরুষার । তেওঁ মুল্লার । মালাসন্ধান গুরুষার গুরুষার নালার । প্রশাস গুরুষার প্রশাসন্ধান । প্রশাসনার । ক্রিমান প্রশাসনার । প্রশাসনার । প্রশাসনার ।

8 हम् शक्ति मक्त ! एउँ प्राट्नियंत भम्मी, युक्त महमभीन, भक्त क्रमकाती, मीशामा युक्त, नन्तर यु प्रक्रमण काहात्रनिशक स्वरूप होर नक्ष्य उपन-म कतिया एकावश स्वरूप १४ ।

883

८ अनेश्मा शाष्ट्रीय कीनश्यक्तिमार्किका अन्तर्भा अन्तर्भा अन्तर्भा अन्तर्भा अन्तर्भा अन्तर्भा अनुसर्भा अनुस

বাব্ৰে ৷ ১ ৷ ৩ ৷ ১২ ৷

তিনাদ্য নাজ্য নাজ্য বু চপুলি প্রভৃতি বু সেনুস্থা আনত বিজ্ঞান কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর

৫ পৃশ্লি প্রভৃতি ধেনুতে অবস্থিত, হননা-বোগ্য, ক্রীড়োপেড, মরুৎ সম্বন্ধি, সহনশীল যে তেজ আছে, হে ঋত্মিক্ সকল! সেই তে-জের স্তব কর। গোক্ষীর সম্বন্ধী সেই তেজ উদরে বৃদ্ধি হউক। ১। ৩। ১২।

889

৬ কোবোবর্ষিষ্ঠ আ নরোদিবশ্চ গ্যশ্চ ধৃতয়ঃ। মৎসীমন্ত্রংন ধূনুথ।

ু 'দিবং 'বুচলোকসা 'চ' অন্দা' আৰু ' জুলোকসা 'চ' অন্দা' পুডয়ং' কম্পানকাবিনং চে' নবং 'নেদারঃ মন্তেড' হে' যুক্তাত্ব স্বংশ' আ ' সমঞ্জাৰ 'বহি এং' বৃদ্ধত্বাই 'নহ': 'সৰ 'প্ৰাই 'মীৰ' সন্দাতঃ ' অন্দ' ' বৃদ্ধাত্বাই 'ন' ইব' ধৃন্থ' চালস্থ।

ও হে আকর্ষণশীল মরুকাণ! স্থালোক ও ভুলোকের সর্বতোভাবে কম্পানকারী যে ভোমরা ভোমারদিগের মধ্যে কে প্রবল, যেহেতু ভোমরা সকল বস্তুকে বৃক্ষাগ্রের ন্যায় চালনা কর। 885

१ निर्दाशामीय मान्रियाम्यु-উগ্রাথ মন্যবে। জিহীত পর্বতো গিরিঃ।

৭ তে মূলতঃ মতঃ ভবন্ধাতা। চালিতঃ 'পর্বান্তঃ' ব ত বিপপক বৃকঃ 'গিরিঃ' শিশারঃ 'নিমন্তি' বন্ধেশ আতঃ দেঃ দুজনক 'নামায়' ব্যমন্তিং কলিত 'মানুঃ গৃত্যালি মনুজঃ গৃত্যালি গৈ দুল্ধ কন্তুর 'নি সংপু' লিকিপবান্ কলিত। গৃত্য প্রিপাটিত উল্লেখ্য দ্বান্ত্র ক্রান্তি পাঃ কীলুশার কামান উল্লেখ্য বির্যাধ মন্ত্র ক্রান্তি নাপিং অভিন্যানানা

৭ চে মরুদেবতা প্রকা! যেতেতু ডো-মারদিগের ভয়ানক বেগবিশিষ্ট প্রমন ছারা বহু শৃস্থাক প্রত চালিত হয়, সেই চেতু কোন গৃহত্ব মনুষা তোমার্দিগের প্রমন গৃহত্ব পতন ভয়ে গৃহমধ্যে দৃচত্ব স্বড় নিক্ষেপ করিয়াছে।

88৯

৮ यियाम करमेषु পृथिती कुंट्ट व। इति विन्शिटिः । ভिषा यो स्मिषु त्रकेटिः।

৮ তে মক্তঃ 'ঘেছা\' সুক্ষাক\ ' থাবেবু ' গমৰেবু অঙাহেবু' কেপকেবু সংখু ' পৃথিবী ' ভূমিঃ 'বেলঙে' কম্পতে ' জুবুর্লা ' বংলং (নিরোগাদিনা ঝার্নঃ ' বিশ্ প্রি: প্রশাসকং রাজা ' টব' ' ভিছা' टৈকি স্থাত।

৮ হে মক্লদ্বেতা দকল! তোমার্দি-গের গমন কালে পৃথিবী কম্পিত হয়, যেমন রোগাদি দারা জীর্ব রাজা ঋক্রর ভয়ে ক-ম্পিত হয়।

800

৯ স্থিরং হি জানমেষাং ব-খোমানুর্নিরেতবে। ধৎসীমনু দ্বিতা শবঃ ৯ 'এবাং' মন্তবাং 'জানং' জন্মন্থানং ভালেণ্ড 'ছিরং' চলনর্চিতং 'লি' গল্প 'মানুল' দননী ফুনিয়াং আকাশাং 'ববং' পাজিনং 'নিরেচরে ' 'লেলিং সংগান ভবজীতি শেলঃ ' দন দিয়াং কার্বগান, ' শাবনা শাবলং ' ববং শাবলং কার্বাং কার্বাং নি লা ' লোকনা দ্বাং কার্বাং শিলেজনা দিলেজনা বিচৰ আহা ভবদীদাং জ্ঞান ছিরং হাতি পুর্বভালেগ।

৯ মরুদ্দেবতাদিগের জন্মজান অচল আকাশ, যেহেতু গাহারদিগের বল যথা-ক্রমে সর্ব্ধতোভাবে স্বর্গলোক ও ভূলোক উভয়কে বিভাগ করিয়া রাহ্যাচে। এই আকাশ হইতে প্রক্রি স্কল নির্ভ হইতে সুমুর্ধ হয়।

865

>• উদুত্যে সূনবোগিরঃ কা-গ্রাঅজ্নেষস্তত । বাঞ্চাৰ্ডি-জ্ঞা ফাঠবে ১১ । ২০ ১২০ ।

ত ' নিরং 'বাজং সুন্ধর' উহপাদপাং ' দে' 'পুল প্রকাং মানত: 'অজ্ঞান্ত স্বাধে গুড় মধ্যে গুড় মধ্যে গুড় মধ্যে গুড় মধ্যে গুড় মধ্যে আৰু জিলা আৰু কিন্তু কিন্তু

১০ বাক্যোৎপানক মন্তুদ্দেবতা সকল স্থীয় গমনানন্তর জলকে বিলক্ষণ রূপে বি-স্তীর্ণ করিয়াছেন, এবং বিস্থীণ জলপানাথ হস্মার্থ বিশিষ্ট গোসকলকে সম্ভৱ গমনের নিমিক্ত প্রেরণ করিয়াছেন। ১১৩ ১৩ ১

865

>> छाकिका मीर्घर शृथुर मि-शान शील्यमृथुरा अन्तावयस्त्रियाः यीकः।

১১ 'তাম'তম মেছম 'চিম' অপি 'চা' প্রনিজ্ঞ মকতঃ' যামতিঃ' বভীষণমনৈঃ 'প্রচাবেষত্তি 'প্রক্ষেত্র ধারবিঃ। তীদুলম 'দীর্ঘম' আ্বায়োলেড্ডম 'পূত্রম' ভিন্নাধিক্তম' মিছঃ' সেচনীয়লা জলনা 'ন' পাঙম' পাত্রবিভারম বৃত্তিম অকৃষ্ণমনিত্তির 'অমুধু' কেন:-পাহিম্লাম।

>> দীর্ঘ, বক্রবিস্কৃত, বৃটির অকারক,

অভিণ্যনীয় মেঘকে মরুদ্দেৰতা **প্ৰকল খীয়** গ্ৰন্থ গ্ৰাগ্যন ক্রাইতে**ছেন।**

900

১২ মর্কতোযদ্ধীবোবলং জ-নাং অচুচার্তিন। গ্রিরারচুচ্য বাহন।

১ বে গালকঃ 'বিছ' সঞ্জাহ বারণাহ 'হ' এব গ্রাস্কাকে গ্রেপ 'অতি জন্মতের করেণাহ 'ছলন জনা ব্যালিকঃ অনুচারীটন 'ভ্রেস্টার্কির বের্নত কনা 'বিরীঃ' বিরান্থেজন 'অনুচারীকন' প্রেন্ত মতঃ

> হে মকদেশতা সকল (গেছেতু তো-মারদিশের ক্ষমতা আছে সেই কার্থে তোমরা প্রাণি সকলকে স্বস্থ ব্যাপারে প্রেরদ কর এবং মেঘ সকলকে প্রেরণ কর 1

863

১৩ যদ্ধ যান্তি মক্তঃ সংই ক্র বতেধুনা। শৃণোতি কশ্চিদেধাং।

১০ হিশ্যিক চিল্লিক স্থাক তঃ হিছি তি জানিছ আছেল টা আছেনি হতেল সহত চাস্থী সন্তুল তি আছে শাল কুকতে চিলিক কুইবি চিতি হছে হকত দ্ধানত কিন্দিনি হে চোপি শিকে তি চি

১৯ বর্থন সক্রদেবতা সকল গমন করেন তথ্ন সর্ব্বতোভাবে পথে শব্দ করেন, এই স কল মরুদেবতার শব্দ সকলেই খ্রবণ করে ৷

223

১৪ প্রয়াত শীভ্মাশুভিঃ সম্ভি কর্ণেষু বোদুবঃ। তত্তোষু মাদ-যাধে।

১৪ হে মক্তঃ মূহৎ আন্ততিঃ বৈগগড়িঃ ঋণীবৈর্বা।

হনৈঃ 'লীজং' শীসুৎ 'প্রমাত' প্রকর্মেও কর্মজুমিং ধ্বক্তা। 'কণ্ডেবু' মেধানিবু অনুষ্ঠাতৃত্ব 'বঃ 'মুক্সাকং 'দুবঃ' দুবাংনি পরিচরগানি 'সন্ধি' 'ওত্র' তেমুপ্র-রিচারকেব্ কণ্ডেবু' উবু' এব 'মাদ্যাক্ষৈ 'তৃত্বাঃ ক্তবতা। ১৪ হে মক্লেদেবতা সকল ! তোমরা বেগবান্ স্বীয় বাহন দারা শাঘু কর্মা ভূমিতে গমন কর, অনুহাত৷ কণুদিগের মধ্যে তো-মার পরিচরণ হইতেছে৷ কণুদিগের প্রতি সক্তট হও৷

869

· ১৫ अस्ति हि भा भन्नाय तः य-निभा त्यर्थियाः । तिश्वर हिनाये -की तरम । ১ । ७ । ১৪ ।

১৫ তে মন্তর্ধ বিং বুজনাকং মনাব ' ভূথবে আ আজি: প্রয়ুক্তামানং তবিং 'অন্তি বিদাতে বিংল' বিশ্ব শলু। ' এলাং বুকাকে ' সুভান্তাং বিশা আনিকা' বিক্লামটো ' জানদে জীৱিতুম্ 'বিষ্থ' সন্তি 'আগ্রু' ' চিহ্ম' আপি প্রয়ুম্ভত ১১৪।

১৫ হে মরুদ্দেবতা সকল ! তোমার দি-পের তৃথির নিমিত্ত আমার দিগের কর্ত্ত প্রমুক্তামান হবি আছে, তোমার দিগের ভূতা স্বরূপ আমরা বিদ্যমান আছি ৷ আমার-দিগের বাহিবার নিমিত্ত সকল আংঃ প্রদান কর ৷১৷৩৷১৪৷

বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সন্ধুদ্ধ বিচার

৬৯ দৃংখ্যক পরিকার ২৪ পৃষ্ঠের পর মনুষ্যের মানসিক প্রকৃতি

গত মাংদের পত্রিকার মনুবোর ভৌতিক ও শারীরিক প্রকৃতির বিষয় প্রতিপাদন করা গিরাছে, একদে ভাঁচার নানসিক প্রকৃতিব বিবরণ করা আবর্শ্যক। নানসিক রুক্তি বিবরণ করা আবর্শ্যক। নানসিক রুক্তি পারে, যথা কায়, হিংসা, কুৎপিপাসা, বাবধানতা প্রভৃতি যে সমস্ত প্রস্তি মনুযো প্রং অন্যান্য প্রাণ্ডিও আছে", ভাহার রাম প্রাণ্ডিত যে সমস্ত প্রস্তি কর-

ল মনুষ্যেতেই আছে, তালার নাম নরমান এক প্রতি; আর দর্শন প্রবিণাদি জ্ঞান নেক্রির, এবং উপমিতি, অনুমিতি, পরি-নিত, সংখ্যা প্রত্তি যে সমস্ত র্তি ভারা প্রাধ্বাধ হয়, তালার নাম বুদ্ধির্তি।

জগতের কোন না কোন বন্ধর সহিত প্রাঞ্জ নামসিক রুজির নির্দিষ্ট সমন্ধ আ-ছে। যথন কোন রুজির ক্ষুর্ত্তি থাকে, জ্বন তালার উপজ্ঞোগ্য বিষর প্রাপ্তির অভিনাম হয়, আর তালার ক্ষুর্ত্তি না গাঁকিলেও ততুপুভোগ্য বিষয় উপদ্বিত হইলে ভালার উর্দেশ্য বিষয় উপদ্বিত হইলে ভালার উর্দেশ্য বিষয় উপদ্বিত হইলে ভালার মনের সহিত বাহা বস্তু সমুদায়ের অত্যাক্ষ্য গুভকর সম্বন্ধ নির্দিশ্য ক্ষায় প্রামানে কার্যা আন্মান্ক, ঈশ্বর প্রমাদে তথন ইতা কার্যা আন্মানক, ঈশ্বর প্রমাদে তথন ইতা কার্যা আন্মানক, ঈশ্বর প্রমাদে তথন ইতা কার্যা ক

মানসিক রুত্তি পন্দায়ের পরস্পার শুভা । শুভ সম্বর্গানুসারে বিবিধ**্**শকার সদসৎ কান্যের উৎপত্তি হয়৷ প্রথমতঃ যদি আ नात्रनिरगद जिशक्षे अष्टृष्टि " मकल वृद्धि রতি ওবর্ম-প্রকৃতি সমুদায়ের বিরুদ্ধকারী না হইয়া স্বস্থ ব্যাপারে প্রবৃত্ত থাকে, তবে তাহাকদাণি অন্যায় কার্য্য বলা যায় না. এবং তত্ত্পল সুপ্ত গছিত সুখ নছে। ধন উপাজন করা, পান ভোজন করা,পুজোৎ পাদন হরা, এসমস্ত কার্য্যের প্রবৃত্তি স্বভা-বতঃ কুপ্রবৃত্তি নহে। যথন তাহারা বৃদ্ধি ও ধর্মা-প্রবৃত্তির আয়ন্ত নাপাকিয়া তদ্বিরুদ্ধ পথে সঞ্জন করে, তখনই তাহারদিগকে কুপথমানি বলাঘায়৷ ঘদি কোন বণিক্ ক্রেভার নিকট মিথ্যা-কথন দ্বারা **আপ্রনার** পণ্য বস্তুর দোব গোপন করে, এবং আ রোপিত করিয়া তাহার গুণ ব্যাখ্যা করে, অথবা অন্যান্য বণিকের পণ্য দ্রব্যের নিক্ষা ৰূরে, তবে একৰ্মাকে গাহিত কৰ্ম বলিভে হয়, কাৰণ এ**ন্থলে সে ব্যক্তি ধন-লুক** হইয়া

^{*} প্রকল প্রবৃত্তি রকল স্কন্ততে না^ন, দেবল মনুগোতে ইছার সমুদায়ই আছে।

[&]quot; कार्चा= अर्मनिने**र्ड** अनुष्टि ।

ৰুদ্ধি-বৃত্তি ও মৰ্ম-প্ৰবৃত্তির শাসন অবচেলন **করিলেক ৷** একপ ব্যবহারের কলাকল बिटबहना कतिशा मिथिएन यनि अ क्रुतानश दिनदर्भ हे के लाख हहेरड शारत, किन्ह हत्र- তাছার বিস্তর অনিটোৎপত্তি হয়; कांत्रव (म दांखि मकालत्र निक्रमीत्र 🤫 व्यवि-बेख हम्न, व्यवश्याशीम धर्मा श्रीमा विश्वक मुर्च रक्षिष्ठ इत्। এই रूप এक-धर्मा मङ **হইরা অন্য ধর্মের অভিক্রম করাও** দোব। রাজায়দি বিচার-ভলে দ্য়াসজে হইয়াদ-শুার্ছ ব্যক্তিকে ক্ষমা করেন; ও ধনাচ্য ব্যক্তি कृशास्त्र मान कतिता जानमा वा कुँकर्त्म উৎসাহ প্রদান করেন, অথবা অপারামত राप्त कतिशा नर्वत्र मस्टे कटतमः अवर् याप কেহ দাভিশয় ভক্তি-রস-পরায়ণ হইয়াস-মন্ত কালহরণ **প্রব**াক আর আর কর্ত্তব্য কর্ম সাধনে পরাঙ্ম্থ থাকেন,তবে তাঁহারদের এসমন্ত ব্যবহারকে কখনই সুব্যবহার বলা यात्र ना । वज्रद्धः धर्मा-व्यवृज्ञि ७ दुष्कि-वृज्ञि মুদায় যদি অন্য কোন মানসিক বৃত্তির वक्रकाती का इस. जटव उह्र शत कार्या প্রম শুভক্তিহাব সংশয় নাই৷ পর-মেশর বর্থন আমারদিগকে উপাজ্জ নৈছা দিয়াছেন, তথন উপাক্তনি করা উচিত; যথন কামরিপু দিয়াছেন,তখন জীব-প্রবাহ রক্ষা করে৷ উচিত; যখন জিজীবিধা * দিয়া-ছেন, তথন জীবন রক্ষার যত্ন করা উচিতঃ ধর্ষন বুজুকা † দিয়াছেন, তথন আন পান ষারা দেই রক্ষা করা উচিত; যথন দয়া দি-**ন্ধাছেন, তখন** দরা করা উচিত; যথ**ন** ভক্তি দিয়াছেন, তখন ভক্তি করা উচিত; কিন্তু এক इंच्डित थारत्राकनानुरत्रार्थ जना वृद्धिरक ज-ভিক্রম করা কখনই উচিত নহে ৷ অতএব এইৰপ অবধারণ করা শায় যে যে কাৰ্য্য কোন বৃত্তির অসমত নছে, সেই কার্য্য কর্ত্ত बा। य ऋल कान कार्र्या अक वृज्जित क्ष-রুত্তি থাকে, স্থার স্থন্য কোন বৃত্তি তাহার প্রতিকুল হয়, সেছলে বুদ্ধি-বুদ্ধি ও ধর্ম-প্র-রজির অনুসারী হইদাকর্ম করিবেক,কারণ

चामात्रित्रतंत वृद्धि । धर्म-श्रद्धांशक वृद्धि नयुना हरे नर्वश्रवान । किंद्ध संकरनंत्र सन मनोन नदर, कारात्र अधिक वृक्षि कारात्र अ ষ্পাবৃদ্ধি; কাহারও **অধিক দরা, কাহা**-রও অস্পঞ্জীঃ কাহারও এক রিপু প্রবল, কাহারও অন্যরিপু প্রবল। অভএব যদি মনোর্জি সমুদায় স্ভাবতঃ তেজমি হয়, ও ভাহারদিগের পরস্পর সামঞ্চ্য থাকে, এবং তাহারা বিবিধ প্রকার ভৌতিক ও মা-নসিক বিদ্যানুশীলন ছারা সম্যক্ রূপে মা-জিত হয়,তবে তৎ সম্মত কাৰ্য্যই সৎকাৰ্য। যে স্থলে স্থামারদিগের স্থৃত প্রবৃত্তির সঞ্জ कान धर्म-अवृद्धि का तु।क-वृद्धित विदर्शाध करम, म्हारा दुकि-इंखि ७ धर्म-अइंडिंड व्याधाना चौकात कतिया कमनुषात्री वावहात করিবেক। যিনি এরপ অনুষ্ঠান করেন,তি-নিই সাধু।

আমারদিগের কর্তব্যাকর্ত্তব্য নির্পণ করিতে হইলে মানসিক রুতি সম্দায়ের खनाखन उकार्याकार्यात विषाद करा या-বশ্যক ৷ অত্যে কাম ক্রোধাদি প্রাণিনিষ্ঠ প্রবৃত্তি, এবং তৎপরে দয়া, ভক্তি প্রভৃতি নরমাত্রিক প্রবৃত্তি ও বৃদ্ধি বৃত্তিব বিষয় আ **লোচনা করা যাইবেক । আ**নারদিগের প্রাণিনিষ্ঠ প্রবৃত্তি ও ধর্ম-প্রবৃত্তি এউড়য়ের পরস্পর বিশেষ বিভিন্নতা এই যে কেবল আছারকা ও পরিবারাদি প্রতিপালনই व्यानिमिष्ठं व्यवस्थितं मुथा विषयः, ब्यांत श्रदः रमयद्भारक व्यक्ता श्रृक्तक नाथातरगढ़ रिक **(६क्ट) क**हा भाषात्रिमरशत ममुनास धर्म श्रद् ত্তির প্রয়োজন। তদিশেয পশ্চাৎ দৃষ্ট र्हेर्द । कर्गनीयत आमात्रिपरंत अञ् নানা বিষয়ের ভারাপণ করিয়াছেন,ও নানা প্রকার ভোগের অধিকারী করিয়াছেন. बदः उद्दर्भरगांती शृथक् शृथक् माननिक इंडि প্রদান করিয়া অত্যাশ্চর্যা কৌশল প্রকাশ করিরাছেন। ক্রমে ক্রমে তাহাব বিবরণ করিয়াভাঁহার অপার মহিমাকীর্ত্তন করি-তেছি।

পরমেশ্বর জামারদিগকে স্ব শ্ব জীবন রক্ষার্থে যত্নশীল করিবার নিমিন্ত জিজীবি-যা দিয়াছেন, এবং জীবন রক্ষার নিমিন্ত

[&]quot; মিজীবিযার অর্থ জাবিত থাকিবার ইচ্ছা। ব

रे रिकास्टनद्व वेक्टाः

আম গ্রহণ করা আবিশ্যক, এপ্রযুক্ত রুভূকার সৃতি করিয়াছেন । আমার্দিণের এই উত্তর বৃত্তিই আত্ম সম্বন্ধীর।

কাম,রেহ,ও আসকলিকা " এতিনও আত্ম विषयक । शहरमध्य कीय-ध्यवी तकार्थ ত্রী পুরুষ দ্বিপ্রকার জাতি সৃটি করিয়া তছ্ন-প্रयोगी काम द्रिश्रू मृज्यन कद्रिहारहर्न, भूक्षिया बहुभरवाशी (बह पिसारहन, धवः মিত্র মণ্ডলীর মিত্রভা সম্পাদনার্থে আসঞ্জ-লিকা প্রদান করিয়াছেন। কামের বিষয় ন্ত্ৰী ৰা স্বামী,দ্লেহের বিষয় সন্তান,ও আসঞ্চ-লি**ন্দার বিষয় মিতা। এই সরস্ত বিষ**য় थाश्च रहेरन मरनत जुश्चि करण, नरहरू छू:-ধানুভৰ হয়, কিন্তু ঐ ব্রৌ বা স্বাসি প্রভৃতির कुखां किनाव कहा कामामित धर्म नरहा (व বাক্তিকেবল কাম রিপুর বশীভূত হইয়া জী বা সাণীর প্রতি অনুরাগ প্রকাশ করে, **সে ব্যক্তি নিভান্ত ইঞ্জিন্ন পরায়ণ ও অনুরাগ-**শূনা, ভাহার প্রীতি পাত্রের হিতানুষ্ঠান विषया कथन है यज हम ना। कि हु त्य तथ-मानुतानी वाकि वृक्षि-वृक्ति, উপচিकीर्वा है, 'ন্যায়পরতা ইত্যাদি প্রধান রুক্তি সমুদায়ের বশবন্তী হইয়া চলে, সে ব্যক্তি নিঃস্বার্থ হইয়া স্থাপন প্রেম-পাতের হিত চেন্টাক-রে, এবং তৎকলে অতি অপূর্ব্ধ সুখ সজোগ यि एम विस्मरपत कान रेक्सिय मुवामक गाकि काम अवर्षणीना पूर्व (वो-रना त्रमगीत जनाभाना क्य नावण नकर्मात বিমোহিত হটীয়া তাছার পাণি গ্রাহণ করে, ভবে পরে সে ব্যক্তির অবশাই অনুতাপে ভাগিত হইতে হয়, কারণ যদিও তাহার ৰূপ লাবণ্য মনোহর বটে, কিন্তু ছুশ্চরিত্রা খ্রীর পাণি-গ্রহণ করা আমার্ছিগের বৃদ্ধি রুদ্ধি ওধর্মা-প্রবৃদ্ধির অনুমত নহে। সেছ वभ्रष्टः नहारम चमू द्राश करम, किस नहारमद ওজানুধ্যায়ী হওয়া সেহের বভাবাণীন नरह, त्म स्क्रिक डेशिक विशेष कार्या। পিতা মাতার শ্লেহ যদি বুদ্ধি-বৃদ্ধি ও উপ-চিকীবার আয়ত্ত নাধাকে, তবে ভুরি ভূরি স্থান তাঁহারা আপনারাই স্বীর *সভানের* অনিউকারী হয়েন৷ কন্ত কন্ত বালকের পিতামাতা সাতিশয় পুজানুরাগ ৰশক বিদ্যাভ্যাস শ্রমসাধ্য বলিয়া জাপন পুঞ্জ-কে তাহা হইতে পরাঙ্মুধ রাথেন। নেকে পুত্ৰকে পাপাসক কেবিয়াও ভাহার कुथार्डा विवादन करत्व बा, ७ श्रस्त्र ह-হিড বিচ্ছেদ হওয়া ছংসহ যাতনার বিবয় ভাবিয়া তাহাকে দৃষ্টি-বহির্ভুত করিতে চা-হেন না, এবং অত্যাবশ্যক কার্য্যেও দুরদেশ পমনের অনুমতি প্রদান করেন না। প্রগায় স্নেহ ভারি বিবেশর অন্তঃকরণ আছের ক-রিয়া রাবে । এইৰপ আসক্ষিকা গুণ দারা भिज्ञ लाएक ३ रेक्श रहा। कि छ मिरज इ रे के চিন্তা করা আসকলিন্দার কার্য্য**নচে।যে ব্য**ু জির আসক্ষলিলা ও উপডিক্রীর্যা উভয় রুদ্ধি উত্তম আছে, সেই ব্যক্তিই মিত্রের শুড়া-काणकी रप्र—भिरखंत हःर्प छःथी ७ मिरखंत मूर्य मूर्यो रस, नजुदा त्रज्ञल जामक्लिका भाज शांकित्व रामन अक रमय जना स्मर्वह **সংসর্গে থাকিতে ভাল বাদ্যে** সুইরপ এক মনুষ্য অন্য মনুষ্যের সংস্কৃতির্জীতে পারি লেই চরিতার্থ হয়। যদি ছুই ধনাচ্য মিত্রে র আসকলিপা, আত্মাতিমান, এবং যশঃ न्त्र भार कि कि वृक्षि क्षत्र शांक, बाद ভाष्ट्रन **উপচিকী**र्या ও नगात्रপরতা ना बाटक, তবে ধাবৎ ভাঁহারদের উভয়ের অবস্থার ম্যুনাধিক্য না হয়, তাব্ৎ তাহারদিগের মিত্রতা থাকিতে পারে, কারণ ধনাচা ও সভাত ব্যক্তির সহিত সৌহার্দ্দ পাকাডে **উভ**রেরই আত্মাভিমান রক্ষা পার, ও **য**া স্কৃহাও পূর্ণ হয় : কিন্তু তথাবো বদি এক कम रेमवाथ मञ्जूमहाङ अमहिक्त-मना व्या-প্ত হয়, তবে তাহার সহিত মিত্রতা রা-বিলে অপর ব্যক্তির মান ধাকে না, এবং হীনের সহিত মিত্রতা রাখিংল লোকে हीन दाध कतिरव धहे विरवहनात्र यटमा-বাসনাও সিদ্ধাহর না। সুতরাং ভাহলে অবিলয়েই সুহুদ্ভেদ হইয়া উঠে, এবং ঐ ধনাত্য ব্যক্তি আপনার পুর্বা মিত্র পরিত্যাগ পুরংসর অপর কোন আন্ধ সূতৃশ ব্যক্তিকে মিত্র ৰূপে বরণ করিতে জ্বর্তী হ-

শন্দারা অন্যেতে আসকি রুখে, ভাষার নাম আস-রুক্তিব্লা।

[া] উপকার করিবার ইঞ্।

मरमाद्ध मर्क्समार्थे अध्यकात घरेना च-हिन्ना बाटक, अवर अर्यटम्टम अर्रे आहीन नीषि थां निष्ठ चारह रा विश्रम्-कारल हे সুহৃদ্ভেদ হয়। যেমন বসন্তকালের নব-পল্লব-শোভিত কুসুমিত ভক্ল-শাখা সকল গ্রীয় ঋ-ভুর প্রবল বাযুবেগে ছিল্ল হয়,সেইৰূপ সৌ-ভাগ্য কালের মিত্রতা দৌর্ভাগ্য কালে লয় প্রাপ্ত হয়। বস্তুতঃ এরপ মিত্রতার মূলেই দোৰ থাকে, কারণ স্বার্থ-পরতাই যে মিত্র-ठात्र मृतीकृठ, ऋार्य-शांनि रुरेलारे चका-বভঃ ভাছার ভেদ হইবে, ইলার আশ্রহী कि। यान काजकतिना बन वीक, धर्म कन বারি সেচনে অনুরিত হইয়া মিত্রতা ৰূপ मत्नारत उद्ग उदिशम करत, एरवरे छात्र মুখ স্বৰূপ কুসুম-সৌরছে পরিপূর্ণ হইয়া **हर्जुष्किक् आरंगामिङ क्रिंड शांटक। अर्छा-**দৃশ মিত্ৰতাই যথাৰ্থ মিত্ৰতা!

প্রতিবিধিৎসা* ও জিলাংসা†—সংসারে বিস্তর উৎপাত আছে, ও সকল বিৰয়েরই নানাপ্রকার প্রতিবন্ধক ঘটিয়া থাকে, ভন্নি-বারণার্যে পরমেশ্বর আমারদিগকে প্রতি-বিধিৎসা, অর্থাঋঞতিবিধানের ইচ্ছা প্রদান করিয়াছেন ৷ আততায়ি নিবারণে অপ-রাঙ্মুধ হওয়া, বিপদ্ধারাথে অঞ্চিত্ত চিত্তে যত্ন করা,এবং আর আর অভীষ্ট সা-ধনের প্রতিবন্ধক মোচনার্থে দৃঢ় সাহস প্রকাশ করা, এসমুদায়ই প্রতি বিধিৎসার কার্য্য। জামারদিগের এপ্রকার কোন मत्नावृद्धि ना शांकित्न अ दृःश्यमः मः माद्र बान कर्ता काहात नाथा हरेक? कियाशना ৰুজিও এ পৃথিবীতে সম্ক আৰশ্যক। জি-ষাংসাডেই ক্রোধের উদ্রেক হর,এবং ক্রোধ মারা সনুষ্যের বছতর অভ্যাচার নিবারিভ **ভ্র । অভএব যে পৃথিবীতে ছ**ঃখ ও বিপদ্ **ন্দাছে, যে পৃথিবীতে লোকে পরানিষ্ট চেষ্টা** करत, य शृथिबीएड अक जीरवत्र आशाता-র্বে অন্য জীবের প্রাণ সংহার হয়,ওযে পৃ-বিবীর বছতর শোভা ও সুখ কেবল জন্ম মৃত্যুর উপর নির্ভর করে,জিয়াংসা ও প্রতিবি-া

ধিংসা এই ছাই মনোর্ভি সে পৃথিবীর সমাঞ্ উপযুক্ত হুইয়াছে ৷ যদিও পর ছুংখ মো-চন ও বিপদ্ উদ্ধারার্থে এই উভন্ন র্ভিকে চালনা করা যাইতে পারে, কিন্তু পরের হি-ত্যাভিলায় কর্মজাহাদের কার্য্য নহে, সে কেবল উপচিকী্যারই কার্য্য ৷

নির্ম্মিৎসা—আনার্দিগের দেহ রক্ষণ ও লোক থাতা নিৰ্বাহাৰ্যে গৃহ, বস্ত্ৰ, অস্ত্ৰা-नि विविध क्रदात अस्तासन चारह, किन সংসারে ইহার কিছুই অবত্ব সন্তুত বৃক্ষ, গিরি-গুহা,বা গাত্র লোমের ন্যায় জাপনা হইতে উৎপদ্ধর না। এনিমিত্ত জগদা-শ্বর তৎ-সমুদায় দ্রব্য-নিশ্মাণোপবোগি অ-নেক অকার বস্তু সুজন পূর্ব্বক সর্বাত্র বিস্তার করিয়া রাখিয়াছেন, এবং তবিষয়ে জামা-রদিগের প্রবৃত্তি সঞ্চারণার্থে নির্মিমিৎসা অর্থাৎ নির্মাণের ইচ্ছা প্রদান করিয়াছেন। यथेन वाहिरत मृष्यस्त्राणि जन्मः श प्रवा সমস্তঃ বিস্তু রহিয়াছে, আর অন্তঃকর্তে हेन्हा ७ दुक्ति जाट्ह, उथन मटनाहत्र अद्धा निका, मरहाक करवन्तु, धदः मुरक्षभन-সম্পদ্ধ প্রবল-বেগবান্ বাম্পীয় পৌড কেন ना अञ्चल इरेटव ? अञ्चल वाञ्च वञ्चत्र म-হিত মনের কি আক্র্যা সম্বন্ধ প্রতীত হই (कदह!

কুগোপিযা—জন্তঃকরণে সুভর্দা ছং কড কডভাবের উদর হইতেছে,ওমনে মনে কড শত বিষয়ের মন্ত্রণা করিতে হইতেছে,তাহা বচনাতীত। তাহা কার্য্য কালেই প্রকাশ্দ করা উচিত, নতুবা অসময়ে ব্যক্ত করিলে আপনার ও পরের কার্য্য হানি ও আনিউ ঘটনার সম্ভাবনা। অভ্যব কার্যদির আ মারদিগের কুগোপিযার্ভি অর্থাৎ গোপন করিবার ইছা প্রদান করিয়াছেন।

বিবংসা—পুনং পুনং বাস পরিবর্তন করিলে গার্হত্বা কর্মের সুরীতি রাজশাসনের সুশ্রুলা, আচার ব্যবহারের সুনির্ম, বিশ্যার্দ্ধি, ও সভ্যতার উন্নতি এসমুদার কিছুই হয় না। অতএব পরমেশর আমার্কালকে বিবংসা র্ভি অর্ধাং এক ভামে ভিতি করিবার ইচ্ছা প্রদান করিয়াছেল। কর্মান্তা ব পরম রমনীয় বোধ হয়, তা

প্রতিবিধানের ইক্ষা।

[🕇] सम्बद्धनह देखाः।

कात्र भरे कात्रव । असे जमुनात स्टब्स स्टब्स इंडिटक अत्रम कात्रशिक अंतर कार्यवाद्य कि श्रमां की कोलन स्टब्स शाहर सहस्र ।

আছাদর — প্রশেষর আসারদিগাকে হুকীয় জাবন রক্ষাল বৈলপ জিলীবিলা বৃত্তি প্রদান করিয়াতের, সেইনপ আমারদিগের আয় বৈবরে যত্ন, আয় সোরব,
ও স্থাধীনতার অনুরাগ ইত্যাদি নানা বিবর সম্পাদনার্থে আয়াদর নামক বৃত্তি
কৃতি করিয়াছেন ৷ নির্মিনিৎসা,জুগোপি
না, বিরৎসা ও; জামাদর এ চারি বৃত্তি বে
প্রহিত চেক্তার প্রতি কারণ নহে,ভাহাস্পউই বোধ হইতেহে ৷

- অর্জনস্থা—এই ব্রুত্তি বশতা ধনাধি-कारतब व्यक्तिमान, मक्परस मूच द्वाध. ७ म-ঞিত বিষয় ক্ষানে ছাখে। পতি হয়। अन-দীশর সংসারে বিবিধ প্রকার ভোগ্য সাম-গ্ৰী সৰ্ব্যক্ত বিস্তার করিয়া রাখিয়াছেন, এবং ভৎসমূদায়ের সংগ্রহ নিমিত্ত আমারদিগ-কে এই প্রবৃত্তি প্রদান করিয়াছেন। আ-मात्रिरगत व्यनामा श्रद्धित गात्र व्यन्न-স্থাও ৰচুপকারিণীঃ উপাজ্ঞ নশীল না হ-हेटल मानगील ७ इव्हा यात्र ना। किन्ह স্বভঃ পরে।পকার করা এপ্রবৃত্তির ধর্ম নহে। যে সকল বাণিজা ব্যবসায়ী লোক উপাৰ্জন-ৰাসনা-পর্নশ হুইরা মিত্রতা করে, ভাহা-দের একের কুটিল ব্যবহারে অন্যের উপা-ৰ্জনের ব্যক্তিকা স্বাটিলেই ছৎ শ্বাৎ বিচ্ছে-्रवत्र मक्षां**ह** रहा, अवर अन्त्राम्छ-नक्षांद्रवत् পরিবর্তে অবিলয়ে শাত্রবানল গুলুলিত হ-ইয়া উঠে। ভাহারদিগের মিত্রছা মাজা অর্জনস্পৃহাত্রণ করে দারা এখিত বাকে, য়খন সেই স্থান ক্ষেদ হয়, তথন জার কি প্রকারে তাহারদিগের সৌহার্থ রক্ষা পা-<u>ইতে পারে? ভাহারা অর্থ-লিক্ছ, হইয়া</u> मिजका करत, मुख्ताः काहात सनाका एहे-लाके अनुत्र फल करा। मः महात अध्यकात्र सहेना प्रश्तुर, चिएक्टका स्टाइन पनि পক্ষপ্রাক্ প্রিক্যায় পুরংসর আপনার্ত্তি গের স্থােপ্ত ভাব আলোচনা করিয়া प्राप्त अद्भु अंद्रभाः अधिए शाहित्य स्थ ধনাকাজ্যাই ভাহারদিগের মিলন হইরার

मूनी कृष्ठ काइन, चर्छद्वार तम जाकाका भूने सरेवाद श्रीक्षक्कका परिता त्य वित्क्ष रह, रेश चांछाविक वट्टे! यारादा त्वव-ल ज्ञान क्षेत्र श्रीक्ष जांचना चाता मूच नात्कद्व वाजना करत, जारादानिश्चाद कर्य द्राक्क धरे श्राकाद क्षेत्र मर्वागारे करता !

লোকানুরাগথিয়তা -- আমারদিগের লোকানু রাশ্বশ্বিরভা স্বর্ধাৎ লোকের নিকট অনুরাগ প্রাপ্তির অভিলাব আছে, এবং . लारक अभाग पाता म जिलाव पूर्व করে। জ্লপদীশর অন্তঃকরণের সহিত লোকের এই শুভকর সমন্ধ নিরপিত করিয়া আমারদিগের মশক্ষর কার্যে উৎ-नार दृष्टित नुमन छेशा स्त्रियाद्या । अहे यद्भावाजना वटम. जुनांच भग मयपू रहेशा প্রক্রাপালন করেন, **এস্থকর্তারা কভ**্কভ সদুপদেশ-জনক পরম-ছিত-কর গ্রন্থ রচনা करत्रन, ও धन्याना कर ध्वकात्र वाङि ला-কের হিভার্ষে প্রাণপণ করিয়া চেক্টা করেন ৷ यमिल यमञ्जू कार्या बाद्गा लात्कृत मझरला-মতি হওয়। সমাক্ ৰূপে সঞ্জাবিত বটে, কিন্তু মঞ্চল কামনা করা এর্ডির কার্য্য ৰছে <u>৷ লোকের নিকট সুখ্যাতি</u> ও সমা-मन लाफ्टे अवृष्टित अक माय विवत् ! यथन আমরা মশোভিলাব-পরবশ হইয়া কাহা-ब्रुड हिन्तामुक्तीरम अनुहाशी हरे, ज्यन ला-ক্ষেত্র নিকট সুখ্যাতি-বাদ প্রবণ পূর্বক আত্ম शरकाय लाखरे आवातमध्यत मत्नाशंक शांक । बुद्रश्च यनि का हात्र ३ हिंख कहिएक থেলে তাহার অনুরাগের কটি নম্ভাবনা হয়, তবে যশোণোড়ী ব্যক্তি ভাষা হইডে বির্ত হয়েন৷ বদি স্থানারদিগের কোন আজীয় ব্যক্তি কোন দুব্য কর্ম করে, ভবে व्यामात्रविश्वात्र ने विक्तिको । अ ना मन्द्रका ৰুশতঃ ভাছার দোব ৰপ্রয়াণ করিয়া ভা-হার ছুষ্পার্জি দমন করিতে প্রবৃত্ত হওরা **উচ্চিত । किन्दु यशिष्यामात्रशिद्धात्र द्यारका**-মুদ্রাগ-প্রিয়তা অতি থেবল হয়, এবং উপ-हिकीबीन धर्मा-श्रद्धि काहात निक्षे पत्री-ভুত থাকে, ডবে কি জানি সে ব্যক্তি আ-मात्रिंगरक अभः माना करत, ও আমার-দিগের উপর কোপান্তিত হয়, এই আশ-

'হ্যায় **অ**গমরা তাহার দোব^ত ধণ্ডনে নির্প र्हे, युत्रक जाहात मरस्वाचार्य छक्न मामटक लघ कतिया वर्गना कति। यरभारला छ। কাৰ্য্য যে সাত্ত্বিক নতে ইছা সাধারণ ৰূপে প্রসিদ্ধ আছে! তিনি যদি কোন পুণ্যজ-নক কর্মানুষ্ঠান করেন, আর লোকে জানিতে পারে যে কেবল ঘশোলোভে সে কর্ম্ম করি-তেছেন, তবে তাহারা তঁকুহার প্রতিষ্ঠা করে না। তাহারাকহে অমৃক সাহিক ভাবে একর্ম করে নাই, এবং তজ্জনা তাহার স-माक् कलएकान ७ हरेरव मा। शतम काक्र-ণিক প্রমেশ্বরের কি অনিকাচনীয় মহিমা! মনুষ্য খ্যাতি-লাভ ৰূপ স্বাৰ্থ সাধনে তৎপর হইয়া কার্য্য করে, অথচ তদ্দারা পৃথিবীর অনেকানেক মহোপকার হয়। এমত প-রম সুন্দর কৌশল আর কাছা কর্তৃক উদ্ভা-বিভ হইতে পারে!

সাবধানতা—আমার**দিগের সাবধানতা** বৃত্তি এই রোগ-শোক-ছঃখনরী পৃথিবীর অভাগযুক্ত হুইয়াছে। মানব দেহ অগ্নি-क मक्ष इहेर्छ, श्राह्य, क्याल मध इहेर्छ পারে. প্রহারে ভগ্ন হইতে পারে, স্ত্রান্ত হিম ও প্রচণ্ডরৌদ্রে পীড়িত হইতে পারে. ইত্যাদি বিবিধ প্রকারে আছত ও নষ্ট হ-ইতে পারে; অতএব জগদীশ্ব আমারদি-গকে সাবধানতা গুণ প্রদান করিয়াছেন. এবং তদ্যার।ভাঁহার এই উপদেশ দেওয়া व्हेब्राटक (स 'मना मावधान थाक'। अवे র্ত্তি থাকাতে আমর: ভাবি বিপদ্পতন নিবারণ করিতে পারি, ও আমারদিগের অপরাপর র্ডি সমুদায়কে তদনুকুল ব্যা-পারে নিয়োজন পুরংসর যাহাতে তাহার দের নিয়মাতিক্রম না হয়,এমত যত্ন করিতে शाति । यथन आभातरमत कार्या काँटन কৌন র্ভির আভিশয় হয়, তখন সাবধা-নতাউপস্থিত হইয়া তাহার শমতা করে? যে ব্যক্তির সম্যক্ সাবধানতা না থাকে, ভা-हात शरम शरम खम ७ भूमः भूमः विशम् ঘটনাহয়৷ সাবধানতা মনুষ্যের স্বাভা-**विक ७०१। मू**ज्दार अथम मनुरसाद ७ ०४: ভাব ছিল তাহার সংশয় নাই ৷ অভএব

এইকণকার ন্যায় তৎকালের লোকেরও নানা প্রকার বিপদ্ ঘটনার সম্ভাবনা ছিল : নতবা ভাঁছারদের সাবধানতা গুণ থাকি-বার সমাক্ বৈষধা হয়, ও মানসিক প্রহৃতি ও বাছা বস্তুর, পরস্পার উপযোগি-তাও থাকে না৷ অত গৰ বসুমতী এইক্লণ-कात नाम उथन । प्रश्नानिनी हितन। **সর্বজাতী**য় লোকেরা কহিয়া থাকেন আ-मि जूम अन नित्रक्ति जानम्याम हिन, তথন পৃথিবীতে দ্বংখের লেশও ছিল না, ত খন রোগ, শোক, জরা, মৃত্যুর সঞ্চারও इय नाई। अनकल जाव मन्न क्रिक्ट श तम मृत्थामश क्य नर्छे, किन्दु निहादत काका क्षा शास ना। एथन जिचारमा. - अडिति-धिरता, नावधानका धनमुनास मन्त्रात चा-ভাবিক রৃতি, অর্থাৎ আদা কালের মনুगा-দিগেরও এ সমস্ত গুণ ছিল, তথন ইহা অ-• **বশ্য স্বীকার ক্রিডে** হয় যে **ডৎ**কালেও পশাদি হনন ও আততায়ি নিবারণ করি-वात, अदर विश्रम् छता भावधान इट्रेवाइ अर्गाजन हिल! भारधानटः वृक्ति सनू-स्मृत आश्च मश्ची ठाड्। म्लाफेट्टे वाध इडे-তেছে ৷

रा ममल द्रक्ति मनुषा अ जनामा कर উদরেতেই আছে, তাহার অধিকাংশেরই বিবরণ করা গেল ৷ যাবৎ এই সমুদায়ে বৃত্তি ধর্মা প্রবৃত্তির আয়ত্ত না হয়, তা-द बाब तका. उ बाब मरहामरे मनू-त्यात मनुषात कार्त्यात अत्याजन विवश বোধ থাকে; তাবৎ তিনি পরের শুষ্ঠান্ডি-প্রায়ে কোন কর্ম করেন ন: ১ আমরা এই সমস্তবৃত্তি দার৷ আজারকা 🕏 আলা চিত नाथन कतियं, कशमीयत अहे अधिकारत छा-হারদের সৃষ্টি করিয়াছেন, এবং ভাহার! প্রত্যেকে যদি অন্য অন্য বৃত্তির বিরুদ্ধকারী না হইয়া স্বস্থ ব্যাপারে নিযুক্ত থাকে তবেই পর্ম মঞ্ল স্বরূপের মঞ্লাভিপ্রায় সিদ্ধ হয় ৷ কিন্তু যদি তাহার কোন প্রবৃত্তি বুদ্ধি-वृष्डि ७ धर्मा-धावृष्डि ममूनायतक श्रुताख्य পুরংসর স্বপ্রধান হইরা উঠে, এবং জামা-র**দিগের তাবৎ কর্মের প্রবত্তক স্বরূপ** হয়,

তবে তদ্ধারা বিশ্বর অনিষ্ঠোৎপত্তির মন্তা-বমাঃ একেশীয় লোকের চরিত্র আলো-চনা কবিখা ছেখিলে এবিষরের বিস্তর উদা-লোক-বাতা নি-চরণ প্রাপ্ত হওয়া বায় ৷ কাছাৰ্বে ধন উপাজ্জন করা জাবশাক, এপ্রযুক্ত পর্যেশর জামারুদিগতে উপা:-ক্রনের প্রবৃত্তি অসাম করিয়াছেন; কিন্তু লোকে বুজির হয়েশ ও হর্মের শাসন পরি-জ্যাগ পুরংসর ধনলুক হইয়া চৌষ্য বৃত্তি ও উৎকোট এছনে অবৃত্ত হয়। প্রমেশ্র জীব-প্ৰবাহ বকাৰ্যে কাম ত্ৰিপুত্ৰ বৃজৰ ক-বিয়াছেন; লোকে ভাঁহার এই তাৎপর্য্য **অবচ্ছেদন পূৰ্ব্ধক ডান্ত্ৰ**বন্ধে যথেকীচারী *ছ-*ইয়া পাপ পক্ষের্যা হয়। আমারদিদের ज्याचा मर्यामा त्याप: ज्याचा विवास वजु. ७ স্থাধীনতাতে অনুরাগ সঞ্চার ইত্যাদি বিষ-নিমন্ত পর্যেশ্র আমার্দিগকে আ-স্থানর-বিশিষ্ট করিয়াছেন: এক্ষণকার বি-माकियानी प्रक मण्यु मात्र 🏟 ध्ववृष्टिएक दुष्कि ७ ४८म्प्रेड प्याग्रस्य मा क्लिश विकासरम গৰিছ হইয়া প্ৰাচীৰ লোকদিগাকে অনাদর ও অবঞা করিয়া, থাকে। শরীর পোব-ণার্থে ভোজন শক্তি ও পান শক্তি প্রদান করিরাচেকঃ অবেকে: অপরিমিত: ভোজ-ৰুও ৰাজিশয় মদিরা পাম বারা শাহীত্তিক ও মানসিক নিরম লজানকরিয়া ভয়কাল, निर्देशि, ଓ इष्ट-काम इस, अवर भाभामक হইয়া নালাধিং ফুল্ফ যন্ত্ৰণ ভোগ কৰে, ও অকাল কাৰ্ড্যন্ত প্ৰাপ্ত হৰীয়া কালঞানে। প অভএৰ অপেন প্ৰাৰ্থক ও ৰাজ ডিভ-ছয়-। বন্ধর সহিত তাহার সমজ নিম্পাণ করিলা: অর্থাৎ পরক্ষেত্রের মিরম সমুদার অব্যক্ত इट्डा जम्बूबाही वावकात ना करिए कथमहे ৰুপলান্ড ক্ট্ৰার সম্ভাবনা নাই^লা কেই প-রম পরিভাগ মতক বরণের সুচার সুধাবহ মিম্ছ সৰ্দান্ত অভিপালন কর, ভবে শরীর: मनल ५ मूल्हें वीकिटर, घनः सम् । जीमात्ला-त्सं केळा विकेश्व अध्यक्ष जुनदा विकृषिक वहे-ৰে, এবং হয়টা হইতে জাৰক্ষ প্ৰেটক লাবি-आंख वेहित्क शाकित्य !

ৰিহাভারত

আদিপর্ক দিতীয় অধ্যায়-- পর্কসংগ্রছ ১১ সংখ্যক পরিকার ২০ পঞ্চের পর

হে মুনিগৰ! ক্ষত্ৰপর বছ বিজ ত বিস্তৃত পৰ্ব্ধ প্ৰাৰণ কৰুন। পাশুৰেয়া বিব্বাট নগৰে গমন পূৰ্বক, শ্বাদ্যনে অভিন্সকাও শমীভক দুটিগোচর করিয়া, তাহাতে বস্থ অন্ত স্থা-পন করিলেন এবং নগরে প্রবেশ করিয়া इषा (बर्ट्स बाम कतिहरू नाशिद्यक। ধার **জীনবেন,** দ্রৌপদী সভ্যোগাভিলাবি. কামাজ্য দ্ররান্ধা কীচকের প্রাণ দও:করেন। ब्राक्षा प्रत्यायम शाखनितात बाह्यनगरर्थ **ठककिएक मूठक्क हत्म छनी ८०**१त्व कर्त्रन । ভাহারা মহাস্থা পাওৰদিলের সন্ধান করি-তে পারিল না। প্রথমতঃ ত্রিগর্জেরা বি রাট রাজার গোধন হরণ করে। তাহার-দিবেগর শহিত বিরাটের ঘোরতর যুদ্ধ হয়। ত্রিগর্ডেরা বিক্লাউকে বন্ধন করিয়া লইয়া यादराष्ट्रहरू : जोन कांद्राटक मुक्त करतन। পাওকেরা তিনার্ডদিগকে পরাত্তক করিয় বিরাটের অপহাত গোধন উদ্ধার করিলেন। তৎপরে কৌরতের। তাঁহার গোষন হরণ क्रम्म । व्यक्तिका विकास ममका को तर् দিপকে রবেন পরাজন্ত করিয়া গোখন প্রত্যা-হরণ করিবেন[া] বিরাট রাজা, সুভয়ো-গর্ড সম্ভূত শত্ৰ-হাতী ক্ষতিসমূচে উদ্দেশ ক-क्रिया, कर्क्कनरक मिक कन्या छेख्या मन्त्र -নাম:ক্সিলেম্ব অতি নিজ্যুত বিয়াটানা-बक्ता हर्के नर्का दर्शिक एकेंगर अने भटक भक्षक महामूखि भागा । भागमा सदिसार्यन । ध्याकः नश्याः नरफाः नरफाः कतिरफहि स क्यांन्यानाः अहे नद्भारतारकार वक्षा वक्षां वि-মহত্র পঞ্চাপুর স্থোক কীর্ত্তন করিরাছেন। া ুশ্বভাগর উল্যোগ নামক পশ্বার পর্যা , প্রাক্তর বিভাগ করে। বিভাগ করে। ব উৎপুক হাইয়া উপপ্রব্য: নামক স্থানে অব-क्षिक करेंद्रका. सुदर्गाचम १५ कंप्यून वानुरन्व

[&]quot; आधार अस्तिम्यात महिल दिवाद इहेदक अहे छे-

সন্নিধানে উপস্থিত इटेलन; এবং উভয়েই † आर्थना कतिरलन, '' जुमि अरे यूरक आगा-দের সহায়তা কর "৷ মহামতি রুঞ্জ-উ-खन क्षिएनन, " এक शक्त धक करको विनी সেনা পক্ষান্তরে আনি একাকী। আৰ্মিযুক্ক করিব না, কেবল মন্তি স্বৰূপ থাকিব; ভোমরা ইহার কে কি প্রার্থনা কর ্বল "৷ ছিতাহিত বিজ্ঞানভিজ চুৰ্মতি ত্রয্যোধন সৈন্য আর্থনী করিলেনঃ কিন্ত অর্জুন বৃদ্ধ বিমুখ রুফকে মজিতে বরণ ক-রিলেন। মদ্রাজ শল্য পাওবদিগের সা-हाशार्थ शाहरङ्ख्यान । प्रदेशायन शास 讲ছার দর্শন পাইরা, উপহার প্রদান দারা 🛊 वनीषुष्ठ कतिया, अहे दत आर्थना कतिरलन, " ভুমি আমার সাহায্য কর ?" শল্য অ-ক্লাকার কব্রিয়া পাশুবদিগের নিকট প্রাহান করিলেন অবিং তথার উপস্থিত হইয়া শাস্ত্র-दारका ताका यूपिकितरक रेटक्त वृजामुत জয় রুভান্ত প্রাকণ করাইলেন৷ পাওবেরা কৌরব সমীপে পুরোহিত প্রেরণ করিলে-ন ৷ প্রভাপাবান্ মহারা**জ** ধৃতরাই, পা-শুব প্রেরিভ পুরোহিতের বাকা প্রবিণ ক-রিক্সাশান্তি স্থাপন বাসন্ধয় সঞ্জাতে পা-গুর্বদিগের নিকট দুভ ক্রমণ পাঠাইলেম। ৰা**সুদেবের ও পাওম**দিগের বৃত্তান্ত প্রবণ क्षित्रा िकास वृष्ट्रपार्द्धेस निक्री खान हरे-লা বিছর মহাঞাজ রাজা ধৃতরাইকে बक्छत बद्ध ड हिछवाका द्यावम क्याहेरनम। মহর্ষি সন্ৎসুজাতও, রাজাকে মনভাগা-ছিত ও শোক বিহন্ত দেখিয়া, পরমোৎকৃষ্ট **অধ্যাত্র শান্ত্র-ওনাইলেন** । সঞ্জর প্রভাতে রাজনভার উপদ্তি খুইয়া, ক্ষণ্ড অর্জুন **प्रभाषाण दिशास वर्ष्या कविरासमा। महा-**মতি রুক্ত রূপক্ষাভাজ হইসা,বিয়োগ ভঞ্জন **७ नाडि कालमार्ट, रहिमा भूरत जा**रायम করিলেক। রাজা ছুর্য্যোধন উভন্ন পক্ষের হিতাকাকনী কৃত্তের অনুরোধ রকা করিলেন নাা এই ছলে বড়োছৰ ক্লাজার উপা-थान : महाका माजनिका निक्रमणाएर्थ वदा-श्विष्ण, महर्षि शालरवन्न हिन्ने, अ विश्वनात বপুত্রানুশাসন কীর্তিত আছে৷ ক্লঞ্চ, কর্ন **মুর্য্যোধন প্রভৃতির দুক্ট নজ্ঞা জ্ঞাত হই**য়া

সমস্ত রাজাদিগকৈ সীয় যোগেশ্বরত্ব প্রদর্শন করেলেন। অনস্তর কর্ণকৈ নিজ রথে আ¹-রোহণ করাইয়া তাহার সহিত অংশেষবিধ পরামর্শ করিলেন! কর্ণ গর্কী ক্ষতা প্রযুক্ত তদীয় প্রামর্শ গ্রাহ্ম করিলেন না৷ শক্ত याची क्रम, रखिना रहेर्ड छेशक्षरदा अञा-গমল করিয়া, পা ওবদিগের নিকট আদ্যো পান্ত অবিকল বর্ণনা করিলেন। তাহারা ভৰ্নীয় বাক্য শ্ৰাৰণ করিয়া, হিতাহিত মন্ত্ৰণা पूर्वक, मध्यादमद ममुमाय मञ्जा कदिलन। তদন্তর সমুদায় পদাতি, অশ্ব, রথ, গজ युक्तादर्थ रखिना नगत रहेटछ निर्माण हरेल। রাজা ছুর্ট্যোধন,মহাযুদ্ধারভের পূর্ব্ব দিবলে **डेन्क मामक** अ**क वाखिरक** मोठाकार्या নিযুক্ত করিয়া পাওবদিগের নিকট প্রেরণ क्रिल्म । उर्भात रेमना मरथा।, ७ का-শিরা**জ ছ্হিডা অযার উপাধ্যান।** বছ বৃত্তান্তমুক্ত দক্ষি বিগ্রহ বিশিক উল্পোল নামক ভারতীয় পঞ্চম পর্বা নির্দিষ্ট হইল ! মহর্ষি উদ্যোগ পর্বে এক শত বড়শীতি অ **धारम निर्द्धन क**ब्रिया**रम्**ह्या. थदर १६ ७-পোধন গণ উদারসতি सेंशाचा व्यामत्त्व এই পর্বেষ ঘট্সহত্র, ঘট্শত, অফীনরতি, *स्थाक* রচन। कब्रिय़ाट्डन ।

ष्ण्यः श्रेत प्रस् विशेष शर्य विशेष करें करें करें एउटि । धरें भर्य मुर्थित रेमम प्रश्न हिंदा विभाग प्रश्न हिंदा । प्रश्निक रेमम प्रश्न हिंदा । प्रश्निक रेमम प्रश्न हिंदा । प्रश्निक हिंद । प्रश्निक हिंदा । प्र

^{*} হফিট ; দ ৫ :

করিলেন ! বস্তু বিস্তৃত ভারতীয় ধর্ষ পর্বা কথিত হইল : বেদ বেল: গ্রাস ভী**য়পরের** একশ্রু সঞ্চল অধ্যায় ও পঞ্চ সহস্র, স্ব**ট** শত, চতুরশীতি ক্লোক কর্তিন করিয়া**ছেন!**

তদনত্র বহু রুবা ওযুক্ত, বিচিত্র দ্রোণ পর্বে আর্ম হইতেছে৷ প্রতাপ্রান্মহা-ব্ৰবেক্তা দ্ৰোণাচাৰ্য্য সেনাপতি পদে অভি-বিক্ত হইয়া **ভূ**র্য্যোধনের প্রাক্তার্থে গুভিজ্ঞা कतिरलन ''धीमान् धर्मकाक युविकेत्ररक যুদ্ধে বন্ধ করিয়া আনিব "! সংশওকের। অর্জুনকে রণক্ষেত্র হইতে অপসারিত করে 1 সংগ্রামে শক্ত তুল্য,মহারাজ ভারতত্ত,সুপ্র-তীক নানক স্বীয় হতির পরাক্রমে যুক্তে 🚜 अठि छुर्फ्तर्र ७ *डग्नानक रुदेश: উट्टिन* । अर्् র্জুন ভাঁহার পাণ দণ্ড করেন। জয়দ্রথ প্রভৃতি অনেক মহারথের, একত হইয়া অ-চিপরাক্রান্ত, অপ্রাপ্ত যৌবন, শিশুপ্রায় জভিমনুরে **প্রাণ্বধ করেন। অভিমন্**ছেত र्हेल, अर्ज्जुन क्रुक रहेश नगद मध अ-क्लोहिनी राना मश्हात शुक्तक क्रम्मस्थव জীবন নাশ করেনু ৷ সহাবাছ ভীম ও ম हातथ माराकि त्रोंक: ग'बिटित्त आरम्मा-নুসারে অর্জ্জুনের অত্যেষণার্থ দেবতাদিগেরও অভি ছুৰ্দ্ধ কোৱৰ সৈন্য মডে৷ প্ৰবেশ কবেন ৷ হতাবশিউ সংশপ্তকরা সংগ্র মে নিংশেষ হয়। দ্রোণপর্কে অলমুন, তা-তায়ুঃ, বীৰ্য্যবাৰ, জলসন্ধা, সোমদন্তি, বি-उठि, महादथ ऋपन उ घटिंग ८कटानि छ-नगाना वीदशक्ररपदा निष्ड करसन। क्यांगा-চাৰ্যা দৃদ্ধে নিপাতিত চইলে, অশ্বতামা অমর্থরবশ হইয়া অভি ভয়ক্কর নারায়-ণাস্ত্র প্রয়োগ করেন। এই পর্কে উৎক্র कुछ माहाबा, बाानरमरवत व्यक्ति वदः কুষ্ণ ও অর্জুনের নাহাত্মা কীর্ত্তিত হইয়া-ছে! ভারতের এখনপর্মন উদাহ্রত হইল। क्ता॰ भरके य नकन भद्राकान्ड, भूक्त रक्षेत्र, भृथियी भाग निर्फिष्ठ रहेशारहन, आह मक-लाहे निधन श्राश्च हरतन। जजुमनी नहिर्ध পরাশব স্থনু বিশেব পর্য্যালোচনা করিয়া জোন পৰে এক শত সপ্ততি অধ্যায় ও অই সহ্ত্র, নব শত, নবলোক সংখ্যা করিয়া-ছেন ৷

অতঃপর পরমান্ত্রত কর্ন পর্বা উক্ত হই-ধীমান্ শল্যের সার্থি কার্য্যে নিয়োগ; তিপুর নিপাত বর্ণনঃ প্রস্থান কালে কর্ণ ও শল্যের পরস্পার কলছ ; কর্ণ তিরস্কারার্থ শল্যের হংস কাকীয় উপাখ্যান কথন: মহাত্মা অসম্পামা কর্তৃক পাণ্ডারা-कात वर्ष, उर्पात मखरमन उ मरखत वर्ष। रुर्व धनूर्कत नमएक्कुकर्न महिल रेवतथ " यूरक ধর্মরাজ যুধিষ্ঠিরের প্রায় প্রাণ সংশয় ঘটে৷ যুধিষ্ঠির ও অর্জুনের পরস্পরের প্রতি পরস্পরের কোপ। রুষ্ণ অনুনয় দ্বারা অর্জুনের কোপ শান্তি করিলেনা ভীম প্রতিক্তা পূর্বক রণক্ষেত্রে কুংশাসনের বক্ষা-खन विनीनं कत्रिया उभीत्र भागिक शाम क-(तम । अर्ज्जन देवतथ पुरक्त सकाव करन्त्र প্রাণ সংহার করেন। মহাভারতের অফীয शर्य निर्फिष्ठ इड्ल। कर्न भर्य आकान সপ্ততি অধ্যায় ও চারি সহস্রে, নগশত,চঙ্-**ষটি লোক কীৰ্ত্তিত হইয়াছে** !

অতঃপর বিচিত্র শল্য পরা আরম্ভ হই-(छट्छ। कोत्रव टैमना वीत मुना इहेटल, মদেশর শল্য সেনাপতি হইলেন। শল্য পর্বের যাবদীয় রথ যুদ্ধ ও কৌরব পক্ষীয় व्यथान वीद्रमिट्शद विनाम को खिंच इंहेग्रा-ছে। महाचा यूधिकितत इटल भटनात उ गर्राव राख শकुनित्र श्रीन तथ रुप्ता हु-य्याधन श्रीप्त रेमना अन्त्र माजावनिष्ठ एन-থিয়া হুদ প্রবেশ পূর্ত্তক জলস্তম্ভ করিয়া অব স্থিতি করিতে লাগিলেন ৷ ব্যাধেরাভীন-কে তাহার সন্ধান বলিয়া দিল। অত্যন্ত अकिमानी कूट्याधन, धीमान् धर्महाटजह তিরস্কার বাক্য সহু করিতে না পারিয়াতুদ इट्ट गार्जायान पूर्वक, जीमरमरनत म-হিত গদাবুদ্ধ আরম্ভ করিয়েশন। গদাবুদ্ধ কালে বলরাম তথায় উপস্থিত হইলেন ৷ সরস্বতী দেবী ও অশেষ তীর্ষের পরিত্রত্ব কীৰ্ত্তিৰ ও ভূমুল গদামুদ্ধ বৰ্ণন ৷ ভীম অতি প্রচণ্ড গদাঘাতে যুদ্ধে রাজা ছর্ব্যোধনের উক্ত জ্ঞাকরিলেন। অস্তুত নবস পর্ব নিৰ্দিষ্ট হইলঃ এই পতেল বছ রয়ভায়

শ দুই র্থির পরকার হে মুক্ত হয়।

সক্ষলিত উন্থান্তি অধ্যায় সংখ্যাত হইরাছে।
এক্ষণে শ্লোক সংখ্যা কথিত হইতেছে।
কৌরবদিদেগর কীর্ত্তিক মুনি।তন সহস্র
ছুই শত, বিংশতি শ্লোক রচনা করিয়াছেন!

অতঃপর অভি দারুণ সৌগ্রিক পর্ব্ব বর্ণন कदित। भाषात्वता तगरम्ब इहेर्ड अइन्ह 🚁 दिला भव, क्रूडवर्मा, क्रभ्याचि ७ अप-थामा अहे जिस महातथ मायः कौरल, सवि-রাক্ত সর্বাঙ্গ, ভয়োরু, অভিমানী রাজা क्वायाधानत निक्रे गमन क्विलन । उप-স্থিত হইয়া দেখিলেন, রাজা রণকেতে প-তিত আছেন। দৃঢ়কোৰ নহারথ অৰ্থামা প্রতিজ্ঞা করিলেন," গৃষ্ট্যামু প্রভৃতি সমুদায় পাঞ্চাল ও অমাতা সহিত সমস্ত পাওবদি-গের প্রাণ সংহার ন: করিয়া গাত্র কইতে उन्जान छेन्या हैन कहित ना ।" ताजारक এইৰূপ কছিয়া তিন মহার্থেই তথা হইতে व्यक्तास करेश स्वर्गात्स ममत्य वन मत्या প্রবেশ পূর্দ্দক অভি প্রকাণ্ড বট বিটপিতলে उभविष्ठे इंटरनन ! अध्यक्षामा रुधाय व जिकारन अक (शहकरक यासक कारकत थान हिस्मा कतिएक मिथिया, शिङ्क्य **ऋतर**न কেপোবিষ্ট হট্যা, ভিদ্রায়িত পাঞ্চালদি-र्शात्र श्रीनवध मश्कल्ल कृतिरज्ञन। उनन् সারে শিবির দ্বারে উপন্থিত হইলেন, এবং দেখিলেন, এক বিকটাক'র, অতি প্রকাশু, ভয়ানক রাক্ষস আকাশ পর্যান্ত রোধ ক-রিয়া তথায় অব্স্তি আছে! অশ্থানা यक बद्ध करहान कहिरलन, त्राकम ममुमास ব্যর্থ করিল: তথন তিনি সত্তর মহাদে-বের স্মারাধনা কবিয়া, কৃতবর্মা ও কুপাচা-র্ঘ্যের সহযোগে নিদ্রাগত ধৃষ্টছাম প্রভৃতি পাঞ্চাল ও সপরিবার জৌপদী-নন্দনদিগের वध कतिरामा। क्रास्थत बनासाम अजाव কেবল পঞ্চ পাণ্ডৰ ও সাভ্যকি মাত্ৰ রক্ষা भारेतनः अवनिष्ठे नकत्नरे निधन आश्र इहेल। ध्रेक्कारमुत मात्रवि भाखवनिशस्क স্থাদ দিল "অথপামী নিজাভিভূত পাঞ্চা-लिंग्रिज़ क्षान वध क्रिज़ाट्य "। "ट्योश-দী পুজ-শোকে আৰ্ডা ও পিতৃ আৰত্ বধ अवटन काछता इहेता अनमन मश्कण्य क-

विया अर्थु श्रव मिनिशास छेशविक इ**रेलन।** सङ्गणदाकानु, वीयावान् श्रीमदमन (भ्रीभ-नीत प्रमञ्जूषि मण्यापनादर्थ, उपीव वहमानू-मारद, शमा अहर पूर्व्यक कृषिक हिएक धन्न भू (छत् भन्डाः धान्याम इहेरलम् । असः ক্ষাম। তীমের ভাগে আভিত্তক, রোমপরবন্দ ও দৈব প্রেরিজ ছইমা, · পৃথিব। অপা এবা इन्डेंक '' এडे दलिए। खद्ध 'ह 🕾 व्हतिलन ! কুক্ট " একুপ করিওন'" বলিয়া অধ্যাত मारक निरंपक कदिरायम । भाषाचा अन প্ৰামার এইৰূপ অনিষ্টাচরণে অভিনিৰেশ দেশিয়া, অর্জুন অস্ত্র ভারা সেই অল্লের निराइन कविरलन। अध्यागः हेवशासन প্রাকৃতি প্রস্পর শাপ প্রদান করিলেন। পাণ্ডদের। মহারখ জোণ পুরেত্রর স্থানে মণি গ্রহণ করিয়া হৃতি চিত্তে দ্রৌপদী হস্তে নগ-পিলেন) সোগ্রিক নামক দশম পর্বা উদা-क्रक इंडेल । उद्धिय-८७ का; अक्षतानी, य হাত্মা মূনি দৌপিক পর্ফে অফ্টাদশ অব্যায় ও অফীশত সপ্ততি শ্লোক সংখ্যা কৰিয়া-(इन । क्योंक पक्ष ६३ भटकात चलांक ।

অভঃপর করুণ বসেটেছাংক 🕏 প্রক আর্ত্ত হ্ট্রেছে। এই পর্বে, পুঞ্পোক সম্বয়, প্রস্তাচিক্ত রাজাধৃতরাষ্ট্র মান মনে ভীমসেন প্রাণারর সংকল্প করিলা কৃষ্ণা নীত লৌহময়ী দৃঢ় প্ৰতিম। (ভীম প্ৰাচন্তি) **७**ध करत्ना विश्व अवनान्न विभाग मशक ক্লেরাদ ছারা, শোকালিভুত বীমা**ন্ ধৃত** রাষ্ট্রের সাংসারিক মাছামোহ নিরাকরণ ৬বং ভাঁচাকে আধাদ প্রদান করেন**া** শোকার্ত ধৃতরাষ্ট্র অন্তঃপুরিকাগণ সহিত त्रात्कक पर्मनार्थ शमन करतेन। वीत श्रेषी निरंगत षाठि कंद्रन रिनाश अवर गास्नाती उ ধৃতরান্টের কোপাবেশ ও মোহ। ক্ষত্রি-य नात्री नन यूरक अभवारमूर्य, भक्षक आख পিতা জ্রাতা ও পুক্রদিগকে দেখিতে লাগি-লেন ৷ কৃষ্ণ, পুত্ৰ-পৌত্ৰ-শোককাতকা গান্ধারীর কোপ শান্তি করেন। পরম ধা**র্মিক, মহাগ্রাজ্ন** রাজাযুধিটির শ্রা**শান্ত** ताकामिटशत मतीत मार् कतारे (लाम) (धाक **उर्नन चाइछ इट्टल कुछी कर्नक श्री**य গুঢ়োৎপন্ন পুত্র বলিয়া অঞ্চীকার ও প্রকাশ

বরিলেন । মহর্ষি বাসে এই একাদশ পর্বার রচনা করিয়াছেন। এই পর্বা প্রাবণ ও আ
ধায়ন করিলে, সজ্জনদিগকে শোকে আভিভূত ও অঞ্চ জলে আকুলিত হইতে হয়।
ধীমান বাসদেব স্ত্রী পর্বাে সপ্তবিংশতি অধায় ও সাত শত পঞ্চ সপ্ততি শ্লোক কীর্তান
করিয়াছেন।

ষ্মতঃপর শান্তিপর্ক ; উহার অধ্যয়নে বুদ্ধি কৃষ্ধি হয় ৷ ধর্মারাজ যুক্তির পিত্ आंष् भूस माजून अञ्चि मश्होत कताहै।। गर्भावा कि निर्देश आश रायन। नत-नशाका जीवरणत हाला मूरिशितरक ताक-धर्म लादन कदान। औ प्रकल धर्म छानाछि-लावि दाञ्चगरनद अवना एउसा जैसका শুরুষ কাল ও কারণ প্রদর্শন পূর্ববন্ধ আপ-क्रम की इन करतन। के मक्ल धर्म खरशक हरेक नद प्रकार भारत हो। जनखा विभिन्न स्थापक वर्षा ४ मिति खन्न र । ४ । कि कर्षे-शार्छ। लाक कन ली विश्वन, शारण शर्क बिर्फिक्के रुरेल। इह उत्पाधन गर्। मास्डि পর্কো ক্রিশত উন্চত্যারিংশৎ অধ্যায় আছে कानिर्दर्ग श्रीमान् श्रामत नक्त धरे ारक तक्षण महाया. मख भक, मख स्थाप য়লে করিয়াছেন।

🍙 ছে মহর্ষিণ। ইতার পরেই অভি 🛎-শস্ত অনুশাসন পর্বাজানিবেন৷ কুরুরাজ ्धिकित, आशातिथी शृक्ष छीटबत निक्छे धर्म নিণ্য শ্রবণ করিয়া হত শোক ও স্থির চিত্ত ्यालन । अञ्चलस्य धर्मा ७ व्यर्थत् वनू-कुल रावर्गीय वावराव अनम्बन ; वारमविध मारन्त्र भुषक् भूषक् कल निर्मानः जनमर शाक तिरवकः भान विधि कर्पनः भागत ঁবধি নিৰ্বয়: সভাশ্বৰূপ নিৰূপণ্য গো ভ্ৰাক্ষ-েব মাহায়া কীৰ্ত্তন: **দেশ কালানুসারে** ধর্ম রহস্য মীনাংসাও ভীমা দেবের স্বর্গা-লোচন কীৰ্ত্তন ভাছে। পৰ্যানিৰ্যযুক্ত,বছ ুপ্তান্তালম্বত, অনুশাসন নামক ত্ৰয়োদশ ্কা নিদিনিট হইল। এই পর্কো এক শ্ত · ্ট্চছারিংশং অধ্যার ও **অফ** নহস্র শ্লোক भ•गाण रहेगाइ।

তৎপরে আশ্মেধিক নামক চতুর্দ্দশ পর্মা। সম্বর্জ মৃথিও মহনত রাজার উপা- থানেঃ যুগিকিবের হিমালয়ভিত মবর্রাশি প্রাপ্তি; পরীক্ষিতের জন্ম। পরীক্ষিৎ জালপানার অপ্রান্তে দক্ষ হইয়াছিলেন; কৃষ্ণ পুনর্বার ভাঁহাকে জীবন দান করেন। উৎ এই যজ্যে অব্যাহন কুপিত রাজপুত্র গণের মাহত গুদ্ধ। চিত্রাঙ্গদা পর্ভ সম্ভ নিজ পুত্র বজনার হানে কুপিত রাজপুত্র গণের আন সংশ্র ঘটে। আখনেধ যজাবসানে নকুলের রুভার। পরনাজুত আখনেধিক পর্ব উক্ত হইল। তত্ত্ব দুলী মহার্থি এইপক্ষে এক শত ভিন অব্যায় ও ভিন সহত্ত্ব, ভিন শত বিংশতি শ্লোক নির্দেশ করিয়াছেন।

তৎপরে আশ্রম বাস নামক পঞ্চদশ शर्य जानियम। हाका धृत्रदाड्डे हाका পরিত্যাপ করিয়া বিছুর ও গাঞ্ধারী সমস্ভি ব্যাহারে অরণ্য প্রবেশ পূব্যক ক্ষ্যিদিপের সাতামে বাদ করেন। গুরু শুক্রাণ পরা য়ণা, পতিব্ৰতা কুন্তী,ভাঁছাকে প্ৰস্থান কৰি-তে দেখিয়া পুত্র রাজ্য পরিত্যাগ পুথক जगन्त्रामिनी हरेटलन। ताका प्रतादे गुष् হত, লোকান্তরগত পুত্র পৌত্র গণ ও অ-ন্যান্য পার্থিবদিগকে জীবিত পুনরাগত অ वालाकन कतिरलन। जिनि महर्षि कृषा है। পায়ন প্ৰসাদাৎ এইৰূপ অত্যুৎকুষ্ট আৰু্ৰ্যা সন্দর্শন করিয়া শোক পরিত্যাগ পূর্বক স জ্রীক পরম সিদ্ধি প্রাপ্ত হুইলেন। বিদ্রুত ও মহা<mark>ৰাত্য বিহান্ জিতেন্ত্রিয় গবল্</mark>গণ পুত मध्य धर्म भव भाव्य स्वतिहा महारि भारेलन। धर्मन्नाक मृथिष्ठित नात्रप मन् শ্ন পাইয়া ভাঁহার প্রমুখাত ঘদুবংশীয়দি-भारत कुनकार वार्डी टावन कदिलन। अका ন্তুত আভাম বাসাখ্য পৰ্বে উক্ত হইল। তত্ত্বদৰ্শী ব্যাস এই পৰ্কো দ্বিচত্বাব্লিংশৎ অ-ধ্যায় ও এক সহত্র, পাঁচ শত, ছয় ক্লোক গণনা করিয়াছেন।

হে মহর্ষি গণ। অভঃপর অভি দারুণ মৌষল পর্যা জানিবের। এই পর্যাের এছ শাপ নিগৃহীত পুরুষ শ্রেভ যানবের। আ-পানে সুরাপানে মন্ত ও দৈব প্রেরিভ হইর।

[🗣] व्यक्तात्म छेशविकै एकेश मुहाशान करेत ।

এরকা" রূপি ব্রু ছারা পরস্পর প্রহার ক-রেমা রাম ও কেশব কুলক্ষর করিয়া পা-**রিশেযে উভ**য়ে স**র্বা**সংহারকারি উপস্থিত কালকে অভিক্রম করিলেন না । মরশ্রেষ্ঠ অর্জুন আসিয়া ছারকা যাদব-শূন্য নিরাকণ করিয়া, যথপরোনান্তি বিযাদ ও মনঃপীড়া আপ্ত হইলেন ৷ তিনি আলু নাতৃল না-শ্রেষ্ঠ বসুদেবের সংস্কার করিয়া অন্যান্য প্রধান প্রধান যাদ্রদিগেরও সংস্কৃতি করি-**(मर) अम्छद्र धारका हहेएछ वानक उ** तुष्कितिक अभगविताहारत वहेशा गाहेरछ गारेट विश्वकारन भाखीत्व भवाकता उ দিৰ্যাক্ত সমুদায়ের অপ্রসরতাগ অবলোকন क्रित्लन। अवः यामव त्रमनी मिराव व्यशह-রণ এবং প্রভুত্ব ও ঐশর্যোর স্থানিত্যতা দর্শনে **নাতিশ্য নির্কেদ** প্রাপ্ত হইয়া ধর্মারকে সন্ধিথানে প্রত্যাগমন পুরুক সন্ধ্যাসাব্লয়-নের বাসনা করিলেন ৷ মৌধল নামক বোড়শ পর্বা পরিকীর্ত্তিত হুইল। তত্ত্বদার্শ ছৈপায়ন এই পৰ্ফে আটে অধ্যায়ণ্ড তিন শত বিংশতি লোক সংখ্যা করিয়াছেন।

তৎপরে মতা প্রস্থাবিক নামক মপ্তদশ পর্ব জানিবেন ৷ এই পর্বের, পুরুগজ্ঞেত পাওবেরা রাজা পরিভাগে করিয়া ক্রেপটা দেবী সমভিব্যাহাবে নতাপ্রস্থান গমন করেন ৷ তাঁহারা লৌহিত্যগাক্রির ভাত করিবলেন ৷ স্বান্ধ্র সাক্ষাৎকার লাভ করিবলেন ৷ স্বান্ধর মহাআ অগ্রির আদেশা নুসারের, পূজা পূর্বক তাঁহাকে সর্ব্ব পর্বান্ধ ভাত্তাল ও ক্রেপদীকে নিপ্তিত ও নিধন প্রাপ্ত দেখিয়া তাহারদিপের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া নায়া পরিতাগে পূর্বক প্রান্ধ করিলেন ৷ মহাপ্রস্থানক নামক সপ্তবান করিলেন ৷ মহাপ্রস্থানক নামক সপ্তবান করিলেন ৷ মহাপ্রস্থানক নামক সপ্তবান পর্বা নির্দ্ধি কইল ৷ তজুদশা প্রি

এট প্রায় তিন অধ্যায় ও তিন^ত শত বিংশ-ডি প্লোক নিরূপণ করিয়াছেন !

তৎপৰে আলেকিক অজ্যাশ্ৰহা সূৰ্ম-शक्त । महान्याक भवाताज. महाप्र क्रमहाजा প্রযুক্ত, স্বসমভিক্যহারি **কৃক্তুর বাতিরেকে** দেবলোকাগাত দিবারত্থ আরেবাছণ করিতে সম্ভাত কটালেন ন: 🕒 পি, মহাতা| যুগি**তি**-বের এই রূপ অবিচলিত ধর্মা নিষ্ঠা দর্শনে পরম প্রীত হইয়া, ক্রের কপ পরিত্যাগ পূৰ্বক ভাষাকে দৰ্ম দেলেন্। দ্ধিষ্ঠির তৎসমভিব্যাহালে স্বর্গারেণ্ডণ কলিলেন্ দেবদুত ছল ক্রমে উংহাকে নর্জ দর্শন করাইল। ধর্মান্যা সুবিষ্ঠিন সেই স্থানে অবস্থিত আছনানুগর্বি ভাতগণের কাষর मक खादन कतिरमञ् । भन्म ५ हेम्ब डॉटरत কোভ নিৱাকরণ কবিলেন। অনুভ্রত প্রত রাজ যুধিষ্ঠির আকাশ গঙ্গায় অব্ধাচন করিয়া নান্ব দেহ প্রিত্যাগ পূর্ক্ক, প্রে স্ধৰ্মাজিল ক কুনন প্ৰাপ্ত হইয়া, ইনে।দি দেবগণ সমভিবাহিখনে প্রমাদ্রে প্রমা-बत्न व्यविष्टिक कदिएक लागिएनव। नीयान বাসদেৰ প্রোক্ত বর্গারোক্ত্রাফক হাউচ मम शर्क निभिन्ते क हेल । यह खा भाष अहे পর্বেষ্টাচ অধ্যান ও ছুই মুন্ন নর ক্লোক मःशा कदिशारहरः।

এই বাপে অফা: দশ পর্ব্ব সবিস্তর উক্ত হইল: তৎপরে হরিব"শ 3 ভাবিষ্য পর্ব্ব কীর্ত্তিত হইয়াছে 1 মহাই হরিবংশে দ্বা-দশ† সহত্র স্লোক গণনা করিসাছেন 1 মহাভারতের পর্বা সংগ্রাহ নির্কাপিত হইল:

^{* &}quot;লোকামাঞ্চ শহন্তবং । বিংশতিক তথা প্লোকার কংখ্যাতাক্তরেপর্শিনা।" এই মুলের হথ্যক্ষক অর্থ লি শিক ছইল। কিল মহাপ্রস্থান পর্যের বিনামিক টুকল শক এরোবিংশতি লেকের অধিক নাই। এই নিমি ই টীকাকার নীলক্ত সমাস বলে " শত্রহাং," এই শক্তি শক্ত লভ তিন "এই অথ কেতিয়া বিংশতি সহ বোগে "এক শত্র বিংশাতি "এই বাাধা। করিয়া ছেম।

[া] বেরূপ অধ্যায় ও প্লোক সংখ্যা লিখিত হইল, প্র ভিপরেই ভাষার নুসমাধিক বেলিতে পাওয়া নার: ভ্যাথ্যে বন পর্ব ও হরিবংশে কতাও অসমত। প্রকি ভাত সংখ্যা অপেক্ষা বন পর্বের্প প্রায় ছয় মহলু নাক অধিক ও হরিবংশ ক্রাধিকর প্রসাম বশতং গংখ্যা বিভাগ মীমাংখা করেন লিখিকর প্রসাম বশতং গংখ্যা বন্ধ নুসমাধিকা ছটিয়াছে।

[🕈] ज्य विस्तव : अकी।

[া] অর্থাৎ ভাঁহারাও কালগ্রানে পভিত ছইলেন

[्]र श्रसारक्षमः, ग्रन्मविराद्वन् भक्ति (लाभ ।

९ प्रम्डि

अक्तसान, वालप्त. विद्या देखानि काइ८५ कालनाइ श्रक्ति व्यवद्वा त काल्यन ।

যুক্কাভিলাৰে অন্টাদশ অক্টোহণী একত্ৰ সনাগত হইয়াছিল। অন্টাদশ দিবস ঐ নহাদাৰূণ যুক্ক হয়।

ষে দ্বিল্ল অঞ্ * ও উপনিদ্ সহিত চারি दिन क्वारमन किंख अरे आर्थाम अस का-নেন না জিনি কখনই বিচক্ষণ হয়েন না। আ মিড বুদ্ধি ব্যাসদেব এই এস্থকে অর্থ শাস্ত্র ধর্মা শাস্ত্র ও কাম শাস্ত্র স্বৰূপ নির্দেশ করি-নাছেন। দেমন পুংস্ফোকিল কলরব তা-বৰ করিয়া, কল্ক শ কাক শব্দ প্রবেশে অনু য়াগ হয় মা: সেইৰূপ এই উপাখ্যান প্ৰাৰণ ক্রিয়া শাস্ত্রান্তর প্রাবণে অভিকৃতি থাকে না! যেমন পঞ্জুত হইতে তিবিধ লোক সৃ**টি নিম্পন্ন** হয়: সেইৰপ ইতিহাসোত্তম হুইছে কৰি গণেব বুন্ধি উৎপন্ন হয় ৷ যে-মন চড়বিন্ধ বজা অহবিকের অন্তগত; इह चिक्क शन अहेकश शावनीस शुक्रान এই উপাধ্যানে অন্তর্ত আছে ৷ শেমন মনের জিয়া সমস্ত ইন্দ্রির আভার: সেই ৰূপ এই স্থাধ্যান লাক্ত অশেশ্বৰিধ ক্ৰিয়া: ও গুণের প্রমান্ত হয়। (ম্মন আছার ব্যক্তি-**(हाटक अ**जीत धावरवह खना छैपास गाँहें। (सहेक्य वहे हैं भाशास्त्र अग्रतंक कथ: श्रृष्टितिक सुभक्ता भाग कथा मध्ये । यमन অভাদয়াকাজিক ভূতোক সংকৃতজাক এ-ভুর দেৱা করিয়া গাকে; সেইকপ সমস্ক ক্রিগণ এই উপাধানের উপাসনা করেন। त्यमन भूकक्ष्या व्यन्ति ममल वास्तिम कारतका उंदक्षे; स्टब्स्य अहे कारा कर ন্যানা কবিকৃত কাৰ্যা আপেকা উৎকৃষ্ট।

ভোমার দিগের সর্বাদ: ধর্মে মতি হউ

ক: যেহেভু পরলোকগত বাজিয় ধর্ম হ এক মাতাবকু৷ অর্থ ও জী নাভিশর নৈ-পুণা সহকারে উপাদিভ ছইলেও কোদ কালে আলীয়ও স্বায়ী হয় না!

যে ব্যক্তি দৈপায়নের ওষ্ঠপুট বিগলিত. অপ্রমেয়, পর্ম পরিত্র, পাপছর, মঙ্গলকর ভারত পাঠ শ্রাবণ করে; তাহার পুঞ্জর* जनां जित्याकत श्रास्त्रका कि ? দিবাভাগে ইন্দ্রিয়াদক ছার্ব যে পাপ সঞ্চয় করেন। মহাভারত কীর্ত্তন করিয়া সায়ং কালে দেই পাপ হইতে মুক্ত হয়েন। আর রাত্রিকালে কায়মনোবাকো যে পাপানু-**থান করেন; মহাভারত কীর্তন ক্**রিয়া **প্রা** ভংকাৰে ভাহা হইতে মজে চয়েনা যে বাজি ৰহপ্ৰত † বেদজ ব্ৰাহ্মণকে স্বৰ্ণজ্ঞ সমস্বিত গোশত দান করে; আর যে ৰাজি পরম পবিত্র ভারত কথা শ্রাবণ করে ঃ সঞ্চ कारनारे धरे छेखरात कन जुला ! বিক্তীৰ্সমূক প্ৰব; ভাৱা অনায়াস গমঃ **হয়: দেইৰূপ অন্তে পৰ্ক সংগ্ৰহ ভাৰ**া करिएम धरे महार्थ, खड़ाबकुछ, महद आ:-খানি পাজ মনুবোর পক্ষে সুগম হং জানি-

পর্ব সংগ্রহঃ নহারে.

বিজ্ঞাপন

তন্ত্ৰবোধনী সভা

গত ২৫ বৈশার্থ রবিবারে নির্মিত স্থ-য়ে নির্মিত সংখ্যক সভ্য এক্তর মা হওয়ালে সার্থস্থিক সভা না হইবায় উপস্থিত সভা নিগের জনুমত্যনুসারে বিজ্ঞাপন করিছেছি যে আগামি ১৩ জোট শুক্রবার অপরায় ৬ ঘণ্টার সমরে প্রাক্ষান্যকের দ্বিতীয়ভাগ গূহে রাম্ব্রসায় করিকা। এই সভা-তেগত নামের প্রিকায় বিজ্ঞাপিত বিষয় সকল বিচারিত হুইবে।

जीन् (शक्तनाथ ठाकूत । सन्तामक ।

জ তর ওক্ষ প্রভাৱ। ২ যাহার। ভূচিভেদ * পরম পরিত্র ভার্ম বিশেষ।

[†] অংশষ শাব্রস্থ। ‡ ভেলা, মৌকা প্রভৃতি।

३२ देशांड महर २००७। **स्तिसस्त्रमध ४४६**०।

[্]ব শিক্ষা, কম্পা, বিস্তৃক্তা, বাসকরণ, জ্যোতিসা, কৃদ্ধ, এই জয়। বেচেন্ত্র উচ্চারণ নিজম বোধক শানে শিক্ষা বে শান্তে বৈদিক ক্রিবার বিবরণ জাতে তা-চাকে কম্পা কমে। আরু বেদারর্থন কৃত্তর শানের বাংখ্যা বারক শান্তের মাম নিরুক্ত।

ক্ষরানুম, অওমারেমন, উদ্ভিক্ষ । মরামুখ গনুষ্য পও প্রকৃতি, মরামু গার্ক বেউন চর্মা অওম পালি প্র-কৃতি। বেরম মণানাদি। উদ্ভিক্ষ তক্ ধান্য প্রকৃতি, উদ্ভিদ্ধ ভিদ্ধ ভিদ্ধ কর্মণ। আধাৎ যাবারা ভূডিভেদ করিতা উঠে।

[‡] व्यथात्रमः मामः यक्षमः श्रकृति : ९ नमः ममः, रेथसः, क्षमः, मठः श्रकृति :

দলা প্রবেশ যান ছইতে ভক্তবোধিনী নভার প্রতি নতা এই পত্রিকার এক বও বিনা যুল্যে প্রাথ হয়েন।



তত্ত্যবোধিনীপ্রত্রিকা

ক্ষপরা ঋগ্রেষায়মুর্জেদ সাম্বেনে এরিনে । শিক্ষ তাল্পোনাক্তন নিজ্ঞান ৬ কেছিছাছিছ। অর্থ প্রাবদা সমস্যাম ১ এ

ঋথেদ সংহিতা

श्थममधनमा व्यक्तमानुदारक ज्जीवर मृद्धः

> कश्यासिः शायकः क्रमः सम्राप्ततः

> > 564

) कर्क नृगः कैथ शिष्ठः शिकः পুত্রং न रखेटमाः। मधिद्य वृक्तिः विश्वः।

১ হে মালতঃ মুখ্য কথ কলা হাজিলু নিনা । বশাসং হৈছবোঃ আন্ধান্য দিবিছে লৈহেছবান কলা কোকে 'লিডা' হছবোঃ অকিলং পুত্রং পালাতি ভবং কীলাং মালতঃ 'কধিলোং দিবিছিলালা মালতঃ 'কধিলোং দিবিছিলালা কলা বিশ্বিদ্যালয় সালাভাগিত কৰিছবালী কৰ

ু যাঁহারদিগের অর্চনার নিমিতে কু শচ্চেদ হয় এমত যে স্তুতি তৃপ্ত মন্তুলেরতা সকল, তোমরা কবে আমারদিগকে দকে ধারণ করিবে, যেমন পিতা স্বীয় পুঞ্জকে হত্তে ধারণ করেন। 366

े कें तूनर करहा अर्थर शर्छः मिरवान : श्रीविद्याः। के स्वाणा-रवान बंगाछि ।

াং মজতং কৃষ্ণ বুলং গদানী ৷ এ কৃষ্ট জিওং কিংগ কৈনা বা শুক্ষাজন আৰ্থ কলে৷ দেবলজা দেবল বিলং দিলেজাই ৷ এডা বজ্জত পূ থিবাং 'পুলোলা ৷ না বস্তু বিজ্ঞান কৈনা ক্ষানাং বিল্যুক্তালা কলেজাৰ কলেজা

২ দে সক্রদ্ধেরতা সকল ' তোমরা এখন কোপার আছে, আর যজ রানে তোমার-কিলো করে গমন হইবে স্বর্গ হইতে গমন কর. পুথিবী হইতে গমন করিও না, যজ-মান সকল পুথিবী ভিন্ন তোমার্ধিগের কোপায় স্তৃতি করেন, অর্থাই পুথিবীতেই তোমার্দিগকে স্তৃতি করেন, যেমন গোল্য কল শক্ষ করে।

628

৩ ৰ বং সুমা নবাংসি মঞ্চত। ৰ সুবিতা। কোবিশানি দে ভাগা। ৩ হে 'ফ্লুড' বং 'গুজাকু 'নবাংমি'নবর বংশি বুয়া' প্রজাপখন্তপাণি ধনানি 'ল' কুলু বংগু দেশ ভবদীবানি 'মুবিডা' শোভনানি নিদ্যুক্তদাদি 'ল' 'বিখানি নকাণি 'দৌভলা' দৌলাগাঙ্গদাদি গুজাবাদীদি 'ল' কুলু 'উ' ঋপি সাব গুড়ে শুইনা মুয়াদিভিঃ নইজান্ত আগ্রহামিডার্কঃ

ু হে দক্ষদেবতা সকল! তোমারণি-পের মুতন প্রজাপশু ৰূপ ধন সকল কোৰায় এবং শোষন মণি মুক্তাদি সকল ও সৌ-ভাগ্য কুপ হতি অন্থ সকলই বাকোথায়, অধ্যং ইহারদিগের সাহত তোমরা লাগ-মন কর!

3.86

৪ ঘদ্যুৰং প্রিমাতরোমর্ভাসঃ স্যাঠন জ্যোতা বো অমৃতঃ স্যাৎ।

, ৪ বে প্রিয়ারকঃ পাং নামকাপেরপুলা মকতঃ বিহ্য বিহু প্রাপ্তি মধ্যকঃ মির্যাং মর্যাং প্রাতন ভবের তথ্যপি বিশ্বী ব্যোক্থ বিশ্বান হত্যামঃ আন্ যুক্ত বেরপ্তামি তথে প

৪ ছে পুলি: মন ধেৰুপুজ মন্দেৰ্ড। সকল ৷ যদ্যপি ছোমরা মনুষ্ট হইতে তথাপি ভোমার্দিণের ভোতায়জমান দে বতা হইত !

المعا يه

শ্বা বোষ্ণোন ষ্বদে জরি ভাভুদজোষ্টা পথা ষ্মশ্য গা দুপা গোতাগে।

ক লে মসভাং সং যুক্তাকে । ক্রিডা ক্রিডা । সংগোধাং ক্রেন্ডাং মানু । তার দুক্তাক্তং এই চক্তানির বিধান ক্রেন্ডাং ক্রিডা ক্রেন্ডাং ক্রেন্ডানির ক্রেন্ডাং ক্রেন্ডানির ক্রেন্ডাং ক্রেন্ডানির ক্রেন্ডাং ক্রেন্ডানির ক্রে

৫ ছে মকুদ্দেবতা সকল! তোমারদি-গের স্থোতা যজমান অসেবা না হউক যে-মন ভূণ ওক্ষণ বিষয়ে কলাচিৎ মূগ অসেবা হয় না, এবং সেই স্থোতা মৃত্যুকে অতিক্রম ক্যুক (১) ১) ১৫ 5.93

৬ মোষুণঃ পরাপরা নিঝ তি-দুহনা বধীথ। পদীফ তৃষ্ণী

সহ!

৯ যে মনুতঃ 'নিঞ্জি: 'রক্ষোন্ধাতিদেবজ' 'ধই নহ'
'অমান্ 'টম' সম্প্রা' মানব্রীক ' অমান্ধা বর্ধ মা কার্মি। ফালুনা' পারাপরা' বিশ্বুজনা কুলি অভি-বলাই সংগ্রাম ভ্রমন ফেনাপি 'মুউনা' ক্ষণ কুলামান্ত। নানিজ ভিঃ 'ভুম্বামান্ত' পানীনী পাততু। অমানীয়, দুয়া নিজ ভিঞ্জিত বিনাশাতু ইতার্থা।

৬ হে মরুদেবত। সকল! তোমারদি পের অনুগ্রহে অতি প্রবল্প নাজ্য জাতী। দেবতা যেন আমারদিগক্ষে বধ না করে। হননাশকা সেই রাজস জাতি পিপাসার সহিত বিনাশ প্রাপ্ত হাউক।

8 % 👁

৭ সতাৎ ছেবা অমবজোধর ক্লিনা ক্রডিয়াসঃ। নিহং ক্রণ্ডা বাতাং।

্পন্ন ' মলদেশে 'ডিং আদি, 'কৃত্যালং লাগুণা, কল্পে পালিচজাও তমীয়াং মল্ডঃ' আ' দ-মঙঃ 'অবাভাং' বানুৱহিতাং 'নিছা' বৃক্তি' কৃথুছি কৃক্তি বলেডং'সহাং' তীদৃশাং অদুদাদং 'জেলাঃ নিখাঃ 'অনুবৃদ্ধা' বলবক্ষঃ।

५ क्रा शांतिङ, अभीशः वनविभिधे प्रकृत्यवरः नकत प्रकृ कृष्टिण्डः नर्यस्टः ভাবে বাযু রহিত বৃতি করেন ইहा সভা ১

858

' ৮ বাজে বিদ্যুত্মিমাতি বুং সংন মাতা সিযক্তি। মদেষাং বৃক্টিরসক্তি।

५ 'बाट्या' मनवृद्धा अनुवन्तनवडी (४नूः 'हेर' श्ला ८४म्: द०म९ वेक्सिया सकर कदशक्ति लवन दिनुषः মেখারা দৃশ্যমানা সাসী 'মিলাডি' শাক্ষা করোজি দিলু । বেলাগাণ, তি মেখাগর্জমণ, প্রানিক্ষণ। 'ছাস্য' গেনু 'কমণ' 'না' ইব 'মিছাক্র' যথা ধেনুক্ষনাণ (১৫০ -তবং উয়াং বিদ্যুগ মুক্তত দেবছে। 'বং' মুম্বাণ তে ' সমুদ্দিনী 'কৃষ্টিং' 'অস্বাজি'!

৮ ছথা প্রস্তবন স্তন বিশিষ্ট ধেনু।
মন বংসের উদ্দেশে শব্দ করে। তদ্ধপ
বিদ্যুৎ মেঘ হইতে শব্দ করে। থেমন
থেনু বংসকে পালন করে সেই প্রকার
বিদ্যুৎ নত্নকেবতার সেবা করেন থেছেপু
গক্ষন সহিত বিদ্যুৎ কালে বৃষ্টি দৃষ্ট
হয়।

8.60

२ निर्वा िष्ड मेः इश्रीख श्रका-त्रीरमानवारहर्ने। यद शृंखिवीः व्यक्तिक्षे।

৯ ০০ মাসতঃ হারন্থঃ 'উদস্যে' ন' উদক্ষধাবিধা 'প্ আন্তান আছেন সূৰ্ব্যাৎ আক্ষাদা 'যথ গালা 'পৃথিৱাং' বি বিশোনেধা 'উপজি' জেনখনি জনানীৎ সৃষ্টিকালে দিবা' দিবদো 'চিখ' আপি 'ডয়ঃ' 'কুগুজি 'কুমন্তি হ

৯ ছে মক্লদেবতা সকল: তোমরা উ-দক পূর্ব মেঘ দ্বারা সূর্য্যকে আক্ষম করিয়: যথন পূথিবীকে বিশেষ ব্রপে সেচন কর, সেই সময়ে দিবসৈতেও অন্ধকার কর!

954

১০ অধ স্থানাম্মতাং বিশ্বমা সদ্য পার্থিবং ৷ অর্বেজন্ত প্র মান্ বুষাঃ ৷১৷৩৷১৬৷

> 'মন্তাং' সম্বৃদ্ধিন: বনাং 'অনে: গ্র্জনকপাং 'অধ' অন্তর্থ 'পাথিবং' পৃথিবীসমৃদ্ধি 'বিখুখ্ সর্কাং দল্প গৃহথ 'আ' সমত্রাং অবেক্ত ইতিশেষঃ। তথ্য 'মানুষাঃ' গৃহবর্তিকাং মনুষ্যাং অপি 'প্র আবে করু 'প্রারেশ্ব প্রকর্ষে কম্পিউবক্তঃ (২৩:১৬)

> মক্ৰদেবতাদিগের গৰ্জন ৰূপ ধুনি হইলে পৃথিবীর সমুদ্য গৃহ কম্পিত হয় এবং গৃহবার্তি মনুষ্য সকলও ক্ষতিশয় কম্পিত হয় 1১া৩1১৬1 834

১১ মর্লতোবীলুপাণিভিন্তি-আন্যোধস্বতীর নুঁ। মাতেমথিজ-যামভিঃ।

>> ে মুক্তর বুল্প নিল্পানিতি: দ্রুতইছঃ
নার্চাং নতঃ চেত্র বোলেছটা কুল্মক্র নদীঃ ছাদু অনুল্লা বিনিল্লাম্চি: অভিন্নমান্ত ছাড় গ্রাক্ত

১১ ছে মরুদ্দেবতা সরকা! দুঢ় হস্ত বি-শিক্ট ভোমরা বিচিত্র কুল বিশিক্ট নদীকে ল ক্যা কবিরা অবিশ্রামে গমন করু!

834

>> স্থিরাবং সম্ভ নেমবোরগা অস্থাসএলাং। সুসংক্তা অভী শবং।

১০ তে মক্তর 'একাং' কে: শুক্সাকেং নমেং' রথচিকবলমঃ 'শ্বিবাং' 'সন্ধ'তথা রথারে আন দর' অথাক শ্বিরাংক্ত ।' অভীক্ষরে অকুলয়ে 'সুক্ষর্ভা অর্থকরবন্ধুপ্রিগ্রনের মধ্যাত স্কুল

>২ হে মক্দেরতঃ দকল ় তেমার-দিপের রখনেনি এবং রখ ও অশ্ব দকল স্থির হউক, অসুলি দকল অসা বন্ধনের বজ্ঞারঃ অলকৃত হউক ∤

80.

১৩ অচ্ছাবদা তনাগিরা জরা যৈ বন্ধণস্পতিং। অগ্নিং মিত্রং ন দশভিং।

> ২০ হে প্রজ্ঞাক, সমুধ জাগ 'তনা' চনহা দেবন বনপণ প্রকালনকা। 'গিরা' বাচা 'কুক্ষণলগতিং হ ব্রুলা চবিল্লিক্দা ক্ষালনা বা পালকে হলুগাণ তথা ক্ষাপি 'লেলিড্য' লালিনাক 'ফিক্র' চ ন 'আপি 'লবাবো' ক্ষোকু 'ক্ষাল্য' ক্ষাপ্ত আভিযুবোন 'বল।' বদ ক্রছি।

১৩ ছে কবিক্সমূহণ ভোমর দেব-ভার বৰূপ প্রকাশক বাক্য দারে৷ নক্তের বা অন্নের পালক মরুক্ষাণকে এবং অগ্নিও দর্শনীয় মিত্র দেবতাকে সম্মুখ হইয়া ওব কর ৷

890

১৪ মিমীহি লোকমার্গে প্র জ্নাইব ততনঃ। গার্থ গায়ত্র-মচাং।

১৪ হে থক্তিক সমুহ কাং 'আমোন একটাগুলে কোকং কোকে 'মিমীহি' নিমি হং কুল কাং কোল 'তেজমঃ বিকার্য 'ছব' সংগ' পাদনাঃ 'লোক বুলি ব কিকার্যক্তি ভাষা। 'উচাং' শাস্ত্রগোলাং 'গাই বুল গায়ক্তিককাং সুক্তং 'গায়' পঠ।

>৪ ছে ঋত্বিক্ সকল ! তে মরা স্বকীয় মুখে ভোৱা ৰূপ শ্লোক নিৰ্মাণ কর, এবং সেই শ্লোক বিস্তাব কর যেমন মেঘ রুফি বিস্তার করে,এবং গায়ত্তীক্তৃন্দ বিশিষ্ট স্থক্ত পাঠ করে।

89:

১৫ वर्मेश्व मार्केटर गगर द्विषः श्रीममुख्यकिनरा अत्या वृक्षार्थमणि-

इ ।ऽ।७।ऽ१।

১৫ হে থকিকে সংঘ 'মানেডং মানেওম স্থিন 'পণ' সমূহং ' বলব ' নমকুন ' কীদুশং ' কোহং দীপুং ' প নসুখ ' শুকিযোগাং 'আর্কিণং' আর্কানাপেডং ' 'আন্দে আক্সাকং ' ইত' আ্মিন কর্মানি মনেডং ' ব্যাহি 'অন- ' কর্ম্ভ হ'তেনে।

১৫ হে ঋত্তি সকল! তোমরা প্রদী-প্ত: প্রতি যোগা, পুরুষ্ট্র মরুদ্দেবতা সকলকে বন্দনা কর, তাঁহারা আমারদি-গোর এই কর্মে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হউন।১।৩১১৭১



প্রাচীন ,হিন্দুদিগের সমুদ্র ষাত্রা

এপ্রকার লোক প্রবাদ আছে যে হিন্দু-র: কোন কালে সমুদ্র পরিভ্রমণ করেন নাই, সুত্রাং কদাপি গোত বাতন কর্মা শিক্ষাও করেন নাই;কেবল চিরকাল ভার- বংর্থর আপন আপন জন্ম ভূমিতে অন্তর্গচলাকিয়া কাল্যাপন করিতেছেন। একথার
প্রামাণ্যার্থে তৎপ্রবাদকেরা কছিরা থাকেন
বে হিন্দুদিগের শাস্ত্রে তিথিয়ের বিধি
নাই। বস্তুকঃ উক্ত প্রবাদ নিভান্ত অমূলক।
বিধারের ও যথেই উন্নতি ছিল,কারণ
আত প্রাচীন বেদাবধি নব্য নব্য কার্য প্রান্ত সকল প্রস্তেই তাহার প্রমাণ প্রাপ্ত
হওয়া থাইতেছে। ক্ষেত্রণ সংহিতার
বিত্যিয়াধ্যায়ের পঞ্চবিংশ স্থকে সামুদ্রিক
নৌকরে উল্লেখ আছে, যথা

বেদা গোরীনাৎ পদমধ্যরিক্ষেশ পাছতাৎ। বেদ নাবঃ সমুদ্রিতঃ।

ে বরুগ দেবজা খেচর পাজিদিগের স্থান আনানন এবং গিনি সমুচদু দ্বিতি করিয়া আলগামি নৌকা সক থের খান লানেন তিনি আমার্লিচনের প্রতি অনুএ> করুন।

হিন্দ্রসন্থানেরা সমুদ্রপোত চালন না করিলে একাচের উদয়ের কারণাভাব হয়. করেণ চিল্কুরা সমুদ্র গমনাগমনের কল ভেগ্ন না করিয়: তদ্বিমাক বাকো বরুণের শুব ক রিবে ইছা সম্ভব নচেছা আরু ইছা অনুমান সিদ্ধ বটে,যে যে কালে ক্ষেপ্রেলের প্রকাশ জ-ইয়াছিল তৎকালে বিদেশীয় কোন জাতি এমত সভ্যতা প্রাপ্ত হয় নাই যে সমুদ্র পথ ভারা ভারতবর্ষে আগমন করিতে পারে।

. মনুসংহিতার অন্তর্গত এই পোতপন বিষয়ক শ্লোক অনেকেরই বিদিত আছে যথা

দীয়াঞ্চলি স্থা দেশং যথা কাল তেনোক্তৰে । স্বীতীৰেণু ভৰিদ্যাৎ সমুদ্দু নাজি লক্ষণং ॥ সন্ ৪ আং। ৪৩৬ আকে।

নীই পথ অথাৎ অধিক দূরে গ্রাম করিলে দেশ । বিশেষে পোত সুলোর যে তাবতমা আকে, তংচা ননা বিষয়ে জানিবে সমুদু গ্রাম বিষয়ে তাতৃশ নির্দেশ নাই।

त्रामाशस्य नमूक्तन-वित्तरकत् अवर नामू-जिक तर्युत श्रुमः श्रुमः উল্লেখ आरहः "ः

"উদীচ্যাশ্চ প্রতীচ্যাশ্চ দান্ধিণাত্যাশ্চ কেরপা:। ভৌটাঃ পরাঝঃ সামুসুরেকান্যপ্রহুত তে॥ অবোধ্যাঝাঙে ভিন্নটিতমাধ্যাযে ৫৪৩ সোকঃ।

ঐ সকল বণিক্হিন্ছ ভিন্ন অন্য জাতীয় হ-**उन्ना महारव मा अवर के त्रकुंउ हिन्छ फिन्न** फ না **জাতী**য় লোকখারা **আনীত হ**য় নাই। সুক্রতাদি আযুর্কেদ শান্তোক প্রমাণানু-সারে যে সকল ঔষধ প্রস্তুত হয়, তাহাতে জায়কল জয়িত্রী দারুচিনি প্রভৃতি নানা প্র-কার সুগল্ধি ডব্য সংযোগ করণের বিবি আচে, ইহাতে অনুমান হয় যে এতাদৃশ প্রাচীন কালেও উক্ত দ্রব্য সমূলায়ের গুণ হিম্মদিগের নিকট বিশেষ ৰূপে প্রকাশিত ছিল, কিন্তু দক্ষিণ সমৃত্রস্থ যাবা, মলাকা. বোর্নিয়া প্রছতি উপদ্বীপ সমূহে ঐ সকল দ্রব্য উৎপন্ন হয়, এবং তাহা আন্য়নাথ **७:उत्पद्ध गाइँदक इड्डेटल खर्यगाई म**मुख যাত্রা স্বীকার,করিতে হয়, সুতরাং ভরিমিত্ত সমুদ্রপোতের সমাক্ বাবহার ছিল, তাহার দল্ভে নাই। অপর ছুই সহতা বৎসরের প্রাচীন অভিজ্ঞান শকুস্তলা ধৃত খন বৃদ্ধি নামা বণিকের আখ্যান,চতুর্জনশত বংসরা-ধিক প্রাচীন" হিতোপদেশের কন্দর্পকেভুর আখ্যানা, আর মাও ভট্ট চার্য্য ধৃত কলি-युर्ग मम्द्र राजः धमन निरम्बक जामिश्र-রাণ বচন ‡ কাব্যাদি এছোক্ত বণিক্ ও বাণিজ্য দ্রব্য বিবরণ, ও নব্যেতিহাস কথিত **होन मनाभरत्रत्र ଓ करिकऋर्शांक श्रीम**न्ध भनाभारतत्र मिश्रमानि छेलाईरिल शयमाशय-**त्मत्र** छे भार्यमान थहे सम्माद्य अविषयात वि-স্তর প্রমাণ পাছে।

পরস্ক কেবল হিন্দু শান্ত্রেই যে এবিদ-রের প্রমাণ আছে এমত নহে। অন্যানা প্রাচীন সভ্য জাতিদিগের গ্রন্থে তথা দক্ষিণ সমুদ্রস্থ অনেকানেক উপদ্বীপের পুরারতে এবিষয়ের ভূরি ভূরি প্রমাণ আছে। প্র

রিপ্রদ আব্দি উরিধিয়াণ্সি নামক গ্রন্থে লিপিত আছে যে আরব্, প্রেক্, এবং কিছ বণিকের। শক্টা উপদ্বীপে ষাইয়া বাণি-क्यारथं वाम कांत्रया थाकिक। अकडे उजा ল্স সাছেরেবা সমূত প্রমাণ ছারা স্থির করি য়াছেন যে যাবা উপদীপের **প্রাচীন লো** क्ता हिन्छ छिल । कार्यहा अश्रम्भ **म**स वस्मत भूटर्क (दोक धर्म एक्न करता था-বাতে বৌশ্বদিনের প্রাত্তর্ভাব কাল্যান ভত্ততঃ হিন্দুরা ঐ দেশ পরিত্যাগ পুর্বাক ভঞিক টস্থ বালি নামক এক স্ব্লোপদীৰে বগ'ছ করে,এবং অদ্যাপি তথার আপনারদিলে: প্রাচীন ধর্ম প্রতিপালন পূর্বক কালযাণ-कति एक एक , अरे द्वारकता खाञ्चन कावि सानि বৰ্ণ চত্ৰটয়ে বিজ্ঞান, এবং ব্ৰহ্ম বিষ্ণু শিংগদি ্**ং**দেবোপাসফ ৷ ইহারদিগের প্রসিদ্ধ এব বেদ, রামায়ণ, মহাভারত ও ব্রহ্মাও সু রাণ, এবং অদ্যাপি তাহারা সংস্কৃত ভাগান কবিতা রচনা করিয়া খাকে 📜 যাবা স্থাণক ক্তিরাসপ্তদশ শতব্হসর পূর্বের থৌজান্স, অতএব তাহার৷ ঐদেশে তৎকালের পুরেং গ मन कवित्रा थाकिटद । याता चीटभव भुक्तक লোকেরা অতি অসভ্য এবং পোত নিশ্মাং সমাক্ অক্ষম ছিল, আরু চীন লাতীয় কল নামক গোভ ধট শত বৎসরের পুরের यावा बील शर्याच व्यामित्य 'शादा नारे। অতএব নিশ্চয় বোধ হ'ইতেছে যে প্রায় জুট সহস্ৰ বংসর পূৰ্বেই ভারতবর্ষ হইতে হিন্দুর: স্থকীয় সম্ভ পোত বাহন পুরংসর ত থায় গমন করিয়। বসতি করিয়াছিল। বোর্নিয়ো উপদ্বীপস্থ সরাধকা প্রদেশে এক জাতি বাস করে, তাহারা ব্রাহ্মণ ক্ষতিয়াদি **বর্ণ চতুফী**য়ে বিভক্ত,এবং নদিও কাহার: এ কণে ছিল্ছ-ধর্মা বিরোধি নানাপ্রকার ব্যব হার করিয়া থাকে, তথাপি তাভাব : । যথার্থ হিন্দু সন্তান হিহার সন্দেহ নাই! **स्तित्रत्र मारहरवेद्र सम्भास्त्रगरवेद्र दृखार**ह জাপান দেশ-প্রচলিত হর্ম এক উপাধানে লিখিত আছে যে অতি পুৰ্বকালে কতক্ণানি সুশীল অসুর ও কতকগুলি মুন্ট অসুর কে দর্শক্তর রক্ত্র করিয়া ও এক পর্কাতকে মন্ত্রান **न ७ क**तिया **नम्ज मस्म कतियादित १** ८३

^{*} ভক্তবোধিনী পত্রিকার ৪৭ সংখ্যার ৩৮ পুজে দেখিবে।

[ি] ছবং সিংহলছীপে জুপতিজীযুতকেটোং পুছাকদপকৈতৃরীম। একদা কেলিকাননাবছিতেন মহা পো কদপকৈতৃরীম। একদা কেলিকাননাবছিতেন মহা পো কে বণিযুখাৎ ক্রতং যদক সমুমুখ্যে চতুর্দশ্যামাহিছু তকপ্যতক্তলে রজনাবলীভিন্নপর্কুরপর্যাক্তে থিত। স্বালকারভূষিতা পক্ষারিব বীধাং বাদ্যকী কনা। কাচিৎ দুশাতে।

[‡] ममुमुधाबादीकातः कत्रधन्त्रिशंत्रव**् देव**ग्राति।

व्याशान श्रुतारशक ममूज म्हरनत वा-খ্যান হঠতে গৃহীত হইয়াছে. কোন সন্দেহ নাই ৷ কিন্তু অভি প্রাচান কালে যখন লপান দ্বীপের লোকেরা ভার-ভবর্ষে আগমন করিতে অশস্ত ছিল, তথন এই **আখ্যান ভাছাদের দেশে প্রচার হ**ওয়া আশ্চয়ের বিষয় ৷ চীন জাতীয় গ্রন্থ সকল उटमरम क्षानां नाहे, अवर करमनीय विमा ग्रवनाप्ती रंगाकः अक्षरम्टन हुष्णाना, षष्ट এব চীন শাস্ত্র মধ্যে হিন্দুদিগের বাণিজ্ঞা বিষয়ক বে সকল প্রমাণ আছে তাকা সংগ্রহ করা অতি কঠিন হইয়াছে, কিন্তু চিল্ডু পু-রার্ভানুসকায়ি মহাশয়েরা এরিয়র অপ-রিচিত রাখিবেন না, বেধি হয় প্রাচীন হিন্দুদিগেব পোত বাহন ক্ষমত। বিষয়ক প্র-মাণ অবিলয়ে সমহ ক্ষপে প্রাপ্ত হওয় যাইবে ৷ আশিয়াটিক সভার বিজ্ঞাবর मन्त्रीपर श्रीवृक्त लिएनि मार्ट्य कोस्क्रीक नामक हीन अरस्त्र हेरताओं अनुवान था-কাশ করিয়াছেন, তদমুদারে ন্যুনাধিক ১৪৫০ বৎসর পূর্বে সিঞ্চিয়ন নামা এক कन हीन समीय दोक आशन स्टाम यथ-**শের ছুরবস্থা দুটে অভি বিল্ল**মনা হইয়া তক্ষমের আকর স্থান ভারতবর্ষে তীর্থ পর্যা-টন, তথা ধর্মশাস্ত্র সংগ্রহ করণার্থে চীন তাতার ও ডিব্রতাদি দেশভ্রমণ করিয়া পরে হিমালয় পর্বত বেষ্টন পূর্বক সিন্ধুনদী উৎ-कमन कतिया भाशाव, मिली, मधुता, श्रयाध देवननि, द्राहिनथछ, ष्रायाधानि नाना বৌদ্ধ ভীর্থ ভ্রমণ করেন, পরে মগধ হইতে ভামলিপি অধীৎ ভমলুকে ছুই বৎসর কাল ছিতি করিয়া বুদ্ধ প্রতিমূর্ত্তি ও বৌদ্ধ শাস্ত্র **मः धर् करत्न। ७७६ मगर्य क्**ठक्शिन বণিক্ বৃহৎ বৃহৎ নৌকায় সম্দ্র পথে দক্ষিণ পশ্চিমাভিমুখে বাত্রা কুরে, তিনিও ভাছা-দের সহিত থাতা ক্রিলেন, এবং চতুর্দ্ধন দিনের পরে সিংহল রাজ্যে উন্তীর্ণ হইলেন: ভৎকালে ভামুলিঞ্ডি আমের লোকেরা ক-হিয়াছিল যে এই রাজ্য ভাহাদের দেশ হ-ইতে সপ্ত**্ৰোজন * অন্ত**র্

উপদ্বীপোপরি স্থাপিত, এবং ইছা পূর্ম প্ৰিচাম পঞ্চাশত যোজন* দীৰ্ঘ, এবং ত্ৰিং-শ্ব শোজনা উত্তর দক্ষিণে প্রশস্ত। ইহার বাম দক্ষিণে এক শত কুদ্র উপদ্বীপ **আছে।** এমুকল উপদ্বীপ প্রধান উপদ্বীপের অধীন, তথার নানাবিধ রত্ন ও মুক্তা **উৎপন্ন হয়।** ঘট রাজ্যে কাহিয়া**ন ছুই বৎসর বাস ক**-রেন, এবং মিশানিং প্রোক্ত নয-গ্রন্থ ও দীর্ঘ आहम् अ वस्तिथ आहम् नामक धास्ट প্ৰাপ্ত হয়েন। ফানা ভাষায় লিখিত এই সক-ल अन्ध्र क्षाश्च करेम्। ७९ मम्माय मम्बिता-शाद्य कविया निरंहनधीय हेहे एक धक बहर. সমুদ্র পোতে আরোহণ করেন ্র ঐ পোতে দুই শত মনুষোর স্থান হইতে পারিও। কি জানি সমুদ্রে কোন ছুদৈব ঘটিয়া পোত ভগ্ন হয়,এই বিবেচনায় তাহার পশ্চাতে এক কুদ্র নৌক। বন্ধ থাকিত। বাযু সহকারে পোত পূৰ্বাভিমুখে ছুই দিন গমন করিলেক. পরে এক ঝড় উপস্থিত হইয়া তাহাতে জল উঠিতে লাগিল. এবং পোতস্থিত বণিকেরা কুদ্র নৌকায় আরোহণ করিতে মানস ক রিলেক, কিন্তু অভিশয় ভারি হইবেক বলির[ু] নাবিকের তাহার বন্ধন রজজুকাটিয়া দি বণিকেরা ইহাতে অতান্ত ভীত হইল, এবং প্রতিক্ষণ পোত জলমগ্ন হইবেক ইত্যাশস্কায় পোতস্ব ভারবৎ বস্তু সকল সমুদ্রে নিংকেপ করিতে লাগিল। ফাহিয়ন নাবিকদিগের সহিত জলসেচন ক্রেতে লা-গিলেন,এবং অনাবশ্যক স্থীয় দ্রব্য সকল স-মুদ্রে ক্ষেপ করিলেন! কিন্তু কি জানি বণি-কেরা ভাঁহার গ্রন্থ বৌদ্ধা প্রতিমা সকল পোত হইতে নিংকেপ করে ইহা ভাবির৷ অতিশলাত্র হইলেন, এবং ত্রিপদ হই-

^{*} ২০০ জ্যোত্তির স্ক্রমত জ্যোশ।

[া] ১২০ জ্যোতিষ সক্ষত ক্লোপ। ফাছিয়ান লিশংল বাঁপের পরিমাণ উত্তম রূপে লিখিয়াছেন, কিন্ত ভাষা-র নিশ্রুশ ঘইয়াছে, উত্তর দক্ষিণ, রীর্য এবং পূর্ব পশ্চিহ প্রস্থারেখ্য কর্ষতা ছিল।

[‡] दोक श्रव विरमूहः

[¶] मरक्ड चाशमः, '

ध शा**ति** ? .

^{♥&}gt;৭৯- ভোডির সমত হোল।

তে রক্ষা পাইয় ধর্মবেতাদিগের টীন
দেশে প্রত্যাগমন নিমিত্ত কোরানশিইন
দেবের† ভজনা করিতে লাগিলেন ৷ তিনি কহিলেন " আমি শান্তে সংগ্রহের
নিমিত্তে এই দূরদেশ ভ্রমণ করিয়াছি, অতএব প্রার্থনা দেবতারা এই পোত রক্ষা করিয়া আমার অভিলাধ পূর্ণ কর্কন"।

ত্রয়োদশ দিন ও ত্রয়োদশ রাতি গতে এই মহাবামু নিরুত্ত হইলে পর তাহার। এক উপদ্বীপের তটে উপনীত হইল। *ঘ্*ৰং ভাঁটা পড়িলে তাহারা পোতের ছিদ্র অত্থেষণ পূক্তক তাহা রোধ করিয়া গশ্চাৎ এপোত সমুদ্রে নামাইল। তৎসমুদ্রে অ নেক বোষেটে ছিল, তাহারদিগের হত্তে পড়িলে ত্রাণ পাওয়া হছর হইত। ঐ সমুদ্র অভি প্রশস্ত; ইছার পূর্বা পশ্চিম ভাগ ছজে-হা হখন রজনী অত্যন্ত তিমিরারত হইল, ভখন পোডান্থ ব্যক্তিরা কেবল প্রকাণ্ড জল-চরজের পরস্পর আঘাত ও অগ্নিবৎ বিছাৎ ্তৃশ্য কুন্তীরাদি সামুদ্রিক জন্ত এবং অন্য यमा श्वरह ज गांशात मर्भन उ खरन कति-ভেলাগিল। তৎকালে পোড কোন্স্নে ভাসিয়া যাইতেছে তাহা না জানিয়া বণিক্ গণ অভ্যন্ত ভীত হইল। এই অতলস্পর্শ সমুদ্রে এমত কেনে ভূমি বা প্রপ্তর শৃক্ত ছिল ना गांगांट जाहाता छेडीन हरेटन পারে। পরে যথন গুগণ মণ্ডল মেঘ শূনা হ্ইয়া পরিজ্ভ হ্ইল, তথন ডাহারা পুর্বা-ভিন্ধে যাতা করিলেক। এবম্পু কারে कारोता नवकि निवमादस यावा बोदभ छै-জীৰ্হইল৷ এই দেশে বছতর ধর্মদেখী ও ব্রাহ্মণ ছিল, তথায় কোর‡ ব্যবস্থা প্রচ লিত হয় নাইশু। এই রাজ্যে দল মাস বাস

कड़ियां काहियन शूनव्यात इहे गड मनुत्यात द्यात्वाभरगानि क्षक दृष्ट भारत कडकः গুলি বণিকের সহিত যাত্রা করিলেন। তাহারা পঞ্চাশত দিবসের উপযুক্ত খাদ্য नामश्री नमछिवादादत लहेत्लक । ठ७ ई ठ-<u>त्मुत्र† (यः ५य निवर्त्र जोशादा योजा केंद्रुक</u> উত্তর পূর্বে কোরাঞ্ ; নগরাভিদুখে গমন করিতে লাগিল। এক মাস অতীত হট্লে তাহার: সার এক অভি ভয়ানক কড় রুক্টিতে পতিত হইল! বণিক এবং অন্যানা যাত্রী সকলেই ভীত ছটল ৷ এই কালে লাচিয়ান এবং হানশ দেশীয় অন্যান্য সন্মা বেস্তারা डाड्राटपद दक्षा धवर के रेनटवाशक्षव मास्तित নিমিত্ত কুয়ানশির্ছনের সবিশেষ ভক্তনা ক-রিতে লাগিলেন৷ পো**তত্ব তাজে**ণেরা এ কত্যে বিচার করিয়া কহিলেক এই শাননের॥ मः मर्ग निमिष्ठ आभातिमिरशत अहे क्रूरें कर ঘটিয়াছে, অতথ্ব এই সনুদ্রস্থ কোন উপ-দ্বীপের তটে ইচাকে নামাইয়াদিব, কার-এই একজ্বনের নিমিত্ত সকলের আপদে পড়া উচিত নহে। কাহিয়ানের পরম হিতকারী এক ব্যক্তি কহিলেক, যদ্যপি তেমের: এই শাষনকৈ নামাইয়া দেও ভবে হান দেশে উত্তীৰ্হইয়া তত্ত্ব রাজার নিকট সামি তোমার্দিগের নামে অভিযোগ করিব ৷ হান দেশের রাজা স্বয়ং বৌদ্ধ মতাবলধী এবং ধর্ম বেন্তা ও ভিকুকদিগকে বিশ্বর সমা-দর করেন ৷ ইত্যতে বণিকেরা সন্দিক্ষ হ ইয়া তাত্তিক নামাইয়া দিল না।

আকাশের খনার্ততা প্রযুক্ত নাবিকের।
ভাত হইরা পরক্ষর অব্লোকন করিছে
লাগিল ৷ তাহারা সপ্ততি দিবস পর্যাত্ত সমুদ্রে থাকাতে ভোজা পেয সমুদার করে। প্রায় কেব হইল। তথন ভাহারা সমুদ্রের ল

^{*} এই শব্দের হার। বোধ ছইতেছে যে পোচে ফা'ছ। য়ন ব্যক্তীত জ্বনা বৌদ্ধ ধর্ম্মাবলন্তি লোক ছিল।

[ী] সংস্কৃত নাম অবলোকিছেশ্বরূপ বৌদ্ধ মডানু সারে তিনি স্বস্থ্য সৃষ্টি করেন।

[‡] बुद्धात हीन दल्लीस नाम :

ই অর্থাৎ প্রবল হয় নাই, তারণ পূর্কে দুক্ত হইরাতে ১৭০০ বংলার পূর্কে তথায় বৌদ্ধ মন্ত প্রচারের আরম্ভ বস্তুঃ

[ो] **अर्था** भीन दिल्ली हे होता उरमदित हे क्रूर्थ सारम ।

[‡] घीटनव च्यनःशाखी नशत निटणतः विश्वादमदः जागास्य कालिन् वटनः

গ চীন। পূর্বে হান বংশোদ্ধর রাজার। চীন গেশে রাজক্ষ করেন, এপ্রযুক্ত ভাহা হান নামে প্রসিদ্ধ হয়

[॥] সংস্কৃত নাম আমদ। ' বৌদ্ধ সভ্যানি বিশেষ।

বণায় ছারা পাক করিতে লাগিল উত্তম জল व्यविश्वेशाहा हिल छाहा व्यश्म कतिहा ल-हेट नाशिन, हेरास्ट थरडाक बर्टन हुरे শিং * পরিষিত পাইল। এই অবশিষ্ট জলেরও শেষ হয় এমত সমরে বণিকেরা প-वामर्भ कहिरलक स्व शक्षांगर निवरमण्ड কোয়াঞ্তে উদ্ভীৰ্ হওয়া যায়, কিন্তু বছ पित्र अञीष इरेत्रारः, आयात्रित्रत थाना সানগ্ৰী শেষ হইয়াছে, অতএব একণে উ-ত্তর পশ্চিমাভিমূপে ভূমি প্রাপ্তির চেষ্টা করা কর্ত্রা। ক্রমাগত ছাদশ দিবস গভ কইলে তাহারা লাও নামক পর্বতের দক্ষি*-*ণাংৰে উপস্থিত হইল, কিন্তু দে স্থান চীনদেশের অন্তঃপাতী কি না ভাষা অনু ভব করিয়ন্ত পারিলেক ন।। পরে স্থান নিব্যার্থে এক কুদ্র ভরি আরোহণ করিয়া নদীসুখে প্রবেশ ক্রিছে যার, এমত সময়ে म्हार एवं क्रुड़े कन ब्राप शुंट्ड कितिश याहे. ভেছে: ভর্ম কাহিয়ান সকলের সম্মত্য-ৰুসারে তাহারদিগকে অভয় দুদন পূর্বাক ক্রিজ্যাসা করিলেন, ভোমরা কোন্ জাতীয় मनूषा? इंशाटक काशाता केंखत कतिल था-यता का मठावनशी १। অনুস্তর ডিনি পুনবীর জিভাসা ক্রিলেন তোমরা এই পর্বতে কি জনা আসিয়াছিলা? তাহার কপটতাকরিয়া উত্তর করিল কলা সপ্তম **চান্ত बारमद পঞ্চল দিবদ, অভএব কলাই** কোর মহোৎসব ফইবেক, একারণ আমরা का परवंद्र विश अनामार्थ वस्त्र विरमस्यत् অধ্যেশণে আসিয়াছিলাম ৷ তদনন্তর তিনি জিজ্ঞাসা ক্ষিত্রেন '' এরাজ্যোর নাম কি ?'' তাহারা কহিল 'ইহার নাম গ্লিজ চিউ॥' ইল:লিওবংশাধিকত ছাল কোএল কিউল म पर दारकाक भी याव छीं। विवक् भंग এই কথা আৰুণ করিয়া পরমূহর্ব প্রাপ্ত হুইল,এবং দেশমখ্যে প্রবিষ্ট হুইয়া বাণিজ্ঞা कार्ट्या भरनारयाशी ६३न।

এভাৰৎ চিচ্ছ বণিক্দিপের বিবরণ এই अरब ब्याश र उन्ना पारेटक्टर, अवर रेट्नाटक স্পন্ধ ৰূপে ব্যক্ত হইছেছে যে পঞ্চদশ শভ বৎসর শুর্বে হিন্দুরা বৌদ্ধের সহিত একত্রে शयनाश्यमन क्रिक, अवश्यकाणि क्राप्त जिन মানের অধিক কাল সমুদ্র পোক্তে স্থিতি ক-রিয়াও ভাহারা জাতিভাষ্ট বা নিক্ষনীয় হই-क ना। युगलमानिष्टिशत आयुक्ति विवर কাম্পনিক ধর্ম প্রচার দার। এইক্ষণে ভারত वर्षत जामृग मोतव धककालीन खेरमन ঞার হইয়াছে, এবং অজ্ঞান বশতঃ তাহার পুর্ব্ব মহিমার সভ্যতার প্রতিও সন্দেহ জ বিয়াছে৷ কিন্তু অজ্ঞান ৰূপ তিমির কং-কাল ধাকিতে পারে ? ভারতবর্ষে নুড> জ্ঞান দিবসের উধাকাল মাত্র সম্পূতি উপ স্থিত বোধ হয়, বুরায় জ্ঞান স্বরুণ কড়ে। ब्जुन निवादनाक श्रकाम गाईरव।

देदकद मन्याना

दल जाहा है।

তৃতীয় প্রধান সম্পুলায়ের নাম কর সম্পুলায় ! বলভাচায়া ইহার প্রবর্ত্তক প্রযুক্ত লোকে তমভাবলম্বি বৈক্ষবদিপকে বলভাচারী বলিরা থাকে ! যদিও রাম সীভার উপাসনা ভারতবর্ষের সর্ব্ধ স্থানে প্রচার আছে, কিন্তু ভাহার উভর থণ্ডের, এবং বিশেষতঃ পশ্চিমাঞ্চলের ঐশর্যাশালিও ভোগবান্ গৃহস্কের। প্রায়ই রাধারক্ষের উপাসন; কিছু দিন হইল ছং প্রদেশে বলভাচার্যা-স্থাপিত বালগোপালের সেবা স্ব্রাপেক্ষা প্রবল হইরাছে ! গোকুলন্থ গোস্থানিরা এই ধর্মের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরারা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরারা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরারা এই বর্ষের উপদেশ দেন, এক্র-কুক্ত ভাহাকে গোকুলন্থ গোস্থানিরিল

এপ্রকার লোক প্রবাদ আছে, যে আনে বেদ-ভাষাকার বিষ্ণু স্বামী এমডের সার তত্ত্বচার করেন। তিনি সন্মাসাক্রমী ব্রাহ্মণ ব্যক্তিরেকে অন্যকে শিশু করিতেম না। তাঁহার শিষ্য জ্ঞানদেব, জ্ঞানদেবের

^{*} ठीन दस्पीय शतियाग विद्यातः ।

[ी] लोक मकावनश्ची।

[॥] जीदनत् व्यवःशाठी नगत् विरणहः

শিব্য নামদেৰ, ও তিলোচন, এবং ভাঁছার-मित्र व्यवादिक काल भटत, व्यथवा कित्र -काल वायधानानखत्र, टेळलिक एम्नीय लक्सन ভটের পুদ্র বল্লভাচার্য্য তৎপদে অভিবিক্ত হইয়া পাঞ্চল শত শকের মধ্যভাগে বি-শিষ্ট প্রকারে স্বমত প্রচার করেন। श्रंत किनि शाकुरण " वाम कतिरकन, धवः তথার কিরৎকাল যাপন করিয়া তীর্থ পর্য্য-हेन कातुन। ज्लुशामात्र निविज भाष्ट्र, যে তিনি দাকিণাতো বিজয়-নগরাধিপতি রুঞ্চদেবের সভায় উপস্থিত হইয়া তথাকার श्वार्क द्वाञ्च । फिशंदक विकाद श्रेताल करत्व, ও ভত্রত্য বৈষ্ণবগণ কর্ত্তক ভাহারদিগের व्याहाया शरम व्यक्तिक इरायत्। द्रशा इ-ইতে উজ্জয়িনী নগরীতে উত্তীর্ণ হইয়া শি-প্রা তটে অশ্বর্থ বৃক্ষতলে স্থিতি করেন। লোকে বলে ঐ স্থান অদ্যাপি ভাঁছার বৈঠক বলিবা **প্রাস্ক আছে। মধ্রার ঘাটে ভা**-जात चात अक रेवर्ठक कृषि चाटह, এবং চুনারের এক কোশ পূর্বে এক মঠ ও মন্দির আছে। তাহার প্রাঞ্নে এক কুপ আছে বলিয়া জ স্থানকে **সাচার্য্য** कुँगा करह । छथा म जिनि कि हु मिन प्यत-স্থিতি করিয়া রন্দাবনে প্রত্যাগমন ক-রিলে পরে শ্রীকুঞ্ তাঁহার অচলা ভব্দি ও তদর্থ-কায়-ক্লেশ স্বীকার করিতে দেখিয়া পরম পরিভুষ্ট হইলেন, এবং অতি অপূক कत्भ कर्मन किया वालागाभारतत (मदा श्र-চার করিতে আদেশ করিলেন৷ বল্লভা-চার্য্যের অভি আক্র্যা মৃত্যু লাভের আঃ-শ্যান আছে। তিনি শেষকালে কিছু দিন ৰারাণসীর ফেঠন বড়ে বাস করেন, জদাা পি उथात्र अक मठे आदहा अक निवन हमू-মান্ঘাটে গঞ্চাসলিলে অবগাহন করিতে করিতে এককালে অন্তর্হিত হইলেন; তথা হইতে এক দীপ্যমান অগ্নি শিখা উপ্থিত হইল ৷ তদৰম্ভর বছতর দর্শক সমক্ষে সুর্গা রোহণ করিতে লাগিলেন,এবং অবশেষ আ-কালে লীন হইয়া গেলেন ৷

ধানও মহাজ্ঞারত অবধি করিয়া বিষ্ণু ও রুফের অভেদ বর্ণনা আরম্ভ হয়, এবং শ্রীভাগরতে তাঁকার কেলি-কৌতুক-পূর্ণ যৌ-বন লীলার বাজন্য বর্ণনা আছে, কিন্ধু বিষ্ণু অপেক্ষারুক্ষের প্রাধান্য বর্ণনা প্রভূষ্ট এ-স্থের কোন অংশে নাই, ও ভাহাতে শ্রীক্ষ্ ক্ষের বালকপের উপাসনারও স্পন্ধ বিধি প্রাপ্ত হওয়া যায় নাই।

পরস্ক রুমেনর ঈশ্বরত্ব স্থাপন করা ব্রক্ষ रेवनर्ड भूतारवंत्र मञ्जाय ठारभया, उन-নুদারে ঐক্ষণ সমায়াতীত, গুণাতীত,নিত্য সত্য পরমেশ্বর ৷ ডিনি পূর্ন যৌবন-সম্পন্ন নানারত্ম-বিভূধিত, পীতাম্বর, মুর্রীধর স্বরু-পে অক্য়গোলোক ধামে নিভা স্থিতি করে-ন৷ বিষ্ণুর বৈকুঠ ধামের পঞ্চাশহ কোটি रशकात्मत छेलद हुम्नावमबानी शालाहनत शिटलाक थाम**†। ठाँ**हा इंटेर्ड **अहे ह**ना চর বিশাউৎপদাহয়। ভাঁহা **হইতে** তি छन, अक्षज्ञ, धवश एन जनामित्र क्राय क्राय উৎপত্তি হয় ৷ তাঁহার দক্ষিণ পাৰ্য হউ -তে নারারণ, বাম পার্ষ্টটে মহাত্রব, माकि পদা हरेत्व अका,वकःस्व इहेट धर्यः, मुथं इट्रेंट भवचर्डी, मन इट्रेंट लक्की, वृक्ति হইতে ছুগা, জিহ্ব। হইতে সাবিজী, মানস হইতে কামদেব, **বামা**≉ *চ*ইতে রুতি ३ तार्विक। अजिरमन । রাধার লোম-কুপ হঠতে ত্রিংশৎ কোট গোপাস্থনা, अवर **अ**कृटकत लामकृष स्ट्रेट विश्मस

^{*} যমুনাত বামভটে মণুরার প্রায় তিন ক্রোল পূচের গোকুল প্রাই ≀

কিন্তু জীয়াগবছে বালকুমের ইবর ভাব বিদিত আছে। আর মহাভারতে বন পর্য্পে ১৮৮ অগ্যানে এবপ এক উপান্ধান আছে দে মার্ক্রের মুনি, প্রপ্রক নেতে, বিশ্ব বিচরুৎ করিতে করিতে লেখিলেন, এক প্রকার উপর দিবালরও করিতে লেখিলেন, এক প্রকার উপর দিবালরও করিতে লাখিলেন মার্করের হই বালক কুমার ও জীবভান কিবলেন মার্করের বাই বালক কুমার ও জীবভান কিবলেন মার্করের বাই বালক কুমার ও জীবভান কিবলেন মার্করের। আবিজুতি হইয়া করিলেন কিবলা পরিস্রাম্বর আবিজুতি হইয়া করিলেন প্রতিষ্ঠানি করিলেন কর

[†] নিরাধারক বৈকুভোরক্ষাঙানা৲ পরোবরঃ। তৎপরক্ষাণি হোজোফঃ পঞ্চাশ্বকোটিযোলনাম।

কোট গোপগণ জিমল। গোলোক ধা-মের যাবৎ গাড়ী ও বৎস, যাহার৷ কুন্দা-বনেও আসিরাছিল, তং সমুদায়ও ভাঁহার লোনকৃপ হ**ইতে** উৎপন্ন হয়। **রুক্ষ অনু**-্রাহ করিয়া ভাষার একটি গরু মহাদেবকে দিয়াছিলেন। এই পুরাণে সৃষ্টি প্রক্রিরা কথনে সৃজন কর্ত্তা অর্থাৎ 🖣কুঞ্চের কিশোর ৰূপ বৰ্ণনা আছে, আর তাঁহার বালালী-লার বর্ণনা মধ্যে অনেকানেক অন্ত ক্রি-য়ার প্রসঞ্জাছে। অতএর যদিও বাল-গোপালের উপাসনার বিশেষ আদেশ ন। থাকে, তথাপি ভাগৰতে এবং বিশেষতঃ ত্রহ্মবৈরর্ভ পুরাণে ভাঁছার বাল্যলীলা পাঠ দ্বারা ভক্তের মনে জ্রীক্লফের বালৰূপ উপা-সনার বিষয় উদয় হইয়াথা**কিবেক**।

াধন জীরুকের শরীর হইতে পঞ্চলতাদি নিঃসৃত হুইবার প্রসক্ত আছে, তথন তদন্সারে বেদান্দু দর্শনের ন্যায় কার্য্য কারণে অর্থাং ঈশরও জগতে অভেদ প্রতিপ্রন হইতেছে! আর বল্লভাচারীদিগের প্রামাণিক শাস্তের মধ্যে বার্ভানামে এক প্রস্থ আছে, তাহাতে জীব এক্ষে এক প্রকার অবিশেষ লিখিত আছে।

ভব্ জীআচার্যা স্কীনে কছী। . জা তুম জীবজো ৰভাব জানতী হো দোৰবক কৈ . ভোতুমমো সগদ্ধ কমে হোষ। ডুক্ জীআ: চার্যা জীলো জীবজা কছে। জো তুম জীবজো ব্রহ্মসন্থ্যকরো কোঁ ভিনমে জীব কার করে। জোঁ।

্রন আচার্চা জী কহিলেন, বুমি জীবের বভাব জাত আছা, ডাহার সকলই লোদ তবে কি রূপে ডোমার সচিত ভাহার সংযোগ হইবে? ভাহাতে টাকুর জী (অর্থাৎ প্রকৃত্র) কহিলেন, তুমি ব্রক্ষের সহিত জীবের যে প্রকার সমৃদ্ধ করিবে, আমি ভাহাই বীকার করিব। লাইব।

বল্লভাচার্য্য একটি অসামান্য বিষয়ের বিধি দিয়া গিরাছেন, হিল্ছ ধর্মা পরিবর্তকের পক্ষেতক্রপ উপদেশ করা সন্তাবিত নহে। তিনি এইকপ উপদেশ করিয়াছেন, যে পর-মেশরের উপাসনাতে উপবাসের আবশ্য-কতা নাই, অন বস্ত্রের ক্লেশ পাইবারও প্র-য়োজন নাই, ও বনবাস পুরংসর কঠোর তপস্যাতেও কলোদ্য নাই, উত্তম বসন পরিধান ও সুখাদ্য আর ভোকনাদি যাবৎ সংসার-সুথ সড়োগ পুর্বক ভাঁহার সেবা কর। বস্ততঃ এতৎ সাম্পূদায়িক বৈষ্ণবেরা অত্যন্ত ভোগি। গোশামিরা সকলেই গৃহ-স্থ, এবং সম্পূদায় প্রবর্তক বল্লভাচার্য্য ব-**नि** अथरम मधामी **हितन, किंद्र** लारक বলে তিনি পুনর্বার গাইক্যান্তম থাবেশ (मदरकत् शासामिनिश-করিয়াছিলেন ! কে পরিধানার্থে উত্তমোত্তম বহুমলা বস্ত্র প্রদান করে, এবং চর্কা, চোষ্য, লেহা, প্রেয় নানাবিধ সুরস দ্রব্য ভোজন করায়। গো-স্থামিদিগের অভ্যন্ত প্রভুত্ব; শিষ্টোরা তাহ। রদিগকে তন 🔭 মন, ধন তিনই সমর্পণ ক-ব্রিবেক ৷ সেবকেরা অনেকেই ব্যবসায়ি লোক, এবং গোস্বামিরাও বাছল্য ৰূপে বাণিক্ষ্য ব্যবসায়ে লিপ্ত থাকেন, এবং তীর্থ ভ্রমণোপলকে দূর দুরামূর গমন করিয়া বা-ণিজ্য কার্য্য নির্ববাহ করেন !

দেবসেবার বিধয়ে অন্যানা সম্পুদারের পঞ্চ ত হারদিশের বিশেষ বিভিন্নত:
নাই৷ ই হারদিশের গুচে ও মন্দিরে গোলাও রবাধা রুষা, এবং রুষ্ণানভার-ব্যক্তীয় অনানা প্রতিপুর্ত্তি থাকে৷ এই সমস্ত প্রতিমা প্রায় ধাতু-নির্দাতই হইয়া থাকে৷
প্রতিদিবস শ্রীরুষ্ণের আটবার সেবা হয়,

> সক্লারতি। সুযোদেরের অর্ক ঘট। পরে জ্রীকৃষ্ণকে শ্যা হইতে উত্থাপন পুরঃ-সর আসমাক্ত করিয়া তায়ূল-সয়লিত যথ কিঞ্ছিৎ জুল পানের সামগ্রী প্রদান করিতে হয়,এবং তৎকালে দীপ রাখিতে হয়।

২ শৃঞ্চার ৷ চারি দও বেলার সমমে প্রীক্ষ তৈল,চন্দন, ও কপুর দারা সুগল্পিত ও বস্ত্রালকারে ভূষিত হইয়া বার দিয়া বস্মে।

ত গোষালা। ছয় দণ্ড ছইলে জীক্ষ যেন গোচারণে যাত্রা করিতেছেন, এইবর্গ বেশ ধারণ করেন।

৪ রাজভোগ! মধ্যাত্র কালে জীর্ফ গোচারণ সমাপন পুরংসর গৃহত্ প্রভ্যাগমন

* महीवा

করিয়া ভোজন করিতেছেন, এই মনে করিরা দেবালয়ের পরিচারকের। বিএই সমীপে নানাবিধ মিন্টার 'ও জন্যান্য বিবিধ প্রকার সুখাদ্য সামগ্রী স্থাপন করেন,এবংভোগ সমাগ্র হউলে পরে প্রসাদি দ্বর্য ও 'এন্যান্য স্থপকু সামগ্রী উপস্থিত সেবক্দিগতে
পরিবেশন করিয়া দেন, এবং কোন কোন
ধনাত্য ও সন্ত্রান্ত শিধ্যের বাটীতেও প্রেরণ
করেন।

৫ উত্থাপন ৷ ভোগান্তে বিপ্রকের নিজা বি হয়, পরে ছয় দণ্ড বেলা থাকিতে জাগ্রহ করিয়া উত্থাপন করিতে হয় ৷

৬ ভোগ । উত্থাপনের অর্দ্ধ ঘন্টাপরে বৈকালিক ভোগ হয়।

৭ সন্ধা: ৷ স্থান্ত সময়ে বিএকের সাথংকালিক সেবং হয়৷ তথ্ন তাঁহার দিবা-পরিহিত সমুদার অলক্ষার উদ্ঘাটন করিয়া পুন্ধার তৈল ও গন্ধ দেবা লেপন করিতে হয় ৷

৮ শর্ম: মনুমান ছয় দণ্ড রাজির সময়ে বিগ্রাহকে শ্যারে ব্যুপন পূর্থক তৎ সল্লিগানে পানীয় জল, তারু লাগার, ও অন্যানা আছিতর দেবা সমুদ্যি বাধিয়া পরিচারকেরা দেবালয়ের ছার রুদ্ধ করিয়া প্রসান করেন।

এই সকল সময়ে প্রায় এক প্রকারই সেবা হয়; যথা পুষ্প, গলা ও ভোগ দান, এবং শ্রীক্লফের স্তোত্ত পাঠ, ও সাফীক্ল প্রগাম ৷ বিগ্রহ-পুষ্পকেরা এবং অন্যান, লোকেও এই সমুদায় অনুষ্ঠান করেন, কিছ্
কৃষ্ণ স্তোত্ত প্রায় পূজকেরাই পাঠ করিণ।
ধাকেন।

নিতাদেবা ব্যতিরেকে কতকগুলি সাম্থ-সরিক মহোৎসব আছে, যথারথ যাত্রা, রাস যাত্রা, ও জন্মাক্টনী । রথযাত্রা বাল জলা ও উড়িস্যাতেই বিশিষ্ট কপে হয়, পশ্চিমাঞ্জেরও কোন কোন স্থানে হ-ইয়া থাকে ৷ কালীধামে ও অপরাপর পশ্চিম প্রদেশে জন্মাক্টনী ও রাস্যক্ত্রায় মহা আমোদ হয় ৷ প্রাম-সন্নিচিত কোন চত্তর মহা সমারোহ পূর্বক রাস্যাত্রার

কার্য্য সম্পন্ন হয় ৷ কত প্রকার মনুষা কত প্রকার খেত, পীত, লোহিতাদি উত্তমো-ভম বসন পরিধান পূর্বেক রাস ভূমিতে স-মাগত হা ও কত প্রকার নৃত্য, গীত, বা-भार अनुष्ठीन रव. ७ न्याममुन्दरात मुननिष्ठ लीनानुक्र भद्रम को कुक अपर्मिक इस्र। স্থানে স্থানে গায়ক, বাদক,ও নর্ত্তক সকল স্থেজানুদারে উপস্থিত হইয়া নিজ নিজ গুণ প্রকাশ পুরুষর বিলাকের মন্ত্রারঞ্জন করে,এবং দর্শক গণ পরম পরিবাট হাইয়া ভাহারদিগকে মনোমত পারিভোষিক প্র **मान करत्र। ऋारन ऋारन जुन-४५, बद्ध ५४, ३** প্ৰাশ্লি: প্ৰস্তুত হয়: মধ্যে মাপা মনোচন **দোলনাও ঝোলনা সকল আলমিত** ফটয়; লোকদিগকে অতিশয় আমোদ প্রদান করে, अপर्याश कल,मूल, अभिकात मम्नास विक्रिक ৰূপে সজীভূত হইয়া সংবস্থান সুশোভিত करत, १व॰ मर्भक शंग शतम (को खुरुलानिक श्रेत्रा **উल्लिश किए क्लिक्ट्रिक विरुद्ध** कहि-তে থাকে। অসংখা লোকের সমাগম। বিচিত্র বসন। বিচিত্র ভূষণ। পরম কৌত্রু। পরমান শ্রমা সুদৃশ্য ব্যাপার! ইহাতে আন্মনের बात मीमा थाटक माः कुम्मावटम् अस्त আশ্বিন মানে দশমী অব্ধি পূৰ্মা প্ৰান্ত अ**हे छेदम**द इस्रा उथास कर नहीं होते ही। প্রস্তর ভূমির উপর শ্রীক্লফের রামলীকা প্রদ-ৰিভি হয়। 🏲

বঁজভাচারিরা ললাটে ছই উর্দ্ধু পুরু
করিয়া নাসাসূল-সংলগ্ধ অদ্ধান্তক্ষাকৃতি রেথার সহিত সংযুক্ত করিয়া দেন, এবং তথাধ্যে এক রক্তাবন বজুলাকার তিলক করেন
এতৎ সাম্পুলারিক ভক্তেরা প্রীবৈক্ষবদিগের
ন্যায় বাভ ও বক্ষংস্থলে শভ্ধ, চক্র, গদা, পদ্যের প্রতিক্প চিঙ্ক করেন, এবং কেছ কেছ
শ্যামবন্দী নামক ক্ষেম্ভিকা, অথবা অন্য
প্রকার ক্ষর্বন থাতন পদার্থ ছারা পূর্কোক
ললাট মধ্যবর্জি বজুলাকার ভিলক করিয়া
থাকেন ! ই ভারা কঠে তুলসী মালা এবং
ছক্তে তুলসী কাউর জপমালা গারণ করেন,
এবং ক্রিক্ষাও ও জন্মগোপালা বলিয়া পরস্থাবং ক্রিক্ষাও ও জন্মগোপালা বলিয়া পরস্থাব অভিবাদন করেন।

্বলভাচার্যা সুবোধিনী নামে ভাগবতের

যে টাকঃ করেন, ভাচা ই হারদিগের প্রথান আমাধিক গ্রন্থ : তাহাতে ভাগবতের যানুলা वार्या चारह, हे हात्रा छाहाहे अहम करत-ন। তথাতিরেকে তিনি ক**তক গুলি একা**র্ত্ত এবং সিদ্ধান্তরহ্দ্য, ভাগবতলীকা রহ্স্য, একান্ত রহস্য প্রভৃতি অনেকানেক সংস্ত এত্রে ভাষা করেন। এসমন্ত গ্রন্থ ভাত ছুপ্ৰাপ্য, এবং কেবল তৎ সাম্প্ৰদায়িক প-গুতেরীই ভাহা পাঠাদি করিয়া থাকেন। ভদ্তির সামান্য সেবকদিগোর মধ্যে রুক্ষণীলা-প্রতিপাদক রম্ভতর গ্রন্থ প্রচলিত সাছে; ষধা বিষ্পদ: এগ্রন্থ ভাষার লিখিত, ও **बल्ल कार्हाया कु**ङ क्लिया **≇िमक जा**रक्। ইহাতে কভকগুলি-বিক্-গুণ প্রতিপাদক পদ चारह। उकविनामः उक्रवामि माम नारम এক ব্যক্তি এই অনতিকুদ্র প্রস্থ ভাষায় ब्रह्मा करतमः। हेशास्त्र औतृरक्तत्र वृननायम **লীলা**র বর্ণনা আছে। অক্টছাপ: এপ্রস্থে বলভাচাখ্যের আট জন প্রধান শিষ্যের **डेशाधान जारका वार्डाः वह हिन्दुदानी** এত্বে বলভাচার্য্য ও তাঁহার মতানুবর্ত্তি ৮৪ *জন ভবে*ণর *অতান্ত্*ত চরিত বর্ণনা **জা**ছে। के 68 करनेत्र मर्पा जी धरः भूक्ष उच्छा काष्ट्रीय अनवन वर्तास्व लाकरे हिन। এই কডিপন্ন ব্যভিরেকে আর আর বিত্তর গ্ৰন্থ আছে, কিন্তু সে মমস্ত এতাদুশ লোক-थिय नरह। *ভ*ङ्गालार्ड **ब**ङ्क मान्यु-শান্ত্রিক গুরুদিগের উপাখ্যান আছে।^{*} কিন্তু ৰলভাচারিরা অপরা পর সম্পূ দারের ন্যায় ভাহাকে মূল শাস্ত্র স্বৰূপ করিয়া অঙ্গীকার करतम ना। शृटका ज बार्का है जा मातरणत ভক্ত মালা-কামীয় ক্ইরাছে। ভক্ত মালার ন্যার এ**এতে জিন্নফের প্রসাদ ও** আবির্ভাব कृष्ठक व्यवस्थातिक व्यक्तिकिक अ.व्यवस्था-বিভ উপাধ্যান আছে৷ ভদন্তৰ্গত এক রাজপুতনী অর্থাৎ রাজপুত্র জাতীর দ্রার উপাধ্যান পাঠ ছারা বোধ হয়; এসম্পুদা-প্রের *মতে সহম*রণের বিধান ছিল না। বল-ভাচার্য্যের জগন্ধাথ ও রাণান্যাস নামে দ্বই শিষ্য নদী তীর্ষে স্থান করিতেছিলেন, এরভ कारन के जी बीच कार्यित महभगनार्थ छ। থায় আগমন করিকেন: তাহাতে জগ-

দাপ সম্ভব্দারি রানাব্যাসকে জিজাসিলেন, · জীলোকের সভীধর্ম প্রকাশের কে প্রখা প্রচলিত আছে, ভাহার ক্যাপার টা কি !" রাণাব্যাদ শিরস্থালন পূর্বকে কহিলেক "শবের সৃষ্টিক সৌন্দর্যোৱ অনর্থ সংযোগ।" রাজপুত্রী ভাহার শিরন্দালনের তাৎপর্য্য वृतिया प्रस्पेयान निवृत्त रहेल। किंकू भिन পরে রাজপুতনী অককাৎ তাঁহারদিগকে দেখিয়া পুর্বে হুডান্ত ও জাপনার সহসরণ নিবারণের বিষয় নিবেদন করিল, এবং তৎ কালে তাঁহারদের ছুই জনে কি কথা বার্ডা হইয়াছিল, তাহাও জানিতে প্রার্থনা করি-ল ৷ রাণাব্যাস নিশ্চিত জানিলেন,যে রাজ পুতনীর উপর জীমাচার্য্যের রূপা হইয়াছে. এবং জগন্নাথের সহিত ভাঁহার যে কথো-পকথন হইয়াছিল, তৎ সমুদয় অবগত করিয়া ক**হিলেন. যে তোমার রূপ** লাবণ্য 🎒 ঠাকুরজীর সেবায় সমর্পিত না করিয়া শবের উপর কিন্ত কর। অতিশয় অনুচিত ও অত্যন্ত ছুংখের বিষয় ৷" অনস্থর রাজ-शुष्टनीत बावाबगाम मिक्कारन खेशनिके इ-ইয়া 🕮 হাকুরজীর পরিচারিক। হইয়া কাল-হরণ করিবার আব্যান আছে[®]।

বল্লভাচার্য্যের পুত্র বিত্তলনাথ পিতৃ-পদে অভিষিক্ত হন, তৎ সাম্পু দায়িক লে:-क्ता जाहारक औरणामाहकी विलग्ना का-নে। বিভালনাথের সাত পুত্র হয়, গির্ধরি ताय", आविक ताय, वालक्क, लाकुल-নাথ, রশুনাথ, বছুনাথ, ও খনশ্যাম। তাঁ-हाता मकरणके धर्मा शरमनंक हिरलन, वदः ভাঁহারদের মতানুবর্জি দেবকের। যদিও পৃ-থক্ পৃথক্ সমাজভুক বটে, কিন্তু প্ৰধান প্রধান সমুদার বিষয়ে প্রায় সকল সমাজেরই ঐক্য আছে। কেবল গোকুলনাথের শিষা-দিগের কিঞ্চিৎ বৈশিষ্ট্য আছে। ভালার। স্কীয়,সমাজের,গোস্থামি ব্যতিরেকে আর • কাহাকেও শাস্ত্রবিহিত গুরু বলিয়া স্বীকার করে না, এবং অণর ছয় সমাজের মঠে कि हुई खेका करत ना। किंख विख्य नार्थत

[🛎] বোধ হয় সংগ্ৰহত নিষ্টিখারী সাম।

অন্য কোন পুত্রের মতানুবর্ত্তি লোকদের একপ একতর পক্ষপাত নাই ৷

नाना स्थातनत, अवर बिरमघटः एकत्राहे ও मार्लायात्र. बष्ट उत्र वर्षविक ও वाबमासि লোকে বল্লভাচার্যার মতাবলমি হইয়াছে. मू इतार अम्भु मारत अस्मकारनक धनाए। लाक बादह । जात्र ठवर्यत मर्बद्धात्म, भवः विश्विषकः भवता ७ बृन्सावत्न काँ हात्रनिरभन विश्वत प्रठे ७ (प्रवानम् आट्या काभीटण हुई বিখ্যাত ও বছসম্পতিবিশিষ্ট মন্দির আছে: लालकीत मन्द्रित ७ शुक्रसाख्यकीत मन्दिर। ক্রগল্লাথক্ষেত্র ও দারক। ইহাঁদের অভিপবিত্র डीर्थ, এवर खाक्रमीटत्त्र अखःगाठी श्रीमाय ছারের মঠ সর্বাপেক।গৌরবাধিত ও ধন-शानी वनिशा श्रिक आছে। अञ्चकात लाक-প্রবাদ আছে, যে এমন্দিরের বিঞাহ পুর্বে মধুরার ছিলেন, আরজজেব বাদশাহ তথা-কার মন্দির ভাঙ্গিরা ফেলিতে **অনুমতি** করিলে পরে ঐ সর্বান্তর্যামী বিগ্রহ তথা হইতে আজমীরে প্রস্থানকরেন। কার বর্ত্তমান মনিদর অধিক দিনের নহে, কিন্তু সেবক-দক্ত ধনে তত্রস্থ বিপ্রহের বিস্তর गण्यां इंद्र्यार्ह् 🕇 🛭 বল্লভাচারিদিগের একবার শ্রীনাথ দর্শন করিতেই হয়, এবং প্রধান গোস্থামির সলিধানে তদ্বিধয়ের প্রমাণ পত্র গ্রহণ করিয়া মঠের স্বানুকু-ला दर्श यथा म सत् किथिय किथिय मान कहिए उ **इ**य 1

বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার

প্রবৃত্তি অর্থাৎ ধর্মা প্রবৃত্তি ও বৃদ্ধি প্রবৃত্তির বিবরণ করা যাইতেছে।

উপচিকীর্ণা-- आমারদিগের যেমন উ পচিकीया अर्थाय कीटवत खेलकात कति-বার বাসনা আছে, সেই ৰূপ উপকারের সমূহ পাত্র সর্বাহানে প্রাঞ্ছওয়া যায়। এই পরম পবিত্র প্রবৃদ্ধি কোন আংলে স্বাধ-প্রবৃত্ত না হইয়া কেবল পরের শুভান্ধ্যা-নেই রত গাকে ৷ অন্যকে দুখ বিভরণ করা--তাপিত হৃদরে কর্ণামূত বর্ষণ করা ७ मुर्थाम b एवत ? "धारक के गर अवल कहा ममुनाप्रहे धहे धक व्यवृद्धित कार्या। बहे মনোর্ভি বাহার হিতাভিলাবে সঞ্র-করে, ভাহার দুখারবিন্দ যৎ পরিমাণে প্র-স্ফুটিত হয়,হিতৈষি ব্যাক্তির অস্তঃকরণ্ড ভত প্ৰকৃত্ৰ হইতে থাকে। লোক-সমাজে সুখ বিস্তার করিতেই ভাঁহার পরম আবছলান হয়, এবং ভ**ং কার্যা সম্পাদনার্থে ভাঁ**ছার পদস্ম দ্রুত গমন করে, ও হন্ত হয় সভত প্রস**্রিত থাকে। তাঁহার নিরাল**দ্য চিন্ত পরের হিত চিন্তাতেই সুখা হয়, এবং ভা-হার রসনা পরের **নম্মল কীর্ত্তন**ই পর্ম গ্র রি**তা**ৰ প্রাপ্ত হয়। আরু যথন তাঁছার কেনে কুশলাতিপ্রায় পূর্বয়, তাঁহার তৎকালের অবস্থার কথা কি কহিব !--ভিনি সুখানবৈ মগ্ল হন: য়িনি আমারদের এমত উৎ রুষ্ট স্বভাব 🎥 য়াছেন যে পরের মঞ্চল ক-রিতে গেলে আপনার মঙ্গল তাহা**র সভে** मह्म हे উদ্ধাৰিত হয়, ভাঁহার অপার মহি-মাওতানিৰ্বাচনীয় মঙ্গল স্থৰূপ আলোচনা করিলে অন্তঃকরণ প্রেমামৃত রুমে একেবারে দ্ৰ হইয়া যায়।

ভজি—প্রমেশ্বর অনেকানেক গুরু-লোক ও অন্যান্য নহৎ নহৎ ব্যক্তির সহি-ত আমারদিগের গুরুতর সমস্ক নিক্সীতে ক-রিয়া দিরাছেন, এবং তাঁহারদিগের প্রেচি গুরুতর ভবি সহকারে ভক্তিত ব্যবহার সম্পাদনার্গে আমারদিগকে ভক্তিরূপ প্রম গবিত্র প্রবৃত্তি প্রদান করিরাছেন। মহ্ছ ও উত্তমগুণ মনে হইলেই ভক্তির উদ্য হয়। যাঁ-হাকে কর্থনও দেখিনাই, যাঁহার কথা ক্থনও গুনি নাই, যিনি সহ্স সহক্র বৎসর পুর্কে

[্] কাশীর পোনারের। প্রত্যেক শুপ্তিতে এক প্রথম করিরা দেবাধ্যে দান করে। আরু তথাকার ২ন বাবসাঘির। প্রতিবারের বন্ধ বিক্রেরে দুই প্রসা করিয়া দেয়।

[।] প্রভাক মন্দিরের তিন কারে দান করিতে হব। ষথা বিগ্রহ সল্লিখানে,প্রবর্গকের গদিতে, ও জ্ঞীনাথ ভা রেশ্ব বান্দ্রতে।

मानाधील। महदुद क्रिया लाकास्त्र भगन ক্রিয়াছেন, ভাঁহার ও অসাধারণ ক্ষমতা ও অতি প্রশংসনীয় গুণ শ্রেবণ করিলে শ্রনি-বার্যা ভক্রিব প্রকৃতিত কইতে থাকে ৷ ভক্তি প্রভাবে বোধ হয় যেন তাঁহার পর-মারাধ্য মূর্ত্তি সমক্ষে বিদ্যমান দেখিতেছি! কিন্তু পর্মেশ্বর যেমন ভক্তির বিষয় এমন আর দিতীয়নাই ৷ এমন পরমোৎকৃষ্ট অনি-ব্যচনীয় গুণ-এমত মহত্ত্ব ভাব-এমত বিশ্ব-দ্ধ স্বৰূপ আরু কাহার আছে? যিনি এই প্রত্য ক পরিদুশামান জগতের সূজন কর্তা, এট অপরিসীম বিশ্বকার্যো ঘাঁহার অচিন্তা জ্ঞান, महौयनी मंख्नि, शतम मक्त अवल पानी भागान রহিয়াছে,সংসারের প্রত্যেক নিয়নে মাঁহার অপরিবর্তনীয় শাস্থভাব সমাক্ প্রতীত হইতেতে, ভাঁহার নাায় প্রেমের আম্পন ও ভক্তির পাত্র জার কোধার পাইব 🤈 ইংগ আমারদের পরম সৌভাগ্য যে সর্বস্থানে ও সর্ব্ধকালেই ভাঁছার নিদর্শন ব্যক্ত রহিয়াছে। পরমেশর-পরায়ণ ভব্তিমান্ব্টি সকল স্থানেই তাঁহাকে উপলব্ধি করিয়া তাঁহার প্রেমে মগ্ন হয়েন ! খন বিজ্ঞান কানন বা ক্র্রু-শুনা মক্লদেশ, গভীর সিন্দু-গভ বা জনকি ন बाजधानी, अथव-विद्या-अनीय मधाङ्क नगर বা ঘোরা দ্বিপ্রহরা তামনী বিভাবরী, মুশী তল সমীরবহ প্রভাত সময় কুরিহঙ্গ কোলা रल क्लिक खान्तिस्त्र मास्क्लिन, व्यवः मूल-লিভ ভরণ যৌৰণ বা পরিপকু প্রবীণকাল, সর্বস্থানে সর্বাকালে ও স্বর্থি স্থায় পরাৎ-পর প্রমেশ্রকে সাক্ষি অরুপ দেখিয়া ভাষার চিত্ত ভজিরুসে দ্রবীভূত হইয়া যায় 1

आभा—आभाक्ष मतातृश्चि त्करल छवि

याद मुचीत्नृथर है मडड डर्पत । य পृथिवीट जीन विनय मतात्रथ पूर्व हश,य পृथि

वीट উপार्कन कतिया छमत्राम बाह्य कि क्रिक्ट हश, य पृथिवीट छित्राम यूथनाएक सर्वीकास वर्डमान हर्थानू छत्त होन कि क्रिक्ट हस, थहे आभावृद्धि त्मपृथिवीत
ममाक् छेमपुक हरेसाहा। यथन हम्माकाम विषय विश्वि क्ष्म त्मद वाता
रवास्व आक्रिक हम, उथन त्करन क्षत्रम

আশাবায়ু প্রবাহিত হইয়া ভাহাকে পরি-ক্ষত করিতে থাকে। **যখন আশার সহিত** কেন ভূল প্রবৃত্তির * সংযোগ হয়, তখন অন্তঃকর্ণ সার্থ-পরতক্ত হইয়া আত্মসুখ সাধনেই ব্যগ্র থাকে। আর যখন কোন ধর্মা প্রবৃত্তির সহযোগ ইয়, তখন ইচ্ছা হয় विश्वतः मात्र ज्ञानरमः পরিপূর্ণ হউক। ইহ লোকে পরমেশরের জ্ঞান, শক্তি, মঞ্চল স্কপ, ও অপরিবর্ত্তনীয় স্বভাবের উপর নির্ভর করিয়া ভাঁহার নিয়মানুসারে যথো-हिट উপाय अनुष्ठान कतिताह देखेलाङ হয়, এইৰূপ বিশ্বাস রাখিয়া আশাকৈ চালিত ও চরিতার্থ করা কর্ডবা। কিন্তু কেবল ইহকাল ও এই ভূম গুলমাত্র আশার বিষয় নহে। জিজীবিধারুত্তির সহিত তাহার সং-धान बबेल अहदसं बाहु होत कति ग्र ভূপ্তি হর নাঃ তথন এই শতব্ৎসরকে অতি অপ্পকাল বোধহয়,এবং এজীবন অতি অকি ঞ্চিৎকর জ্ঞান হয়।তথন মনে হয় অনন্তকাল-ই সংমার প্রনায়ু,এবং অধিল সংসারই আ-মার নিত্যধান; আমি এই জঘন্য দেহপিত্রর **হইতে উড্ডীয়মান হইব, লোক লোকান্**র গমন করিব সর্বেত বিচরণ করিব, জ্ঞান ভৃষ্ণঃ শান্তি করিব,এবং পূর্ণকাম হইরা অপ্য্যাপ সুখসভোগ করিব। যদি কোন ভয়দর কাল উপস্থিত হুইয়া ভূমগুল বিনাশ পায়, চক্ৰ स्र्या व्यक्षना इत्त, अवः के क्षका उ क्षका उ গ্ৰহ **নক্ষত্ৰ সকল স্বস্থান** হইতে চ্যুত হয়, অ-ব্যবস্থিত ও দিখিদিক্ ঘূর্ণায়মান ইইয়া ভগ্ন ও p र्रहा, धरे का कुना मान कश थ यमि अभ ६ इ-ইয়া যায়,তথাপি আমি বর্ত্তমান থাকিব! আ-শা ৰুক্তি মৰ্ত্ত্য লোকের বিবয়োপভোগে পরি-जुल ना रहेम्रा जातीकिक मुर्थामास এই कल শধ্রণ করিছে থাকে। ভাহাকে চরিভার্থ করিতে পারে এমত পদার্থ ব্রহ্মাণ্ডে নাই। কেবল প্রমেশ্রই তাহার

া শোভানুভাবকতা--পর্মেশ্বর আমার-জুনকে শোভা-প্রিয় করিয়া ভছুপযোগি

>ৰূল প্ৰবৃত্তি, অণভূষ্ট প্ৰবৃত্তি, ইডৱ প্ৰবৃত্তি, নাড প্ৰবৃত্তি এই নমুদায় শব্দে প্ৰাণিনিক প্ৰবৃত্তি জানিবে।

অশেব প্রকার রমণীয় পদীর্ঘ দারা সমস্থ সংসারকে বিভূষিত করিয়া রাখিয়াছেন, তাহার দর্শন শ্রেব ও মননে অন্তঃকরণ পরম প্রকুল হয়। সুন্দর চিত্র, সুশোভন পাযাণ সুন্তি, মনোহর অট্টালিকা, বা সুদৃশ্য ভূমি-থণ্ড সন্দর্শনে চিন্ত যে বিকসিত হয়, এবং কাহারও অন্তঃকরণকে জ্ঞান ও ধর্মেভূষিত দেখিলে প্রীতির যে সঞ্চার হয়, তাহার এই কারণ। আমারি হউক বা অন্যেরই হউক, সুন্দর বন্ধ প্রভাজ হইলেই সুখোদয় হয়। অতএব সমস্ত বিশ্বই এই শুভকরী রুত্তির উপভোগ্য, এবং যিনি আমারদের হৃদ্দর রাজ্যে এমন সুখের আকর স্কন করিয়া-ছেন, তিনিই ইচার সর্বোৎকুষ্ট বিষয়।

আশ্চর্য্য-এই রুত্তির গুণে অন্তুত, অসাধারণ, ও অভিনব বস্তু প্রত্যক্ষ হই-त्त इर्त्वापय इत्र । त्य शृथितीर अभूमात्रवे অনিভ্য, যে পৃথিবীতে সকলবস্তাই পুরাতন বেশ পুরিত্যাগ পুর্বেক নিয়ত নবীনরূপ ধা-রণ করিতেছে,নাশ ও উৎপত্তিই যে পৃথি-বীর প্রকৃত ধর্ম্ম,এই রুদ্তি ভাহার সম্যক উপ মুক্ত হইয়াছে ! যথন আমারদিগের পর रमश्दतत में अभवित क्रितात में कि आहर, ও তাঁহার আশ্চর্য্য কার্য্যের বিষয় পর্যালে:-না করিবার, ও তাহার তত্ত্ব জানিবার ক্ষম-তা আছে, তখন এই পরম সুখদ রুত্তির উপডোগ্য বস্তুর আর অভাব কি? যত অনুস-স্থান করিবে, ততই অভিনৰ ব্যাপার ও অ-ছুত কৌশল প্রকাশ পাইবে। জগদীশ্বর धनारम अरे दृष्टि नर्यक अश्रशाश्च विषय आश रहेशा नर्याणारे हित्रकार्य इरेरकहरू. उ তদ্মারা অপরাপর অনেক মনোর্ভিও স্বন্থ বিষয়ে সঞ্চারিত হইয়া তৃপ্তিলাভ করিতে-ष्ट्रा चार्ब आखि अध्यव्हित मुद्रा अत्या-कन मा स्ट्रेटन ७ कम्बाद्वा अपूर मूर्यंत छे छत ₹ग्री

অধ্যবসার—সঞ্চতিত হইয়া কর্ম না করিলে সংসারের কার্ব্য সম্পন্ন করা অভি সুকঠিন, এনিনিত পর্যমন্ত্র আমার্যাদগকে অধ্যবসায় রুভি প্রদান করিয়াছেন। বে ছানে স্থানেক বিষয়ে পরের জ্বীর নির্ভর করিছে হয়, বে ছানে স্থানীই সাধ্যন নানা প্রকার প্রতিবন্ধক ঘটে; এবং যেখানে কাল বিলয় ব্যতীত প্রায় কোন অভিসাধ পূর্ণ হয় না, এই অধ্যবসায় রুক্তি সে স্থানের অ-ভাপমুক্ত হইয়াছে।

ন্যায়-পরতা—যথন মনুষ্যের কাম স্লে-হাদি কতকণ্ডলি প্রকৃত্তি কেবল স্বার্থ সাধনে তৎপর, এবং উপচিকীর্ণাদি অন্য কতক-छिनि धार्कि क्विन श्रामुतानि, उसेन এই উভয় জাতীয় প্রবৃত্তি সম্দায়ের আতিশ্য্য নিবারণার্থে, ও তাহারদিগকে ঘণা নিয়মে চালনা করিবার নিমিত্তে কোন স্বভন্ত শক্তি অবিশাকঃ পরমেশ্বর এই ন্যায়পরত। মু ত্তিকে সেই শক্তি দিয়াছেন। **এই শুভক্**বী इंखि मार्किक दृक्षि महकारत याहारक १ রের **অনিষ্ঠ ও নিরর্থক** আ। সাধের হানি मा इय अरेक्टल ममुमाय अवृद्धिक सन् वि यस्य ठाननां करत् । 'मकन वाक्किरक आव বং ভাবনা করিবে ' এই প্রসিদ্ধা প্রম र्मा ३ थड़े भड़ की वृश्वित छेशदनम स्वातः छत्। इ इउद्यासाय। अतम नगावदान् अतरमदर এই আল প্রতিনিধি স্বৰূপ রৃদ্ভিকে নরক্ষা-ামধ্যে স্থাপনা করিয়াছেন,তাহার चनुराको करेता छनित्ल नकन करमारे मू খোদ্য হয়, আর চাহার উপদেশ অবচে-तन कतिया धार्विष्ठ करमा श्रद्भञ्च इन्हेल তৎক্ষণাৎ ফ্লাহার দণ্ড স্বৰূপ ফুঃখ উপস্থিত रुप्त। यिनि आमात्रिमिटशत शत न्यात अन्।। य ব্যবহার করা নিবারণার্থে এমত গুভক্রী র্ত্তি সৃজন করিয়াছেন, তাঁহার সমান मात्रवाम् चात्र (क चाटहः ?

বে সমস্ত ধর্ম প্রবৃত্তির বিষয় বিবর বরণ করা গেল *, তাহার! স্থাস্থ বিষয় ভোগের নির্দিন্ট সীমা লজ্ঞন করিলে, অর্থাৎ মাজ্রিত বৃদ্ধি সহকারে যথা নির্দ্ধিন নিরোজিত না হইলে, বহুতর অনিষ্ট কীনার সভাবনা! শুরুদ্ধির পরিপাক না হইয়া যদি ভক্তিও উপচিকীর্যাদির আতিশা হয়, তবে কাম্পানক ধর্মে প্রাক্তা ও অতিব্যয়নীল্ডাদি নানা প্রকার অকর্ত্তব্য বিবয়ে

^{্ &}quot;উপচিন্নীর্যা, তক্তি ও ন্যায়পর্তা এই তিন প্রধান ধর্ম প্রস্থাবি । আশাঞ্জীয়তানুভাবতভা ও অধ্যবসায় এই তিন বৃষ্টিকে ভাষার অনুকূল বৃত্তি বলা যায় ।

প্রবৃত্তি হয়। অভএব বুদ্ধি বৃত্তিকে নাজ্জি-ত করা সর্বভোভাবে কর্ত্তব্য ৷

বৃদ্ধিকৃতি "-- বৃদ্ধি অভি এখন অন্ত ব-क्षा जाहारक ए विषय हानना क्या शंस, त्य दुष्ति मन्नाद्रश्चि ভাহাতেই লৈপুণ হয় ৷ মিত্রভাছ, বিশ্বাস-ছাতকতা ও নর-বধ স-'ল্পাদনের উপান্ন চিন্তা করে, সেই রুক্তিই এই ভূলোককে ऋগলোক সমান সুধ্যাম করিবারও মন্ত্রণা করিতে পারে ৷ কিন্ত याबनीय बख्न मन्त्रा उ क्षेत्र काना, छाङ्गरमञ् পরস্পর সমস্ত্র মিজপণ করা, এবং আমার-দের স্থল প্রসৃতি ও ধর্ম প্রসৃতি সমুদয়কে युवा निसरम निक्षाक्रम कतारे दुक्ति इंडित मुक्षा अस्त्राज्य। मुख्याः नमस्र मःनाद्रहे ক্ৰান্তাৰ উপভোশা বিষয়, এবং ভাষাকৈ যথা बिश्राम ठालक करितल व्यामात्रिक्शंत्र हिन्द कुषि जनवास मुध-ननित्व भाषिक स्टेस्ट পারে ৷

শ্বর্গাক আনার লিং অন্ত কৌশল প্রকাশ প্রকাশ আনার নিংগার নানানিক প্রকৃতির নাভিত নাজ বস্তু সমুখারের এইনপ সকল নিক্
পিত করিয়া শিয়াছেন, যে অংক্সাইনিটার অপক্রত প্রকৃতির বাবৎ কার্য্য বৃদ্ধি ও ধর্ম প্রকৃতি ক্রত্তার বাবৎ কার্য্য বৃদ্ধি ও ধর্ম প্রকৃতি ক্রত্তার অনুক্রত চ্ইলেতৎসমুদায় বারা আপনার সুর্বোৎপত্তি ও গুজনাধন হয়, আর ধে সকল কার্য্যাকার্যানের অনুক্রাণিত নহে, তাহা পরিণানে অনিক্রের কারণ হয়। থে পর্মানীল মুরোধ মাজিত বৃদ্ধি ঘারা বিলের করে বৃত্তি সকল মাজি ত বৃদ্ধি ঘারা বিলের করে, ঘদিও পরের গুজ সাধনই জাঁহার মুখ্য প্রেলক্ষম্পানে, কিন্তু গৌন কংশা ভল্পারা শ্বানারগ্র পরন মুখ্য মন্ত্রোগ্য হয়। ইহাতে পাণের মণ্ড

ও পুৰেণাৰ পুৰক্ষীৰ ইহুকোকে স্থাতে হ-ইয়া আদিতেকে ৷

আমারদিগের স্থূল র্ডি ও ধর্ম-প্ররু-জির যেকণ বিভিন্নতা দৃটি করা গেল, তাহা সবিলেন পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে এই পশ্চালিখিত তিন বিষয় প্রতিপন্ন হয় 1

প্রথমতঃ—জামার দিপের যাদৃশ মানসিক প্রকৃতি ও বাছ বস্তুরও যে প্রকার স্বভাব. তাহাতে অন্তঃকরণের কোন রন্তির প্রাবলা হইলে তাহার আর নির্ভি হয়না। দিও বিষয়োপভোগ ছারা ক্ষণিক নির্ডি হয়-জন পান ছারা কুধা ভ্রুতার পান্তি হয়, ধন লাভ দারা অজ্ঞান স্পতাক্ষা-লের নিমিন্ত চরিতার্থ হয়, বিষয় বিশেষে যশোলাভের অভিলাষ পূর্ণ হইলে অচিরাৎ र्जुश्चि कत्य. श्वविद्यह्म दुष्ति हालमा क्रिटन কিঞ্জিৎকাল বিচার-শক্তির মান্দ্য হয়, কিন্তু তাহার কিয়ৎকাল বিশ্রামের পরেই পুন-ज़कीश रहेता जान विषय लाजादर्भ बाद्धा करा। **अञ्जब आधारतिरात महादृ**त्ति प्रकल ए-থাৰৎ নিয়মিছ না হইলে উভৱোদ্ভর প্রবল उज्ञानाम करेएक बाटका विद्यायक: ভূদান্ত স্ক আয়ুন্তি সকল স্বার্ধপর ও সদ-স**ৎ-ফল-বিবেক-র**হিত, স্তুতরাং ভাহার৷ পরিমিত বিষয়োপিতোগ করিয়া ক্ষাস্ত থা-क्टि भारत्र ना। यनि आमात्रमिरशङ्ग क्र প্রবৃত্তি সকল, বৃদ্ধিবৃত্তি ওপশ্ম-প্রবৃত্তির শা-मन अवटरलय श्रुवःमत कविकिक निव्रम छ-লক্ষন করিয়া ভাৰবরত বিষয়োপভোগে য়ত থাকে,ভবে তজারা জাগনার ও পরের বিক্তম শনিকী মটনার সন্তারন।। বদি লো-कानुबाल लाक कात कारातिहरूद मधन्त कार्त्मात खेरकमा इस, घटन चन दिरमास कुक-ব্দির সমস্তব্দির নিমিত তুকর্মও করিতে হয়, क करकृत हुःथे ह व्याश क्ट्रेफ हम, बदर ए जकन गमकत विषय माधरनत कमला नाहे. বলোক্তাভ বৰতঃ তাহাতে প্ৰবৃত্ত হুইয়া ভ भ्राम । क्लिम बाध हरेए इत्। अवित्यम ক্লালাতাৰ বা ধৰ্ম-অব্যক্তিক ক্লীগড়া বলড়: রিপু-পরত্ত্ব হুইরা সালা বর্স, ক্রারা শ-होत्रः । शरन्त्र प्रकान्धान्त्रकानं । केव-পদ্ধবিদে, দে সভান কুৰ্মণ ও ব্যাধিপুক্ত

শ কুছিবুৰি নামুনাচকে নারি প্রাণীংক বিশ্রাগ কর।
যায়। তথাকে সেয়াপ্রোম্বার্টি শক্ত ফানেপ্রিচ প্রথম
প্রোনী-নিবিকী বার্জিপুটিছি জাকারানুভাবক্ষা, পরিমিতি প্রকৃতি বে নমন্ত বৃত্তি বারা বাদবক্ষর নার ও ৪৮
তাত হওয়াকার, জ্পালুকার বিভাগ প্রাণী-নিবিকী।
কালানুভাবক্রা,বার্ডাবকর্ত, মইনানুভাবকরেশ্যা
ভাগালি প্রকৃতি বে নমন্ত বৃত্তি নারা বাদবক্ষ নক্ষেত্র নারা ক্ষিত্র ক্ষা
কার প্রসামর সামুল জানা হাত,তথ্যমূর্যি ভূজীয় শ্রেমীনিবিকী। আর উপ্রিতি, ও স্প্রমিন্তি অব্রাৎ কর্ম্যা
কারণ ভান, চতুর্ব প্রেমী-নিবিকী।

বারিপু-প্রধান হইরা পিডা সাডার অলেন্ব যাতনার কারণ হয়। এইকপ আমারদিদের অক্সনস্থা আরাধন সকরে প্রেরিড
ইয়, কিন্ত ত্রজাওপতির অপওনীর নিরম
কানে বস্তুরা সহৎসর কালে পরিবিত ধন
দান করেন, আর মনুবোরও বৃদ্ধি ও পরিক্রানের নির্দিতী নীমা আছে, সুভরাং সককেই ধনাত্য হইতে চাহিলে অনেকে স্বভাবতই নিরাশ হইতে চাহিলে অনেকে স্বভাবতই নিরাশ হইতে বাহিলে অবির পরে সঞ্চল্ড করেন,তাঁহারা এই অক্পিত কথা মনে
রাধিবেন। অতথ্য স্কুল প্রবৃত্তি সকল বৃদ্ধির্ত্তি ও ধর্ম-প্রবৃত্তি ছারা নির্মিত না
হলৈ বহুতর ছুংখোৎ পত্তির সভাবনা।

षिञीयञः—सामात्रनिरभन्न वृक्ति-दृश्चि ७ धर्म-अविक ममुनावर नकार भेका अधान রভি, এখবুজ যথন আমারদের স্থলপ্র ন্তির কার্য্য তৎসক্ষত না হয়,তথন অন্তঃকরণ অপ্রসর ও অসত্ত ইইয়াগ্লানিযুক্ত থাকে ৷ ৰোধ হয় যেন শামায়দের মনের শ্রেষ্ঠ বৃত্তি সমুদায়,ইতর বৃত্তির অনুচিত ভোগাভিশরে **অসম্ভ**ণ্ট হইয়া ভিব্লকার করিতেছে ৷ তক্লণযুবার শুকোমল নরল চিন্ত এখনও পা-পরনে দূবিত হয় নাই, যাহার সাধ চিন্তা अवन्त मरमारद्वत कृष्टिम शर्व मध्यत् करत् गारे, ज्यर्पात कर्णात रख गारात मुकूमात নির্মাণ মতি এখনও স্পর্না করিতে পারে নাই. নে বৰি ছবিঁপাক বশতঃ ছুন্দা বৃত্তিত্বপ পি-শাচের বশীভূত হইয়া নোৰ হুদে ময় হয়, জবে সেই জানিতেপারে যে ধর্মের সাসম चर्ष्यकत क्रिया नौष्ठ श्रेष्ठितक प्रविकार्य করিলে কি প্রকার যাতনা ভোগ করিতে ইয়। তাহার অনুভাপ-ভাপিত হৃদর আ-व गाँखित्ररम चार्क्ज रुत्र मा, अवर मरनद्र श्री-নির স্থার পরিনীমা ধাকেনাঃ ভাহার भाशनात अवस्थातम् शतनात्र नत्रक नमान इत, ७ व्याप-पाणिनी इन्डिया पहर्तिण छा-रात विकास म्मियन कतिएक बादक। यनि क्याम विषक्षार्थी गालि छन्न वृत्तम स्विधि यमनक्षेत्र ७ मान नजम छेलाक्स विविध ध-काळ-िख रहेम्। नमक कान स्त्रन करत्रम, अवः बोक्स्कानावि बोहरकान श्रेके क्वित

काम. विकार, ७ जात्र वात्र निकलनाहि देव-মিক ব্যাপারে অনবন্নত ব্যাপৃত থাকিয়া मत्तर्व वीर्या क्यं करबन,चात्र गृष्टदार खिल, উপচিকীৰ্যা, ও ন্যায়পরতার অনুষ্ঠান না ক-तिमा वत्रक कषिक्ष वावशात कतिमा आहे-त्मन, अवर पणि वार्ककामभा खे**शश्चिक** हुदे লে আপনার গভলীবনের তাবৎ কার্য্য পর্য্যালোচনা করিয়া দেখেম,ভবে ভিমি দী র্থ নিংশাস পরিত্যাল পুরংসর এ**ক্থার্শার্শ্য** विनिद्यम (४ " क्विन कन्म, छेखाङि ७ **বিব্যাভিয়ান প্রকাশেই আমার সমন্ত আয়ু** পত হইয়াছে। আমার প্রেষ্ঠ মনোরুঙি नमुनाबरक চরিভার্য করি নাই, এবং জলি निक कान राजां थाना विकंत नुबस्ताः অধিকারী হইতে পারি নাই ৷ বুদ্ধিবৃদ্ধি ও धर्म-श्रद्धि **नमुमारतत चनुमानन करम चा**त्र चांत्र मम्ब मरमाइखिटक वर्ग मित्ररम हाममा করিলে যে প্রচুর সুখোৎপত্তি হয়, আফি ভাহা লাভ করিতে সমর্ব হই নাই ৷ কে বল কর্ম ভোগ করিয়া সমুদায় জীবন কে: পণ করিলাম।" শেষ দশায় এথকার অনু-তাপিত হওয়া ছঃসূহ যন্ত্রণার বিষয়।

क्षीत्रव्यामात्रमित्रात श्रधान श्रवृत्ति भभुगात्र यमि পরস্পার ঐক্য-ভাবাপদ খা-किया मार्किक दुक्ति बादा निरम्नाकिक हहेसा সঞ্চরণ করে, তবে তাহারা স্বস্থ বিবয়োপ-**ट्यार्थित व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति हा**। नकन इंखित यदकिकिर ऋ विं हरेटाल या-নন্দ লাভ হয়, আর তাহারদিরকে অপর্যা: গুৰূপে চরিভার্য করিভে পারিলে অন্তঃকরণ नुषीर्वत् मध इत्र । अहे ममक धर्म-धाइतिह মনুবন্তী হইয়া চলিলে পশ্চান্তাপে ভাগিত रुरेष्क रुव ना, अवर मूरशां भटकारभद्र भूजः **প्राः विटक्षण इ**स ना। जन्नाता वासता याद ব্দীৰৰ পান্তি-রসাত্র ও ছির-সুধ-সম্পন্ন হ-ইয়া কাল যাপন করিতে পারি: বিশেষতঃ 🕏 नक्न अयान अवृष्टित अनुशामी हहेता का. या क्रिक इ.न थर्डि मरुव द्रमाधा ममुल त्र **मूर्च छेर** शब्दे क्रिक्ट शास्त्र । आत्र स्वेत न जानाविराप्तव धर्मध्यवृत्ति मकल . मार्किक वृचि बाता निरम्भिक ना रहेरल रहकत सम ক্ষু মটনার দভাবনা, সেইৰূপ বৃদ্ধিও আ-

মারদিগের প্রবৃত্তি সকলের বভাব বিচার ও প্রত্যোক্ষন রক্ষা করিয়া বিবেচনা না করিলে প্রম-রহিত হইতে পারেনা। বস্ততঃ বৃক্ষিরুত্তি ও ধর্মপ্রহৃত্তির প্রোধান্য স্বীকার করিয়া ও স-মন্ত মনোর্ভির প্রয়োক্ষন রক্ষা করিয়া চলি-তে পারেন, এইবুপ অপ্রাক্ষত ব্যক্তিকেই গধার্থ সাধু বলা যায়, এবং তিনি চিরকাল , সুধ সন্তোগ করিতে পারেন। পশ্চাৎ এবি-গ্রের ক্রীদাহরণ প্রদান করা যাইতেছে।

यपि कान वाजि शूर्वाङ वकारत অাপন কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যের নিরূপণ করিয়া সং-সার বজে পদার্পণ করেন, তবে উপচিকী-स्विभक्तः काहात भारे क्ष वाध स्ट्रेंब य আর আর মনুবোরাও আমার ন্যার পর-সেশ্বরের প্রিয়পাত্র, ও আমার ন্যায় ভাহা-রাও দৃখ সম্ভোগের অধিকারি; আমার ইউ-नाधक कार्या यनि जाशावतम्ब अभिके अनक रुप्त, करव ठारांद्र चनूकान कता कथनरे छै-চিত নহে, বর্ঞ আমার ক্ষমতানুসারে তা-शावामत्र छेलकात कतारे कर्खवा। छक्ति-স্কার বশতঃ পর্মেশরের নিয়ম প্রতিপা-লনে দৃঢ় শ্রন্ধা হইবে, এবং ভাঁহার অচিন্তা জ্ঞান, মহতীশক্তি, ও অপার *মঙ্গল ব*ৰ-পের উপর নির্ভর করিয়া তাহাতে আছ नमर्भव कतिएक धार्मिक स्ट्रेटन, धवर मनूषा रर्गटक छाँहात आज्ञुष चामत्रगीत्र (वाथ हरे-বে, ও সাধ্যানুসারে ভাহারদিগের উপকার করিতে অনুরাগ জন্মিবে। স্বার ন্যারপ-রতা বশতঃ **আপনার আচরণ ছার। কাহা**-কেও ম**নোবেদনা প্ৰদান করিছে না হয়,** এই ৰূপ অবধারণ করিয়া তিনি সকলের সহিত माञ्बर **वावहांत्र कत्रत्य ७ व्यनात्र वावहात्र** পরিতাংগ প্রবৃত্ত থাকিবেন। তিনি এই প্র-কার কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য নিরূপণ পূর্ব্যক ভদনুসারে य कार्या क्रियन, जाशास्त्रहे लाक्रक भ-तम मुधी कतिरवन, ७ जाशमि७ शहम मुधा হইবেন। প্রমার্ষণীয় আনন্দ-জ্যোতি:ভা-হার অন্তরে সভত প্রকাশ পাইতে থাকিবে!

একপ সুশীল বাজি কাহারও সহিত নিত্রতা করিলে উপচিকীর্য গুণে সকল স্বার্থ পরিত্যাপ করিয়া কেবল মিতের শুভাবুয়া-রী হরেন। ছক্তি স্বভাবে একপ নিত্রতা

अब्बान् मक जानित्र क्षानान्त्रम मिरवत প্রতি তাহার প্রতির বৃদ্ধি হর, এবং তত্মারা মিত্রকে সমাক্ অনুরাগ করা ও তাঁহার স-कलकादर्श चानमानूष्ठव क्या वक क्षकात অভ্যাস পাইয়া যায় ৷ ন্যায়পরতাৠংগ ভাঁহার প্রতীতি হয়, যে মিত্রের সহিত পর-न्माद्र व्यन्दरत्त विनिमन्न, भौनुकान्न विनिमन्न, ও উপকারের বিনিমন্ন করাই কর্ত্তব্য; ভদ্তিন্ন অনুচিত প্রার্থনাদি কোন কঠোর ব্যবহার করা কথনই উচিত নহে। আর প্রণয় স-ঞার কালে বুদ্দি ছারা নিয়োঞ্জিত হইয়ানে-খিবেন, যে তাঁহার মিত্র ধর্মাংশে নিভান্ত হীন না হয়েন, কারণ দান্তিক, স্বার্থপর, ও অধার্মিক ব্যক্তির সহিত্ত যথার্থ প্রণয় হওয়া সম্ভাবিত নহে ৷ ফুঃশীল ব্যক্তির প্রতি দয়া হইতে পারে, কিন্তু তাঁহার প্রতিকখন প্রীতি হইতে পারেন।।

এथकात रेमजी लाफ इट्रेटल आमात्रपि-গের অনেকানেক স্ল প্রবৃত্তিও সাভিশয় চরিতার্থ হইয়া পরম সুধ প্রদান করে। যদি বৃদ্ধিতে নিশ্চয় হয়,আমার মিত্র অভি-শয় ধর্ম-পরায়ণ, এবং কেবল ধর্ম প্রবৃত্তির প্রাধান্য স্বীকার করিয়া তদনুখারি ব্যব-रांत्र करतन, जरत चामात चामक्रिका মহোৎসাহ সহকারে স্বীয় বিষয় স্কুপ প तम थित्र मिजतरपू थेनाएक्टम जानक इत्र। এৰপ মিজ উপচিকীৰ্যাও ন্যায়পরতা স্ব ভাব বশতঃ কখনই আমার অনিষ্ট করেন না, এবং ডক্তি গুণ বশতঃ কথনই সসম্ভ্ৰম আদর অবেকা পরিত্যাগ করিয়া অত্যা-লাপ ও ইডর ব্যবহার করেন না ৷ এমড क्षगरत्रत्र क्रम क्रमान, क्षत्रक्षना ७ क्रमता-পর অনিউ ঘটনার অসতাবনা, ভাবিয়া इन्द्र शब नकान दि कनिक बादक । बान्नकान-শাতে খন্যান্য ইতর বৃত্তির সাংচর্য্য থা কিলে অন্তঃকরণে ভাদুর্শ প্রণয়ামূত সঞ্চার ७ जानम-वाति निः अर्ग कथनरे हरेए शा-<u>রেলা। এবত মৈতীলাভ ছারা আমারদি-</u> প্রের লোকানুরাগ-প্রেরতাও স্তরিতার্থ হর। कांक्रण अक्रम भव्रम हिटेज्यी, बार्गब्रमान, मर्गा-मक बिरवत वित्र महाबन, जामस्ताङ अ সৌহার্দ প্রকাশ অংশকা অধিক সনুরাধ আর কাহার নিকটে প্রাঞ্ হওয়া যাইতে পারে? এক্প ছুর্লভ নিত্রের বাতে গৌহার্দ প্রকাশ ও অন্তরে দ্বেবানল প্রদীপন সমক্ষে মধুরালাপ ও পরোক্ষে প্লানি ও নিলাবাদ, কবাস পরমোপকার ও কার্য্যে অবহেলা, এসমুদারের কিছুই করা সন্তব নহে । কবাতঃ বৃদ্ধি ও বর্ষ যাহার মূলীভূড, এমভগ্রণ হইলে অন্তঃকরণ সভত প্রক্র বাকে, মুখাকর-কিরণ-সম পরম রমণীর প্রেমামৃত তড়পরি অবিশ্রান্ত বর্ষ বৃদ্ধি, প্রকৃত্তি, ধর্মা, প্রবৃদ্ধি ও আর আর সমন্ত মনোবৃদ্ধি পরক্ষর প্রক্র-ভাবাপর থাকিয়া অপ্রাঞ্জনান প্রক্রিক্সান্ত প্রদান করে ।

चामात्रिक्ति मत्नावृत्ति ममुनारस्त किञ्चकारत मामञ्जमा इरेप्ड भारत, अवश जाहात कलहे वा कि, जाहा वहें छेनाहत्र षात्रा म्यक्ते ध्वकोष इहेटल्ट्या रह मकन স্বার্ধ-পর ব্যক্তি বৃদ্ধিও ধর্ম-প্রবৃত্তির অনু-यां करेशा बा घटन. कारात्रमिरशत्र मिक-তার বিষয় গড় ফাসের পত্রিকায় লেখ। গিরাছিল, এবং ধর্ম্মোপেড মিত্রতার বিষয় अकटन विवत्रन कता राता, अहे छेल्टसत कन-कांत्रकमा ও कामृण क्याना कृत-व्यवृद्धि-नि-मिखक मुर्देश विषय श्रमारलाहना कतिश स्टिल रेहा व्यवधातिक इत्र, त्य व्यामात्र-দের সমস্ত মনোবৃত্তির পরস্পর সামঞ্সাই সুখের কারণঃ যে স্থলে কোন বৃত্তির সহিত चना कान वृष्टित विद्वाध रहा. म्हल वृष्टितृष्टि ७ धर्मध्यवृष्टित्र धांधाना त्रीकात क्रिया जम्मूगाति चाहत्रन कत्राहे कर्खवा । যে সাধু ব্যক্তি এইৰূপ নিয়ম অব্ধারিত क्रिजा उपनुशक्ति अनुष्ठीन करतन, आनवम्-ভূতে ভাঁহার বিশেষ ক্লেশকর হয় না! যিনি মৃত্যুশ্যার শয়ান হইয়া এরপ বলিতে প্র-द्रिन, त्र चामि यावक्कीवन यथानाथा भरता পকার করিরাছি, লোকের সহিত যথোচিত वावकात कतिबाहि, मत्बत्र महिक शत्रदमध्यतत আরাধনা করিয়াহি, এইক্ষণেও সেই মঙ্গল-পूर्व चानक वक्टण हिन्छ ममर्गन कतिलाम, তিনি অতি অঞ্চারত মনুব্য ্ তাহার মৃত্যু কালও সুখের কাল, ও মৃত্যুদ্ধ্যাও সুখ-দা-रागं ऐस्र १

মহাভারত

আদিপর্ব ভৃতীয় অধ্যায়—পৌধ্যপর্ব্ব

৬৯ মংখ্যক পত্রিকার ৪০ পুর্ণের পর উএশবাং কহিলেন , পরীক্ষিত্ পুত্র वाका कनत्मकत्र श्रीत तरकानद्रशन तमाछ-वाशित कुरूक्तकरण वस्वाविक धळानुस्रीन क्तिएक्ट्रम् । की सात्र अक्टरम्म, छेआरम्म ७ **ভीयरमन नारम छिन मरहामत । काँकातरमत्र** মজ্ঞা**নুভান কালে** একটা কুকুর তথার উপ-ক্তিত হইল । জনমেজন্মের জাতারা তাহাকে প্রহার করাতে, সে অভিশয় রোদন করিতে করিতে স্বীর জননী সন্নিধানে গমন করিল ! দেবশুনী সরমা ফাহাকে অভ্যন্ত রোদন করিতে দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিল "কেন রোদন করিতেছ, কে ভোনাকে প্রহার করি भारक्"। त्न धरेक्ट्भ क्रममी र ठ के किया সিত হইরা উত্তর করিল "জন্মেজুয়ের जाराजा मामारक थाराज कतिरामन"। उथन मत्रमा करिल आमात न्याचे त्याथ क्रेटिटर, ভূমি কোন অপরাধ করিয়াছিলে, ভাহা তেই ভাঁহারা প্রহার করিয়াছেন"। বে তাহাকে পুনর্কার কহিল "আমার কোন च পরাধ नाहे, यक्षित्र হ্বিতে দৃষ্টিপাত বা जिसा न्मर्भ किंदूरे कतिबारे"। हेरा अबिहा তাহার মাতা সরমা পুরু হৃংথে হৃংথিতা रहेन, थवर त्य ऋतन कनत्मकाम खाज्यत्वन সহিত দীৰ্ঘসত অনুভান করিতেছিলেন, তথায় উপস্থিতা হইয়া কোপাবেশ প্রকাশ क्रमदमकः दक क्रिक्शमा कृतिश ''আষার পুজের কোন অপরাধ নাই, विकास हिन्द करतका ७ व्यवस्था करत्रवाहे, কিনিমিতে অহার করিয়াছ"। তাঁহারা কিছুই উত্তর দিলেন না। তথন সরমা কহিল "ভূষি ইহাকে বিনা অগরাধে প্রহার করি য়াছ, অতথ্ৰ অনুপ্ৰক্ষিত ও অভৰ্কিত কার ণে ভোষার ভর উপস্থিত হইবেক''। রাজা क्रमामका महमात्र भाग खर्ग कृतिहा क्रिक भव्र बाङ्गल ও विषद्म रहेलन, धनस्त्र भावत যক্ত নমাপ্ত হইলে, হতিনাপুরে প্রভ্যাগমন क्रिक्त नक्रमा माश बिबावन नमर्व शृत्वाहि তের অধ্যেষণ বিষয়ে বিশেষ ৰূপ' যত্ন করিতে লাগিলেন 1

धक्या भद्रीकिश भूख कर्त्यक्य, मृश शास भवन कतिया निक ब्राब्धा कर्गेक काल क्रमणाम् अक् चार्यम भव्यम क्षेत्रिताम । उत्रह अन्दर्भवाः नाम এक ক্ষিত্র ক্রিভেন। ভাঁহার তপদ্যানুরক্ত দোষশ্রবাধনামে পুক্ত हिलन। जनरमजत जीरात तारे भूरकत निकटे भिन्ना छाहारक श्लीरहाहिएक बहुन করিলেন। তিনি প্রণাম করিরা ক্ষরির নিকট ৰিবৈশন করিলেন "ভগবন্ আপনকার এই পুত্র আমার পুরোহিত হউন"। কবি রাজ বাক্য **এব**ণ করিয়া **উত্তর করিলেন** এক দণী আমার গুক্রপান করিয়াছিল, আমার এই পুত্র তাহার গর্তে জনেন, देनि प्रराज्यती, नगारवनावात्रमञ्जू भनीत्र তপোৰীয়া সম্পন্ন, মহাদেব শাপ ব্যতিরে-८क ट्वा शांत ममनश्रभाभ वि**त्राक्तर । ममर्च ए**ई বেন, কিন্তু ইঁছার এই এক নিগুড় ব্রভ चाट्य य डाम्बर्ग र रात्र निकृति गारा बार्यना करतन रेनि छाहारे स्मन, रेहारक **ৰদি তোমা**র সাহস হয় **ই হাকে ল**ইয়া बाजः । जनस्यकत्र अञ्चलकात्र बीका टारन করিয়া কহিলেন "মহাশয়, ভাহার কোন ব্যতিক্রম ঘটিবেক না" 🗎 অনন্তর তিনি त्नरे भूद्राहिक नमक्त्रिग्रहादत ब्राक्शनी প্রত্যাগমন করিয়া নিজ স্রাভাবিগকে কহি লেন "ইনি যখন যাহা আজো করিবেন ভোমারাতৎক্রাৎ ভাষা সম্পাদন করিবে কোন নতে অন্যথা না হয়" আভূগণ ভদীয় चारमध्यिज्ञान्य क्रिएक नामिर्मिय। व्यवस्थाय ज्ञाकांत्रिशत्क अन्दे द्वार व्यारम्भ দিয়া ভক্ষশিলা জয়ার্থে গ্রন্থান করিলেন **ध्यदः चित्रताहः त्मरे एम चा**र्यन वर्गीकुछ ক্রিলেন ৷

এই অবসরে (প্রসন্ধ করে উপাখ্যানা-ভর আরম্ভ হইতেছে)! আরোদধৌম্য নামে এক শ্বাহি ছিলেন। ভাঁহার উপমন্ত্র, আরুণি ও ধৌম্য নামে তিন শিষ্য ছিলেন। তিনি পাঞ্চাল বেশীর আরুণি নামক শিষ্য-কে কেত্রের আলি বন্ধন কর্মিতে পাঠাইরা দিলেন। পাঞ্চাল্য আরুণি উপাধ্যারের

चारमणानूनादं च्याप्त संयय क्षिरंतन, कि-ह जानि वसून कतिएंड शांत्रित्वमा। वि-मि विख्य क्रमं चीकात कत्रितां कान क-त्मक्रक कार्य इट्रेंट नामात्रिया मतिएम्टर এফ উপায় দেখিয়া ছিত্র করিলেন "ক্লাক हेरारे क्ति" बरे निक्स क्रिया जिन तिरे **रक्ताब्रस्ट अध्यम क्तिरमन । अब्रम कन्ना-**তে অসনিৰ্গদ নিবারিত হইল ৷ পরে কোন मबद्ध छेशाधात चारवामरधीया निवामि-शदक किकामित्वम " शाक्षाना आकृषि का-थात्र (शन "। जाँशाहा विनीष वहदन छै-ভর করিলেন "ভগবন আপনি ভাছাকে স্কেতের আলি বন্ধনার্থে প্রেরণ করিয়া-एक "। हेहा छनिया अपि नियापिशास्क कहिलाम " करव हम आमद्र। नकरमारे तन-খানে যাই "৷ অনন্তর তিনি তথার গৰন कब्रिया अरे दिनम् छैटेकश्वरत कारास्क **जासान क्रिल्ड वाशित्वर " छा। दर-**স পাঞ্চাল্য আত্মণি! ভূমি কোৰায় আছ আইস "। আত্নৰি উপাধ্যায় বাক্য প্ৰবৰ করিয়া সহসা সেই কেদারখণ্ড হইতে পা-**ভোশান পূর্বাক ভাঁহার নিকটে আনি**রা নিবেদন করিলেন " মহাশয় আমি উপ-স্থিত হইরাছি;কেদারখণ্ড হইতে যেজল নিৰ্মত হইয়াছিল তাহা অবারণীয় হওয়াঞে ভাহারোধ করিবার নিমিত্ত তথার শয়ন করিরাছিলাম; একণে স্বাপনকার শক্ শুনিয়া সহসা কেদার খণ্ড বিদীর্ণ করিয়া व्याननकात्र निकटि छैनश्चि रहेगात्र : व-क्रियाम्म क्रि : अक्रार्थ कि क्रिय चास्त्र। क-क्रम।'' निरावाकग्रदमात्व छेशाधग्रम् छशीत গুরুত্তির দুঢ়তাও গাঢ়তা দর্শনে প্রসন্ম **र्हेश कहिलन "र॰ग! जुबि क्लाब्रय**े **८७त्र ज्यानि दिनीनं क**तिशा केलीन कविन्नाहः चक्रवा जूमि जैकानक नात्म अभिक हरेरवः আর আমার বাক্য প্রতিপালন করিয়াছ, बरे निविष्ठ कोमात यक्षण रहेरदकः नजू-দার বৈদ ও সমুদায় ধর্মশা**ন্ত সর্কালে স**-व्रग-भशाबर शक्तित्वक ।" आक्रुनि बहेबन উপাধ্যার বাক্য প্রবণে সম্ভট হইরা আপক অভিনবিত দেলে প্রস্থান করিলেন।

जारबाद्योरमञ्ज छेश्यकः बारम जात

अक निषा हित्तन। छेशाशाश्र छाहातक "বৎস উপমন্যু! ভূমি গোরক্ষা কর " এই चारमण मित्रा श्लोकात्ररण तथात्रण कतिरलम । किनि উপাধার বচনারুনারে গোরকা क রিতে লাগিলেন ৷ উপমন্যু দিবাভাগে গো तक। कतिया नाबाद्य श्रेक्ट गृहरू প্রভ্যাপমন পূর্বাক উপাধ্যায়ের সন্মুখে অবস্থিত হইরা व्यक्षम क्रिलन। উপাধ্যায় ठीहार क अन करनवत्र व्यवस्माक्य कतिशा क्रिकानिस्न ''देश्म छेशम्बा! टिंगमारक विलक्षन शु-लकाश प्रविष्ठिह, जुमि कि भाशात कतिशे। খাক ?" তিনি উদ্ধর করিলেন 'ভগবন্! তিক্ষালন্ধ অন্নদার। উদর পূর্ত্তিকরি।" উপা-ধায়ে কহিলেন " অচংগর আমাকে না জা👝 बाह्या किकाब उक्क कतित्व बा !" छेप-मनू। बहेबन पानिष्ठे इहेश जिकान मरशह করিয়া উপাধ্যায়ের নিকট সমর্পণ করিলে- উপাধায় সেই সমত ভিকায় য়য়ং এইণ করিলেন। অনন্তর উপামনুর দিব।-ভাগে গোরকা করিয়া প্রদোধ কালে গুরু-কুল প্রভাগিমন পূর্ব্বক গুরুর পুরোভাগে অবস্থিত হইয়া প্রণাম করিলেন ৷ উপা-ধ্যার একাণেও ভাঁহাকৈ স্থলকায় দেখিয়া क्रिकाना कतित्वन 'वंदेश प्रेशमनू। या-নি তোমার পন্দায় ভিকাল এছণ করি এ-খন ভূমি কি অংহার কর "? উপমনুা নি-বেদন করিলেন 'ভগবন! আদি আপ-নাকে পূর্বভিকা সমর্প ৭ করিয়া আর এক-বার ভিক্ষাকরি, তাহাতে থাহা পাই ভা-হাই আহার করিয়া প্রাণ ধারণ করি "। केलाभगात्र कहिरलन '' हेर। शुक्र कूनवानित धर्म नरह । এই ब्राट्स अनाना ভिकालीवित রুজি প্রতিরোধ করিতেছ, এবম্পুকারে **জীবিকা নির্বাহ করাতে ভোমার** লোভিত্র অকাশ পাইতেছে। এইব্ৰপ অভিহিত হই-या **छे भमनू। भूर्यवर शातका क**तिएक नाशि-লেম। এক দিবস গোরকাত্তে উপাধ্যায় খুহে আগমন করিয়া তাঁহার সন্মুখবন্তী হইরা অভিবাদন করিলেন । উপাগ্নার এ-थने उ का कारक कृत कि शिवा शूनकात कि-জ্ঞানিলেন "বংস উপসন্মু! আন্ধি তোমনি সমুদার ভিকাম এহণ করি, স্মার ভূমি ভি

হল কৰনা, ভথাপি তোমাকে বিলক্ষণ স্থু-न काम (मथिटिक्) खड़बद क्रकरन कि मा-হার করিরা থাক বল : এই ৰূপ **জি**জা-সিভ হুইরাউপমন্যু নিবেদন করিলেন "ম*ি* হাশর : এই সকল ধেনুর ছফ্র পানকরিয়া श्रान शावन कति। छेशायात्र कहितन '-জামি ভোমাকে অনুক্র। প্রদান করি-मार्च । अठवर वकाल प्रकृतान करा दकान करशहे साग्र बटर "। छेशमनू। " आह अब-প করিব না '' বলিয়া প্রতিস্তা করিলেন এবং ल्लातकारम यथाकारल छेलाभाष हरह धानमन कतियः शक्तमभूदवं मन्त्राहेया धनाः म कतिरमन् । উপাধার এখনও তাঁচাকে ष्ट्रलकरणवत अवलाकन कतिया कहिएनन 'বংগ উপমনু। ভিকান ভকণ কর না, বারাস্তাও ভিক্ষাকরনা, ছুশ্ধও পান করনা : কথাপি ভোনাকে অভিনয় স্থল কায় দে-ধিতেছি। অতএব এখন কি আহার করিয়া থাক বল "় উপসন্যু এই ৰূপ আদিউ **হ**ইরা নিবেদন করিলেন "মহাশয়।বংস গণ শ্বস্থ নাতৃ স্তনপান করিছে করিছে যে কেণ উক্ষার করে, ভাহাই পাম করিরা ধাকি '' উপাধ্যায় কহিলেন সুনীল বৎস দকল ডো-শার প্রতি অনুকম্প। করিয়া অধিক পরি-মানে ফেণ উদ্যার করে সুত্রাং একণ করিয়া জুমি বৎসগণের অংহারের ব্যাঘাড করিভেছ: অতথ্তামার কেণ্পান ক রাও উচিত নহে "৷ উপমন্যু " আর ক রিবন)" বলিয়া প্রক্রিসা করিয়া পর দিন প্রভাতে গোরক্ষায় প্রস্থান করিলেন।

এই রূপে প্রতিধিক্ব হুইয়: উপমন্যু ভিক্ষার ভক্ষণ করেন না: ব্যালাস্তর ও ভিক্ষা করেন না: ভূক্ষণ পান করেন না: ভূক্ষের কোও উপড়োগ করেন না। এক দিবস অরণ্যে ক্ষুণার্ভ হইয়া অর্ক পত্র " ভক্ষণ করিলেন। ঐ সকল কাব ভিক্ত, কট্, রুক্ষা, ভীক্ষু-বিপাক অর্ক পত্র অভাবহার করাভে চক্ষুর দোব জনিয়া অন্ধ হইলেন। এবং অন্ধ হইয়া ইভন্তভঃ ভ্রমণ করিতে করিতে কুপে পতিত হইলেন। স্থা অন্তাচলা-বলক্ষ্মী হইলেন, উপাধ্যার তথাপি ভাঁছা

[•] ब्रोक्स शहः।

কে অনাগত দেখিয়া শিষ্যদিগকে কলিলেন ৺উপমন্য কেন আসিতেছে না"। ভাঁহার। কৃছিলেন " দে গোরক্ষা করিতে গিয়াছে " छेश्राशाः कृष्टित अस्ति छेश्रममुद्र अर्थ থাকার আছার প্রতিবেধ করিয়াছি, সে ক্র-পিত इड्राह्ट मत्न्इ साहे। धरे निमिखरे, এত বিলয় কইল, তথাপি আসিতেকে নাঃ অবভ্ৰব ভাষার অংহ্যবণ কর: উচিত "৷ এই दलिया भिषा গণ সমভিব্যাহারে অরণা क्षर्यम भूतःभव अरे व लया উक्तिमाद शास्त्राम कतिएक लागिरलम 'न्यम उप मना! (काथाय चाह, नीप चाहम "1 উপমন্য উপাধ্যায় বাক্য শ্রবন করিয়া উ-किःचात्र উত্তর প্রদান করিলেন 'আমি कृ-পে পতিত হইয়াছি"। উপাধ্যায় কহি-লেন " কুপে পতিত হইলে কেন" ? ডিনি কৃছিলেন " অক্পত্র ভক্ষণ করিয়। আহ্ব হইয়াছি; তাহাতেই কুপে পতিত হই-नाम'। উপাধ্যায় কहिटलन एनव देवण व्यक्तिनी कुमात यूर्शस्त्रत खर कत. केंग्हाला ভোমাকে চক্ষ জাদান করিবেন "।

উপমন্য উপাধ্যায়ের আদেশানুসারে **अटबनदा**का घाता व्यक्तिनी जनस्र घटरात खट আরম্ভ করিলেন " হে অশ্বিনী কুমার যুগল। ভোমরা সৃষ্টির পূর্বে বিদ্যমান ছিলে: ভোমরাই সর্বাজীব প্রধান হিরণাগর্ত্ত কপে উৎপন্ন হইয়াছিলে; তোমরাই পরে এই প্রত্যক্ষ পরিদুশ্যমান বিচিত্র সংসার প্রপঞ্ ৰাপে প্ৰকাশমান হইয়াছ: দেশ কাল অ-বস্তা ছারা ভোমারদের পরিচ্ছেদ করা ধার নঃ তোমরাই মায়া ও মায়াক্ট চৈতনা ৰূপে সর্কাকাল বিরাজমান রহিয়াছ : তোমরাই পক্ষিরপে শরীর রক্ষে অধিষ্ঠান করিতেছ; मृष्टिं विषयः প্রমাণু প্রভন্ত

বাঁ প্রকৃতি সাপেক্ষ নহ; তোমরা অবাঙ্ক-নস গোচর : ভোমরাই স্বীয় মায়ার বিকে-প[া] শক্তি ঘারা **অশেষ ভূবন প্রকাশ** করিয়াছ : অভএব আমি অভয় প্রার্থনায় ভাবণ মন্ম নিদিধ্যাসন স্থার: তোমারদিদের উপাসনায় প্রব্রু হইতেছি। ভোমরা পরু-ম রমণীয়, সর্ক দক্ষ বিবর্জিত, লয় প্রাপ্ত সর্ব জগতেব অধিষ্ঠান ভূত, মায়া কার্য্য বিনিম্ক ও কয়োদয়বিনাশশূন্য ; ভোমর। मर्ककाल मर्द्धारकृषी कर्म विवासमान व হিয়াছ : তোমরা বিভাকর সৃষ্টি করিয়া দিন বজনীয়ৰপ শুক্ল ফুড় সুত্ৰসমূহ দার। সম্বৎসর রূপ বিচিত্র বস্তু বয়ন করিতেছ: জোমরা জীবদিগকে, সঞ্চিত কর্মা কল জোগার্থে ভোগস্থান তত্তৎভূবনের পণ্ঞ-দর্শন কর, তোমরা জীবাত্ম স্বরূপাপ্তিনী কে প্রমাকা শতিক্প কালপাশ চুঠতে মুক্ত করিয়া মোক্ষমপ সৌভাগ্য ভাগিনী করিয়া থাকি। জীবেরা দাব্র মার। মেটেড **उ विषय तम शहरण इंदेश इंस्क्रि**रहर आहा. জানুবন্তী পাকে, তাবং তাহারা সর্বদোষ সংস্পৰ্শ শূনা, বিশুদ্ধ চৈতন্য স্থৰূপ জোমা:-রদিগকে জড় সভাব শরীরাভিন্ন ভাতে... ভাবনাকরে। ত্রিশত ষ্টি দিব্দর্গ ধেনু গণ সমূৎর স্বৰূপ যে বৎস প্রমন ২০টে. ত-खुकिकामुका के वर्माक व्यवस्य कृतिया বিভিন্ন ফল বেদ বিহিত কিয়া ব্যহ্ৰপ ধেনু-मम्ह रहेट उद्घान क्ष प्रकारनाहन क-(त्व) (डामता (मर्डे मर्ट्सार्थामक, मः-ছারকারি বৎসকে উৎপাদন করিয়াছ। অহোরাত রূপ সপ্ত শত অর 🕇 সহৎসত্র ৰূপ নাভিতে অবস্থিত এনং ছাদশ মাস ৰূপ নিবেশিত षाट्ड গের উদ্ভাবিষ এই यायायस (समिन्त) অক্ষম কাল চক্র নিয়ত পরিবর্ত্তিত হইতে

ह द्याप्त प्रदेश किया किया मार्क्ड मुक्ति करहे स ভালতে প্রমাণ বা প্রকৃতির নহযোগিতা আবশ্যত करत मा। किन्ह निर्धारिकता करबन शहराधु मकत निका, मृष्टि প্রারত্তে नेपद्धत देश्हाश পরমাণ্ পুরুষ্ পরকার সংযোগ বারা বিশ সৃষ্টি হয়; তাঁহার আরি-ধ্যান মাতে হয় না। সুতরাও তথতে দীবর সৃষ্টি বিষয়ে श्रवमान-श्रवज्ञ । मार-बा**म्यः ने**पंदब्ब काविशास থাত্তে সৃষ্টি সহে: প্রকৃতিই সর্কল সৃষ্টি করেন 🕛 প্রকৃতি बाफिएएएक गृष्टि इप्र मा ।

[&]quot;बाबाइ मृहे गक्ति, चावड्रभ ও विकला; चावड्रभ শক্তির ছারা প্রমেখরের হরপ ভিরোধান এবং বি क्लान निक बाहा विश्व श्रवान इस। स्नोकिक मु**र्कारक** त्यक्ष मर्भ चल व्यावत्य नक्षि बाहा हक्कूह बहुन कि द्वाधान व दिस्कल णांकि बांद्रा छाहाटक मार्लीद्र खावि-कीय स्था

[🗯] আরু, নাভি, প্রধি, নেমি, আক্ প্রকৃতি চত্তের আরু ग्रव विद्रम्य ।

অব্বতা ও প্রলোকস্থিত প্রভাগণ धेहै विक्रिक करकात मः न्यार्थ कहेर है मुक নহে। ভাদশ অৱ. ছয় নাভি ও এক অক বিশিষ্ট কর্ম্ম কলের আধার স্বৰূপ এক চক্র **আছে কালাধিষ্ঠাত দেবতা**বা ঐ চক্রে আদি ক্রুড় আছেন: তোমরা আমোকে াবই চক্র হইতে মুক্ত কর, আমি অভ্যস্থ বিবাদ প্রাপ্ত হইতেছি ! তোমরাপরবৃদ্ধ স্বরূপ হট রাও জড় সভাব বিশ্ব প্রপঞ্চ সরপার তো मताहेकमा उक्मा कल खक्ता; चाकामाप নিখিল জড় পদার্থ তোমারদিগের স্কুপেই শীন হয়: তোমবাই অবদ্যা পেটেন কর জ্ঞান সাধনে পর ও্মুখ হইযা, ৬ বিষয় সু-बाखाम छात्। हे त्मुश्राभरक हति ठीर्थ कति।। সংসার পালে ব্রুহঃ তেমের। স্টি श्राकारण भग भिक्. आकाम अवन उच्चा দুকী করিখছে। ঝাধগণ দেই। সুর্যাক্ত কা-मान्धरतः ८२५ विष्ठि कर्पानुष्ठान करतन, এবং সমুদায় দেওতাও মনুণ, ঐশ্বায় ভোগ করিতেছেন ৷ তোমনা আকাশাদৈ স্কন পঞ্জুত দৃষ্টি করিয়া তাহাবদিগের পঞ্চী-করণ* করিয়াছ: সেই পঞ্জীক্ত ভূতপঞ্জ रुटेट निश्चित विश्व नमुख् ७ वर्डशाटक, कीत গণ ইন্দ্রিয় পনতন্ত্র হুইয়াবিষ্য ডোগ ক-রি**তেছে** এবং সমস্ত দেবতা ও সমস্ত মনুকা ভুতল আশ্রন্থ করিয়া অবস্থিতি করিতেছে : ভোমারদিপের, ও ভোমরা যে পুন্ধর মালা ধারণ কর জাহার বদ্দনাকরি 🗀 নিভাম্ক क्या कल्लाका अभिनीकनम् अरग्र महामुक् বাহিরেকে অন্যানা দেবতারা স্বস্থ ব্যাপার मन्नापटम ममर्थ नत्त्व। 'तः अविनीकृमात ৰুগল। তোমরা অত্যে নুধদার। অলবপ গার্ড धर्म **क्रा भारत भारत के ल**म् हे **अन्य का**ता (मड़े गर्ज अमद करतः । के गर्ज व्यक्ष ब्हेगः। माज माकृ खन शात अवृत्व इत्र। र्ग अंग्रह व তামরা আমার জীবন রক্ষার্থে নয়ন ছয়ের অ্জুড় মেচন কর।"

অশ্বিনাকুমারের: উপমনুত্র এই রূপ ন্তবে সম্ভূটি হইয়া তথায় উপস্থিত হ**ইলেন** এবং কহিছলন 😷 আমরা তোমার প্রতি গ্রেমর ছইয়াছ এবং এক অপুপ দিতেছি लक्षण करा ।" यह कथा ज्यामिकी इहेम्रा छेथ-গন্য নিবেগন কবিংশন 🤒 খংগনারা কোন क दिन स्वयंथि कट्डन मा; किंद्र साथि केंक्रव निक्छे निद्यम्भ सः कविशा अपना जन्मन कः विराष्ट्र शां(त मा) ^{१९} ७४२ च किएनएम् ४५-হিলেন ৷ পূর্বে আমরা তোমার উপাধ্যা য়ের স্তবে সম্ভাক হাইর: ভাঁছাকে এক অণুল नियाष्ट्रिणाम, छिनि छक्षत्र मिक्छे निरंत्र नय स করিয়া তাহা ভক্ষণ করিণাছিলেন আত্রার ভোমার উপাধ্যায় যে ৰূপ করিয়াতেন, তুমিও সেই ৰূপ করা" ইয়া শুনিয়া উপ মনু কহিলেন ' আমি আপনার্দিণ্ডে বিনয় বাকো প্রার্থনা করিতেছি, আমি ক্র্ प्रवटक ना कानाईग़। ष्रभूश स्कन् क्रिटिश পারিব ন।"। তদনস্তর অশ্বিনীকুমারের। ক হিলেন ''আমিকা ডেমার এইকুপ অবিচ্ছি:-ও গুরুষ্ঠকি দর্শনে সাহিশ্য জ্রীতি প্রাপ্ত হ-ইলাম; তোমার উপাধ্যায়ের দম্ব সকল ्नोक मत्र अ छ। मात्र मन्त्र प्रकल हित्रगुत्र कृषि हक्ष्मान् अ त्थापः आश्व कहेत्व ।''

উপমন্য অমিনী কুমার বর প্রভাবে চক্রলিভ করি বা উপাধায়ে নমাপে স্বাধান ও অভিবাদন পূর্ত্তক আদ্যোপার সমূদার বর্ণন করিলেন। তিনি শুনিয়া প্রীতি প্রাপ্ত হুইলেন এবং কহিলেন। তুমি সেইকুপ সকল বেশুপ কহিয়াছেন, তুমি সেইকুপ সকল মঙ্গল প্রাপ্ত হুইবে ১ সকল বেশু সমূদায় ধর্মশান্তে সর্ক্রকাল। তামার স্বাধাপ্রাক্তি বা উপমন্যর এই প্রীকার্কী।

মারোদ্ধৌমোব বেদ নামে আর এক
শিষ্ছিলেন । উপাধ্যায় তাঁচাকে এই
আদেশ ক্রিলেন ''বৎস বেদ! আমির
গৃহে থাকিয়া কিছুকাল শুক্রাবাকর । তোঁ
মার মঞ্চল হইবেক।'' তিনি ''ববা আক্রাণ'
বলিয়া গুরু শুক্রাবা তৎপর হইয়া দীর্ঘকাল
গুরু গুক্রাত ক্রিলেন। গুরু তাঁ

শ প্রথমে আকাশ, বাযু, আগ্নি, জল ও পৃথিবী এই দুজ্ম পঞ্চতুত উৎপন্ন হয়। পরে ছুল সৃষ্টির সম্পাদ নাংগ নি পঞ্চসূতকে ভাগ ছয়ে বিভন্ন করিয়া প্রভো-কের এক এক আন্তর্কে চারি আগে বিভক্ত ও দ্বীয় আর্দ্ধ সান্তিরেতে জনা চারি আর্দ্ধি এক এক বন্ধ বৌজিত করা বায়। ইহাকেই প্রধীকরণ কছে।

[°] অর্থাৎ ভোমার উপাদ্যায় শ্বভান্ন নিষ্কুর। জুহি অভ্যন্ত সুশীল ও ধন্ন ভক্তি দম্পন্ন।

হাকে সর্বাধাই কর্মের ভার দিতেন। তিনি লীড, উঞ্চ, জুধা, তৃষ্ণা প্রন্য সমস্ত ক্লেশ সহি-তেন এবং খাদেশ পাইলে তৎক্ষণাৎ ভাষা মাপাদন করিতেন: কথন কোন বিষয়ে ক্লি-ভোৱা নামতে যাব প্রকাশ করিতেন না। বছকা-লের গার শ্রুর ভাষার প্রতি প্রসন্ধ হুইলোন এবং ভারার প্রসাচে বেদ প্রেমঃ এ সর্বজ্ঞতা সাভ করিলেন। বেদেরও এই প্রীকা হুইলা

বিজ্ঞাপন তত্ত্ববোধনীৰভা :

অধ্যক্ষদিশের অনুমত্যমুসারে বিজ্ঞাপম করিতেছি যে ১৭৬১ শকের কার্তিক মাসীয় প্রচলিত নিয়ম পালের ৮।৪।১৪।
১৭।২১। সংগ্যক নিয়ম সকল পুনর্বিচার জনা আগামা ১০ প্রার্থ সকলের অপরার্থ ঘন্টার সময়ে বাক্ষ্ সমাজের
বিজীয় তল গুলে বিশেষসভা হইবেক সভা
মহাশন্ত্র।তৎ কালে সভাস্থ ইইবেন।

শ্রীযুক্ত রমাপ্রসাদ রায় মহাশয় গত ১৭৮৮ শকের ১৪ জৈতে দিবনে পাঁচ বং-দরের নিনিত্তে ভন্ধবোধিনী সভার সভাপ ভি নিমুক্ত হইয়াছিলেন, সেই পাঁচ বং-সর গত ১৩ জ্যৈও ছিবসে পূর্ণ হইয়াছে অতথব ভংগরিবর্ত্তে অন্য এক জন সভাপতি নিযুক্ত করিবার প্রস্তার ঐসভাতে দিচারিত হইবে-কা ভঙ্গতীত প্রাক্ষ সমাজের দিতীয় তল গুলে ভন্ধবোধিনী সভার কার্যালয় হওয়াতে ভল্ববোধিনী গভার কার্যালয় নির্মাণ জন্য যে কিছ টাকা আছে ভালা ব্রাক্ষ্সমাজে দান করিবার প্রস্তাব ও বিচারিত হইবেক।

১ এক গ্রহণ যোগা দথ জন কভা **একর না** ভুটালে গুড়া হবুত্বিক না।

৪ দক্তরে নির্মাণিত সময়াবধি অন্ধিৰকী কাজ মন্ত প্রহণ বোলা দশ জন সক্ষণ একর ছ্ইন বার জন্য উপস্থিত সংভারণ গণেকা। ক-রিদেন । অন্ধিরণী। কাল অঠাক্তসমনে উপস্থিত সভার। তাঁহসম্পিণের অধিকাং-শের মতে প্রভার পরেবর্গে নিরমানু-শারে অন্য দিন স্থির করিতে পারিবেন। ১৪ অধ্যক্ষ দিনের বা বিশেষ সভার বা মন্ত অহণ যোগ্য অস্থাৰ দশ কান সভােপ্ত
অগবা নিক্পিত সময়ে দশ কান সভা একত্র না হ ওরাতে কোন বিশেষ সভা না হইলে তাহার কর্ম সম্পাদন কান্য উপস্থি
ত বভাদিগের অনুমতি বারায়ে প্রস্থার
যে দিনে বিচারনীয় হইবে , সেই প্রস্থার
এবং সেই দিন সংলিত বিশেষ সভাার
কারণ দেই ভাবি সভাার পূর্বে নাসের
২৩ দিনের মধ্যে সম্পাদক অনুভাত হইকে
হত্তবােগিনী পত্রিকাতে সেই সভাব দিন
ন এবং বিচার্যা প্রতাতে সেই সভাব দিন
ন এবং বিচার্যা প্রতাত বিজ্ঞাপন ক্রো
সভা গণকে সংবাদ দিবেন।

১৭ বিশেষ সভায় কেন্দ্র প্রস্তাব বিশিষ্ট হাই-বার পুরের সেই প্রস্তাব বিষয়ে অধ্যক্ষ দিনের অভিথায় সম্পাদক সভাগনকে বিশেষ সভাতে অবগত করিবেন।

২১ বিশোল সভার নিয়মামুগারে গঙ্গেৎসবি ক বভাতে সভ্যেরা প্রব্যাক্ষম মতে সক্র প্রস্তাব ক্রিতে প্রতিবেম :

अन्दशक्षमाथ ठाकुत । अभावक ।

বিজ্ঞাপন

কৃতজ্ঞতার সহিত খীকার করিছেছি ।
ক্রীযুক্ত রাজা রাধাকাত দেব গাহাছুর শঞ্চ
বংশক্রম পুলকের বর্ত বঙা, প্রীযুক্ত মদন নোহন তর্কালকার মহাশয় কুমুমাঞ্চলি পু ককের এক খণ্ড, এবং শ্রীযুক্ত পারিটমাহন মিত্র মহাশয় ইংরাজা পুত্তক ভূই খণ্ড এই স্থায় দান করিয়াছেন।

> जीन्ट्राख्याय ठाकुतः। सम्मापकः।

বিজ্ঞাপন

ভত্তবোধিনী প্রিকার দ্বিতীয় কংশের দ্বিতীয় ভাগ পুত্তক ক্পে বন্ধ হইবা প্রস্তৃত আহে তাহার মূল্য ৫ টাকা।

শ্রীন্পেন্সনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

আই এই তরুলোধিনা পঞ্জিকা কলিকাতা। মহানগনে ফোন্থানীক্ষেত্তিত তিন্ধবোধিনী সন্তার সার্গ্যালয় চই-তে প্রতি মানে প্রকাশিত হয়।—ইহার খ্রণ্ড নকটাকান ২৪ আহাত সমুধ ১৯০৬। কলিগকান্য এ৯৫৮।



ক্ষাৰেই স্বয়েরনাশতে সেই লামা করে। তান্তার ক্ষার্থনা চার্নার কিছে। তার্নাক্ষার ক্ষার্থনা কিছে ক্ষার্থনা ক্

১৭০ শকের সায়ংসরিক আয় ব্যয় পুস্তকের ভূসিক।

১৭৭০ শক গভ হইম্পেছ্য গ্ৰহৰণেরে সংঘৎসরিত নভাতে ^ভসভার **অবস্তা পরি**ব-ত্তৰ উপল্যে পৃথিৱীর যে**নুপ অমঞ্চল ঘট**্ড मार दियस छेटझर्थ क्या शिसाहिल, छ। छात्र প্রবাহ তচ্পণি ক্রমাণ চট চলিয়া আসিতে-১৯ া বিত্রকারের ভরক্ষরবাপার সম্বায় স্মরণ করিলে জনারেল স্মের্ণিত শ্রন্ধ ভইষা যায় ৷ যে ৰংগ গুথিৰী এক দিনেও নিনিটিভ ৷ मुक्ति दश गहे, का यात्र, गांव गांवि, ला-কোপদ্ৰৰ ইত্যাদি দিবিধ প্ৰকাৰ ক্ষমকল ক্রমাগতই ঘটিরাছে। রালা রাজাদংভাসন পরিষ্ঠ্যার্থ করিয়া দেশাস্থর গমন করিয়া-**ছেন. महा भड़ा मामुक्ता मकत अ**ड़ा वि **লোকে কম্পান হই**য়াছে, বসুনতা অন त्रक नत्रकर्त-निःमुख त्रञ्च-ध्यवारक आविष्य क्**रेबाटक, क्रिक्ट बाटकात स**र्काशक साहा অৰশিকী হিন ভাছাও বিনাশ পাট্যাছে ---र रेर्स कुमछाल अञ्चकात ममृह विशन् चित्रातक, तम ब्रह्मक आमात्र्रामत्त्रक 🕬 नका य मकीव क्याइ, अहे विस्तृ । शह रेवनारचंत्र चरशका अ रेवनारक एव नहात्र অবস্থার ম্যুনতা হয় **নাই,এই পর্ম লা**ড়ে ৷ क (मर्ग्यत स्वाक खरनरमञ्ज क्लिक्र स्थ च्छाक्छरे निव्ननुवाश छ निक्र स्वाक्, छार्गाछ অনেকেটে গ্ৰাগম ৬ টা জৌবিকার ৭ বাজি জন ঘটায় ছে দুল্লা একং সর সভার গজা লগালার কৈ বৃদ্ধি হওৱা কথাক সভাবিত নতে। এ প্রমুক্ত গত বংসর সভার আয় বিত্তা কুলা কইয়াছে ৷ ১৭৬৯ শকে মাসিক দা বল্লা ৪০৫০ (১০ টাকা আগতম আর গত বংসারে কেবল ১০৮৬৮/১০ নাক আসাম হয় ৷ ১৭৮৯ শকে কেবল ১৮৮৯ লাক কার আনুকুলা ক্রিট্রিলেন আর গত বংসারে ৪০৫ জন সাহালা করি দিনি কিলা দুল্লা ক্রিট্রেলেন আর গত বংসারে ৪০৫ জন সাহালা করি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলেন আর গত বংসারে ৪০৫ জন সাহালা করি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলেন আর গত বংসারে ৪০৫ জন সাহালা করি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন বিদ্যালি বিদ্যালি করি দিনি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দিনি দুল্লা করি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দুল্লা ক্রিট্রেলন করি দিনি দিনি দুল্লা করি দুল্লা কর

এই জাপ খাল সত্ত্বের বছ বংশর চনীতে প্রাক্ষণনাতের বার নিকাকের ভার খারাকের। এক। করিতে বাংল কইরাজের। খারি আছলাদ প্রকার বিভাগন করিতেছ বাংলজার কার্যা সাধানো মূল যায় যে তার বোর্নিনি পাত্রকা, গাত বংশরে চাংলার বিশিক্ষরেপ উল্লাভিয়া করিবলৈ করেবলৈ করিবলৈ ক

ধ্রেদ সংক্রিছা, মহাভারিত, ও ভারতবর্ণের रतात्र प्रमुक व्यवामा अश्वत श्रांत वाता वा-লার্দিগ্রে প্রাচান থখা ও আচার ব্যবহা-রাদি জরাত হওয়ায়াইতে ছাুইনানীয়নে , উপাসক সম্পানায় দিলের বিবর্ণ ছারা সমস্ত্র বৎসর মাধ্য ফিল্ড ধর্ম ফি এক.বে পরিবর্ত হইয়া আসিয়াছে, ভালা বিদিত হুটাহৈছে। বাহা ব্যুর সহিত মান্ব প্রের তির শয়স্কা বিচার ছারা বহুপকারের স अवनाः कात्रः। शत्रराक्षतः कि अनानी জমে বিশ্বাজা পালন ক্রতেছেন, তাত্য व्यवश्य इंडेश। उपनुष्यां शे अनुष्ठान करा कर কর্তব্য; এবং কেবল ভাঁহার নিয়ম প্রতিপা লন করিলে সুখোৎপত্তি হয়, আর ভাঁচার निष्ठम लक्ष्य करिए याद्य प्रत्ये घर्षे हैं-হাই পাঠকদিগের অন্থকরণে প্রগাঢ়কপে মুদ্রিত করিয়া দেওয়া এপ্রস্থাবের সম্যক্ অ:র পর্মেশ্রের মহিনা; প্রতিপাদক ২৮না ও.ভাঁহার উপাসনার প্রেকরণ সকল প্রকৃষ্ণ হওয়াতে সাধা-রণের মনে পর্মেশ্বরেন্ত প্রীতি ও শ্রহ্মার শঞ্চার বাজল। কপে হইতেছে। কেবল <u>अञ्चाक्षाकित्रित यञ्ज ७ উৎসাटः ध्वन्त्रा -</u> কার নানাবিধ হিতকর বিষয় তত্ত্বোগিনী পত্ৰিকাতে প্ৰকাশ হইতেছে, স্বত্ৰৰ জাঁ-হারদিগকে শত শত সাধ্বাদ করি ৷ বিশে-ধহং জীযুক্ত ঈশারচন্ত্র বিদাংসাগর মহাভা রতের বাঙ্গলা অনুবাদ দ্বারা পত্রিকাকে 'অলম্ভা করিতেছেন, এবং শ্রীযুক্ত রাজনা-বায়ণ বসু ব্রাহ্মসমাক্ষের বজ্তা ছারা ও প্রিক শল্মাচরণ মুখোপাধ্যায় প্রমেশ-রের কোশল বর্ণনা দ্বারঃ তত্ত্বজ্ঞানের পথ পরিড়াত করিতেছেন। গ্রন্থ সম্পাদক শ্রীযুক্ত আক্ষরকুনার দ**ভের সভার কার্যো**র উন্নতি পক্ষেয়ে প্রকার উৎসাহ ও যত্ন এবং পরিজ্ঞম हेकाटक कांचाटक अञ्चल धमानाम माकतिहा ক্ষাস্ত হওরাধার না৷ সভার পর্ম সৌ ভাগ্য যে এমন্ত অভিজ্ঞ গ্রন্থ সম্পাকের উৎ-**কুট সাহায্য প্রাপ্ত হইতেছেন: এর**প উৎ-সাহশীল গ্রন্থাক ও এত্ সম্পাদক থা কিলে পত্রিকার উন্নতি কেবল মুদ্রা সংখ্যার উপর নিতান্ত নির্ভর করে না৷ ভাঁচার-

ও সভার যৎকিঞ্চিৎ যাহা আয় হুয় ভদ্ধার। গুত্রিকারু এরপ উন্নতি হই-্দি সভার আয় হৃদ্ধি হয়, তবে এসফ্রক্টে প্রক্রিকার <mark>আরও উন্নতি ও সভার</mark> কাষ্ট আলা সিদ্ধি হইতে পারে ৷ ইফা কি সংখ্যা ভূথের বিষয় যে যে সকল প্র ন্তাৰ প্ৰতিপাদনাৰ্থে চিত্ৰ ফলক বা দেশভঙ্গী ম্ভ্রিত করা আবিশ্য**ক,তাহ। ধনসাধ্য বলিয়** প্রকাশ করা হয় না। আমারদিগের দেশীর লোকের কং কি বলিব? তাঁহারা এতা-দৃশ শুভকর বিষয়েও কিছু মাত্র আনু-কুলা করিতে চাকেন না। এই সভার সভ্যাদগের মধ্যে অনেকেই यह কিঞ্ছি যাত্য মাসিক প্রদান করেন, তাহা কেবল প্রিকার মুল। বিবেচন। করিয়াই দেন। আপামর সাধারণ সকলেই সভার সভা হুইয়া প্তিকাদি গ্ৰহণ পূৰ্ব্বক আন লাভ করিতে পারিকে,এই অভিপ্রায়ে সভাদিগের ন,ন কণ্পে ঢারি আন। মাধিক দানের নিয় प्रकृता शिवाकितः; विद्यु कि आन्धर्या ! ধনাচ্য ব্যক্তিরাও এই নিয়মের আঞ্রয় लहेशाट्यन। जात्नत्व मार्य मार्य रह-ধন উপার্জন করিয়াও এই চারি আনার উদ্ধি মাসিক দিতে স্বীকার করেন না : সক্ষম হইয়াও কার্পণ্য হভাবে দরিছ বেশ ধারণ করিতে লক্ষাবেধে করেন না। यथन खबुरवाधिनी পविका ৮ पृष्ट माज ছিল, ভখনও সভ্যেত, চারি আনা মাসিক पिट्डिन, পরে যখন ২২ বা ১৬ পৃষ্ঠ ছইত তথনও সেই চারি আনাই প্রদান করিতেন, এবং এক্ষণে যে বিবিধ প্রকার জ্ঞান জনক ও ছিড বোধক প্রস্তাব বিশিষ্ট ২০ বা ২৪ পৃষ্ঠ প্রকাশ হয়, তাহাতেও সেই চারি আ नाव अधिक मिटक अञ्चीकात करतन मा। পরস্কু কেবল পত্রিকা প্রাপ্তির নিমিত্ত মাসিক দাত্ব্য দিতে হয়, স্ভাদি**গে**র এই এক কুসংস্কার জন্মিরাছে। এক মা-দিক পত্ৰিকা প্ৰকাশ মাত্ৰ কি ভৰুৰো-ধিনী সভার সমস্ত কার্য্য ? এ সভার যে कि कि इहर ७ दिख् क कार्या कर्जना তাহা গত বংসরের সাহ্ৎসরিক সভাতে विरमय करण विवृष्ठ रहेतारह,

বোধিনী সভার পর্বত ত্ল্য ভার, 🗥 🖰 সম্ভ্রত্য কার্য্য পাত্র সেচনের कि छेश्रोत इहेरल्ड ? किनार्थः मात्र नःह বাকি উপক্রন হইতেছে? এইকেণে এত **সংগ্রহ, ও অন্যান্য বিবি**ণ প্রকার বিষয় এক বৎসর কাল স্থাকিত হইয়। রহিয়াছে 1 *(হ সভা* গণ! **আ**পনার। আর কভাদন এ সভার মঞ্ল জনক কাই। সম্বাস অন্নু-ষ্ঠিত রাখিবেন ৷ আপনার৷ স্থিকচিমে विट्या कित्रा। द्रश्य वस्ताः विक्रि-গের এতাদৃশ উপকারিণী আর বিচ'য সভা নাই! আগনারা যৎপরিমাণে আনু-কুলাকুরিবেন, তৎপরিমাণে ইহার উন্নতি घडेति, उद्भविभात आश्रनात्रित्व बाता শ্বনেশের উপকার ক্লুস হইবে, এবং তৎ-পরিমাণে আপনারদিগের স্থীয় দেশের হিচানুষ্ঠান জন্য পুণ্য সঞ্য হইতে পাক্টিব ৷

শীন্পেক্রনাপ ঠাকুর। সম্পাদক।

स्थित मः हिं।

श्रथभग अलगा असे मानु वाटक हुन् प्रश्निः कृशिवः अमुरका इरु जैस्मः अधिर मिन्छ।

893

> श्र यानिश्या भेतावर्धः (भािक-मंभानममाथ। कमा कर्षा मक्रकः कमा वर्भमा कर बीथ कर ई धृत्रयः।

২ দে 'গুড্যং 'ছাবরাদীনাং কন্সকলারিও 'দক্ষং যথ 'যদা 'সানং' সননীয়ং যুক্তাছকং, 'পরাবহঃ' দুরাং 'ইবা 'আমানকরিকান 'প্র-আস্থা 'প্রাদাও মুয়ো প্রাক্ষণার 'ন 'যথা 'গোচিঃ' সুর্য্যন্য ডেনং আছুরিকায়ুযো প্রাক্ষিয়েত তথং। তদানীং মুনংকনা বস্তানার 'ক্রাে 'ক্রুনা বক্ষপ্রান্ধ ড্বা কান্য বস্তানার 'ক্রাে 'ক্রুনা বক্ষপ্রান্ধ ড্বা কান্য বস্তানার 'ক্রাে বিভাগে সক্ষপ্রান্ধ 'কং' যড় মানং উদ্দিশ্য দেবয়ন্তন্তনেশে 'যাথ' গক্ষ্প 'কং' যড় মানং উদ্দিশ্য দেবয়ন্তন্তনা 'বাথ' গক্ষ্প বিশ্বা > কে কম্পানকারি মঞ্জেবতা সকল। যথন তোলার। তোনাবিদ্বোর প্রশংসনীয় বল জ্যু: ক্রাক ছইতে ভূমিতে প্রক্ষেপ কর। বেলন সুযোর তেজ ভূমিতে প্রক্ষিপ্ত হয়, তথন কেমেং। কোন্যজলানের যজ্পারা এবং স্থোন ছার। লমন কর, কোন্যজ্মান নকে উল্লেশ কার্য। অজ্যুকে গ্রাম কর। কোন্যজ্যানকৈ অনুগ্রহ কবা

8919

२ खिता देश मछाये था शतानुत्र में नीन छेड श्री ठिक्क एकं। यूकार्क मछ তবিষা প্রমায়দী মা মর্ক্তাদ্য মা যিনঃ।

হ প্রেম্টেড বিং নুজাকি 'আলুবা আবৃধানি প্রাণ্টে আধ্যমপ্রান্ত 'জিলা জিলানি 'কল্' স্থা 'উড অপিচ প্রিভিফ্ডেড 'লাঞ্ছম প্রতিস্কাল বিলু 'দুঢ়ানি সভ্। 'দুফ্লাস্থ' ভিত্তিটা তল্প প্রনী ম্যা জিভিখনেন ভ্রোডবাং 'অক্স 'ভবজু। অক্সাধু মধ্যে 'মানিবভ্র ভ্রাচবিন্ধ মন্টালা জিলোং তলং 'মাভিবভ্র

২ হে মরুদেবত। গণ : তোমারদিগের অন্ত সকল শত্রুছেদন বিষয়ে অন্যেখি হ'টক, গবং শত্রুদিগের বাব! জন্মাইবার নিমিত্র দৃদীভূত হউক। তোমারদিগের বল স্কর্মাণ্ডের বল স্কর্মান্তির বল ক্রান্ত্রী মংগ্য হউক, আমারদিগের মধ্যে ছ্লচারী শত্রুবল না হউক!

898

৩ পরা হ ষৎস্থিরং হথ নরে। বর্ত্তর্বথা গুরু । বি কাথন বুনিনঃ পৃথিব্যাৰ্যাশাঃ প্রতানাং।

১ হে ' নরঃ' নেতারং মক্তঃ ' হং ' হলা ' ছিব্ল' করু কৃষ্ণান্ধিক 'পরা-হথ 'পরা-হও' কয়ণ কুকুথ ছে' কিলা। ' গ্রন্থ 'প্রচেথ 'পরা-হও' পাহাণাদিক ' বর্ত্তমধা' বর্ত্তমধা একানী 'পৃথিবায়া সম্ব্রন্থ 'বর্ত্তমন্ ' বি ' বিযুক্ত ' যাধন ' মধ্যে গান্ধ অবধাগভানা নিবিড়ানাং বৃহ্ণানা মধ্যে মন্ত্র কল্যাণি

বৃক্ষকা জন্নকাৰ বিভাৱবৃত্বানাও প্রকারবিয়োগেন প্রেল্ডোয়াব্যোভর ডি । তথা প্রকারনাও 'আনাঃ' বাব বিশাং কি নামধ।

ও হে অভ্যুষ্ট দাতা মন্ত্রদাণ । যথম তোমর: অবিচলিত বৃদ্ধাদিকে ভগ্ন কর, গুরু ভার পাযাণাদিকে চালিত কর,ভ্যন পৃথিবী সম্বন্ধি বন বিশিষ্ট বৃক্ষ সকলকে ভগ্ন ও পরস্পার বিষ্কু করিয়া ভাত্যর মধ্য দিয়া গমন কর, এবং পর্বতের পাশ্ব দিয়াও গমন বর 1

890

৪ ন হি বং শর্ত্তবিদে অধি দাবি ন ভূমাং বিশাদনঃ। যুগা-কমন্ত তবিধী তনা যুজা কর্তামে। নূ বিদাধ্যে।

৪ ছে প্ৰিশালনঃ শিক্ষ্ কিন্তু ক্ষা মন্ত্ৰ কৰে বি বি ক্ষেত্ৰ কৰি কৰি বি ক্ষা ক্ষা কৰি প্ৰকাশ কৰি বি কৰি বি ক্ষা কৰি কৰি কৰি বি কৰি কৰি বি কৰি

৪ কে শাক্র্যাতী মরুদ্ধাণ। স্থানি পুথিবী কোন স্থানেই তোলারদিগের শাক্র্যাই। কে কুলপুত্র মরুদ্ধাণ তোমবা একোন প্রশাশৎ শক্ত্র হইয়া সম্প্রকোভাবে শক্ত্রদিগকে ধর্ষণ করিবার নিমিত্ত শীঘ্র বল বিক্ষাব কর।

894

৫ প্র বৈপয়ন্তি পর্বতান বি বি-ক্ষতি বনুস্পতীন্। প্রো পারত মক্তোদুর্মদীইব দেবীসং সর্ব্যা বিশাঃ ১৩।১৮।

৫ 'জন্তকঃ'' পর্জভান্' মেন্ট্রম্বনানীন প্রান্ত প্রয়ন্তি প্রক্রেথ কন্স্যন্তি 'বনলা নি।' বটালাগানীন 'বি' পরকার্বিযুক্তান্ 'বিগ্রাম্' প্রম্যা (জ্ঞান্ত ডঃ 'বেংলিঃ' দেৱাং' সর্জ্যা:' বিশা' প্রক্রা সহিতাঃ सबर 'श्र' श्रुक्तर्रव 'स्ते' धन नर्वकः 'श्राहक' नक्क 'क्ट्र' नर्वा मद्दानाः स्तामाम्बाः स्वक्षा नर्वकः 'क्नि-स्तु ' १००००००० रेमा

৫ মন্দ্রকাণ প সকলকে বিলক্ষণকপে ক্ষিত্রত করেন.বট ও অর্থপাদি রুক্ষ সকলকে ভয় ও পরস্পর বিযুক্ত করেন। হে মন্ত্রুক্ত তা গণ। সমস্ত প্রকার সহিত তোমর: দকল দিকে গমন কর, যেমন মদমন্ত পুরু-যোগ হীর ইজাতে সর্বাহ্য ক্রীড়া করে।১৷৩১৮

449

৬ উপো রথেষু পৃষ্ঠীরষ্দ্ধ প্রকিবহাত রোহিতঃ। আ বেষা মাষ পৃথিবী চিনক্রোদবীভষ্প মানষাঃ।

এতে মক্ত হা ভবনীয়েষ্ বিশেষ্ 'পুলভীঃ বিশ্ মুখ্যাং মুখ্যাং উপ 'সামালেগন 'উ' এব অসুক্ষা লোকিট বৃথাৰ প্ৰতি ' প্ৰতি ' প্ৰতম্ম মুক্ত বালনাৰ্যম লাক্ষী বৃথাৰ প্ৰতি নাজি ৷ বিঃ টুক্তকে মা নাজ ' গুলাৰ প্ৰতি নাজি ৷ বিঃ টুক্তকে মা নাজ ' গুলাৰ প্ৰতি ' জন্তিক্ষ' ' তিছ অপি 'কা লোহ কা নিজ্যকানাৰ্থকা নাজী ভাৰত ৷ মা কালোৱালিব বিন্ধ পুলকাহ ' অসীলগো ' ভীছাৰ সক্ষ ভানাগালিব বিন্ধ পুলকাহ ' অসীলগো ' ভীছাৰ সক্ষ ভানাগালিব ভীত্ৰ প্ৰতি বিন্ধ

৬ ছে মরুকাণ! তোমরা আপনার দি গের রথে বিচিত্রিত মুগত্রা যোজিত করিয়াছ। এই বাছন ত্রেত্র মধ্যবন্তী প্রফিনামক রক্তবর্ণ মুগ বিশেষ রথ বছন করে। অভারক্ষিও তোমার দিগের গমনাথে অমুক্তা করিয়াছেন। ভূলোক বাদী পুরু বেরা খ্যাং ভীত হইয়া অনা অনা সকলের ভয় উৎপন্ন করাইতেছেন।

395

१ वा दीमक उनीयकर क्रका व्यदीवृगेमत्हः गडी नूनर त्मा वैना यथा शुद्रदश्या क्षाय वि ভारत। क एक 'लामुक्त' लामुक्त प्रकार प्रभावकर' प्रकारित प्रमावकर' प्रकारित प्रकार प्रभावकर' प्रकारित प्रकार प्रभावकर' प्रकार का प्रकार प्रकार

৭ হে রুজপুত্র মরুকাণ! আমারদি গের পুত্রকে শীঘু তোমরা রক্ষা কর, ইচ। আমরা সর্বতোভাবে প্রার্থনাকরি। যেমন গুর্কে কর্মবিশেষে আমারদিগের রক্ষা ক-রিচে আসিরাছিলে, সেই কপ অনুগ্রহ প্রদর্শন করিয়া উপস্থিত ভয় হইতে কণ্ঝ-দিবে মুক্ত কর।

873

৮ যুদোষিতামরতোমর্শ্রেষিতুজা যেনো অভুঈষতে। বি তং

যুদ্ধাত শবসা ব্যোজসাবি যুদ্ধাকাভিকতিভিঃ।

চ তে অনুভঃ 'লং'ক কিচং 'আছু 'শ এক' গুলো বিভঃ' কুলাভিব বেবি এই মনোবিত ই মাজুবৈ আ ইনাকা প্রেলিভ লাল 'লাই আন্ধানে প্রি 'আইবি ই আজি প্রকাশ প্রাক্তি কি 'লাইক' শবলা জনেন বিন্ধোভা বিস্কাশ কুলাত কো 'লাইক' কুলাভ 'লাইক' বুলোভ 'গুলোলাভিছ' বুলোনসংক্ষিতি টেডিটি বুলোভ 'গুলোলাভিছ'

৮ হে মকুকাণ! তোমারদিগের কর্ক কিয়া অন্য শত্রু কর্তৃক প্রেরিড হইয়া বে কোন শত্রু আমারদিগের নিকটে আট্সে সেই শত্রুকে অন্নহীন ও বলচীন কর, এবং ভাহাকে ভোমরা আশ্রাদ্ দিও না৷

81

ু অসামি হি প্রযজ্যক কণ্ট দদ প্রচেতসং। অসামিভিম্কত আ নউতিভিশ্তা বৃষ্টিং ন বি দ্যুতঃ। ৯ 'আসালি 'সংপূৰ্ণ কথা কাতি কথা প্ৰিফকাৰে ' প্ৰক্ৰেই সকলো 'প্ৰকেত্সঃ' প্ৰকৃতি জানমুকাৰ ১৯ গ্ৰন্থ হ' বুলং 'কথু' বেমাবিন্দ মঞ্জানমুকাৰ দল গ্ৰন্থ কি 'কথাৰ প্ৰাৰ্থ কৰুক্তি হ'বি কত্ত্ব ক্ষাৰ কাৰণ 'আসাক্তি ক' দি প্ৰবিং 'উভিচিঃ' ক্লাইবংশান ক্ষাম প্ৰাণ আগক্ত 'ন' স্বাণ বিশ্বহা' 'প্ৰিটিং এখাৰ স্থান ক্ষা

৯ তে মকুলাণ ভোমরা সম্পূর্ণ করে।
বাংকু শল, এবং প্রকৃষ্ট জ ময়ুক্ত । তোমরা
মেণাবি বজনান কুপুর্বাকে ধারণ করে।
বেহেকু তোমরা কুপুর্যাকে ধারণ করিছাছ,
সেই হোতু তোমরা সম্পূণ রক্ষার সহিত
জামারনিগকে প্রাপ্ত ৬৬, ধেমন বিদ্যাহ
সকল রুক্টিকে প্রাপ্ত হয়।

842

১০ অসাম্যোজোবিভ্থা প্রদানবোসামি গৃত্যঃ শর্ষঃ কৃষি দিবে মক্তঃ পরিমনাবইষুং ন্স্কৃত দ্বিষ্ঠা ১ ৷ ১ ৷ ১ ১ ৷

১০বে দুলানবাজিশালনলানেশপথা নক্ষণ আল লামি সিমপুনিং প্রথমিক শবিষ্ণ কিছিল বাবে হ ছে প্রথম কল্যনবারিক। জিল্প জানালি নিশা দ শব্দ হল্য কল্যনবারিক। জিল্প কান্তি নিশা কিছিল জানিবিল একিল বালে বুক্তমান্ত্রক বিলোমি প্রিলে ব্রেক ক্ষিত্য কর্মে সুস্কানি নিশ্য প্রিনি স্পারি কিছুমান্ত্র সুস্কানি ছয় ১০১১

১০ হে শোভনদানমুক কল্পানকারী মরুদ্ধাণ ! তোমরা সম্পূত্রলধারণ কর এবং কোপবিশিষ্ট ক্ষিত্রেউটার বিনা-শের নিমিত্র ছেদকারী শুক্রমাতক সৃষ্ঠন কর, যেমন শক্রের উপরে বাণ প্রক্ষেপা করে!

-00 0 ·* 10 00

বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার

মনুষ্যের সুংখাৎপত্তির বিষয়

৭১ সংখ্যক পত্তিকার ৫২০ ছব পর

মনুষ্যের প্রঞ্তি ও বাল বস্তুর সহিত তাহার সহক্ষেত্র বিষয় সংক্ষেপে বিবরণ কর।

অধনা ভাঁযার সুখোৎপত্তির লিগুটছে, मल अरबयन कत् या डेरफर इ. 1 প্রথমতঃ हंड। स्थाने हे पूर्व इंडेरडरह, या गदीद उ দনের চালনা ব্যতিরেকে কথনই, সুখানুভব হওয় সম্ভাবিক নড়ে। ইহা জগদীশরের সাক্ষাথ আজা স্বৰূপ প্ৰতীত হইতেছে, ए "भारीतिक अक्र 3 मरमाद्रुष्टि मेकल গলনা কর, নত্রা সুগলাভের আর দ্বিতীয় পথ নাই। তালার। স্বভারতঃ বা অভ্যাস বশতঃ সুষ্পূব্ৎ নিশ্চেষ্ট হইয়: थाकित्न कीवन थाका है दूध। इहेड, मनू रिशत कीरान ३ दृष्णापित कीरान कि हूरे বিশেষ থাকিত না৷ ফলতঃ সর্বতে৷ ভাবে নিশ্চেষ্ট থাক। আমাপদিগের স্বভাব বিরু-জা যদি কোন বালক গৃহ মধ্যে **অপু**ঠা পর্য্যভোগরি সুকোমল শয্যায় শয়ন করিয়। পাকে আর কথা হইতে তাহার ক্রীডাসক্ত বয়ুমাদিগের কেলি কোলাছল তারণ করে, এবং তথাম ভাছাবা কি ক্রীড়া করি-তেছে, ভাশাও অনুন্দৰ করিতে পারে, ভবে <u>দে বৃহিণ্ড কইল। ভাষারদের সঞ্জী কইবার</u> নিখিত কেমন ব্যাথা হয় ! যদি ভাহার পিড৷ তাছমুকে নিবারিত করিয়ারাখেন, ভবে তাহার মনে ছ: থের জার সীমা शारकमा। এই अन्न यपि काम क्षरीय ব্যক্তিও অসাধারণ ছুর্দ্দিন প্রযুক্ত ক্রমাগত ৫ : ৭ দিবস গৃহ-বাঁহভূঁত হইতে না পারেন, তবে তিনি ও বিরক্ত ও অস্থির হয়েন,—যিনি সংবাদা প্রাসন্ন থাকেন, এমত স্থলে তাঁহারও অপ্ৰসন্নবদন দেখা যায় ৷ অতথ্য কায়িক ও মান্সিক পরিজ্ঞামের উপর মনুযোর সুখ নির্ভর ক্রে, কি না, ভাষা, যৎকালে ভিনি সৰ্ব্বথ।নিশ্চেষ্ট থাকেন, ভূপনই তিনি সম্যক্ উপলব্ধি করিতে সমর্থ হংগন।

পরমেশর সমস্ত বাছ বস্তুর রচনা আমারদিরের চিক্ত চালনার সমাস্ উপ্রেরাগি করিয়াছেন। যাহাতে আমরা শরীর ও মন সঞ্চালন পূর্বক আনক লাভ কবি, তিনি সমস্ত জগতের সাহত মানব প্রকৃতির তক্ষপ সম্বন্ধই নিক্সিত করিয়া রাখিয়াছেন। দেখ, আহার ব্যতিরেকে শ্রীর রক্ষা পায় না, মুভরাং শারীরিক

ও মানসিক পরিশ্রম স্বীকার করিয়া অন্ন আফরণকরিতে হয়<u>া</u> পশুদিগের যেমন গাত্র-লোম আছে সামারদিগের শীত নিবারণার্থে তাদৃশ কোন স্বাভাবিক আ-फामन नारे, मुख्ताः मतीत ७ मत्नत চেন্টা দ্বারা পরিধেয় প্রস্তুত করিতে হয়। ভার আমারদিগের সমুদায় মনোরভিই সম্ব বিষয় লাভার্থে নিয়ত ব্যগ্র, কিন্তু চেন্টা। বিনা তাহারদিগকে চরিতার্থ করিবার উপা য়নাই। **অভএব আমারদিলের শরী**র ও মনকে সমাক্সচেষ্ট রাখ। যে পরনেশ্ব-রের অভিপ্রেত, তাহা সুক্রেরণ প্রতীত হুইতেছে। ভাঁহার নিয়নানুবভী হুইয়া যত চালনা করিবে ততই শ্রীরের অক্স সকল প্রত্ন হাইটের, মনের রুক্তি গ্রুল সাহে-क करेरद, এवर व्यक्तःकहर मुप्यक्ति मध হ**ইতে** থাকিয়ে।

আমারদিধের জানাভিলায অত্যন্ত প্রবল ৷ জ্ঞানল ভেই সমুদায় বুকি বৃত্তির প্রয়োজন, এবং জ্ঞানামৃত পান ছারাই তাহার! সম্ক্চরিতার্থ হয়। কোন অভি-নব্বজ্ঞানশ্ন মাত্রেই অভাকরণ প্রজ্ঞ হয়, ভাহার সবিশেষ অণাতণ জিক্তাস। বিষয়ে **প্রবল** উৎসাহ জন্মে, এবং তাহার স্বভাব ও প্রয়োজন যত জানা যায়, তত্তই मूर्शामग्र **हरेट शारक। (म** वश्चत होतः) আমারদিগের কোন সংসারিক উপকার না হউক, অন্যকোন মনোবাঞ্চা পূৰ্ণ ন হউক. তথাপি ্দীয় আলোচনা মাত্রেই এমত প্রপাঢ় হবের উদয় হয়,যে তজ্জন্য শারীরিকও সংসাদিক ক্লেশ সহা করিতে হইলেও সে রমণীয় জ্ঞানালে:চনা পরি-ত্যাগ করিতে পারি না। অতএব ইচ্ছ। করিলেও নিতাস্ত নিশ্চেষ্ট থাকা সম্ভাবিত हरा ना। পরমেশ্ব आমারদিশের সুখ স-ম্পাদনার্থে মানসিক প্রকৃতির সহিত ব'র্ছা বস্তর যেৰূপ সম্বন্ধ নিৰূপিত করিয়া দিয়া-ছেন, বং উভয়কেযে প্রক্রার পরস্পর উপ্রযোগী করিয়াছেন, ও ভাহারদিগকে সচেষ্ট রাখিবার বিজিয়া খেকপ কৌশল করিয়াছেন, এই গ্রন্তাবের ভূমিকায় তাহার বিশ্বর উদাহরণ প্রদান করা গিয়া- ছে। অভএক মনোর্তির চালনাতেই দে সুখানুভব হয়, ও ইহা যে সর্বাশক্তিমান্ প্রমেশ্রের সমাত্ অভিত্রেত, তাফার সংশয় নাই।

यनि जामता मःकात विदर्भय वाता वृक्ति-বৃত্তি নি**স্পাদ। স**মদায় জ্ঞান প্রাপ্র হই দা ভূমিত হইতাম, এবং অপমারদিগের প্র-হৃত্তি সমৃদার আপন আপন বিষয় ভোগে এক কালেই চরিতার্থ হইয়া থাকিত, আন माझात्र्राविक हालना क्रिवात अर्गाजन ও সম্ভাবনা না থাকিত, তবে এমত অবস্থায় এইক্ষণকার অপেক। সুথের অংশতা ভিন্ন कथन्डे आवित्कात मधावना हरेक मा । যদি এক বার মাত্র ভোজন করিলে চির-কাল উদর পরিপূর্ণ থাকিত, ও ক্ষবার উদ্রেক আর না বহুত, তবে প্রতাহ কুৎ প্রাস: শান্তি করিয়া যে সুখ সয়োগ ক্র যায়, তাজাতে এককালে বঞ্চিত খংকিতে হুইছে ৷ ধন লাভ হুইলেই কুপ েব মনে আছবাদ হয়, কিন্তু সে আহ্বাদ শ্ভি অংপ্রকাল স্থায়ী। হস্তঃত পরে তাহার ভৃত্তি হয় না, সুভরাং সে তৎক্ষণাৎ অধিক **উপার্জনারে ব্যগ্র হ**য়। যদিও *লোকে* ভাছাকে অব্যাচীন বোধ করে, কিন্তু সে व्यक्ति चीत्र चलादत्रहे वनवर्षी हहेया कामा করে। তাহার অজ্ঞানস্পৃহার্ত্তির চালনা-क्टिमुशानुज्य इस, अवः क्वत धनारमयन ও ধনোপাজন দারা সে রুত্তি স্ব্যাপার থাকিতে পারে। মুতরাং যদি ঐ বৃত্তি এক কালে অপর্যাপ্ত বিষয় লাভ করিয়া চির- : কাল সুষ্থ্ৰৎ ব্যাপার শূন্য থাকিত, তাবে मानवर्ग छष्ट्रश्च मूर्यछारा कर्यनह অধিকারী হইত না৷ এই ৰূপ আর মার মনোহুত্তিও নিভান্ত নিচেন্ট ও অভিভূত হইয়া থাকিলে একণে ভাছার্দিগকে পুনঃ পুরঃ চরিকার্থ করিয়াযে প্রচুর সুখ সড়ো-श कता याडेरण्डल, जाहा आत आजात-पिट्शत **कार्ट्या परिक मा। এই क्रथ** इट्टन আমারদের মনশ্রেকীর अक्कारन वर्ष হইত, আমারদিগের অখন চেক্টাই শেব (क्रिके) इरेखः अखाण्यकारमरे नक्षत्रम् श्रुताः उन इहेक ! किहूटक बाद कोवृश्म शांकड

না,কিছুতেই উৎদাহ হুইত না, এবং কেৰে বিশয়ে আলারুভি স্থারণ করিত না ৷ এমন যে পরমারমণ্য বিচিত্র সংসার তাহাও নীরস বোধ হইড। অতএব পর্নেশ্র সৃষ্টির যাদৃশ ব্যবস্থা করিয়'ছেন, তাহা-ই দর্কোৎকৃষ্ট -- তা চার উপর আর কথা নাই। যে ৰূপ মনোহুতি সকল সৃজ্ঞন করিয়াছেন, তাহাবদিগকে ভড়প মুক্ত বিষয় ममन्त्र अन्न कहिंगार्डन। ले मकल বিষয়ের প্রয়োজন জানিয়া যথোচিত বাব इति कतिता हेर्गेनाह उज्जानक मकति হয়, আরে ভঙ্জিজাচরণ করিলে অনিষ্ট এটা না ও জুংখোৎপত্তি হয় 🕻 পর্ম সঞ্চল ' লয় প্রমেশ্র ভালারদের গুণাগুণ সমুস ন্ধান করিবার ভার আমারেদের উপর সম-প্র করিয়া আমারদের মনোরুত্তি সকলকে मना मवराशांत दाशिवीत कि मुक्ति कोलन করিয়ে জেন ৷

পৃথিব'তে ধান্য গোৰুমাদি শসং জাখে, ध्वतः रुष्ट्राह्य मानव स्माइह श्रुष्टि वर्क्षन हरः, किन्न डाइ: निश्चम अ भूमन्त्रश्लिक मः इक्टेरल मुचाह, मुकीर्न ७ दलाशासक इस न. । १ जह **रुध्मण्यामन जना मंदीत अगरनत शतिहा**ल লাব অংপকা রাখো অভএব জনদাখন সং কালেশদা সূজন করিয়া ভাষাতে ভচ্চতিত প্রণ সকল প্রদান করিয়াছিলেন, এবং ম'নব শतीत्रतक कविके धर्म 3 वृद्धि अमुनाय भार मुमण्यन कतिसाहित्सन, उरकात्वरे त्यात्-মাদির সহিত মানব দেছের পরস্পার সম্বন্ধ ও উপযোগিতা নিৰূপণ করিয়াছিলেন. এবং আমরা যে কায়িক ওমানদিক চেন্টা षाता **खान लाफ उ मू**थ मरहान्न कतित्, তাহারও স্থ্রপাত তৎকালেই করিয়া-ছিলেন ৷

পৃথিবীতে বহুতর বিষয়ক আছে, তাহার কল মূল পত্তাদি অংশ গরিমানে দেবন করিলে অনেকানেক রোগ প্রতীকার হয়, কিন্তু অধিক ভক্তেনে প্রাণ বিয়োগ হয়৷ ইহাতে মনুযোর বৃদ্ধিরতি সমৃদারের সমাক উপযোগিতা আছে, কাবণ তাহার৷ সাবধানতা সহকারে ঐ সমান্ত দ্বা-গুণ প্রকাশে সমর্থ করার স্মান্ত সংধ্য

করে) যিনি মনুবোর দেছকে রোগাম্পদ করিয়াছেন, তিনিই উঁচুচিত ঔষধ সকল দৃতি করিয়া সর্বাত্ত বিস্তার করিয়া রাধিয়া-ছেন, এবং ভদীয় গুণ সমুদায় নিরূপণার্থে তালাকে ততুপযুক্ত মনোর্ভি সকল প্রদান করিয়াছেন, ৷ সুতরাং তালারদিগকে চ্ছিবরে চালনা করা যে প্রমেশ্বরের সমাক্ আভিপ্রেক, তালার সংশা নাই ৷

জল উফ করিলে বাস্পর্য। সেই **বাস্পের আশ্চর্যা শক্তি প্রভাবে বাস্পী**য় यरञ्जल कार्या निर्वताञ्च हरेत्रः अठारह उता-পার সকল সম্পন্ন হইতেছে। বাস্পীয় তর্ণী সমদায় যে প্রকরে প্রবল বেশে সাগ-র রক্ষা বিদীর্ণ করিয়া ছয় মাদের পথ এক মানে উর্ত্তীণ গ্রহৈছে, ভাষা সকলে-वरे विषिठ आहि। भव्रसम्बद्ध मृख्यिकारलङ এই সমস্ত ভাবি ব্যাপার 'অবধারিত করি-য়াচেন, এবং মনুষ্যের বু ক্বিরি সকল ভত্ত-প্রোগী করিয়া জল ও অগ্নির স্বভাব এবং তাহারদের পরস্পর সাল্ধ অনুস্কান করিবার ভার তাঁচারই উপর সমর্পিত कतिशः दाशिशाद्यसः यथन वृक्ति हालनात मत्त्र मत्त्र मूरशानस इस अदः अछी के সিদ্ধি গ্রনে মহোপকার দর্শে, তথন অ-বশ্য স্থাকার করিতে হইবে, যে প্রম কার্রু-ণিক প্রমেশ্বর আমারদের হিতাভিপ্রারেই *এ*ৰপ কৌশল প্ৰকাশ করিয়া**ছেন**।

কোন ভূমি শর্করা কি বালুকামরা, কঠিন কি পদ্দিল, নিমু কি উচ্চ, ইত্যাকার সমস্ত কোন জাত চইয়া তাছার কারণ অনুসন্ধান পূর্বাক তথ প্রতীকারের উপায় চেন্টা করা নপ্রিক ভূমি শুফ করিবার, কঠিন মৃতিকা চুর্ন করিবার, অনুবরা ভূমি উর্বরা করিবার উপায় অবধারণ করা আমারদিগের বৃদ্ধির বিভাগের কার্যা হাবদীয় নরজাতি বৃদ্ধির পিরিচালনা পূর্বাক ভূমির গুণ, উৎপাদিকা শক্তি, এবং জল ও শস্যাদির সহিত সমস্ক নির্মাপ করে, ও নিরালস্য ইইয়া ভূমির দোল কংশোধনার্থে ও ক্ষিকার্য্য নির্বাহণ্যে বানসিক শক্তি সকল চালনা করে, ভক্তন্য ভাছারদের প্রচ্ব অন্ধলাভ হয়, স্বদ্দেশর ভূমি ককল দোৰ-বিজিত হইরা

শরীরের সুস্তাকর হয়, এবং অস্তঃকরণ नका कृष्ठे थाटका आज राजाताचा-लता পরবশ ছইরা ভীদৃশ অনুষ্ঠান না করে, তাহার। তৎপ্রতিফল স্বরূপ জুর, কম্প, বাত ও অপরাপর বছ ক্লেশকর রোগ দ্বারা আক্রান্ত হয়, অনবরতই অন্ন কল্রের ক্লেশ্ পায়, এবং মধ্যে মধ্যে শদ্যোৎপদ্ধির ব্যাঘাত ঘটিয়া অন্ধাভাবে মৃতপ্ৰায় হয়। এই ক্লেশ তাঁহারদের উপদেশ স্বরূপ মনে করা উচিত : ভাঁহারা ছে কর্তুবোর অব-ह्लान कविशासूचे महम्राह्म विश्व हहेत्छ. ছেন, ইতাই জ্ঞাত কারণ ক্রাণীশ্ব এমত স্থাল कृश्य निरम्भाक्त कतिहार 🎁 🛊 यथन छ। हा त। शरामधातत निवसीत्वाडी बहेक शु-र्व्वाक्र अकारत मंत्रीत ७ मर्ने हालम। कर्त्र বেন, তথনই দারুণ ছুংখের কংঠার সংধ कर्रेट अञ्चीन करेश सूथी केरेटनः

मग्राज्य व्यवाशकला, धावन क्रिका, ভীষণ তরক, এসমস্ত আপাতত দ্র দেশ গমনাগমনের অনিবার্য্য প্রতিবন্ধক বেশ্ব হয়। কি**ন্তু জলের সহিত কালে**ব সম্বন্ধ **जनश**ुड-जदरात महिक तोशुत मध्य নিরূপণ করিয়া, ও বাস্পের অদৃত শক্তি অবধারণ করিয়া, মনুষ্য একদেশ সাগর স্লি-লেপ্রকাও প্রকাও পোত সমুদায় প্রবমান করিয়া দেশ দেশান্তর গমন করিতেছে 1 পরনেশ্বর কোন কালে মনুষ্যে ও তৎসয়দ্ধ वाञ भगारर्थ **এই সমস্ত গুণ সংস্থাপন ক**রি-রাছেন, কিন্তু আমরা বুদ্ধিরতির ক্র্রি সহ-কারে তৎসমুদায় ক্রমে ক্রমে অবগত হই-তেছি এবং সংসারের সুখ স্বচ্ছক বৃদ্ধি করি-তেছি। পরমেশ্বর যে আমারদিগের মনোর-ক্তি সকল সতত সব্যাপার রাখিবার মিমিস্ট পরমোৎকৃষ্ট কৌশল প্রকাশ করিয়া বাস্থ বস্তুর সহিত তাহারদের একপ শুভকর সম্বন্ধ নির্দিক্ট করিয়া দিয়াছেন,তাহাও কেবল আ-মরাস**শ্রীতিজ্ঞাত হইতেছি** ৷ এইকণে যে বাস্দীর মহাপোত পূৰিবীর আত দূরবজী দেশ সমুদায়কে পরস্পর শবিষ্ট করিতেছে, ष दानून यञ्ज महकादत स्माख्या मनूया **गभग मधरण উড्छीयमान स्टेरङरङ्,**ंउ र्य मृत्रवीकान रहा चेक् जम नक्का मश्रामत

मःवाम निरमव मारज अडे व्यव्यातमारक व्या-নয়ন করিতেছে তৎসমুদায়ই পূর্বের অজ্ঞাত ছিল। বিষের স্কার্ণশেই একপ বিচিত্র পদার্থ, তাজারদের পরস্পর সামঞ্জান, ও প্রমাশ্যা কৌশল অবাক্ত রহিয়াছে, তৎ প্রকাশার্থে কেবল অসাধারণ-ধী-শক্তি-সম্পন্ন মনুষ্যদিগের উদয় হইবার অপেকা: ১ कशनीश्वत मुक्तन कारतारे अभवत महुः भ করিয়াছেন, এবং আমার্দিলের মানসিক প্রকৃতি ও তৎসমৃদ্ধ বাহা 🗪 সমুদায়কে তত্বপদোগি করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন। তিনি প**রম মজলাল**য়, ভাঁচার খার। যাহং किছু উদ্ভাবিত दहेशाছে. जोहाई मक्न । ভিনি যখন আমারদের সুখসঞ্চার শরীর ও মনের চেষ্টার্ধীন করিয়াছেন, তথন তদ-नुगार्थी वावकातके निन्द्य अक्रायक, अवर নাতিশয় আগ্রহ প্রকাশ পূর্বক তাহণতেই প্রবন্ত থাক। উচিত।

দ্বিতীয়তঃ---ব্দকাল-বাংপী বঞ্জম मूर्थ माधन कतिए इंटेल ममुनाय द्रश्वित পরস্পর সম্পূর্ণামঞ্জ রাখিয়া তাছার-দিগকে চরিভার্থ করা আবশ্যক। *কেবল* ধন কিয়া যশোলাভই জীবনের সার কার্যা জানির। তথাতা উপার্জনেই আয়ুস্ক্র করি লে ভক্তি, উপচিকীয়া, ও ন্যায়পরতা রুত্তিকে ভূপ কর। হয় না, সুতরাং অস্তঃ-করণ সর্বতোভাবে সুখী হয়না! কিন্তু জ্ঞানানুসন্ধান পূর্বক আপনার পতি, আত্মীয়ের প্রতি. স্বদেশের প্রতি, সমস্ত মনুষ্য বর্গের প্রতি, ও প্রমেশরের প্রতি यावर कर्खवा मण्यामन कहित्स ममस्य महना-রভি চরিতার্থ হইয়াধন, মান, খ্যাতি ও স্বন্ধাদি বিবিধ কল প্রদান শারীরিক করে, এবং অন্তঃকরণ সর্বধা স্থির সুখ প্রাঞ্ व्हेसा श्रम मुशी वस्र ।

তৃতীয়তঃ—মনুষোর সুখ সভোগের সিরতঃ বিধানার্থে জগতের সমুদায় প্রাক্তিক নিরমের সহিত পরস্পার সামঞ্জভান্গত মনোর্ভি সকলের ঐক্য থাকা নিতায় আবশ্যক, এবং বৃদ্ধি ব্যাহাতে উভরেই বভাব ও পরস্পর সহস্ক নিরপণ পূর্মক ত্রম প্রমাদ-শূন্য হইয়া সংপ্রধ্পরত্তিক

হাইতে পারে, এমত কর্ত্বা ৷ বস্তুত প্রমে-শ্ব এই ৰূপই ক্রিয়াছেন। তিনি মান্য অকৃতির সহিত জগতের সম্পায় নিয়মের खेका तार्थियारस्म": शव यनि अभातिक् (शद क्कारनाश्चित त्य निष्ट्रिये मौमा आएक. ভাষা উল্লন্ত্র করিবার আনবার নাই এবং यमि ३ ७९ अयुक्त हेश्रालातः तस्रत स्रतान ও অ**দ্যিত কথন**ই আমাগ্রানগ্রের বুল্লি र्गमा क्रेट्ट मा, कात्र भागात (१८८५) ७५० পযোগী কোন বৃত্তি নাই তথাপি চিনি এই भ**र्याक मुन्दर वाक्र म**ेश्र तहले कवितः ছেন,তিনিই যখন আমার্দিগের মনোর্ডি ममुपात मृष्टि कतियादहर ; अवस्मर्थन छ।-হার এরপ সুস্পান্ট অভিপ্রায় দৃষ্ট হইতেছে. त्य भागता यात्र हेह्दलात्क शांकित, छात्र পরম পুরুষার্থ সাধন পূর্বেক সুখে কাল যাপন করিব, এবং যথন ইছা অৱধারিত হ্ইয়াছে, যে জগতের নিয়ম নিরূপণ পূর্বাল তদনুযারি কার্যাকরাই সুখলাভের একমাত্র উপায়; তথন ইহাও নিশ্চিত, যে প্রমেশ্র আমারদিগের বুদ্ধিরতি ও অন্যান্ত্র সমস্ত भत्नात्रुजित्क डेक्टलाटकत् अमाक छेलाकु ক**রিয়াছেন। আম**ৰা ধ্ৰান ভাছার্লের शृंबीवका मण्यानतम ममर्थ दहेश। चयाव-নিয়োগ করিছে পারেব, তথনট চরিভার্য **१हेत्। आभ**ता एउ ज्हान ला**फ कति**द. अ যথানিয়মে শারীরিক ও মানসিক শক্তি সমুদার শত চালনাকরিব, তভট্জামার-मिर्गत मूथ खळन वृक्षि इहेर्त, अदर उडहे বিশ-ভ্রম্টার জ্ঞান ও ক্রুণার অনেধ নিত-ৰ্শন প্ৰকাশ হইতে থাকিবে।

— **ভীঞ্জাক:**মহাভারত

মাদিপর্ক
তৃতীয় অধ্যায়--পৌয়পর্ক

৭১ সংখ্যক পত্রিকার ৬৪ পৃশ্বের পর

বেদ উপাধ্যামের অনুজ্ঞালভোনশ্বর গু-রুকুল হইতে প্রভ্যাগমন পূর্বাক গৃহস্থার্ক্রমে প্রবেশ করিলেন। ভাঁহারও গৃহাবস্থানকালে

শপুর পুরু পত্রিকার এবিহায়ের উনাছরও প্রার-ন করা দিলাছে !

তিন শিষ্য হইল। তিনি শিষ্যদিগকে গুৰুণ-শ্ৰামা বা কোন কৰ্মা করিতে কহিতেন না। স্বয়ং গুকুকুল বাসের ছংখাভিজ্ঞ ছিলেন,অ-তএব শিষ্যদিগকে কথন কোন প্রকার ক্লেশ দিতে চাহিতেন না।

কিন্নং কাল পরে রাজা জনমেজর ও
পৌষ্য,বেদের নিকটে আসিরা তাঁচাকে উপাধ্যার কার্যো বরণ করিলেন। তিনি কোন
সমরে যাজন কার্য্যোপলক্ষে প্রস্থান কালে উভঙ্ক নামক শিষ্যকে আদেশ করিলেন "বংন!
আমার অনুপস্থিতি কালে গৃহে যে কোন বিযয়ের অসঙ্গতি হইবেক, ভুমি ভাষা সম্পন্ন
করিবে"। বেদ উত্তরকে এইবপ আদেশ
দিরা প্রবাস প্রস্থান করিলেন। উত্তর গুরুকুলে বাস করিয়া গুরুর আজ্ঞ। প্রতিপালন
করিতে লাগিলেন।

এক দিবস উপাদ্যায়-পত্নীরা একত হই-য়া উভস্ককে আহ্বান পূৰ্বক কহিলেন 'ভো-মার উপাধারানী ক্তুমতী হইয়াছেন। উপাধ্যায় গৃহে माई। अञ्जब याहारक के-হার ঋত্র নিক্ষল নাহয় তাহাকর; কাল অতীত হইয়াছে"! উত্তর তাঁহারদের কথা শুনিয়া কহিলেন " আমি স্ত্রীলোকের কথা-य कुकर्ण अञ्चल इहेव मां अस भागात আদৈশ করেন নাই, যে তুমি কুকর্মাও করি-(व "। क्रिय़ काल भारत छे भाषाम अवाम इंट्रेंट गृह क्षणांगमन पूर्वक धहे नमल বৃদ্ধান্ত অবগত চইরা উতত্তের প্রতি প্রতি ও প্রসন্ন হইলেনঃ এবং কহিলেন 'বৎস উত্তর ' তোমার কি প্রিয় সম্পাদন করিব বল; তুমি ধর্মতঃ আমার শুক্তাবা করিয়াছ, তাহাতে আমারনের বরম্পর প্রীতির্দ্ধি হইল ; এক্ষণে আমি তোমাকে গৃহগমনের অনুজ্ঞা করিতেছি; তোমার সমস্ত অভীষ্ট शिक्ष इटेरवकः श्रद्धान कर ?'!

এইরপ গুরু বাকা শ্রবণ করিয়া উতত্ত নিবেদন করিলেন ''আপনকার কি প্রিয় সম্পাদন করিব, আজা ক্রানা এইরপ আপ্রক্রান্তি আছে, 'বেবাজি দক্ষিণাগ্রহণনা করিয়া অধ্যাপনা করেন; এবং যে ব্যক্তি দক্ষিণা না দিয়া অধ্যায়ন করে; তাহারদি-গের অন্যতরের মৃত্যু অধ্বা পরস্কারের বি- (त्रव जत्मा"वाडक्त व्यापनकात व्यनुष्ठा लहेता অভিমত গুরুদকিণা আহরণ করিতে বাসনা ক্রি'। এইৰূপ **অভ**াৰ্থিত হইয়া উপা-ব্যায় ক**হিলেন " বৎস উত্তর** ! অপেকা কর. পরে বলিব "। কিয়দিন পরে উতন্ধ উপা-धारायत निक्रे निरंदमन कतिरलन " महा-भर जाका करून। किन्न शक्रमिक्श निहल আপনকার মনং**ঐতি *হইতে** পারে"। উপাধাায় कहिलान तदम उठक्र। ''कि গুরুদক্ষিণ। আ 🏶 ৭ করিব" বলিয়া আমাকে সর্ব্বদাই জিজ্ঞাসা করিয়া থাক, অতএব তোমার উপাধ্যায়ানীর নিকটে গিয়: "কি আহরণ করিব" বলিয়া জিজ্ঞাস; কর, তিনি যাহা কহেন ভাহাই আহ'রে ক্র'' ৷ এই ৰূপ গুৰুষাক্য শ্ৰেষণ করিয়া উত্তন্ন উপ৷ धायानी प्रतिधारन धगन शृक्षक निर्मन করিলেন "ভগৰতি! উপাধ্যায় আমাকে গৃহগমনের অনুমতি দিয়াছেন: অতএব মামার এই বাসনা, আপনকার অভিমত গুরুদ্ফিণা প্রদান করিয়া ঋণ মৃক্ত হইয গৃহ প্রস্থান করি, অবত এব আন্ডেড ক্রুন, কি গুরুদফিণা প্রদান করিব "। উপাদা য়ানী কহিলেন ' বৎস। পেট্যে রাজার নিক-টে যাও ; এবং ভাঁহার সহ ধর্মিনী যে ছুই কুণ্ডল ধারণ করিয়াছেন তাছাই প্রার্থন: করিয়া আন, চতুর্থ দিবদে ব্রত নিবন্ধন উৎসব इंट्रेंदिक, स्मेर्ड मिन वे कुई कुछन পরিয়া শোভমানা হইয়া ব্রাহ্মণদিগকে পরিবেশন করিব, **इंहाई मण्यन्न क**ढ़: हेह। कतिरमहे कामात नकन मकन नाख হ্ইবেক, নতুবা তোমার মঙ্গল কোপায়।

উতত্ত এই কুপে উপাধ্যারানী কর্তৃক প্রচোদিত হইয়া প্রস্থান করিলেন। পরে গমন করিতে করিতে এক মহাকার রুষত ও তত্তুগরি আক্রু এক নহাকার প্রমুঘ অবলোকন করিলেন। সেই পুরুঘ উতত্তকে কুমি এই রুষতের পুরীষ ভক্ষণ কর "। উতত্ত ভক্ষণে স্মাত হইলেন না। তথান সেই পুরুঘ পুনর্বার কহিলেন "উতত্ত! সংশাই করিতেই কেন, ভক্ষণ করি, ভোমার উপাধ্যারও পুরেষ ইছা ভক্ষণ করিরাহেন"। তথা

উতন্ধ সেই র্যভের সূত্র ও পুরীষ ভক্ষ। করিলেন এবং ব্যক্তত। প্রযুক্ত উপানান-ন্তর আচমন করিয়া প্রস্থান করিলেন।

কিয়ৎ ক্ষণ পরে উতন্ধ আসনোপবিষ্ট পৌষ্য সমীপে উপস্থিত হইয়া যথা বিধি আশার্কাদ প্রয়োগ ও সমচিত সন্তাধণ পুৰুক কহিলেন " আমি ভৌমার নিকট যাচক উপস্থিত হইলাম "। রাজা অভি-वामन कविशा निद्यमन कविद्यान " जगवन्! ভূতা কি করিবেক আজে। করুন। উত্স ক্ছিলেন " গুরুদক্ষিণা দিবার নিমিও তো-মার মহিধীর কর্ণস্থ কুণ্ডল ভিক্ষা করিতে আসিরাছি; তাহা তমি আমাকে দান কর"৷ পৌষা কহিলেন " মহাশয়! অন্তঃপুরে গিয়া গৃহিণীর নিকট প্রার্থনা করুন "। উত্ত্র ভর্দায় বাক্যানুসারে অন্তঃপুরে প্র-त्य कतिरलमः किन्तु (भीरवात महिचीरक দেখিতে পাইলেন না৷ তখন তিনি পৌ-তাৰ নিকটে আসিয়া কহিলেন ও আমা-, क अव्यक्ता कहा छेतिष्ठ न्दरः ष्वस्रभूदद তোমার মহিনী নাই; ভাহাকে দেখিতে पाहिलाम ना"। (भीया डेडक वाका व्यव-্াস্তর ক্ষণসাত্র অনুধ্যান করিয়া কহিলেন ুমহাশয় নিঃসন্দেহ আপনি উচ্ছিষ্ট ও অশুচি আছেন: মনে করিয়া দেখন। আ-যার সহধ্যিনী অতি পতিব্রতাঃ উচ্ছিষ্ট ও অশুচি থাকিলে তাহাকে দেখিতে পায ৰা; তিনি কথন 'অশুচির দৃষ্টি গোচর হ-(अन म) ।"

রাজবাকা শ্রবণান্তর উত্তর্গ শারণ করিয়া কহিলেন, আমি উপানানন্তর গমন করিছে করিতে আচমন করিয়াছি 1 পৌষ্য কহিলেন ''ঐ ভোমার ব্যতিক্রম ঘটিয়াছে, উপানাব ব্যার ও গমন করিতে করিতে আচমন করা আর নাক্র; ছুই সমাম''উত্তর 'বথার্থ কহিত্তেছ'' বলিয়া প্রাপ্ত্রমূবে উপাবেশন ও পাণি পাদ বদন প্রাক্তানন পূর্বাক বিলেক অ-

ত্যে একে বুছাৰ পদাও কেও সছল না থাকেও সাছা উঠ না হয় ভাছাতেই আচেমন করিবেক। আরু আচেমন এল অদয় পৃথিত গমন করিকো প্রাক্তন পৃথিত হয়েন। স্থা মনুঃ।

चनुका विवादकशिक्त कि कीटर्बन श्रवांतिकः त्योदकः

त्व अनुक इतर (मन पर्याय **अविके क**न ভারাবার্ধর আচমন ও বার্ধ্য ইক্রিয় ন জন ও পুনর্বার আচমন করিয়া অন্তঃ-পুর এবেশ করিলেন, এবং তথন রাজ-र्योग्वीतक (मशिट्ड शार्टेशम्यः) (शीषा श-ত্ৰী দৰ্শন মাত্ৰ গাত্ৰোপান অভিবাদন ওস্বাগত জিজাসা করিয়া কচিলেন ও ভগা বন। আজা করুন কি কবিব। উত্তস্ত किलान अस्पिकिशार्श कु प्रम प्रा जिका করিছে আসিয়াছি: তাহা দান কবু "1 তিনি তাঁহার ত্রচীযদী গুরুভক্তিদর্শনে প্র-সন্নাও প্রীতা তইলেন এবং ৭ ইনি অতি সৎপার; ই[°]হার **অভ্যর্থনা ভক্ত** হওম ওচিত নতে "এই বিবেচনা করিয়া কণ্ডইতে व्यवस्थाहन श्रुवाक क्षेत्रीय हरत कुलनपत সমর্পণ করিয়া কহিলেন ^{শৌ}নাগরাজ তক্ষক দাতিশয় নিৰ্বান্ধ সহকারে এই ক ওল প্রা-র্থনা করেন; অতএব আপনি সাবধান চুট্য: লইয়া যাইবেন ''**৷ উত্তন্ন কহিলেন** তে!-মার কোন উদ্বেগ নাই, নাগরাজ তক্ষক আমাকে অভিভৱ করিতে পারিবেন না৷ উত্তর ইহা কহিয়া সম্চিত অংমরণ

পূকাক রাজপত্নীর নিকট বিদাব এইয়া পৌষ্য সকাশে উপস্থিত কইলেন ভ্রা ক্হিলেন "মহারাজ! আমি প্রম পরি-ভুট হইরাছি। অনন্তর পৌণ্য উচকের নিকট নিবেদন করিলেন দভগবন সর্ক-দ: সংপাত্র সংযোগ ঘটে না ৷ আপেনি অতি গুণবান্ অতিধি উপস্থিত চইয়াছেন, অতথ্য শ্রাদ্ধ করিতে চাহি,কণেক অপেক্ষা করুন" ! উতঙ্ক কহিলেন ' ভাল, অপেক্ষা করিলাম; কিন্তু তুমি সত্ত্বর হইয়া বাছা উপ-**ত্তি আহে, ভাহাই আ**নয়ন কর"। তদ-নুসারে ভিনি যে অন্ন উপস্থিত ছিল, তাহাই আনিয়া তাঁ**হাকে ভোজ**ন করিতে দিলেন। **উতস্ক সেই অল কেশ** সংস্পৰ্দ্ধিত ও শীতল দেখিয়া অশুচি বোধ করিয়া কহি-লেন শভূমি আমাকে খণ্ডচি শন্ন দিলে ষত এব অস্ক্র হইবে '। শাপ শুনিয়া পৌ-

পৰ্য নৰ্বনাচাথেনে কাৰে প্ৰাপ্তন নাতা। ছবলাভিঃ প্ৰান্ত বিশ্ৰঃ কণ্ঠনাভিন্ত ভূষিপঃ। বৈশ্যোহছিঃ প্ৰান্তা ভিন্ত শুদুং সপৃত্যীভিত্ৰ ছবঃ। > আ: ১১ ৪ ৬> দ্ৰোন

শ্য কহিলেন " অছুই অন্ধ দূষিত করিতেছ, অতএব তুমি নির্বাংশ হইবে "৷ তথন উতঙ্গ কহিলেন " অগুচি অন্ধ আহার করি-তে দিয়া পুনর্বার প্রডিশাপ দেওয়া উচিত নহে; তুমি বরং অন্ধ প্রত্যক্ষ কর "৷ অনস্তর পৌধ্য স্বচক্ষে দেই অন্তর প্রপ্রত্যক্ষ করিলেন।

এট ব্রুপে সেই অন্নের অশুচিত্ব প্রতা-ক করিয়া পৌষ্য উত্তমকে অনুনয় করিতে লাগিলেন "ভগবন্! আমি না জানিয়া এই কেশ সংস্পর্শ দূষিত শীতল অর আনি-য়াছি; অতএব ক্ষমা প্রাণনা করিতেছি: এই अनुधह क्क़न, सन अक्षन रहें "। উত্তর কহিলেন, "আমার কণা মিগ্যা হয় নঃ অতএব একবার অস্ক হইয়া অতি স্বায় অন্ত্র দোষ হঠিত মুক্ত হইবে ! আর ভূমি আমাকে যে শাপ দিয়াছ, তাহা কিন্ত (यब न: करन"। (भीग) कहिरनन ' आवि শাণ দদরণে সমর্থ নহি: এখন পর্যান্তও আমার কেনেপাপশ্ম হয় নাই। আপনি কি ইয়া জানেন না, তেযে ব্রাক্ষণের ক্রদয় নবনীতের ন্যায় কোমল; ভাঁছার বাক্য. তীক্ষাধার ফুরের ন্যায়। কিন্তু ক্রতিয়ের এই ছুই বিপরীতঃ ডাহার বাকা নবনীতও হৃদ্য তীক্ষধার কুর**৷ অভ**এব কাতি স্বভাব সিদ্ধ তীক্ষা হৃদ্যতা প্রযুক্ত আমি শাপ অন্যথা করিতে পারি না "৷ তখন উত্তর কলিলেন ' তুমি আমের অশুচিত্ব প্রত্যক করিয়া আমার **অনুনয় করিলে।** পুর্কে কাছয়াছিলে ''নিদেনি অন্নকে দূষিত কহিতেছ অতএব নিৰ্বাংশ হইবে " 🖟 কিন্তু অন্নয়খন দোধ সংযুক্ত প্ৰমাণ হইল ত্ত্বন আর আমাকে শাপ লাগিবেকনা। এক্ষণে আমি চলিলাম " এই বলিয়া কুওল লইয়া উভশ্ধ সম্থানে **প্রস্থান** করিলেন।

তত্ত্ববোধিনী সভার নিয়ন ১৭৭১ শক

 বিবিধ উপায় ধারা তত্ত্বোধিনী সভঃ ব্রাক্ষ ধর্ম্ম প্রচার করিবেন !

- স্ভার কর্ম নির্বাহার্থে বিশেষ সভা ও সাহবৎসরিক সভা ও অধ্যক্ষ সভা বিহিত সময়ে হইবেক।
- মত গ্রছণ যোগ্য দশ জান সভ্য একএ না হইলে বিশেষ সভাবা সাস্থ্য-রিক সভাহইবেক না৷
- বিশেষ সভা বা সাছৎসরিক সভার
 নির্কাপত সময়াবধি অর্জ ঘন্টা কাল মভ
 গ্রহণ যোগ্য দশ জন সভ্য একতে চইবার জন্য উপস্থিৎ সভ্যেরা অপেকা
 করিবেন। অর্জ ঘন্টা কাল অভীত
 সময়ে উপস্থিত সভোর: তাঁচার দিগের
 অধিকাংশের মতে ঐ সভার কর্ম
 সম্পাদন জন্য নির্মানুসারে অন্য দিন
 স্থির করিতে পারিবেন।
- ৫ তিন মাদ শভ্য শ্রেণীর মধ্যে গণ্য না থাকিলে তাহার মত প্রায় হইবেক না, কিন্তু তিনি প্রভাব করিতে পারি-বেনা
 - সভাস্ত সভাদিগের মধ্যে অধিকাণকে: মতান্যায়ী কর্ম হইবেক:
 - সভাদিশের দুই পক্ষে সমামাশ আরি লে যে পক্ষে সভাপতি সেই পক্ষে: মত গ্রাহ্য হইবেক।
 - সম্পাদক ও সহকারি সম্পাদক ও গ্রন্থ'
 ধ্যক্ষ ও গ্রন্থসম্পাদক সভা হইওে
 অধ্যক্ষদিগের প্রস্তাবে নিযুক্ত হইবেক
 ভ্রাক্ষদিগের মতে সম্পাদকের কর্ম
 চারী নিযুক্ত হইবেক, এবং সম্পাদক
 অধ্যক্ষদিগের সমীপে ভাগরে নামো-
- লেখ করিবেন ।

 >০ অধ্যক্ষণিগের ধারা আট টাকার জনধিক মাদিক বেতনের বা জানিদ্ধারিত বেতনের বা জানিদ্ধারিত বেতনের নূতন কোন কর্মচারী নিরোধার আনুমতি হইলে অথবা উক্ত বেতন জোলা কোন কর্মচারির পদ শূনা ছইলে তাহার পদে লোক নিযুক্ত করণ ভার সম্পাদকের প্রতি থাকিল।
- ১১ অধ্যক্ষ গণ কর্তৃক নিযুক্ত কর্মচারীকে সম্পাদক কর্মচ্যুত করিতে পারিবেন না !
- >२ व्यथाकिमिर्शत वा नव्याम्यकत काता

- নিযুক্ত কর্মচারী মাত্রকে অধ্যক্ষের। কর্মচ্যুত করিতে পারিবেন।
- অধ্যক্ষদিগের বা বিশেষ সভার বা মত গ্রহণ যোগ্য অন্যন দশ জন সভ্যের অথবা নিকপিত সময়ে দশ জন সভ্য একতা না হওয়াতে কোন বিশেষ সভা বা সায়ৎসরিক সভা না হইলে তাহার কর্ম সম্পাদন জন্য উপস্থিত সভাদিণের অনুমতি ঘারা যে প্রস্তাব যে দিনে বিচারণীয় হইবে, সেই প্রস্তাব এবং সেই দিন সম্বলিত বিশেষ সভা বা সায়- সেরিক সভার কারণ সেই ভাবি সভার প্রধ্ব মাসে সম্পাদক অনুজ্ঞাত হইলে সংবাদ পত্তে সেই সভার দিন এবং বিচার্য্য প্রস্তাব বিজ্ঞাপন স্থার্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য স্থাব্য স্থাব্য স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থার্য স্থাব্য বিজ্ঞাপন স্থাব্য স্থাব্য
- ১৪ মাদের অফীছের পর পঞ্চদশ দিবদের মধ্যে বিশেষ সভা চটবেক।
- ১৩ বিশেষ সভার দিন নির্দিষ্ট ছইলে পরে যদি অন্য কেশন বিশেষ সভার জন্য সম্পাদক অনুজ্ঞাত হয়েন তবে পরেয় বিশেষ সভার প্রস্তাব পুর্বে বিশেষ ফভায় বিচারিত ইইবেক।
- ১৬ বিশেষ সভাষ বা নামৎস্থিক দভাষ কোন প্রস্তাব নিশ্চিত ইইবায় প্রর্কে দেই প্রস্তাব বিষয়ে অধ্যক্ষনিগের অভিমত দশ্পাদক সভ্য গণকে বিশেব সভাতে বা দাবংশব্রিক সভাতে অবগত করিবেন।
- ১৭ বৈশাথ মাসের শেষ গবিবারে দিব। গাঁচ ঘণ্টার সময়ে সায়ৎসরিক সভা হইবেক।
- ১৮ সামৎস্রিক সভার পূর্বে বর্তমান নগর স্থিত সভাগণকে সভাবোহপের নিমিত্র সংবাদ পত্রে বিক্ষাপন যারা অভ্যান করা যাইবেক, উক্তবিক্ষাপন সেই

- সভার দিবদ পর্যায় দপ্তাহ । দয়াদ পত্তে প্রকাশ হইবেক।
- ১৯ সাত্রৎসব্লিক সভাতে পত বৎসরের সমু হার কর্ম সাধারণ ক্রপে সভাদিগকে সম্পাদক অবগত করিবেন।
- ২০ গদি অধাকেরা বা মত গ্রেহণ বোগ্য
 অনুন দশ জন সভা সাস্থ্যবিক্ সভা
 তে কোন প্রস্তান করিতে অভিলাস
 করেন ভবে জাহারা সেই সাল্থ্যবিক
 সভার প্রধানাসে সম্পাদককে অনুজ্যত করিবেন। এবং সম্পাদক ভাচা সেই
 সাস্থ্যবিক সভাতে বিচার নিমিত্ত
 সংবাদপতে বিজ্ঞাপন করিবেন।
- ২১ ছয় জন অধ্যক্ষ, দুই জন কথাধাক ও এক জন সভাপতি নিযুক্ত থাকিবেন, সভাপতি এবং কথাধাক্ষেরাও অধ্যক্ষ দিধের মধ্যে গণ্য ছইবেন 1
- লভাতে মত গ্রহণ গোলা না হইকে অধ্যক্ষ পদের উপযুক্ত হইবেন না:
- ২০ কোন অধ্যক্ষ পাঁচ ব্ংসরের অধিক কাল নিযুক্ত পাকিতে পারিবেন না এবং কোন অধ্যক্ষ স্ত্য শ্রেণী হইতে রুখিত হইলেই তংক্ষণাথ তাঁহার অধ্যক্ষর: পদ শুন হইবেক;
- ১৪ কোন ব্যক্তি অধ্যক্ষের পদ হইতে অব-শৃত হইলে গেই অবপরেস দিন অবধি এক ংংলরের মধো তিনি আর অধ্যক্ষ কইতে পারিবেন না ৷
- >৫ অধ্যক্ষদিগের অধিকাংশের মতে শভার সম্বায় কয় সম্পল্ল ইইবেক 1
- ২৬ সম্পাদক শ্বয়ং অধ্যক্ষ সভার প্রযোজন বোধ করিলে অধ্বঃ কোন এক জন অধ্যক্ষ অধ্যক্ষ সভার নিমিতে সম্পাদ-ককে জানাইলে তিনি অধ্যক্ষ্ দিগতে আহ্বান করিবেনঃ
- २१ मृण नित्रमानुवाही कर्म निक्रीशिथ उन्

পযোগী নিয়ম সকল সংস্থাপন করিবার ভার অধ্যক্ষদিগের প্রতি,অর্পিত হইল।

- ২৮ পাঁচ জন অবৈতনিক গ্রন্থাক্ষ ও এক জন বেডন ভুক্ গ্রন্থ সম্পাদক নিযুক্ত থাকিবেক, এবং কন্মাধ্যক্ষেরাও গ্রন্থা ধাক্ষবিধার মধ্যে গণ্য হইবেন।
- নভার কার্যা নির্বাহ বিষয়ক গ্রন্থ ভিল
 সভার আর সমুদায় গ্রন্থ গ্রন্থাথাক্দিগের অধিকাংশের মতে সভা হইতে
 প্রকাশ যোগ্য বোধ হইলে তবে অধাকের। তাহা প্রকাশ করিতে পারিবেন :
- ৩০ প্রত সম্পাদক অনুপ্স্থিত হইলে প্রস্থা-১/ফদিগের অধিকাংশের মতে কোন এক জন প্রস্থাধ্যক ভাহার কর্ম করিতে পারিবেন
 ।
- ৩১ প্রতিমাদে চারি আনার ন্যুন কোন সভ্য দিতে পারিবেন না !
- ং যিনি সভা শ্রেণী ভুক্ত হইবেন তাঁহার এক টাকা খগ্রে প্রদান করিতে হইবেন, কিন্তু ঐ টাকা তাঁহার মানিক দাতবে। আদায় দেওয়, যাইবেক।
- ৩৩ যে মাদে সভা হইবেন সেই মাসাবধি মাসিক দাতবঃ দিবেন।
- এ৪ বদি কোন বভা এক মাসের মধ্যে অপ্রিম দাতব্য বা ছাদশ মাসের মাসিক দাতব্য না দেন. এবং অধ্যক্ষেরা ভাঁচাকে সভা শ্রেণী হইতে রহিত করিতে সক্ষত হয়েন, তবে তিনি সভা মধ্যে গণ্য হইবেন নাঃ
- তথ থিনি স্বেচ্ছাপ্রকিক সভা শ্রেণী হইতে রহিত হইবেন, জাঁচার অঞ্চীকার পত্রের টাকা তিন মাসের মধ্যে আদার ন। গুইলে সম্পাদক সেই শ্রেন্য অঞ্চীকার পত্র রহিত করিতে পারিবেন।
- ুড় বিনি অধ্যক্ষদিধের মতে সভা খেণী

- হইতে বহিদ্ধৃত হইবেন, তাঁহার মানিক দাতব্যের সমুদার অনাদায়ী অঙ্গীকার পত্র রহিত হইবেক ৷
- প্রতি সভ্য সভা প্রবেশ মাস হইতে ভদ্ধবোধিনী পত্রিকার এক খণ্ড বিনা মূলো প্রাপ্ত হইবেন।
- ৩৮ সভা হইতে যে সকল গ্রন্থ মুদ্রিত হইবে তাহা #ক্ষথাকের। এল বিশেষে বিন। মূলোও বিভরণ করিতে পারিবেন।
- ৬৯ সম্পাদকের অনুপস্থিতে তাঁহার তাবং কর্ম সম্পন্ন করিবারে ভার সহকারী সম্পাদকের প্রতি পাকিল।

त्रीमृत्यसम्बाध ठे कित। सञ्जत्वाधिमी मञा मण्यामकः

মহাভারতীয়স্কোকাঃ

নেত্রহীনোষ্থ। ছোকং ক্লছাতি লভভেডগুনি। **ख्यानहीनस्था उत्तरक उत्तरक क्या कक्यानियमा**विकाः क्रारश्विष्यार्थयु मकाः मीनवि क्रयतः । যে দ্বৰ্শকামহান্তানতৈ যান্তি প্রমাং গতিঃ জন্মসূত্যজরাজ্য হৈ ব্যাপিভিসানসক মৈ:। দুষ্টের সম্ভংলোকং ঘটে ঝোকার ব্যক্ষান্ যৎকৃতঃ স্যাজ্ভঃ কর্মাণাপংবার্যনি বাশ্মুতে ৷ তস্মাচ্ছ ভানি কর্মাণি কুর্য্যাদাগ্রুদ্ধিকর্মান । अहिश्मी मञ्जूरहनः मस्युक्त वर्ष हा अर्थ वर्ष क्तमा हेहवाक्षमामक यहेमार्ड ममुशी अर्वशा ব্রহ্ম তৎ প্রমং জ্ঞানমমৃতং জ্যোতিরক্ষরং ৷ যে বিদ্বর্ভাবিতাত্মানন্তে যান্তি পরমাংগতিং।। ধৈর্য্যেণ যুক্তং সভতং শরীরং নবিশীর্যাতে ৷ বিশোকতাসুখং ধত্তে ধতে চারোগ্যমুক্তমং।৷ যশ্চ প্রাক্তোনরস্তাত সাহিকীং রুত্তিমান্থিতঃ ! **उटेमायर्थाक्ष देश्याक्ष दादमायक कर्यमू।**! নাগামিনমনর্থংছি প্রতিঘাতশতৈর্পি। শক্ষুবস্থি প্রতিব্যোদুমূতে বুদ্ধিবলামরঃ।।

ভ্ৰম্বসঙ্গীত

রাগ মালকোষ।

রাজগণ রাজা মহারাজাধিরাজ তিভ্ বন পালক প্রাণারাম।

পিত: তুমি মাতা তুমি গুরু জ্ঞান দাতা ত্মি বিধাত। প্রমানন ধাম ।।

রাগ গৌড় মলার।

শার পরমেশবের মন আমার। কি কর চিন্তা ভবে দেই মাত্র সার। সঞ্চ করি তত্ত্বজানী, আছে মাত্র এই জানি, বিঞ ব্যাপি তাঁৱে মানি, তাজ দম্ব অহন্ধার।

সর্ফর্দ বাগিনী

हर राग, कह आका नुमक्तार, अग्रम स्थ द्वाद ना दाद न।। भक्रक पन कल केंद्र की तम प्रशन यम जन्म प्रभाग ममान, तर्य म' वर्ष ना : रमाङ् भाग दक्षन, ब्हानारञ्ज कत ছেদন, সভো ক্র গ্রীভি পাইবে পরিত্রাণ। এখনি হইবে সুখী, অনুরে আত্মারে দেখি, कथा मान क्षरीन अञ्चान, जुलना जुलना।

রামকেলী রাগিণী ।

विखात कतिल बाका निक वाक वल ! मध्यारम व्यानक तिथु मध्यात कतिरम । **क्रान अरुकात** खता. तिश्वहीन रूरला धता, । শরীরে ছুক্জন্ম রিপু তার কি চিন্ডিলে! প্রবল সে রিপু ছয়. তোমারে করিল জয়, धिक् अरत मखमय, त्रशा व्हकात, व्यक्त যুক্তি শুন, মনেতে বৈরাগ্য আন, আত্ম হত্ত্ব ममरत मलह तिशु मरल।

বিজ্ঞাপন

সভোবা প্রীযুক্ত রাজা সতাচরণ ঘোষাল মহাশয়কে তত্ত্বাধিনী সভার সভাপতি হ পদে নিযুক্ত করিয়াছেন।

> **अ**न्रश**स**नाथ ठाकुत्। ANNTHA 1

বিজ্ঞাপন

কৃতজ্ঞতার সঞ্চিত স্থাকার কাল্ডিভি যে শ্রীযুক্ত রাধারুক্ত মুর্বোপার্যায় মত্ত ার নিকট হুইতে ব্রাহ্মসমাকে পাচ ট্রাক্ত দান প্রাপ্ত্টয়াছি।

> **अभागमहान्यः (उपः च**्चाः । । क्षेत्र हार्ना ।

বিজ্ঞাপন

কুতজ্ঞতার সহিত স্থাক্র কারতেছি এ 🎒 যুক্ত ফ, ই, হল সাহেন্দ্র মহাশার প্রোন্তঃ র্টর্লি ওরিয়েণ্টল মেনেজিন 🤭 পুস্ **क्ति एक मश्या**क अक्थ 3, शतः की मुक्त क মশ্, লং দাতেৰ মহাশ্য খ্ৰিউ বল বিষয়ক ছয় খণ্ড পুস্তক এই সভাৰ প্ৰদান করিয়া-(EA]

> শ্রীন পেন্সনাথ ঠাকুর। मुक्ला हता

বিজ্ঞাপন

১৭৬৬ শকের বৈশাখ মাদীর তত্ত্বো-ধিনী পত্তিকার প্রয়োজন হইয়াতে, অত-১০ শ্রাবণ দিবসীয় বিশেষ সভাতে । এব যিনি উক্ত পত্রিক। তত্ত্ববোধিনী সভার काद्यान्तरम् अमान कदित्यनः <mark>काहारक का</mark> भाव मना अक होका सम्बंध पा**रुटकः।**

শীন্পেজনাথ ঠাকুর 1

বিজ্ঞাপন

শত্ত্বোধিনী সভার পুস্তকালয়ে সড়ে। রাষদি গ্রন্থ প্রকান করেন, তবে তাহা উ তম রূপে রক্ষিত চইবে, এবং তদ্যার। ম-ভার বহু উপকার রুত চইবেক।

> জীন্দেশ্ৰমাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

বিজ্ঞাপন

তত্ত্ববেংখিনী সভার সুদ্রায়ক্তে বিনি বাললা আক্রের প্রস্থ মুদ্রিত করাইবার অ-ভিলাব করেন, ভিনি পত ধারা জ্ঞাপন ক-রিলে উপ্যুক্ত বেতনে ভাহা মুদ্রিত কর। বাইবেক।

> শ্রীন্পেক্রনাথ ঠাকুর ! সম্পাদক !

বিজ্ঞাপন

ভত্তবোধিনী সভার কার্য্যালয়স্থ বিক্রেয় পুস্তকের মূল্য

প্রথম কণ্ণ ভত্তুবোধিনী পত্রিকা	200
দ্বিতীয় কম্পের প্রথম ভাগ ঐ	3.
দ্বিতীয় কলেশর দ্বিতীয় ভাগ	¢.,
বৃদ্ধি সহিত কঠাদি সপ্তোপনিষ্ৎ	2
य श्रुविकांत	10
শরমেশ্বরের মহিষা বর্ণন	1
ভান্তবোধিনী সভার বক্ততা	ļ

রাঙ্গলা ভাষাতে সংস্কৃতব্যাকরণ	110
সংস্তপাঠোপকারক	10/0
ভূগোল	110
श्रिमार्थ विमा।	110
বর্ণমাল :	* <i>i•</i>
ইংরাফি ভাষার আগতি প্রভৃতি	110
ইংরাজি ভাষায় ব্রাহ্মণদেষধির করি-	
পর অধ্যায় ও অন্যখন্য বিষ্য় · · · ·	110
বেদান্তিক ভাক্তি নৃস্বিভিকেটেড্	• نو!
ব্ৰহ্মসঙ্গতি পৃস্তক	įo
পৌত্তলিক প্রবোধ ··· ··· ··· ···	100
কঠোপনিষ্	ap e
बीन् श्यम्बार के	কুল ১

...

বিজ্ঞাপন

ধীকারা জ্বুবোধিনী সভার সভা এই বার মানস করেন, ভাঁহার: পড় ছাক্র জানাইবেন।

> জীন্তগঞ্জাপ ঠাকুর। সম্পাদক।

भन्त्राहकः

বিজ্ঞাপন

আগামী প্রভাজ রবিবার প্রাতে ৭ ঘ্লীর সময়ে মাসিক ব্রাহ্ম সমাজ চই-বেক।

> জ্ঞ<mark>ীকানক্ষতন্ত বেদান্তনাগীৰ।</mark> ত **উ**পাচাৰ্য্য ।

ক্স এই ডক্সবোধিনী পরিকা কলিকাতা মহানগরে ঘোড়াদাঁকোছিত ডক্সবোধিনী সভার কার্যালয় হই-তে প্রতি মানে প্রকাশিত হয় । তইহার মূল্য একটাকা। ২৫ প্রাবণ সমূহ ১৯৬৮। কলিগড়াসাঃ ৪৯৫৭।



<u>্তঅরোধিনীপ্রতিকা</u>

্ষ এর[°] ফার্নোলগুরের নামতেনে।থারতের: শিক্ষা ১.শেবিচাকর্ণৎ নিকক্ষণ ছলেচ্ছাটেল্যিন। অথ প্রাখন ড্রুক্র মধিন্যাতে ॥

'भारधम मः (२०) প্রথমম গুলস্য অফ্সানুবাকে ষষ্ঠাং সূক্তং !

কণুক্ষি: গায়ত্রং ছন্ত বৰুণমিত্রার্যান্থণ দেবত।

> যং রক্ষন্তি প্রচেতদো-বর্কণোমিত্রো অর্য্যায় নু চিৎ সদভ্যতে জন[া]।।

১ 'প্রচেডকম' প্রকৃষ্টজানতুকাং 'বরুণং 'যিত্র' 'অর্থামা' এতে লকো দেবাং 'যথ'যক্ষমানথ' রুফ্ডি' 'মং' 'ফনং' সঞ্মান্য' দু ক্লিপ্রথ চিথ' এব শাজ্ন 'দ্ভাতে 'হিনবিত্ত।

১ প্রকৃষ্ট জ্ঞান বিশিষ্ট বরুণ, মিত্র, স্বর্থামা এই সকল দেবতারা যে যজ্ঞমানকে রক্ষা করেন সেই যজ্ঞমান শীপ্র শক্র হিংগা করে।

668

২ ষং বাহুঠেব পিপ্ৰতি পান্তি মন্ত্ৰ্যং রিষঃ। অরিটঃ সৰ্বএধতে॥

২ ঘেন্ত হাউসমূহ ধন আনির্ন করিল কোন পূর্ণ করে, সেইবাপে বরুণালি নেবতান, বজ্ঞানকে ধন ধারা সম্পান্ন করেন এবং তাঁলারা যে বজ্ঞানকে হিংসক ১৯৫০ রক্ষা করেন, সেই যজ্ঞান সকল অনিপদিও হইয়া সৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়েন।

\$50

ত বিদুর্গা বিদিষা পুরোমুন্তি রাজানএষাং । নথজি দুরিতা তিরঃ।।

ও 'রাজানঃ' ব্যুগার জা এলা ` থকাছল গ্রানান্ 'পুরুং' পুরস্থান পুরুদ্ধান দুর্গানি গ্রুপ্র দংগকালি এক নগরাণি বি ছুঝি 'বিলেনে, নাশ্যবি ১ কা 'ভিলঃ' শার্ম অপি 'বি 'বিশ্বনি লগা সুক্তি, দক্ষনান্দ্যক্ষীনি দুরিভানি ভিরুং' বিনাশন নাগি প্রাপ্যাধি।

৩ বরুণাদি দেবভার। স্থীয় সঞ্জমানের সংগ্রে স্থান শত্র্নগার সকল নাসে করেন, এবং যজমানের পাপে সকলও বিনাশ করেন। আদিত্যাদেবতঃ

268

৪ সুগঃ পর্য। অন্করআর্দি ত্যাসস্থতং যতে। নাতারখা-দো অস্তি বং ॥

9 টে আনি ভালিং আন্তিরাং ঝড়ে 'সড়ে 'বতে ।
গাজ্যত প্রক্রম সমুলার 'পদ্ধ' মান্তং 'সুলা সুদ্ধান্দ্র স্থান কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রামান ক

৪ তে আদিও। দেবতা সকল। যজে
গমন করিতেছ থে তোমরা তোমারদিগের
গমনের পণ সুগম এবং কণ্টক রহিত। এই
কর্ম ভূমিতে তোমারদিগের বিদ্যুত হবি
নাই!

868

४९ रुख्ड९ नर्यथा नत्र्ञानि जास्यक्नी श्रथा। श्र वः श्रदील्टिय
 नम्ब । । । । । । । । ।

৫ হে 'নরঃ' নেতার: 'আদিড্যাঃ' চুদং 'বং' 'মজং'' ঝজুনা' অবিকলেন 'পথা' মার্চেন 'নথথা' নৰথ: প্রাপথথা 'লঃ' যজঃ 'বং' যুক্তাকং 'ধীতত্বে' উপলোগায় 'প্রানাথ প্রায়োক্ত ১১৩)২১।

৫ ফে অভীষ্টের প্রাপধিতা আদিত্য দেবতা সকল ! তোমরা অবিকল মার্গ দারা যে যজকে প্রাপ্ত হও, সেই যজ্জ তোমার-দিগের উপ্ডোগের মিমিত্ত হউক (১)৩/২২]

8৯0

৬ সরত্বং মর্ব্যোবস বিশ্বং তোকসূত অনী । অচ্চা গচ্ছ তান্তবিহা।

ও হৈ আদিতাঃ 'সঃ' ভালুলঃ ভবছিরনুগুওঁতেঃ
'মর্তাঃ বনুখাং যক্তয়ান 'আকুতঃ' কেনাপাকিংনিভঃ
সন্'বক্তাং রমধীলং বিশ্বং'সর্কং'বলু'ধনং 'আকা'
আক্ত আভিযুখোন 'গজতি 'প্রাপোডিঃ 'উভ অপিচ জনা' আক্রা নদুলং 'চোকং 'অপতাং গজতি। ৬ হে আদিতা দেবতা সকল ! তোমা-বদিগের অনুগৃহীত মনুষ্য যজমান আহিং-সিত হুইরা রমণীর সকল ধন জনায়াসে প্রাপ্ত হয়, এবং আছা সদৃশ সন্তান প্রাপ্ত হয়!

বৰুণমিত্রার্যামাণঃ দেবতা

838

৭ কথা রাধাম সথায়ঃ স্তোমং নিত্রস্যাধ্যমুঃ । মহি প্ররোবর্ক নস্য।

৭ ছে 'স্পাষ্ট' স্থিত্ত: ক্ষিত্ত: 'য়িত্র। 'অর্থন: 'বর্ণনা এলেসং 'য়ুচি' মুচ্চ প্রত: রূপং অতঃ ভ্রনুরূপ: 'রেম্মে' (ধ্রিমে' ভ্রথ) কেন প্রতারেণ 'রাধায়' সাধ্যাম।

৭ হে শবিভূত কবিক্ সমূহ! মিত্র, অর্থ্যমা, বরুণ এই দেবতাত্ররের মহৎ ৰূপ তোমর৷ অভএব কিরপ্তেদনুরূপ স্থোত্র সম্পাদন করি,1

829

भा त्वाप्रखः मा भनेखः शिं त्वारा प्रत्येखः । मृत्ये विष्णाविवारमः।

৮ হে মিত্রাষ্টা দেবাঃ 'দেবলম্থ' দেবান্কাছত যানং অনং বং শত্ৰু হৈছি ডাদৃশং 'মুখং' শত্ৰু ং 'শত্ৰু ং 'বং' বুজাচা\ দুকুক্ৰেচন্তীতাা আহং 'মা প্ৰতিবাচে ' ন কথালা। তথা বজামানং হা শত্ৰু : 'শপ্তি' 'শপ্ৰু ং তথালি 'মা' প্ৰতিবাচে। বিভাৱন দিচাৰ্ঘা দিক্ষনীল উত্তিৰা আহত্ত 'সুইয়া' বানা 'ইং' এব 'বা' যুজান নকতে: 'আবিবাসে' পরিচর্যাম।

৮ হে বিজাদি দেবতা! দেবতাভিলাধী
যজমানকে যে শক্ত হিংসা করে আমি সেই
শক্তর কথা তোমারদিগের গোচর করি না,
আর যে শক্ত যজমানকে শাপ দের সেই
শাপ দাতা শক্তকেও আমি প্রতিশাপ দিই
না অর্থাৎ তোমরাই ডাহার বিচার
করিয়া দণ্ড দিবে; আমি ধন বারা ডোমার
দিগের সর্বতোভাবে পরিচর্ধা করি!

824

৯ চতুরশিচন্দদমানাদিভীষা-দানিধাতোঃ । ন দুরুক্তার্য স্পাহয়েছ। ১ ৷ ৩ ৷ ২ ৩ ৷

৯ 'দুক্রকাম' ন' 'ক্স্ছ্রেম' দুউৎ বাকাৎ ন কামধ্যত কিন্তু দুক্রকাৎ 'বিভায়াৎ' 'চহ' 'ইব আজদুতিও
কুর্মতো: উপ্তদার্থ্য যা পুষান্ 'চতুরং' চতুলেংগাা কান্ কপর্মকান 'দুদ্ধানাৎ 'দুদ্ধানত হত্তে ধার্থত: পুকযাৎ 'আনিথাতো: 'কপর্মকানপাতপর্যান্ত\ বিভায়াৎ
ক্ষা আনোভবিদ্যতি ন ভবিষ্যতীতি আন্যোভীতিৎ
প্রাধান্ত ক্রাৎ কুল্পং শপর্ম প্রভিব্যাতীতিভিপ্রায়াং হিনাত্রতাতি-

৯ ছুই বাক্য প্রয়োগের অভিলাব করি-বেক না, আর যেনন ছুই দুঢ়করারকের মধ্যে এক ব্যক্তি ক্ষেপণার্থ পার্কি চতুইর কল্পে করিলে খনা ব্যক্তি আপন পরাজ্ञয় আশক্ষা করিয়া সেই পার্ফির পতনের ভ্য করে দেইরূপ ছুই বাক্য প্রয়োগে ভীত হওয়া উচিত ১০০২০ ।

देवस्य मन्युक्तात्र । भीतावाहे ।

এ সম্পুদারকে বল্লজাচারিদিগের এক
শাখা বলিলেও বলা যার। বিশেষ এই, যে
এ সাম্পুদারিক বৈশ্বেরা মীরা বাই এবং
ভাঁহার ইউদেব রণছোডকে বিশিষ্ট ৰপ
ভাজি আদ্ধা করেন, এবং ভারিনিভ ভাঁহার।
এক পৃথক সম্পুদার বলিয়া প্রসিদ্ধ আছেন।

ভক্তমালার মীরা বাইর এক উপাখ্যান থাকাতে বোধ হয় তিনি জন সমাজে সবি
শেষ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন! িনি
বিকু বিষয়ে কতক গুলি পদ রচনা করেন.
নানকপন্থী ও কবীরপন্থি প্রভৃতি একেশ্বর
বাদিদিগের নিভ্য-ক্লড্য-প্রতিপাদক প্রস্থ
মধ্যে তাঁহার অনেক গীত প্রাপ্ত হণ্ডরঃ
বায় ৷ ভক্তমালার মীরা বাই অকবর
দাহার সমকালবর্তি বলিয়ালেখা আছে ৷
উক্ত গ্রন্থানুবারে অকবর, বাইজীর অসা-

ধারণ সঞ্চীত শক্তি প্রবণ করিয়া ধ্যাত্যাপদ্ধ গান্ধক তান্তেনকে সঙ্গে লইয়া তৎসন্নিধানে গমন ক্রিছিলেন, এবং তাঁলার সুমধুর সঞ্চীত প্রবণ করিয়া প্রম পরিতোধ প্রাঞ্জ হইয়াছিলেন।

মীরা বাই মেরভার রাজার ছিলেন। উদয়পুরের বাণার সহিত তাঁছার বিবাদ হয়, কিন্তু ভাঁহাৰ স্বামি-গৃহ গমনের किश्निष्कां भरते हैं निज चुकात महिल सर्क विषया उँ९कछ निदाम उँशक्तिक इहेल। রাণা ও তাঁহার পরিবারেরা শক্তি উপাসক ছিলেন, কিন্তু রাণী প্রম বৈক্ষরী হট্যেন স ইলাতে রাজনাত ভাঁহাকে বৈফৰ দক্ষ পরিত্যাগ করাইয়।শক্তি উপসেনার প্রবৃদ্ধ নিরিবার নিমিন্ত বিশুর উপদেশ দিলেন, কিন্তু বিষ্ণু-ভক্তি পরায়ণা মীরা কোনক্রমে তাহা **স্বীকার** করিলেন না? এপ্রয়ক রাণ্ তাঁহাকে গৃহ হইতে বিবাসিত করিয়া দিলেন, কিন্তু ৰোধ হয় জাঁহার বাস ও ভরুণ পোষণাদিনিমিত্ত স্বতন্ত্র স্থান এবং কিছু অ-र्भे अमान करिया हित्सन । भीता धरे शकात স্বতন্ত্রা ইইয়া রণছেটে নামক কৃষ্ণ মৃত্তির भारताथनाय तुळ इट्टलन, धदः निदाक्ष পর্যাটন-শীল বৈরাগিদিণের একজন প্রধান আশ্রম হইয়া উঠিলেন। তদনপুর তিনি उन्मावन ଓ मात्रका ठीएर्थ शमन करतन। यथ-কালে স্বারকার ছিলেন, বেগে হয় তৎকালে छेषसभारत्व वाना श्रीत व्यक्तिसङ देवस्था-দিগের উপর অভ্যাচার আরম্ভ করিয়াছি-रतन, **अद**् अनुगान हम, जीहाव भागतनंत्र নিমিত্তেই তাহাকে প্রত্যানয়ন করিতে কয়েক জন ত্রাহ্মণকে দারকায় প্রেরণ করিয়াছি-লেন৷ সীরাতথা হইতে প্রস্থান করিবার প্ররে আপনার ইউদেবের নিকট বিশায লইবার নিমিত্তে তদীয় মন্দিরে প্রবেশ করি-্লন। কিন্তু-জাল্যে ভজন। সমাপ্ত হইলে পরে সেই মূর্ত্তি বিদীর্ ইইল, ও মীরা ভাহাতে প্ৰবিষ্ট হইব: মাত্ৰ পূ**ৰ্ব্যৰৎ** নিশ্ছিত হুইল, এবং তদাধি মীরাবাই শন্ত-क्टि इटेटलम् ! त्लारक वर्तन. थरे **चरन**ो-किक बार्राभारतहरू मात्रभार्थ केमम्भूरत জদ্যাপি রণছোড়ের সহিত মীরা বাইর পূজা হইয়া থাকে । এপ্রকার লোক-প্রবাদ আছে, যে সীরা এই অন্ত ত বিষয়ের প্রার্থনা দূচক ছুই পদ রচনা করেন, পশ্চাৎ তাহার অনুবাদ প্রকাশ করা যাইতেছে।

াপদ। হেরাজন্রণছোড। ছারদার আমাকে স্থান দেও, এবং ভোমার
পঞ্চক্র, গদা. পর ছারা যম ভর নিবারণ
কর। তোমার পবিত মন্দিরে নিভা শান্তি
বিরাজ করিতেছে, এবং ভোমার করতা।
ও শক্ষ্মি প্রমানন্মর। আমি আদিনার রাজ্য, সম্পতি, পতি, প্রেম সমুদায়ই
বিস্কুন দিয়াছি। ভোমার দাসী দীয়া
ভোমার শ্রণাধিনা হটয়া আসিরাছে,
ভুমি ভাছাকে স্করেভাভাবে গ্রহণ কর।

হ পদ : তুমি যদি আমাকে নির্দ্ধোধ
লানিয়া থাক তবে এইন কর, তোমা বিনা
আমাকে দয়া চবে এমন আরু কেই নাই,
অতএব আমাকে ফলা কর। ক্লান্তি, উৎকঠা ও চঞ্চলখার যেন আমার শানির ভগ্ন
নাইয়া হে মীয়াগতি, হে তাহার প্রিয় বিদ্রুবি, তাহারে প্রহা
রেম আরু কদালি এইণ কন্য তোমায় সহিত
যেন আরু কদালি ভাতার বিরোগ নাইয়া

বাহ্য বস্তুর শহিত মানব প্রফ্লভির শহন্ধ বিচার

প্রাকৃতিক নিয়মনু্যায়ী ব্যবহার ্প্রণালী

৭৩ সংখ্যক পত্রি যার ৮৯ প্রেছর পর

মনুষ্য আপনার প্রণাচ মুর্গতা দোযে
চিরকালই হিংসা লোভাদি ছুণান্ত রিপু সমৃহের বশবস্তী হুইয়া চলিয়াছেন, কোন
অবস্তাতেই আপনার প্রকৃষ্ঠিও তাগার
প্রক্ষোজনাগির স্থকাপ জ্ঞান গ্রাপ্তি প্রকৃষ্ঠ তছুপ্রোপী সাংগারিক নিয়ম সংস্থাপনে
সমর্থ হয়েন নাই ৷ যে বস্তাব যে শক্তি,
নে বস্তু তা হা মনুষ্ট্রের উপর চিবকাল প্রচার করিতেই, কিন্তু তিনি আপনার মূর্ণতা দোগে জগতের যথার্থ নিয়ম নিক্রণণ ও
ভুদুব্যারী বাৰ্ছার করিতে না পারিয়া জন

শেষ ক্লেশ ভোগ করিতেছেন। অদ্যাপি সর্ব্ব জাতীয় সামান্য লোকেরা অজ্ঞান তি-মিরে আছেল রহিয়াছে, সকল জাতিতেই काशांतरम्य व्यविक मश्यां, मुख्याः काहा রনের মুর্যতা প্রভাবে অবশিষ্ট লোকেরও অবস্থার ব্যাত্রুম ঘটিয়া উঠিতেছে ৷ বি-শেষতঃ আমারদের দেশের কেবল প্রাকৃত लारक मुर्थ नरह, ममश्र जीरलाक विमान दरम বঞ্চিত রহিয়াছে। তাহার। **স্বভাবতঃ** আপ-भारतम्ब मत्मत সংকারই সুসংকার বলিয়া নিশ্চয় জানে, এবং ্যদি কোন বিষয়ে কোন অভিনৰ প্রণালী প্রচাবের সূত্র দেখে, এবং তাহা যদি পরম হিত-জনকও হয়, তথাপি অবশ্ব মূলক বোধ করে.এবং কলির উপদ্রব চিন্ত।করিয়া ভয়ে কম্পিত হ্ইতে থ∵কে। এপ্রযুক্ত একণে ঘাঁহারা স্বদেশের কোন कूर्रीिक मश्रतीयम, का मूर्वीक नश्याशनार्थ যত্ন করেন, তাঁহারা সংগ্রেভাভাবে পরাভব প্রাপ্ত হয়েন! বিষ্ঠান অজ্ঞান প্রভাবে ভাছারদের বিদ্যা-বল গ্রকাশ পায় না ৷ অসীম সমুদ্র সলিলে কতিপয় অগ্নি স্ফ্লিঞ ্ছিত হইলে সেই অগ্নিই নিৰ্কাণ হইয়: যায়৷ অতথ্য সর্বা-সাধারণের জ্ঞান চফু উন্মীলিতন হইলে এসমস্ত প্রতিবন্ধক খণ্ডনের আর উপায় নাই। বিদাং প্রচা রই দুংখ নাশ ও সুখোরতির এক মাত উ-পায় ৷ স্বদেশের শুভ সাধনে যাঁহারদের অনুরাগ আছে,ভাঁহারদের বিদ্যা জ্যোতিঃ প্রকাশ দ্বারালোকের চিত্ত শুদ্ধি করা সর্বাত্তে কর্তব্য টিদ্যাভ্যাস্ট সুখ ভূমি আরো-হণের প্রথম সোপান। উপায়ান্তর চেষ্টা করিলে তাহার ফল অসময়ের ফল তুল। অপূর্ণ ও বিস্বাস্কর । অন্য জাতীয় লে।-क्तत मूच मोकामा मृत्ये जाशमात्रामत তাদুশ শুভাবস্থা প্রাপ্তির অভিলাব হয় বটে, পারের উদ্যানে কোন মুরম্য পুল্পতরু দর্শন করিলে নিজ উদ্যানে তাদৃশ রক্ষ রোপণ क्रियात्र अशाम हश द्राहे, किन्नु छाहात ভূমি তাদৃশ উৎকৃষ্ট কর। আবশ্যক। কার্য্যের যে কারণ, তত্মতিরেকে সে কার্য্য क्षक्रहे मन्त्रापिक इंड्रेट्ड शांद्र मा 🛭 🚜 🕮- কাণে বিদ্যা প্রভা পৃথিবীতে যে প্রকার বাপ্ত হইতেছে, শিশ্য কর্মের উমতি হইতেছে, ভালারের উপায় সকল প্রচার হইতেছে, তাহাতে মনুযোর কর্মের ক্রমণ্ড লাঘের ইতবে, বিদ্যানুশীলনার্থে লোকের অবক্রেশ্ রুদ্ধি ইইবে, এবং তদ্দারা জগতের নিয়ম নিরপণ পৃথাক তথপ্রতিপালনে বিশিষ্টারপ প্রদার ইবে। অতথব গর্মানে বাদ্যায়েক এক বা বাদ্যাতে পারে, যে ভ্রমণ্ড ননুযোর কৃথ্য হরণ প্রস্থাপাত হইতেছে।

মহ্ভোরত আদি শর্ম

চতুর্গ অধ্যায়—পৌলোমপ্র ২০ ম প্রক পবিচার ৯২ গৃষ্টের পর

দেতি কহিলেন, নৈমিধারতে ক্লপতি
শৌনকের বাদশ বাদিক গড়ে যে সমস্ত
ক্ষাধ সমগেত হুট্ডাছিলেন, তুত কুলোদ্ধর
লোনহুবন ব্যাপেনিধিক উপ্রাহ্মবা করিছেভিলেন ৷ তিনি কুতাপ্তলি হুইয়া নিবেদন
করিলেন, হে মহাধিনা বাজা জনমেন্দ্রমের
সপ স্তাম্ভানের কাইণাত্র প্রকণ উত্ত
চরিত আলোনার ক্রিনিক প্রিনাকরিলান থক্ষরে
আপনার। আর কি শুনিতে বাসনা করেনঃ
আত্তাকক্রণ আর কি বর্ণনা করিব !

শ্বিগণ কহিলেন, তে লোমাহনণ পুজ '
আমরা শুক্রানা-পরবশ হইরা কথা প্রদদ
কমে যে বে বিষয় তোমাকে জিলাগে
করিব, ভুমি তৎসমুদার বর্ণনা করিবে
কিন্তু এক্ষণে কুলপতি শৌনক অগ্রিগুতে
অবস্থিত আছেন; তিনি দেবতা, অসুর,
মনুষ্য, সর্প ও গল্পক ঘটিত অলোকিক
তাবৎ রক্তান্ত লানেন; তিনি বিদ্বান, কার্যাদক্ষ, ব্রতপরারণ, বেদ ও বেদান্ত শত্রের
অন্বিতীয় শুরু, সত্যবাদী, শাক্তচিত্ত, তপ্রাাণ
রতঃ তিনি আমারদিগের সকলের গুরু, মহা
মান্য, ভাঁহার আগ্রমন প্রতীক্ষা কর। তিনি

পরম পূজিত আদনে আদীন হইরা যাহ) জিজ্ঞাদিবেন হাহাই কহিবে!

উথ্যশ্রণ কহিলেন তাতাই ভালা সেই
মহান্ত্রা আসন পরিএল করিয়া জিজাসিলেই পর্ম পরিও বছবিধ কথা কীজন
করিব। অনন্তর রিপ্র-কুল তিলক মহান্ত্র শোনক্ষণা বিধি দেব্যক্ত পিতৃত্তপন প্রভৃতি
সংস্ত ক্রিয়া সমাপন করিয়া। যে জানে
উপ্রভাব। 2 অতপ্রায়ণ ব্রথমি ও সিদ্ধান
উপ্রভিত্ত তিলেন। তথাসভ্যান্তর হল্পন্ত,
এবং অজিক্ ও সদস্যান উপ্রিয়া কহিতে পার্বহ
করিলেন।

अक्षम अशास्त्र ।

শৌনক কহিলেন, হে সুভপুঞ্জ ং বেমার পিছে; মহলি কৃষ্ণদৈপায়ন স্মীপে সমস্থ পুরাণ ও আলোগোন্ত ভারত অধ্যয়ন করি বাছিলেন, বুমিও সেই সমস্থ অধ্যয়ন করি রাছ সন্দেহ নাই। পুরাণে সমুদ্য অলো-কিক কথা ও সমস্থ আদিবংশের রুভাও বর্ণিত আছে; তন্মধ্যে প্রথমতঃ আমি ভূঞ বংশের রুভান্ত ভানতে বাসনা করি । তুমি এই কথা ক্ষিত্রন কর, আঃমরা অব্হিত চিজে

এইব্রপে মহার্ষ শৌনক কর্তৃক জেওঃ
সিত হুইবা তাঁচাকে সমোধন করিব। সূত
পুত্র উগ্রহ্মবা নিবেদন করিলেন্ধি এতাথ
মংলায়া বিশম্পানন প্রভৃতি পুর্বকালে সমাক্
ব্রপে যাহা অধ্যয়ন ও কার্ত্তন করিয়াছিলেন,
এবং আমার পিতা যাহা অধ্যয়ন করিয়া
ছিলেন, এবং পরে আমি ভাতাব নিকট
যাহা অধ্যয়ন করিয়াছি, সেই সমস্ত কার্ত্তন
করিতেছি অবৈ কর্মন।

মুবিখ্যাত ভ্গুবংশ, ইন্দ্রাদি সমস্ত দেব গণ ও অন্যেধ কাষিকুলের পূজনীর পুরাবে সেই বংশের ধেরূপ বননা আছে চাহা আমি ধর্বাবং বনন করি ৷ দর্কালোক-পিতামহ স্বয়ম্ভ ক্রকারে বছাবের শক্ত করিছে হিলেন; আমরা শুনিয়াছি, ভগবান ভ্গুও সেই যজ্জীর অগ্নি হইটে উৎপন্ন হয়েন ভ্গুর পুদ্ধ চাবন, চাবনের পুত্র পুর

শোর্ষাক প্রমাতঃ ছ্ডাটার গার্ভে প্রমাতর কর নামে এক পুত্র জয়েন ও প্রমন্তর। গর্ভে করে ও কর নামা পুত্র জরিলেন ৷ ইনিই তোলার কুলের প্রধান পুত্রুষ, পরমধার্মিক, বেদপারগ, তপর্যা, যদস্থী, শাস্ত্রজ, ত্রন্ধান্তে, নতারাদী, জিতেন্তির।

শৌনক কছিলেন, হে স্তপুত্র ! মছাত্রা ক্ঞপুত্র চাবন নামে বিখ্যাত হইলেন কেন. ভূমি ভাছার সবিশেষ বর্ন কর!

উত্তপ্তাৰ কৰিলেন,ভগবান্ভ্তৰ পু-লোমা নামে ভুবন-বিখ্যাতা প্রিয়তমা থকা পদ্মী চিলেন। তাহার সহযোগে পুলোমা গভবতী इहेरलन ! এक निवम পরমধার্শিক ভূও স্নানার্থ নিস্নান্ত কইলে পুলোমা নামে এক রাক্ষন তদীয় আগ্রামে উপস্থিত হইল। সে আশ্রম প্রসেশানন্তর ভৃগুর পরম-মুন্দরী সহধ্যিণীকে নয়নগোচর করিয়া কামাবিষ্ট ও বিচেতন হইল! চারুদর্শনা পুলোমা তপোৰন-মুগভ ফলমূলাদি দ্বারাসেই অভ্যা-গত রাক্ষ্যের ঘথোটিত অতিথি সংফার করিলেন। রাক্ষ্স কুসুনশর শর প্রহারে निष्ठान्छ कारत इहेग्रा " এই कामिनीदक হরণ করিব " এই নিশ্চয় করিয়া অভ্যন্ত इन्हें हिन्द इहेन। भूत्नामा चार्य के हाक़ हामिनी कन्गादक " भरभग्नः ভाষा।" विवास বরণ করিয়াছিল,পশ্চাৎ ভাঁহার পিডা র্না-शास्त्र नाळ-विधानानूमात्त ज्ञास्त्र अनान এই अन्याया अनुष्ठान मर्काना करत्न । ठाहात ऋष्ट्र काशकक हिला। अवन्त्र व्यव-সর পাইয়া হরণ করিবার মনস্থ করিল ৷

রাক্ষ এইকপে পুলোমাচরণে রত-সঙ্গপ হইরা অগ্নিগৃহে প্রবেশপুর্বক প্রজ্-লিত ছতাশন সমিধানে দণ্ডায়মান হইরা জিল্পাসা করিল ছে অগ্নি গুমি লেবলা-দিগের মুখ,জোমাকে ধথার্থ জিজ্ঞাসা কার-তেছি বল, এই জোমিনী কাহার ভাষাও আমি এই বর্ষনিনীকে অতে পত্নীত্বে বর্জা করিয়াছিলাম, পরে ইহার পিতা অগ্রন্তি কারি ভ্রুকে দান করেন। অত্থব এট মির্জন-বাদিনী নিভ্রিনী যদি ভ্রুব ভাষা হর বল,ইহাকে আমি আল্লম হইতে হরণ করিব। ভৃগু যে স্থামণর পূর্বার্তা রূপবতী ভার্ম্যাকে গ্রহণ করির।ছে.সেই ক্রোধানল অন্যাপি আমার ছাদ্য দাত করিতেছে।

ছুরাখা রাক্ষস অলিত অধিকে এইকপ আনপ্রণ করিয়া ভৃগুভার্যা বিষয়ে সন্দিহান হত্যা বার্যার জিজাসা করিতে লাগিল, হে অধি। তুনি সর্বকাল সর্বভূতের অন্তরে পুলাপাপের সাক্ষিত্রকাপ অবস্থিত আছি— অতথ্য জিজাসা করিতেছি যথার্থ বল; পাপকারী ভৃগু আমার যে পুর্বাহতা ভার্যাকে অপত্রণ করিয়াছিল, সেই এই কামিনী আমার হইতে পারে কি নাং তোমার নি চেট ইহার তত্ত্যর্থ প্রবণ করিয়া ভোমার সমক্ষেই ভৃগুভার্যাকে আশ্রম হইতে হরণ করিব।

রাক্ষসের এইরূপ জিজাসাগুনিয়া অগ্নি
অতান্ত তুরিত হইলেন, এবং এক পক্ষে
মিথ্যাকথন ভয়েও পক্ষান্তরে ভ্রুশাপভয়ে
ভীত ইইয়া অনুক্ষতম্বরে কহিলেন,হে দানব
নদ্দন! তুমি পূর্য্বেইহাকে বন্ধণ করিয়াছিলে
বটে,কিন্তু কংকালে কোমার মন্ত্র ও বিধি
পূর্য্বক বন্নণ করা হয় নাই। ইহার পিতা
সংপাত্র লোভাক্রান্ত হইয়া ভ্রুকে দান
করিয়াছিলেন,ভোমাকে দেন নাই! মহর্ষি
ভ্রুওবেদ-দৃষ্ট-বিধিও পরশ্পরাগত প্রণালী
অনুসারে আমাকে সাক্ষী করিয়া ইহার
পাণিগ্রহণ করিয়াছেন। তথাপি তুমি পূর্যে
বরণ করিয়াছিলে এই নিমিত্ত ইনি ভোমারি
ভার্যা। আমি মিথাা কহিতে পারিব না,
লোকে কোন কালে মিথাার আদর নাই!

वर्ष व्यथात्र ।

উএআবা কহিলেন,রাক্ষম ছায়ির এই
বাপ বাকা শুনিয়া বরাহকপ ধারণপুর্বক
ভূগুপাত্নীকে হরণ করিয়া মন ও বালুসনবেগে পলায়ন করিল ৷ তথন পুলোমার
গর্ভস্থ বালক পাপায়া রাক্ষনের দৌরাক্ষা
দর্শনে রোব-পরবশ হইয়া মাতৃগর্ভ হইছে
মুত হইলেন,তাহাতেই ভাঁহার নাম চাবন
হইল ৷ রাক্ষন সেই স্থা-ভূলা তেজনী
মাতৃগর্ভ-বিনিঃশ্ত শিশুকে নয়নগোচর

করিবামাত্র পুলোমাকে পরিত্যাপ পূর্বক ভন্মনাথ হইয়া ভূতলে পড়িল।

অনন্তর পুলোম। ভ্ণর উরসপুত্র চাবনকে জোড়ে করিয়। সক্ষ-ছংখ-বিমৃক্তা হইয়।
আশ্রমাভিমুগে গমন করিতে লাগিলেন।
ভগবান্ সক্ষলোক-পিতামহ ব্রহ্মা সক্ষলোক প্রশংসিতা ভ্গুভার্যাকে রোদন-পরারংগ ও অক্র-পূর্ব-ময়না অবলোকন করিয়।
তৎসমীপে আগমন পূর্বক অশেষ প্রকারে
সাম্বান করিতে করিতে হেমন প্রস্থান করিতে লাগিলেন,তাঁহার অক্র বিক্ বর্ষণ দ্বার।
এক মহানদী উৎপন্ন হইল! ভগবান্
প্রজাপতি সেই নদীকে পুত্রব্ধুর অনুসরগে
প্রস্তা দেখিয়া ভাহার নাম "বধুসরা"
রংখিলেন। প্রভাপশালি ভ্গুপুত্রের চ্যবন
নামে বিখ্যাত হইবার এই কারণ!

পুলোমা পুদ্ধকে জ্বোড়ে লইয়া এইকপে আ্লাড্যাড়িয়ুখে আগমন করিতেছেন
এই অবসরে মহার্য ভ্ঞু মান ক্রিয়া হাইতে
প্রভাৱেত্ব হুইয়া স্থায় সহস্প্রিণী ও জনমকে
তদবস্থ অবলোকন করিয়া করিলেন, হে চার্য়হাসিনি! হরণোদাত জুরাত্মা রাজদের নিকট কে ভোমার পরিচয় দিল; সে পাপিষ্ঠ
তোমাকে ' আমার ভার্যাং' বলিয়া জানিত
না । জুমি সবিশেষ সমস্ত বল; আমি
এখনি ভাহাকে শাপ দিতেছি। কোন্
ব্যক্তি আমার শাপে ভীত নহে; কাহার
এই ছুক কর্ম্ম করিতে সাহ্য হুইল!

এই মপে স্থামিকর্ক জিজাসিত চইরা
পুলোমা নিবেদন করিলেন, ভগবন্' অতি
কেই রাক্ষনের নিকট আমার পরিচর
প্রকান করেন, তৎপরে সেই পাপার।
আমাকে হরণ করিল ৷ আমি অনাথার
নার উচ্চেম্বরে রোদন করিতে লাগিলাম;
পরে তোমার এই পুজের প্রভাবে রাক্ষসের হন্ত হইতে মুক্ত হুইরা ভূতনে পতিত
হইন। ভূঞ পুলোমা বাক্য প্রবংশ এই
বলিয়া অধিকে শাপ প্রদান করিলেন।

मश्रम अशास्त्र ।

অগ্নি কৃথদন্ত শাপ শ্রবণে জাতকোদ কইয়া তাঁকাকে সংযাগন করিয়া কহিলেন, তে ক্রন্ধন্থ কি কারণে ত্রিম সক্সা আমাকে লাপ দিলে; জিজ্ঞাসিক কইবা সভা কহি-য়াছি ইকাতে আমার অপরাধ কৈ; আমি ধর্মান্তিগালন করিয়াছি ও পক্ষপাতবিকীন ক্রান্তা কহিছাছি। গে সাক্ষা জিজ্ঞা-পিত ফইয়া, জানিয়াও থনাখা কচে সে স্কুলজাত উর্জ্বতন সপ্তপুরুষ ও অবক্তন সপ্তপুরুষকে নিরয়গামী করে। আর যে ব্যক্তি উপন্থিত কার্চ্যের নিগুছ তত্তুক্ত কই-য়াও না ককে,সেও সেই পার্গে লিপ্ত ক্র্য সল্কে নাই।

যাহা হউক আমিও তোমাকে সাংগ দিতে পারি: কিন্তু ব্রাহ্মণীকে মান্য করি এই নিমিত কাত হইলাম ৷ ভূমি সম্দায় জান,তথাগি কিঞ্ছিৎ কহিতেছি ভাষণ কর : স্বামি যোগবলে আখাকে বছভাগে বিভক্ত করিয়া শুরিভেনে অলিকোত্র, গার্ভাধান, জ্যোতিকৌ।মাদি ক্রিয়া সমুদানে অধিকিত व्याष्ट्रिः (वरमाक विधानां नुमाद्ध व्यामारक যে হবি হুড হয়,তন্ধুরা দেবগণ ও পি চুগ্র তৃপ হয়েন; হুয়মান সোমবস অভ্তি এবা সমুদায় দেবগণ ও পিতৃগণের শরীর কংগ পরিণত হয় ৷ দেবগণ ও পিতৃগণ এই **केल्राव केरकारण कर्मा ७ (भीर्वमाम शार्य** একত অনুষ্ঠিত इहेश शास्त्र, এই নিমিস্ক দেবগণ ও পিতৃগণ অভিন্ন স্বৰূপ, ও পর্বের পর্কে কখন একত্র ও কথন পৃথক্ পৃথক্ পূজিত হয়েন ৷ আমাতে যে আছতি প্রদন্ত হয়,দেবতা ও পিতৃগণ তাহা ডক্ষণ **করেন,অতএব আমি** দেবভাদিগের ওপিতৃ গৰের মুখ ৷ অহাবস্যাতে পিতৃগণকে ও পূর্বিমাতে দেবতাদিগকে উদ্দেশ করিয়া লোকে আমার মুখে আছতি প্রদান করে, তাঁহারাও আমার মুখেই ভক্ষণ করেন।

ইন কহিনা কিঞ্চি চিডা করির। অগ্নি বিজগণের অগ্নিহোক ও যজ্জিনা হইতে অন্তর্হিত হইলেন। অগ্নি অন্তর্জান করাতে প্রজাগণ ওলার, ব্যট্কার, স্বধা, সাহাশুলা হইয়৷ অত্যন্ত ছুংখিত হইল ৷ তদ্ধনি ক্ষাধিণ উদ্বিধাচিতে দেবতাদিগের নিকটে গিয়ানিবেদন করিলেন,হে দেবগণ! আমির অন্তর্জান হেতুক অগ্নিহোতাদি ক্রিয়া লোপ হওম:তে লোকতাম কিক্কগ্রতাতা-বিমৃত হই-য়াছে৷ অতথ্য বাহা কর্ত্তন্য দ্য়া বিধান কর্ন,কালাভিপাতের সমন নলে। অনন্তর অ্যাধণ ও দেবগণ ক্রেক্সার নিকটে গিলা অগ্রে শাপ ও তম্মবন্ধন ক্রিয়া কহিলেন ভগবন্। ভ্রা কোন কারণ হশ্তং অগ্নিকে এই শাপ দিয়াছেন, কিক্ক তিনি দেবতাদিগের মুখ ও যত্তের অগ্রভালতে ভাল হইয়া কিরপে সাধী ভক্ষ হইলেন

সকলে ক পিতামল ব্রহ্মা কাঁহারদিগের নিবেদন গুলিয়া আ্মাকে আহ্বান পূৰ্বক भएनाइड दारको जाखना कतिया करिएनन, বৎসা ভূমি সর্বালোকের কর্তা ও সংহর্তা: তুমি ত্রিলোকশারণ করিয়া আছঃ তুমি অগ্নিছোৰাদি ক্ৰিয়া প্ৰবৰ্তকঃ হে লোক-লাথ। একনে বাহাতে ক্রিয়ালোপ ন। হয় ভাছাকর ে ভেষি উপার হইয়াএমন বিষূঢ় इडेरड्ड रहन? डुमि भक्तलारक भक्तकाल পবির: বুনি স্বভূতের গভি: অতএব ज्ञा मर्वनातीहत मर्वज्य इटेस्ट न।! (ठी-मान जन्यान (भरने द्य मकल निया बाह्य হাহারাই নর্ব বস্তু ভক্ষণ করিবেক, এবং তোমার লংসভক্ষিণী যে তনু আছে,সেই সক্ষরকাঃ ভইবেক । যেমন সূর্য্য কিরণ সংস্পাৰ্কে সৰ্বন বস্তু শুদি হয়, সেইকপ তো মার শিখা সমূহ ছার। দক্ষ **হইয়া শর্কা বস্ত** শুচি হুইবেক৷ হে অগ্নি! তুমি পরম তেজ্পদাৰ্থ, স্বীয় প্ৰভাবে নিৰ্গত হইয়াছ, এক্ষণে স্বীয় তেজ ছারাই ক্ষির শাপকে সভা কর ৷ এবং তোমার মুখে আছতি কুপে প্রদন্ত দেবভাগ ও আগ্রভাগ গ্রহণ **त** द 1

প্রথি পিতামহ বাকা প্রাবণ করিয়।
হগান্ত বলিয়া ভাগীয় আদেশ প্রতিপালনার্গে প্রস্থান করিলেন। দেবগণ ও ক্ষতি
গণ ক্রিটিন্তে যথাগত প্রতিগমন করিলেন।
ক্ষিগণ পূর্ববং সমস্ক কিয়া অনুষ্ঠান করিতে

লাগিলেন ৷ দেবলোকে দেবগণ ও পৃথি-বীতে যাবদীয় ভূতগণ অত্যন্ত আনন্দিত হইলেন ৷ অগ্নিও শাপ-বিমৃক্ত হইয়৷ প্রম-প্রীতি প্রাপ্ত হইলেন ৷

ভগবান্ অগ্নি এই রূপে পূর্বকালে ভ্গু চইতে শাপ প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন ৷ অগ্নি-শাপ-সমন্ধ পূর্বকালীন ইতিহাস, পূলোম; রাক্ষসের বিনাশ ও চাবনের উৎপত্তি কীর্ত্তিত হইল ৷

বিজ্ঞাপন

পূর্ব পূর্ব পারিকাতে ঘাঁছার্দিগের মাসিক দাতব্য রাজ করণের রিজ্ঞাপন হঠ রাছে তদ্বাহীত প্রীযুক্ত প্রস্কুলর নিত্র, প্রীযুক্ত পাবচক্র মান্ত প্রীযুক্ত শিবচক্র দেব, প্রীযুক্ত মর্মুক্ত মর্মুক্ত ক্রিয়ালার প্রীযুক্ত নীলকমল দিত্র, প্রীযুক্ত গোপালচক্রচক্র, প্রীযুক্ত রামধন দে, প্রীযুক্ত লক্ষ্মীনারারণ দাস, ইন্যারা স্থীয় খালিক লাতব্য রাজ করিয়াছেন।

श्रीन्द्रशस्त्रनाथ ठाकुत सम्भानक ।

বিজ্ঞাপন

১৭৬৫ শকের মাঘ মাসীয় তত্ত্বোধিনী পাত্রিকার প্রয়োজন হইরাছে, অতএব যিনি উক্ত পত্রিকা তত্ত্বোধিনী সভার কার্যালয়ে প্রদান করিবেন জাহাকে ভাহার, মূল্য এক টাকা দেওয়াযাইবেক।

জীন্পেজ্ঞ্নাথ ঠাকুর ৷ সম্পাদক ৷

শ্ৰত এই চক্ষবোহিনী পত্ৰিক কলিকাতা মহানগৰে হোড়ালীকোত্মিত তজ্ঞবোধিনী সভাৱ কাণ্যালয় হণ্ট-তে প্ৰতি মানে প্ৰকাশিত হয় —ইহার মূল্য একটাকায় ১ আগ্রিন সমূহ ১৯০৬। কলিগড়ালাঃ ৪৯৫০।



তত্ত্যরোধিনীপ্রতিকা

জ্ঞ পরা অন্যোধান গুলালন নামবেবেলথিপ্রিনের (শিক্ষা কংশেধান্যাকরণ্য নিক্ষকণ ভ স্পোড্যোভিদ্রি।» । জ্ঞাপ পরা যদা ভলকর্মধিগয়তে ॥

বৈষ্ণব সম্পূদায় । সনকাদি সম্পূদায় অর্থাৎ নিমাওৎ !

চারি প্রধানসম্পুলারের মধো ক্রমে করে তিন সম্পুলারের রক্তান্ত প্রকাশ করা গিয়া-ছে, চতুর্থ সম্পুলারের নাম সনকালি সম্পুলার। নিয়াকিতঃ ইহার প্রবর্ত্তক বলিয়া তৎসম্পুলারিক বৈষ্ণবেব। নিমাওৎ নানে খ্যাত আছেন।

এই প্রকার উপাখ্যান আছে, যে নিয়া-দিত্যের প্রথম নাম ভাক্ষরাচার্যা ছিল; ভিনি স্বয়ং সূর্যাবেতার, পাষ্ড দমনার্থে कुम्अल व्यवित् करेशाहित्सम। इन्साव-त्वत निक्रें डाइन्द्र वास हिन ; अक्ना अक मशी-क्ट कट्ट तल अक्जन रेजन छेनाती-ন—ভাঁছার আশ্রমে আসিয়া উত্তীন হছকৈ উভয়েবিচার আরম্ভ হইল।পরেবিচার ক-রিতে করিতে সূর্যা অন্ত হইল দেখিয়া ভাস্ক রাচার্য্য নিজ আশ্রমস্থ অতিথির শ্রান্থি हत्रगार्थ किছू थाना नामजी উপস্থিত করি-त्वन, किंकु मधी **उ टेक्ननमिटगंत्र ना**त्रः वा ताबिकारण स्डाजन कता विरश्त नरह, ध्रश्र-যুক্ত অতিথি তাহা স্বীকার করিলেন না। निमा ७९ रेव क विमित्शव **এপ্রকার** বিমাস আছে, যে ভাক্রাচার্য্য ইহার প্রতীক:-तार्थ मृत्यात भिरताथ कतिराम, धवः যাবং অভিথির অন্ন পাক ও ভোতন সম্পন্ন
না হয় 'তাবং ভালাকে নিকটস্থ এক নিয়
রক্ষে স্থিতি করিতে কছিলেন! সূথাদেবও
ভালার অনুনতি পালন করিলেন, এ,ও
ভাক্রাচার্য্য তদব্ধি নিয়াক ও নিয়াগিতা
নানে খাতে হইলেন!

তিলক ধারণের বিষয়ে অনা অনা সম্পূলারের সহিত ও সাম্পূলারিক বেক্ষর দিলের বিশেষ এই, যে তাঁহারা ললাটো লোগীচদদন স্থাবা যে তুই উর্দ্ধ রেখা করেন. তাহার মধ্যস্থানে এক কম্বর্ণ বস্তু লাকার ভিলক করিয়া থাকেন। তাঁহারদের জপ্রালা ও গলমালা উভয়ই ভুলসী কাজেব। রাধাক্ষে যুগলকপ তাহারদের উপাস্ক কেবল, এবং শ্রীভাগবত তাঁহারদের প্রধান শাস্ত্র, আরে তাঁহার। বলেন নিমাদিতা কৃত এক বেদভাষ্য আছে। এক্ষণে তাঁহারদের ক্রান স্থাপ্রায় ক্রমন্তর ক্রাণ বিলিয়া থাকেন, দে পুরের ছিলা, এই কথা বলিয়া থাকেন, দে পুরের ছিলা, আরক্ষেত্রৰ বাদশাহের সময়ে মধ্রায় সমস্ত নই হইয়া লিয়াছে।

যদিও শম্পুদায় প্রবর্তকের নাম ও তিলক এই চুই বিষয় দিয় অন্যান্য সম্পু-দায়ের সম্ভিত ইহার্দিগের তাদৃশ বিশেষ নাই, তথাপি নিয়াদিত্যের কেশব ভটু ও হ্রিব্যাস নামক ছুই শিবা ছারা নিমাওডের- দের ছুই শ্রেণী হইয়াছে, বিরক্ত ও গৃহস্থ।

যমুনা তারে নগুরা সনিধানে প্রবাশেকের

নিয়াকের গাদ আছে, লোকে করে গৃহস্থ

শ্রেণিভুক্ত হারবাগদের সন্তান সন্ততিরাই

তারার অধিকারী হট্যা আদিতেছেন।

করু তথাকার মহন্ত আপনাকে নিয়াকের

বংশোন্তর বলিয়া অফীকার করেন, এবং

করেন হে প্রব ক্ষেত্রের গদিপ্রার ১৪২০

বংসর পূর্বের সংস্থাপিত হইয়াছে। কিন্তু

ইচা অভ্যুক্তি বোধ হয়। পশ্চিনাঞ্চলে

ইভন্তর সর্ব স্থানেই নিমাওৎ দিগের বাস

আছে, বিশেষতং নগুরা ও তৎপাশ্বিভি

সমূহ স্বানে ওসম্প্রায়েও অনেক নিমাওৎ

ভাতে এবং বাজলায়ও অনেক নিমাওৎ

দেখা যান।

---: O (;;;---

বাহ্য বস্তুরসাহত মানব প্রব্রুতির সম্বন্ধ বিচার

০৪ সংখ্যক প্রিকার ২৭ প্রেটর পর প্রাকৃতিক নিয়মের উত্তাহন করা মনুযোর কন্ত সুংখ উৎপন্ন হয় ভাষার বিচার ৷

এই প্রসাবের প্রত্যেক অধ্যারে উল্লেখ कता शिवारह, य मकल यक्लालय श्रवरमः বার কেবল মজল-কঃ নিরম সমুদার সংস্থা-পন করিয়া বিশ্বরাজ্য পালন করিতেছেন, এবং সংসারের সমন্ত বস্তুকে আমারদের উত্তরেগর সুখ হৃদ্ধিই উপযোগা করি-श रहन। रक्रवल मक्रानेट् टाँशात नम्नास निश्रमत अस्ताकम, जबर मुथ्हे ममछ বস্তুর উৎপাদ্যা সংসারে এমত কোন নির্ম নাট যে তাহা ছুঁংখোৎপত্তির নিমিত্তে স্থাপিত ছইয়াছে, জ্বং এ**প্রকার কোন প**-দার্থ নাই যে ভাষা জগতের অশুভ সম্পাদ-नार्थरे मुळे हरेबार्ड! यमि ३ अहे मशस्त्र কথা ঘৰাৰ্থ, ভথাপি ভূমগুল কেবল दुःरात इतिकारिं धकाभमान इहेरडरहः; ्वारभव या**ङ्या, माङ्ग्य रेममा**म्या, शरवव অত্যাচার, আৰুমিক ছুর্ঘটনা, নৈসগিক উৎপাত এবং অন্যান্য নানাবিধ শারীরিক ও মানসিক পীড়া ছারা ভুরি ভূরি লোকে फू:मर यजना (कांग कदिरकरहः) व्यक्थव अहे

সমন্ত ছংখ পরমেশবের নিয়মাধীনই ঘটিতিছে, কিয়া ভাঁছার সুখাবছ নিয়ম অবচলন করাতেই মর্তালোকের এই রূপ
দক্ষেণ ছুদ্শা হইয়াছে, তাহা বিবেচনা করা
কর্ত্তবা তন্দ্বারা অবগারত হইবে, যে
যাবদীর ছংখ তাহার নিয়ম লজ্জনেরই কলা
সেই পূর্ণ নাগারান্ বিশ্বস্নাট্ অশুট কর্মের ছংখ রূপ কল বিধান করিয়াছেন.
এবং সংসারে যে কিছু ছুংখ আছে, তাহাও
ভিনি নর্কাগারিণের সুখের নিমিত্তেই শূজন
করিয়াছেন।

(छोटिक निराम लक्ष्यान्त राजाः

পর্মেশর যে সকল নিয়ম সংস্থাপন করিয়া এই অথিল ব্রহ্মাণ্ড শাসন করিতে-ছেন, তদ্বির বিবেচনা করিতে হইলে প্রেথ মতঃ সেই সসুদার নির্মের প্রমোজন কি ও তদনুষায়া কাখ্য করিলে কি কি উপকার দর্শে, এবং দিতীয়তঃ কি কার্য্য করিলে তাহার বিরুদ্ধাচরণ করা হয়, ও তদ্ধারা কি কি অনিষ্ট ঘটে, এই সমুদার অনুসন্ধান সর্বভো ভাবেই কর্ত্তর্য, এবং এই প্রকার আভ্রায়ানুসারে পর্মেশরের নিয়ম আ-লোচনা করাই উচিত। সংপ্রতি আক্ যণী শক্তির উদাহরণ, দিয়া এ বিষয় প্রতি গাদন করা যাইতেছে।

কোন মৃৎপিও হস্ত হইতে স্থালিড इटेल, वाकान कल दूक इटेंट हूं। इ रहेल, डेर्कुनिका शंमन ना क्रतिशा शृथि-वीरण्डे रूप शिक्क हरा, वहे धान विहास क्रिय़ा मिथिटन व्यवना निक्तत्र रहेरव य **শ্পৃথিবীর** এমত কোন শক্তি **আহে** যে छम्। ता के कल ७ म्र्रिश अर्थामिस बाहरे हरेता जुल्लारे পण्डि रूप्र। यमि কোন নৌকা নদীতে ভাসিতে থাকে, স্মার কোন স্ক্রীরস্থ ব্যক্তি রক্ষ্য ছারা ভাষা আকর্ষণ করিতে থাকে তবৈ সেই নৌকা ষেমন জীরাভিমুখে গমন করে ও অবশেষে তীরে আসিয়া লয় হয়, সেই রূপ পৃথিবীর শক্তি বিশেষ দারা তলিকটবন্তী সমস্ত জড় পদার্থ পৃথিবীতে পতিত হয় ৷ এই শক্তির भाम बाक्य वी लक्ति ह

প্রত্যেক পরমাণুতে এই আকর্ষণ শক্তি আছে, সুতরাং যে দ্রব্যেষত প্রমাণু থাকে সে দ্রব্যের তত আকর্ষণ শক্তি হয়। পূথিবী সাপনার নিকটবর্ডি जवा जातका तृहर, वर्षार व्यक्ति शत्रमापू-বিশিষ্ট, এপ্রযুক্ত সমস্ত বস্তুকে স্থাভিম্থে आकर्ष। करता अञ्चव य जकत रहा নিরবলগৰাকে তাহা সুতরাং ভূমিতলে পতিত হইয়া ততুপরি ছিভি করে, এই नियम पाता कीवरलारकत विख्य छेशकात দর্শিতেছে। ইহার দ্বারা পৃথিবীস্থ বা তল্লি-কটস্থ ৰস্তু সমুদায় যথোপযোগী আশ্ৰয় প্রাপ্ত হইলে তছুপরি স্থির হইয়া থাকে, প্রাচীর ও স্তম্ভ সকল যথোচিত স্থল ও শরল করিরা নির্মাণ করিলে তাহা দৃঢ়ও উন্নত থাকে, নৌকা সকল জ্বলোপরি भवमान करेश व्हित्काट्य हटल, बुक्ककानि पृथिवीटक मृश्काल तक्षमृत आहर ,कीवनन **अ**ख्याम ७ यश्किक्षिय यञ्ज **अहका**त्व স্বীর শরীর স্থির রাখিতে थनामाहम ও অক্লেশে গমনাগমন করিতে সমর্থ ক্ষা এই প্রম শুভক্রী শক্তির সহিত মানব প্রকৃতির সামঞ্জনা স্থাপনাথে পর-মেশার অভুল কৌশল প্রকাশ পূকাক মনু-यारक चड्डशरवाशी श्रन्ति, माध्य, भिता, अ ৰুদ্ধি প্ৰদান করিয়াছেন: তদ্বারা তিনি অব-লীলা ক্রমে আপনার গতিবিধান করিতে পারেনঃ তিনি আপনার বৃদ্ধি সহকারে के नितरमं मंडा, ज्यमारशक कार्र्यात कम, ভাহার সহিত আপন প্রকৃতির সম্বন্ধ, তৎ-অভিপালনের শুভ ফল ও তাহা লভানের चलुक केल अर्रे नमछ कानिएक পारतन, ও তদনুযায়ী আচরণ করিয়া ত্রুংখ নিবারণ ও সুথ স্বচ্দ লাভ করিতে সমর্থ হয়েন। এই আকর্ষণ শক্তিসম্বন্ধীয় নিয়ম পালন হার: रणमन व्याप्त अकात है के माधन इतु, साहे ৰূপ তাহা লঞ্জন করিলে বিশ্বর অনিষ্ট ष्ठनां इत्रा ज्य, রথ, ছাদ, সোপান, রুক্ষ পর্বভাদি হইতে প্রতন ভারা মনুযোর रुष शनामि कम ७ थान विस्तान हरेवात সম্ভিত্ৰভাবনা আছে; অতএৰ প্ৰয়েশ্ব

এই সমন্ত বিষম ছুর্যটনা নিবারণার্থে কীদৃশ উপায় করিয়াছেন তাহার অনুবন্ধান অতি कर्जना। जनाना प्रसुष धरे धरण भक्तिक অধীন, এবং পরমেশ্বর তাহারদিগের **প্রক্র**-ভিও ভছুপযোগী করিরাছেন। ভিনি তাহারদিগকে অস্থি, মাংসপেশী, জানে-**ल्यियः, সাবধানতা, ७ प्रनाम भारीतिक** শক্তি ও মানবিক হৃত্তি প্রদান করিয়া ভাহা-রদের প্রকৃতিও আকর্বণী শক্তি উভয়ের সুন্দর সামঞ্জ রাখিয়াছেন। সামানাতঃ এই সমস্ত প্রবল উপায় দারা ভাষারদের সর্বদা বিপদ্ ঘটিতে পায় না৷ যে স্কংশ হদ্যারা কোন জন্তর আনিউ ঘটনার অধিক मञ्जादना आছে, म्य इत्त भ्रतसम्बद्ध जाना নিবারণার্থে ডছুপযুক্ত পরম সুন্দর কৌশল করিয়া দিয়াছেন। বানরের বৃক্ষ আরো-হণ করা স্বভাব, অতএব জগদীশার তাহা-রদের হন্ত, পদ,ও লাফুলে অপেকার্ড অধিক বলপ্রদান করিয়াছেনঃ ভদ্যার তাহারা অবলীলাক্রমে নির্ভিদ্র শাখা পরি-বর্তন করে। যে সকল পক্ষী বৃক্ষশাখার শারন করিয়া নিজা যার, তাছারদের এক মাংসপেশী জানুর উপর দিয়া পদতল পর্যান্ত গিয়াছে, দেই সুকৌশল সম্পন্ন মাংসপেশী শরারের ভার ভারা সংকৃচিত क्र्या काश्वरम्त्र भन्धस्य द्वमभाधाः সংসক্ত করিয়া রাথোঁ। ইহাতে **যাহার** শরীর থক ভারী হয়, তদনুসারে যাহার পত্তবের যত সন্তাবনাথাকে, দে তত স্থতি ঠ कर्प कृष्यभाषात्र मः क्षिष्ठे व्वव्हा बारक । वालुकामत्र উष ভূমিতে গমন করা উট্টেব্ন কর্ম, এ**থস্জ** ভাহারা বিস্তর্র প্রাপ্ত হইয়াছে ' নতুবা লাখ বালুকাভে তাহার-দের পাদ মর্ম হইয়া আতশয় ক্লেশকর হইত। মৎসা দিগের উদরে এক বায়ু-কোৰ * আটিছ, ভাষারা ভাষার শৈথিল্য ও সক্ষোচন ছারা স্বেচ্ছানুসারে জল মধ্যে উর্দ্ধ বা অধঃ সঞ্জন করে।

े बहे नकन छेमास्त्रन चाता हैशा एमी-शामान धकान शाहेत्यहरू या शत्रम काझ-

[🍍] वाटक्त्र अप्रेका ।

নিক প্রমেশ্বর ভূমির স্বাক্ষ্ণী শক্তির স্ক্রিত নীচ জন্তুদিগের প্রক্রুতির অতি সুন্দর দামঞ্জুজ রাখিরাছেন। কেবল মনুধাই অপ্রিয়পার ? ভিনিই কি প্রন পিতার कि (करल के प्रक्रिक्नीय अंक्रिय থাকিয়া ফুটো ভোগ করিতে জন্মিয়াছেন ? প্রম মঞ্জকর প্রমেশ্বের নিয়ম সম্দায় পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে একথাকে নিমেত্ মাত্রও মনেকে স্থান দেওরা যায় না। ভাঁহার বিচিত্র শক্তি—বিচিত্র কার্য্যঃ তিনি মনুষ্যের নিমিত্তে প্রকারতের কৌশল ক্রিয়াছেন, ভাষার মশ্ম অবগত হইয়া ভদনুখালী অনুষ্ঠান কবিতে পারিলে অবশ্য পশুদিশের ন্যায় মনুযোরও এ বিষয়ে ছংখ ভ্রাস ও সুখ লাভ হইবে : মনুষোরও পশু-দিশের ন্যায় অস্থি, সাংসপেশী মন্তিক নাড়ী, 'দেহের সম-সংস্থান জ্ঞান ও সাব-ধানতা বুজি আছে. কিছু তাঁতার এই সমস্ত विषय शक्षानिरशंद समान नरह, कात्रव छ। স্থার শরীধের আকার, স্বাহা, ও ভারবস্থ य कुश, जिमि उद्दर्शतिमार्ग के मकल दिवस <u>क्षाल स्टायन माहे । किन्नु क्रशंमीचत्र निर्मिन</u> মিৎসাও অনুমিতি বৃত্তি প্রদান ছারা তাঁছাকে এবিষয়ে পশুরদের সমান, বর্থ ভাষারদের অপেকা ভোষ্ঠ করিয়াছেন। भूतर्क निकाप कहा भिरापह एम मन्दागत वृद्धिवृद्धि उ वया श्रवृद्धि नव्हारभक्षा श्रवान, এবং সমুদায় বাহ্নবন্তর স্বভাব ও তাহার अभाक উপদোগা, আকর্ষণ শক্তির বিষয়ও হাহণর এক উদাহরণ স্থল ৷ সবিশেষ বিবে-हर;করিয়া দেখিলে ইহা সঞ্মাণ হইবে य পुथितीत जाकर्षनी भक्ति घाता एक हृःश সঞার হয়, তৎসমুদায়ই আমারদিগের স্থলপ্রবির প্রাধান্য ও বুদ্ধিরভির চালনার

ক্রটি প্রযুক্তই ঘটিয়া থাকে। বা গৃহ প্তিত হইয়া লোকের অঞ্ভঞ্ক বা व्यानिदिरांश ब्हेटल यनि व्यनुत्रस्तान कृतिया দেখা যায়, তৰে প্ৰায় দৃঊ হয়, যে সেই রথ বা গৃহ অতি পুরাতন ও জীন হইয়া গিয়াছিল, এবং রধনায়ক ও গৃহস্বামির অজ্নিশ্য রুত্তির আতিশয় প্রযুক্তই কাহার প্রতীকার হয় নাই। এইরপ কড কত ব্যক্তি ইন্দ্রিয়ভোগের আতিশ্যা স্বারা प्रुर्वन ७ निक्ती यें। इट्डेग्रा अप्रीनिकात छाप. নোকার গুণর্ক্ষ,* রথশৃঙ্গ, মন্দিরচুড়া ও রুক্ষ শাখা হইতে পতিত হয়। অপরিমিত মদির। পান দ্বারা শারীরিক ও মানসিক শক্তি সমুদায়ের হাসপ্রযুক্ত এপ্রকার ভূরি ভূরি ছুৰ্ঘটনাসৰ্বদা দেখা যায়। এমত স্থলে কেবল স্লথার্ভির প্রাবল্যাত মনুযোর দোষ নহে, তিনি আপন শরীরের বল ও সমসংস্থান জ্ঞান নাত্রের উপর নির্ভর কবিয়া চলেন, নিশ্মিমৎসা ও অনুমিতি রান্তির bima: क्राइन ना : रेप्त्रं < পদ भागन इंड्रेस যাহাতে একেবারে ভূতলে পতিত না হন, এমত কোন উপায় করেন না। বিশিষ্টৰূপ অনুসন্ধান ও বিবেচনা ছারা অব্শানানা কোশল কম্পিত হইতে পারে।

हेहा यथार्थ तहहे (य मनुषामित्रात प्रकः কর্ব অদ্যাপি যেৰূপ ভ্ৰান্তি-সঙ্কল, ও হীন দশাঝিত রহিয়াছে, তাহাতে তাহাদের সমূদায় প্রাকৃতিক নিয়ম প্রতিপালনে সম্যক্ সমর্থ হওয়া কথনই সম্ভাবিত হয় ন', স্তরাং এ বিবেচনায় মনুধ্যকে পশু অপেক্ষ: ছুৰ্জাগ্য বলিতে হয়, কিন্তু আমারদের অসম্যক্রুদ্ধি हालना ७ अवस्थाहिङ विमानुभीलनहे हेरात একমাজ কারণ। মনুষ্যের মনোর্ভি সম-দার ঘৰু দুর চালিত ও বর্দ্ধিত,হইতে পারে, এইক্ষণে কুত্রাপি তাহার অত্যম্পত সম্পন্ন **र्रेट** एप्यायात्र ना। प्रमूटगात मानजिक ও শারীরিক প্রকৃতি, বাছবস্তু সমুদায়ের সহিত তাহার সম্বন্ধ, সেই সকল বস্তুর স্বভাব, শারীরিক ও মানসিক চেষ্টাভেই যথার্থ সুধৌদর হয় ও তাহার উৎকর্ব জনে

^{*} এই সকল নাড়া খেতবর্গ কাঁপালন্ মন্তিক ও মেকনওছ মজ্জার সহিত মুখ্যরূপে বা গৌণরূপে ইতার-দের সংযোগ আছে। মন এই সকল মন্তিক নাই হারা ইন্দ্রিকের সিহত সমুদার গ্রহণ করিতে সক্তা এই আন্ত জন্ম নাজ আদ্দ সকল চালনা নর্বিত শক্ত হল এবং পাকত্বলা ও জনমানি নে সমস্ক শার্বীবিক নত্ত্বর্ ব্যাপার ইচ্ছার আন্তিল্প নাই বিশেষ মান্তিক নাড়ার শক্তি ভাষার উপর চালিত হয়।

^{*} शक्ता

भूटचत्र अविभया हत्र, धरे ममल विषय कान् प्रभीय लाक यथा श्रानी भिका করিয়া থাকে? এপ্রকার অবস্থার ভূমগু-লের বহুভাগা যে কতক গুলি মুছ্মান জড়বৎ বুদ্ধি দারা পূর্ব, ও তজ্জনা অশেষ প্রকার ছু:খ দার: আকার্ণ হইয়া রহিয়াছে, ইহা व्यान्तर्या नहा । यथन व्यामात्रापतं मत्नावृद्धि সম্দার পরস্পর সমঞ্জনীভূত থাকিয়া চেম্ট-মান হইলে সুখ সঞ্চার হয়.তথন তাহারদের অসামঞ্জমা অর্থাং বুদ্ধিবৃত্তি ও ধর্মপ্রবৃত্তির इन्स्का ७ ख्ल्लाक्ष्रवृद्धि मभूमारस्त कायाना ছারা যে ছুঃখোৎপত্তি হয়, ইহা **স্ব**ভাব-দি**ন্ধ** वटि । अहे ममल छू:शे आमात्ररम्त सक-कां कि भारत मुखे बहेशारह । एथन आमत्रा বিশ-নিয়ন্তার কোন নিয়ম লক্ষন করিয়া ্রুশ পাই, তথন ভাহ, সেই পরাংপর প্ৰম আচেংযোৱ দাকাং উপ্দেশ স্বৰূপ জ্ঞান করিয়া একান্ত অন্তঃকরণে এই প্রতিজ্ঞা করা উচিত, যে তে বিশ্বাদিপ্র হৈ করণা কর আমি তোমার সুধাবত নিয়ম আর লক্সন করিব না"। ¥যৎপরিমাণে আপনার কর্ত্তত্য দর্ম্ম দাধন করিবে, মঙ্গলাকর বিশ্ব-পাতা তথপরিমাণেই সুধ দান করিবেন। কেবল মঞ্লই সম্দার বিশ্ব-কৌশলের अत्याजन, अवः शावः कृत्यं উरशन इत्र, ভাজ। সেই প্রম প্রয়োজন সাধনাথেই নির্দারিত চুট্যাছে । অত্থ্য নিয়ম লঙ্গন चातः अभिके यति वेलियः त्रहे नियम्त কথনও অশুভ নিয়ম বলা যায় না৷ পৃথিবীর আকর্ষণ শক্তির প্রয়োজন অবগত হইয়। তদনুষায়ী ব্যবহার না করিলে বিপল্উপ-স্থিত হয়, একারণ ভাষা অকল্যাণকরী শক্তি বলাকদাপি উচিত হয় না! যদি প্রমে-चत्र धरे शुक्रकती जाकर्यनी मंखिएक निरृष्ठ করেন, তবে মহোচ্চ অট্রালিকাদি কম্পা-মান হয়, বৃক্ষ সমুদায় শিথিল হয়, নানব দেহ অত্যব্দ কারণেই আকাশ পথে উং-किल इस, अवर मरमारतत अहेक्य अन्याना সহস্ৰ সহস্ৰ বিশৃ ধলা ঘটিয়া উঠে। কাৰ্য্য কারণ প্রশালী **ক্রমে যে কারণের যে** কার্য্য তাহাঅবশ্যই হয়, এই যে পরম সুদরে

নিয়ম অবধারিত আছে, তাহারও অন্যথা व्हेश समुनाय विश्वधाय ब्हेश छट । अह জন্য যদি পরমেশ্বর কোন প্রিয় সাধকের উপস্থিত বিপদ্নিবারণার্থে সাধারণ নিয়ম ভঙ্গ করিতেন,তবে পৃথিবীর অমঙ্গলের আর मीमा थाविक सा। इंका इक्ट्राल खामातरमत কোন কম্মের্ই নিয়ম থাকিত নাঃ আনেকা-নেক উৎক্লট আনন্দর পৃথিবী হইতে উন্সর হইয়া যাইত, এবং অনুমিতি প্রভৃতি কত কত মনোরুত্তি নিহার নিজায়েজন क्केट । यनि काया कात्रालु निश्च न গৰ্শকত, তবে তনিৰপ্ৰােপ্যােগি মনে: রুত্তি থাকাতে কি কল ২ এক্ষণে ভ চার্ চালনা ছারা যে বিপুল মুখের সমাধনা খাছে, তাহা এককালে রহিত হইত। এইকপ আশা ও অপ্রাপ্ত অনেক মনে রুত্তি চরিতার্থ ফইবার প্রতিও সম্যক বিঘ ঘটিত, এবং তদ্ধারা এক্ষণে যে প্রকার मूर्य लाভ कता गाँहेरछ्ह, जाहारक विशव ट**रेट इहेछ**।

আকর্ষণী শক্তির নায়ে অপরাপর প্রাক্তিক নিয়মের বিষয়েও এইরূপ বিচাব করা যাইতে পারে। তথ সম্দায়ও প্রতি-পালন করিলে সুখ লাভ হয়, আর লঞ্জন क्तिटल कुःथ आर्थि मटिं। काशाय अधि ভাঁহার কোন নিখমের পাব্যাপ্তি নাই, কাহারও প্রতি ভাহার পক্ষপাত নাই। नकरलाई (महे এक भारत भिजाद मछान, সকলেই দেই এক বিশ্বাবিপের প্রক্ষা তিনি मकलारक हे मार्गन स्त्रह कार्यन, अ मकलारक मगान निष्टम शालन करत्न। हेटा अवश्रः বিত **জানিবে যে তাঁহার নি**লম নি**ৰপ**ণ করিয়া তদনুয়ায়ি যত অনুষ্ঠান করিতে শারিবে, ভতই ছঃখ নিবারণ ও সুখদক হ্ইবে, ও তত্ই ভাঁছার নির্ব্ছিন্ন নঙ্গল स्वा अनुसुक्रम इहेश अनुःकत्। द्रुक्छकः। ब्रुट्स व्यार्ज इट्रेट्स ।

ঋথেদ সংহিতা প্রথমমণ্ডলস্য অফামানুবাকে সপ্তমং স্কুং

> কণুশ্বনিং গায়গ্রংছন্দ**ু** পুযাদেবতা

> > 833

১ সম্পূষ্মধ্নস্তির বাংহোকি মুচোনপাৎ। নক্ষা দেব প্র প

স্পুরঃ ৷

১ হে পুরন্ মর্মনোরক গুলিবাভিমানি দেব 'অল্লাং মারাম অসান অভীনীভানি 'দাংছির' মান্ত্রপ্রালম 'আভা রিবুলিন্তু, পাপ্যান (বি: দিটির বিনাল্যা 'বিষ্টা এলবিমাচনানেভামেলা নলাম পুর দে 'নেন' গুল্ম 'খাং' নং আবাকে প্রমাপুর্ণ প্রকাশ প্রমানোলাল পুর্বো রক্তেম্বাং

400

२ (कार्नः श्रमादशब्दकीमृह-८मर्वे ज्यानित्मेगिकि । अश्रे मा उर भरशाकेटि ।

হছে 'পুছৰ' ' হাং' প্রতিপক্ষং নং' অব্যাস আন দিদেশতি ' অনেন মার্থেব ন গঙ্বামিত্যেবং আঞ্জাপ-বৃত্তি কট্নিং ' অহল' আভিন্ত' কুলং আন্তানিচনা ধন-সা আপত হাং দুশেবং ' দেনিসুথ দুংশকং ভংথ ভাদ-লং প্রতিপত্তিক ' পৃথিং ' হাগাহ' ' অপ ক্রিকা' আ-সশাং অপাতৃক '

২ হিংসক ধনাপহতী, ছুরারাধা যে
শক্র আমারদিগকে এই পথ দারা গমন
করিছে নিবেধ করে, হে পূষা দেবতা !
তুমি দেই/শক্রকে মার্গ হইতে অবশা
অপাকরণকর।

603

৩ অপ তাং পরিপন্থিনং মুষী-বার্নং হরশ্চিতং। দূরমধি স্তুতে-রজ।

া া গুল্প পুর্কোঞ্চন্ত্রকং 'ক্ডেঃ' ...
নাথ অনি দুরং অত্যন্ত্রকেশং প্রতি 'অপ অন্ত অপান্ত অপন্যায় কীর্নাং 'পরিপন্থিনং' মার্চপ্রক্রিকং 'ম্বীটানং' ভত্তরক্রপং 'ক্রন্টিতং' কৌ টিল্যানাং সঞ্জোৱং ৷

ও হে পূথা দেবতঃ। ছুমি পূর্বেরাক্ত কুনমুক্ত পথ প্রতিবন্ধক, কৌটিলাকারি চোরকে মার্গ হইতে অধিক দূরে গমন করাও।

605

৪ স্বন্তুসা দ্ব্যাবিনোঘশংসন্য ক্সাচিং। পদাভি তিপ্ততপুষিং।

৪ হে পূমন্ 'অং'' তমা ক্লোরসা ' কদাবিং 'প্রস্থাপকং কেংই 'প্রম' ভ্রমাবেন পালেন আছিল আছিল। 'ভিছি' কিট্মানা ভ্রমাবিন' প্রভাকপেই বিং পারকা পরিকার কিছিল। ক্ষাত্ত কলি কিটাবিলেই কলা আনিক্টিনিবলেই কলা ক্ষিতিবিলেই কলা 'চিহ' আছিল।

৪ হে পূষা দেবজা প্রত্যক্ষাপ্রতাক্ষের অপহারক, আমারদিগের এবং আন্তোর অনিউকারী, সন্তাপকারী কোন শক্রর দেহ পাদ দারা আক্রমণ করিয়া ভূমি স্থিতি কর !

৫ আ তত্তে দু সদু মঃ পুষদ্ধ বোৰ্ণীমহে। যেন প্ৰিত্নচোল দয়ঃ 151৩।২৪।

६ ছে 'মদুমঃ' আনবান্' দুপু' দুপ্রিফ 'পুষন্' 'তে 'অদীয়া 'তং' তাদুশা 'ঋবঃ' রক্ষণ 'আ' সর্ফ তঃ' বৃগীয়তে 'প্রার্থায়ছে। 'বেন' রক্ষণেন 'পি-তুন্' অংগিরপ্রস্কৃত্তীন্ পিতৃপ্রেরাছ্বঃ।১।৩।২৪।

६ (इ छानवान् मर्भन यात्रा भूषा (म-

বতা! তোমার তাদৃশ রক্ষণ আমরা সর্ব-তোভাবে প্রার্থনা করি: যে রক্ষণ কারা ভূমি পিতৃ দেহ সকল প্রেরণ কর ১১৩২২৪)

008

৬ অর্ধ। নোবিশ্বসৌভগ হি-র্বণ্যবাসীমন্তম। ধনানি সুষ্ধ। ফুধি।

১ চে পুনান 'বিজ্ঞানিল কুম্মান্টেলিল্ড ' কি ন্যাবাধীল্ডল' অভিশ্যেন সুপ্ৰিমান্ত্ৰ আপ ' পুৰ্বোক্তাম্বাদ প্ৰাৰ্থনান্ত্ৰ না অভ্যাক্ষ সনানি ' সুবল্ডনিমুক্টিনি ' সুৰ্থ' সুন্ধান সুঙ্কান্ত্ৰানি কুলি 'কুল।

৬ তে সর্ব্যোজাগাযুক, সুবন নির্মিত ক্রার্থন।
ক্রেপারি পূলা দেবতা। পুর্বোক্ত প্রাথন।
প্রবেশানন্তর ইংলাই কর যেন আমারদিলে
গের সুবন মনি মুক্তাদি ধন সদা সৎপাত্রে
নিরোজিক হয়।

802

१ श्राचितः मश्राचीत्रय मुगा तः मृश्यो इत्। श्रीक्रिश कर्णूः

দ চোপ্তন্ 'সংক' অস্কুলাধনাত প্ৰাপ্ৰকাশন আৰু নং' আফান আছি' আভিন্নতা নত আনাত প্ৰাদ্ধা নিং' আফান 'জুলাগ' স্কুলাখ শক্তোন 'সুপথা' শেলনামাৰ্গেৰ গৰুন্ 'কুণু' কুকু : 'ইহ' আফানি 'এক কুণ্'প্ৰসান্ধ অফাদুকৰ্ম্বপ্ 'বিনং' জানাতি।

৭ হে পূথা দেবতা! তুমি আমারদি-গের বাধাকারক শক্ত সকলকে আমারদি-গকে অতিক্রম করিয়া অন্য স্থানে গমন করাও, এবং আমারদিগকে উত্তম পথছার। গমন করাও! হে পূধা দেবতা এই পথে তুমি আমারদিগের রক্ষা করিতে জান!

600

৮ অভি স্থবসং ন্যুন নিব-। জারে। অধনে। পৃষ্দিই ক্রতুং বিদং।

দ্ধে পুসন 'স্ববসং শোভনভুনোপলজিও মন্ত্রিপির্দ্ধ নেশং আমান 'জভি নম' জভিও প্রা পর্ব 'জ্ঞানে মার্কার নির্ভাৱক' নুভনস্থাপর নিভিন্তু স্থান ক্রমন্ত্রকার উদ্দির্ভিত্ত ক্রম ক্রা প্রিট্রিকার 'প্রাক্তিন ক্রমন্ত্র 'জ্ঞানু জ্বা ব্রহা'

৮ কে পুষা দেবত। ত্মি আমারদি-গবে সক্ষা সদা সম্পন্ন দেশে লইরা চল, মার মাগ গমন কালে আমারদিগের মূতন সন্তাপ দেননা হয়। কে পুছা দেবতা। ত্মি এই পথে আমারদিগেন রক্ষা করিতে জান।

004

৯ শৃদ্ধি পূর্দ্ধি প্রযংসি চ শি শীছি প্রাস্যুদরং। পূর্ষমিত ক্রতৃং বিদঃ।

৯ হে 'গুনন্ আমান অনুগৃহীছুও 'শঞ্জি' শক্ষা মার। আমানে হং 'পুঞ্জি' ধনেন পুরুম। 'চ' কিন্তু আন্ত্রেপণ্পতিতে, বসু 'প্রদেশনি প্রস্তুচ। সংক্রম্ব সংগ্রাজ্যান 'শিলাহি' তেড্ছিনং ফুক। অনুদীদ্দ 'উনর্থ' দোমন্তেন 'গ্রাদি'পুরুষ। 'ইন ক্রেণুং 'বিনং'।

৯ হে পূষা দেবতা। তুমি আমার্চি
গকে অনুগ্রহ করিবার নিমিত্ত সন্ধ হও,
আমার্চিগের গৃহ ধন পূর্ণ কর, এবং অনা
ধনও প্রদান কর, সকলের অপেক্ষা আমার
দিগকে তেজন্তী কর, সোমরস হাবা আমা
বিদিগের উদর পূর্ণ কর।

to b

১০ ন পূষণং মেথামসি সূত্তি রুভি গৃণীমসি ৷ বসূনি দুম্মমীম

ट्राश्राकारहा

১০ 'পুरवर' त्वर वगर 'त 'त्यशायि जिल्मा-यः किख' जुरेकः' (वमगरेशः 'कांडि' असंकः भूनीय नि 'क्याः 'मन्यर'मग्रानेषर भूषवर श्रीतः वनुनि ' स्मानि 'हेग्राक' वार्षायर ५००१वः

> পূধা দেবতাকে আমর! নিন্দাকরি না, কিন্তু বেদোক্ত গুক্ত ধারা সর্বাত্র স্তব করি ৷ দর্শনীয় পূথা দেবতার নিকট ধ্য প্রার্থনা করি 12/৩/২৫।

মহাভারতীয়লোকাঃ

ছিত্রাহধর্মাময়ং পাশং যদা ধর্মেভিরজাতে। লত্বা ২ ভয়কতং লানং তদা সিক্ষিমবাপ্ল তে।। ্যাদদাতি সহস্ৰাণি গ্ৰামশৃশতানি চ 1 মন্তবং দৰ্বভেত্তেক্তাঃ সদা তমন্তিবৰ্ততে ৷৷ বসন্বিষ্ণমধ্যে হপি ন বসভোৰ বুদ্ধিমান্। সংব্যুত্ত্বে **ভূব্বেছিরসৎসু** বিষ্**ষেত্র**পি 🛭 নাধর্মঃ শ্লিষাতে প্রাক্তং প্রথঃ পুষ্কবপণ্রথ ৷ व्यक्षास्त्रमाधकः भाभः क्षिग्राट कर्कार्यवः। নাধর্মঃ কারণাপেকী কর্তারমভিন্পতি ! কক্তা খলু যথাকালং ভতঃ সমন্তিপদ্যতে !! ব্যভিত্যগোজিতকোৰঃ সমাগুভবতি যা সদা৷ विषटर वर्षमात्माङ्गि व मुशादश्व युकादक । यथा डिलामाधिक भूम्लोमः अगाद পুথক পুথক ঘাতি ফ্রনােহ্ডিসৌম্যতাং ৷ তথ্য নরাণ্যন্ত বিভাবিতাত্মনাং ালা**ভা**য়ং সন্তুগুণঃ প্রবিত্তিতে 🔢 ন ধর্মাকাল: প্রথম্য নিশ্চিতো-ন চার্ণিম জ্বা পুরু**ষং প্রতীক্ষতে।** সদা হি প্রসা ক্রিপের শোভনা খদা নরে গৃত্যমুখেই ভিবর্ততে 🛴 যথান্ধঃ স্বগুকে যুকে: ফুড়াসাদের গছড়ি : তথা সুক্তেন মনসং প্রাক্তেগচ্ছতি তাং গতিং।। মবন্ত জন্মনি প্রেশকেত জন্ম বৈ মরণাঞ্জিত। । অবিদান সেক্ষপর্যেষ্ বন্ধোভবতি চক্রবং!! বুদ্দিমণ্যপ্রধাতসংখ্যবিভূত্পরতচ ৷ বিভরাং ক্লেশসংযুক্তাং সংক্ষেপাস্ত সুখাবহাং ম্ভাজ সভি ভুতানি প্ৰন্থ প্ৰপোষ্থা ৷ স্বয়ং কুতানি সর্মাণি **কাতোজকঃ প্রপদ্যতে!।** ব্যবসাস, সংগঞ্জি **সহায়ান্ গোধিগছতি।** 🚅 ভদা ফাশ্চিদারস্ক্রঃ কদাচিদ্রসীদত্তি 🔃 আহিধমনসং যুক্তং শূরং ধীরং বিপশ্চিতং। ন খ্রীঃ সংত্যজতে নিত্যমাদিতামিব রশ্বাদঃ 🔃 ছিন্দৰ্ভিক্ষমধাক্ৰোধং কামং সংক'পবৰ্জনা: 1 সন্ত্রসংসেবনালিক্রামপ্রমাদান্ত্যন্তথ: 👸 ररेशवानिविधाः कृषांकावः क्रिकः भूनर्क्तवः आधा वस्त्र कथा त्यांभाखरभनंश वीककलायाः। তবিব বাঞ্রাং ছিত্ব বলবজোনথা ভূগাঃ। खां श्रा युर्विमलः भार्शः निम्काः नक्षतस्ति ।। লোমজানি তথা রাজন বজনানি বলালিকাং। ছিত্ৰ, সোগাং প্ৰথমাৰ্কাগ্ৰন্থতি বিমশংশিবংক্ত অবলাশ মৃণারাজন্ বাশুরাসু তথা ২ পরে !
বিনশ্যন্তি ন সংক্রতভ্রেদ্যাগবলাদৃতে !!
ফুর্বলন্দ যথা রাজন্ স্রোতদা ছিয়তে নরঃ !
বলদীনতথা যোগোবিষ্ট্রেছ্রতে হ্বাঃ !
শারিণ্যাদি !

বিজ্ঞাপন

রুতজ্ঞতার সহিত স্বীকণুর করিতেছি যে ইনেশারস্থিত শ্রীযুক্ত হরচক্রাপত মহাশায়ের নিকট হইতে এই সভায় বিংশতি মুদ্রা দান প্রাপ্তি হইয়াছে !

> জীনপেঞ্জনাথ ঠাকুর। স্ফাচক !

বিজ্ঞাপন

্র ৬৫ শাকর নাম নাসীয় ভজুবে বির্ পাত্রক: থিনি ভজুবেশ্ধিনী সভাগ ক প্র লয়ে প্রদান করিতে পারিবেন বিক্রিক ভার্ব মূল্য এক টাকান্দেওয়া প্রাক্র । শীন্পেক্তনাথ ঠাকুল।

বিজ্ঞাপন

নিমু লিগিত পুক্ষ সকল অন্ত মে মুলাবিক্ত হয়,তাহা হইতে লাগ মুলাবিক্ত হয়,তাহা হইতে লাগ মুলাবিক্তার্থ প্রস্তুত আছে, গাঁহা, এলোকন হয় তত্ত্বোধিনী শ্লনার কার্যনালয়ে নূল্য প্রেরণ করিলে প্রাপ্ত হইবেন ৷
বাজলার ইতিহ্বাস জনাবি ৷
জ্ঞানার ৷
ক্ষিপ্তথাইমার ৷
ক্ষিপ্তথাইমার ৷
ক্রিজ্ঞাইমার ৷
ক্রিজ্ঞাইমার

नका अटरण मान रेडेट इस्टरनोधनी नवाइ अहि नवा बहै लखिकाइ बढ़ बढ़ दिना मुला आच रहन।



<u>তত্ত্যরোধিনীপ্রতিকা</u>

অনুবর: স্বল্পের্যার স্থান্তর লাম্বেলে। প্রতিষ্ঠান কংশোলাকর ৭১ নিক্তা তথ্যতি হয়িতি। অন্ধু প্রাধ্যা ভদকর মধিগমতে ॥

পথিকের স্বপ্নদর্শন।

প্রমেশ্বরের বিচিত্র রচনা দর্শনার্থে প-রম কে:ভূহলী হইয়া আমি কিয়ৎকালাবধি দেশ ভ্ৰমণে প্ৰবৃত্ত হইয়াছি, এবং নানা স্থান পর্য্যাটন করিরা একণে মধুরা সল্লি-ধানে উপস্থিত হইয়াছি। এখানে এক দিবস ছঃসহ গ্রীয়াতিশয় প্রযুক্ত অভ্যন্ত ক্লান্ত হইয়া সায়ংকালে তটে বসিয়া যমুনার मूननिष्ठे नहरी-नौना अरताकन कार्राज-**ছিলাম** : তদীয় সুমিশ্ধ মারুত হিলোলে শরীর শীতল হইতেছিল। কত শতদী-পামান হীরক খণ্ড গগণ মণ্ডলে ক্রমে র্ক্রমে প্রকাশ হইতে লাগিল, এবং তক্মধ্যে দিব্য-লাবণ্য-শোভিত পূর্ণচন্দ্র বিরাজমান হইয়া কখনও আপনার পরম রমণীয় অ-নির্বাচনীয় সুধাময় কিরণ বর্ষণ পূর্বাক জগৎ মুধাপুর্ণ করিতেছিলেন, কখনও বা অণপ অংশ মেঘারত হইয়া শ্বকীয় মন্দীভূত কি-রণ বিস্তার স্বারা পৌর্ণমাসী রজনীকে উ-যানুৰপ স্লান করিতেছিলেন ৷ কখনও ভাঁহা-র সুঞ্জকাশিত রশ্মিকাল সলিল ভরকে প্র-विके रहेता कन्नमान रहेराहिल, कथनअ গৰাণালৰিত মেঘ বিষ ছারা যমুনার নিৰ্দাল अन चन्छत नामवर्ग हरेशो अञ्चःकद्रव হরণ করিতেছিল। পূর্বের দূর হইছে লো-कानारप्रत कनप्रत क्रांच स्ट्रेटिंग, खादा

ক্রমে ক্রমে মন্দীভূত হইয়া আসিল, পশু প্ৰিক্সকল নীৱৰ ও নিস্পুন্দ ইইয়া স্বাস্থ श्वारत निलीन इहेल, धदः प्रस्त-प्रसाध-मा-শিনী নিদ্রা জীবগণের নেত্রোপরি আবি-ভূত হইয়া সকল ক্লেশ শাস্তি করিতে না-शिवा। धरे अकात मुनिश्व ममदण चामि তথায় এক পাষাণ খতে উপবিষ্ট হইয়। আকাশ মণ্ডল নিরীক্ষণ করিতে কবিতে क्षशरण्ड आपि अन्त. कार्या कार्रश, मूर्य प्रत्ये. थमाथिम नम्नास महन महन शर्याहनाहना করিতেছিলাম। ইভিমধ্যে জল কলো-लात कल कल सिन, तृकः शास्त्र मार्थ मात्र শব্দ ও সুশীতল সমীরণের সুমন্দ হিলোল দারা পরম ুসুখানুভব হইয়া মনোর্ভি সমুদায় ক্ৰমে ক্ৰমে অবসম কইয়া আসিল, এবং এই,অবসরে নিদ্রা আমার স্বস্তাত-শারে মদীয় নেত্র দ্বয় মুক্তিত করিয়া আমা-কে অভিভূত করিলেক। আমার বোধ হুইল,যেন এক বিস্তীর্ গভীর অরুণ্যে প্রবেশ করিয়া ইতপ্ততঃ ভ্রমণ করিতেছি ৷ তথ্য-ধ্যে কোন স্থানে কেবল নবীন দুৰ্বাদল পূৰ্ব শ্যামবর্ণ ক্ষেত্র, কুত্রাপি প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড श्रुत्राज्य इक ममृह, रकाथा अनी वा निर्वात তীরস্থ মনোহর পুল্পোদ্যান দর্শন করিয়া অপর্যাপ্ত সুর্ব লাভ করিলাম। কৌভূচল क्ष मीख - एकानम क्रमनः श्रक्तकार के एक लागिल, अदर कमनूत्रादत मिश्रिमिक् वि-

বেচনা নাকরিয়া যত দূর দৃষ্টি হুইল, তত मृक्षे भट्टारमारह उ शत्रम मुर्त खमन করিতে লাগিলাম ৷ অবশেষ এক সরো-বর তারস্থ অতি নিবিড়, নিজন, নিস্তল বন খণ্ডে এক অপূর্বে মৃত্তি দর্শন করিয়া পরম পুলক প্রাপ্ত হইলাম। ভাঁহার মুপ্রকাশিত প্রসন্ন বদন ও অলৌকিক অনিকাচনীয় শাস্ত বভাব অবলোকনে তাঁহাকে গন দেবতা জ্ঞান করিয়া বিহিত বিধানে নমদ্ধার করি-লাম, ও ভাঁলার পুনঃ পুনঃ দর্শন লাভ দারা নয়ন যুগল চরিভার্থ করিবার নিমিত্ত হৃতাঞ্জলি পুটে দগুল্মান থাকিলান। অবগত হইল(ম,ভাঁচার নাম (বদা। । দেখি-लाम, हिनि जाशनांत्र करशाल धरहरून হস্তার্পণ করিয়া গগণ মণ্ডল নিরীক্ষণ করি-তেছেন ! আনি তাঁহাকে কোন কথা জিজ্ঞাসিধার মানস করিয়াছিলাম, কিন্তু আমার বাকা কুরণ না হইতে হইতেই তিনি গাতোপান করিয়। সাতিশয় সুশী-লভা ও আগ্রহ প্রকাশ পুরুক কলিলেন " আমি তোমার মানস জানিয়াছি, তুমি व स्टार्म याहेबाव श्वार्थना कतिए हिला, ভাহার এই পথই সর্বাপেকা প্রশন্ত। যাঁহারা এই পরম কানন ভ্রমণ করিতে আ-रेटनन, आमिरे फेंक्स्त्रिमिश्टक श्रथ ध्रमर्भ-ন করি : চল,ভোনাকেও সঙ্গে লইয়া ঘাই।'' আমি তাঁহার এই আখাস বাক্যে প্রম क्र वे इवेशा जदमानार जाँकात अम्हार अन्हार গমন করিতে লাগিলাম। উত্তয় পাশ হৈছি इक स्थानी भर्दश किश्रमृत श्रमनास्त्र व्यवस्थात শৈতা, শোভা, ও পৰিত্ৰতা প্ৰভাক্ত করিয়া षड्न जानम आश्र हरेनाम, जवः षडा-ন্ত কৌভূহলাবি উ হইয়া ভাঁচাকে জিজা-সাকবিলাম "হে দেবি, এস্তানের নাম কি, এবং এখানে কি কি অপূর্ব্ব ব্যাপারই বাসম্প্রন্থ ইয়াখাকে ? '' তাহাতে তিনি অতি সত্ত্র হইয়া ক্চিলেন '' এ বিদ্যার্ণ্য, अव्यवस्था व्यक्ति सूच्यत सूच्यत द्रव्य कार्ट्स, অতি ভাগ্যবান্ বাজিরাই এখানে আগমন করেন, কিন্তু ইহার কল ভোগ করা অভি आशांत बांगाः नकत्वत छ। त्या । यह हे ना 1 क्ट्र क्ट्र गुद्र स्टेफ काम काम ब्रह्मब

উচ্চতা দৰ্শন মাত্রে পরাঙ্মুখ হইয়া প্রতি-গমন করেন, কেছ কেছবা ফল আংচরণের প্ৰভ্যাশীয় কতক দূৰে বৃক্ষাৰ্চ্ হইয়াও পুন-ব্যার অধঃ পতিত হয়েন, কিন্তু যে ব্যক্তি একবার এই পরম কাননের কল ভোগ করিয়াছে, সে আর সে আশ্বাদন কদাপি বিশ্ত হইতে পারেনা ৷ আমি তোমা- क करम करम अभुनाय नर्ना हेट छि इन। र्क (रा प्रुष्ट्रण) मत्नावत त्रक मन्युत्र पृष्टि ক্রিতেছ, ও যালার সজল শাখা সম্দায় भूमधुत तम-क्लीड कल खटत व्यवन्त इडेशोट्ड. যাহার ক্লা হইতে স্থাময় মধ্ধারা সকল অনবরতই করিতেছে, ও সুকুমার-মতি ठक्षन युवटकता याहार्ट मुर्थ आरहाहन ক্রিকেছে, উহার নাম কাব্যতর ৷ দেখি-রাছ ৷ অলঙ্কি রূপ্য চি অপূর্য়ে অত্যান্চর্ন্য রমনীয় লতা তাছাকে বেষ্টন গুরুক সুশো-ভিত করিয়া রাখিয়াছে। ঐ দুক্ষের কিঞ্চিং দূরে যে প্রকাণ্ড ভেজস্বিরক্ষ দেখিতেছ, সুনীর প্রবীণ ব্যক্তিরা যাহার সেব।করিতেছেন, তাহার নাম জ্যোতিয়া ইহাকহিরাবিদ্যা দেবী ঐ রুক্ষের অদেধ গুণ ব্যাখ্যা করিতে লাগিলেন৷ তাঁহার বাক্যাবসান হইলে, আমি জ্যোতিষ তরুর নিকটবন্তী হইয়া দেখিলাম, পুর্বোক্ত পণ্ডিত সমুদশ্য এক একবার প্রগাঢ় রূপ মনোনিবেশ করিয়া ধ্যান-পরায়ণ ছইতেছেন, এবং মধ্যেমধ্যে সহাস্য বদনে অতুল আনন্দ প্রকাশ করিতে ছেন। এক অসাধারণ ব্যাপার দেপিয়। य९ পরে। नांखि दित्यया शत इहेला गा 🏟 इक्का मृत्रिका-मश्युक्त नहर, आह अक প্রকাণ্ড প্রাচীন রক্ষের কন্ধ্য হইতে উৎপন্ন হইয়াছে ৷ আমি এই শেষোক্ত ভক্তর নাায় मात्रवान् द्रक यात अक्षी अ मृष्टि कतिनाई । তাহার কোন স্থানে লেশ মাত্র ক্ষয় হয় নাই, ও কুতাপি ছিদ্ৰ কিয়া চিত্ৰ মাত্ৰও নাই। আমি ইহার নিগৃত তত্ত্ব জানি-বার জন্য পরম কৌভুল্লী হইয়া বি-म्गारमवीदक किञ्जामा क्रियाम । जिनि कहि-लেन, " এই ऋष्ठ-तिहरू मात्रवान् इटक्सत्र নাম গণিত ৷ ভূমি কেবল সক্থবৰ্তি क्यांचिय वृत्कत मून हेशांच नवक दिन्ध-

ছেছা প্রদক্ষিণ করিয়া দেখা,অন্যান্য কত কত বছপকারি পর্ম রমণীয় আশ্চর্যা আশ্চর্যা রুক্ষ ও লতা ইহার ক্ষন্ত হুইতে উংপন্ন হইয়া তত্ত্পরি স্থাপিত আছে। '' বস্তুতঃ আমি বেইটন করিয়া দেখিলাম,ভাঁহার কথা প্রামাণিক বটে ; শাখা, প্রশাখা ও রুক্ষরুচ ' সম্বলিত এক গণিত বুক্ষ অৰ্দ্ধ কানন ব্যাপিয়া রহিয়াচে ৷ তথা হইতে প্রস্তানামূর আং-মার সমভিব্যাহারিণী পণ-প্রদর্শিকা বন-मिती मानुधन वहरम विवासन, ''मर्क मिनीम বৃক্ষলতাদি আনয়ন করিয়া এ কাননে রোপণ করা গিয়াছে ৷ কেন্তিম ও গণিতের ক্ঞ करें। कलम (टामाव्रमित्राव (मन इट्रेट्ड) অব্হরণ করা গিয়াছে। দেখ, ভিন্ন জাতীয় লোকে এই কাননে অবস্থিতি করিয়া উৎ সাহ ও যত্ন পূর্বকৈ তাহার কেমন পারি-পাট্য 'ব উল্লাভ করিয়াছে : আর ভোমার **ाम्भी**य क्षांक**रक विका**त कदिए**ड २**२, **का**-রণ যত গুলি বুক্ষ রক্ষণাবেক্ষণের ভার কেবল ভাষার্দিগের উপর সমর্পিত আছে, এবার কালার সমদায়ই ভগ্ন ও শুক্ত কইয়া शाहेरकरह । मिकिश मिक्त एक दुक्त मिथि-ट्डह, ममस्ट्रे अक काडीस, जाहाद नाम শ্ৰুডি, আর বামদিকে যত দৃষ্ট হইতে-ছে ভাছার নাম দশন ৷' এই চুই জাতীয় রক্ষ অবলোকন করিয়া যৎপ-लानानि ज्ञम भारेलाम। प्रिनाम, मक्किनिरकत अभूमात्र द्रक अमापि अभाक् ন্ধ্যে নথ্ট হয় নাই, কছক গুলি শুষ্ক ও ভগ্ন-শার্থ হটরাছে, কিন্তু কিছু পারিপাট্য बारे, ताथ इहेन त्रभ এक अवन यक्षावाल **মারা সমুদার বিপ্ল**ত ও বিপর্যাত হই-রা পিরাছে ৷ বামদিকের কোন রুক্ের কেবল কল্পমাত্র আছে, কোনটার বা সমুদার গিয়া একদিকের একমাত্র শাখা আছে, ভদ্তির কোন কোন বুক্ষের কল্পমা-खाउ पृथ्वितभाष्ट्रत इहेल मा। এই छः मह তুঃখের সময়ে এক পরম কৌভুক দেখি-লাম : কতক ওলি অভিয়ানি মনুবা উভয় পাৰ স্থ কুক্ষতলে উপবেশন করিয়া অভাত দত্ত ও ব্যাপকতা সহকারে মহাকোলাহল ও বিষম কলছ আরম্ভ করিরাছে:

 क्षेत्र भावीत स्थान.तमायन.ििक भा প্রভৃতি অতি অনিসচনীয় পর্য রমণীয় ভর্ সমূহ দশন ক্রিয়া খতিশ্য সম্ভোষ প্রাপ্ত হটলাম, এনং অভি <u>শ্ৰাদ্ধাবি**নী** হট্যা **পথ**</u> মধ্যে পার্মরে:ধ্যা বিভাগ দেবীকে কছিলাম. শতে দেবি। সামিতেমোর প্রসাদে ক্ষা অনুপৰ সুপ লভেকবিলাম ৷ ভূমওকো এমত নিশাল-মুগ্ৰাম আৰু লাই! আমা-মার বোধ হয় গস্থান আভ সাত্রজার র বাক্তিরাই আগমন কবেন, অগর লোকের এখানে আদিশার অধিকার নাটা কথা প্রবণ মাত্র তিনি বিষয় বদাম কছিলেন। " ত্মি যগার্থ বিবেচনা করিয়াল, এক'ন **धन्म**नील भाष तालिपिट्यान्डे (याना तर्हे. এন॰ পুরের ইচ। তাদুশই ছিল। ভবন কে-বল পরেপেকারি, তত্ত্ব পরয়েন, পুন্যায়া ঋষিগণ্ও অনুচাৰ্য্য সকল এই পরম প্রিয় কাননে উপৰেশন কবিয়া অত্ল আনন্দ অনুভব করিতেন। কিন্তু এক্ষণে এবনে নানা বিভীষিকা উপস্থিত কইয়াড়ে • পাপ রুপ পিশাচের উপদ্রবে ইছা আরু সঙ্গট व्हान इहेम्। केठियातहा । ये प्रथ विकालीय বেশবারী অভিমান অভাস্থ উঞ্জ: বে উজ্জ মস্তক ও বন্ধা-গ্রীব হুইয়া সকলেষ উপর **খরতর দৃত্তিপাত করিকেছে, ও স্থ**কীণ পৃত্ত मसुरक भवस्तिताहोस्य बहेस यहा भाषा প্রকাশ পূর্বক সগর্ব পাল বিকেপ করি-তেছে। উহারদের অঙ্গ ভঙ্গী দোখয়াকি তোমার বোধ হইতেছে না.যে উছারা মনে মনে বিশ্ব সংসার খুচ্ছ ভাবিতোছ ২ তথ পাখে দৃষ্টি কর, ক্রোধ নিঞ্চ কান্তঃছিংসা-**(क मटक महेश्र) इंडल्डा श्रावश्रत इड्डे-**তেছে। উনি অভিমানের শক্তর ধীনুগত। যদিকোন ব্যক্তি অভিন্যনের গাত্র মাত্র স্পর্ম করে, ক্রোধ বংক্ষণাথ উপস্থিত হইয়া ভাগার বৈর্নিগাতন করিছে উ-माञ्च इत्र । अ मिर्क अवदलोकन क्र. अक-টা প্রকাণ্ড রাক্ষস দেখিতে দেখিতে আপ-नात्र मंत्रीत दृष्टि कतिता। (कशिएनक । अ-कर्र ७ (र क्षकांत्र स्नुत-काग्न स्टेंग्न डेठिन. আমার বোধ হ**ইতে**ছে বিশ্ব সংসার ভো-कन् वाता अ डेरांत उपत्र पूर्व रहा ना । उरात

নাম কি জান? লোভ ৷ বিশেষতঃ কাব্য তক্তলে যে ছুই প্রচণ্ড পিশাচ দণ্ডায়মান দেখিতেছ,উল্লের অত্যাচার বশতঃ এস্থা-নের অভিশয় অপ্যাশ হইরাছে; উহাদের নামকাম ওপান দোষ ৷ এককালে কে-বল নিকলক দম্পতি-প্রেম স্বকীয় গৃহ দে-বতঃ প্রজাপতিকে **আন্তা**র করিয়া এই পর-র রথধাম অধিকার করিতেন। তৎকালে অনেকানেক প্রধান ধর্ম তাঁহার সহচর ছিল,কোন দৃষ্ক্রিয়া এস্থানে প্রবেশ করিতেও সমর্থ হইত না৷ একাণে ভাহার সম্পূর্ণ বিপর্যায় ঘটিয়াছে ! দম্পতি-প্রেম ও ভাঁহার সহচর্দিগের দৈনা দশা উপস্থিত হইয়া পরানুরালি কামৰূপ পিশাচেরই আধি-পতा वृक्षि क्रहेटकाइ । व्यवत्नाकम कद्र, भारतमार यागमात मनतन महकात कि কি বীড়ৎস অহিত আচরণ করিতেছে! বেশ ধারণ করিয়াছে। দেখাদেখা, কা-হার ভাষে ধার্ম সকল ইতত্তেঃ পলায়ন করিতেছে৷ পশ্চাৎ হইতে আরু কৃতক গুলি ছুদ্ধান্ত পিশাচ পিশাচী আসিয়া তা-হার সহিত বিকট হাস্যকরিয়া নৃত্য করি-তেছে৷ হে প্রিয়তন ৷ এমন পরিশুদ্ধ পুণ্যানের এপ্রকার অবস্থা দেখিয়া আমার হৃদ্ধ বিদীন হইতেছে: যাহারা এই স্-মস্ত রাক্ষ্য পিশাচকে আন্তায় দেয়,ভাহা-র। তদ্যরা আমাকেই প্রহার করে। **আমি** এ অরণ্যের অধিষ্ঠাতী হইয়া স্বয়ং একপ ভূরি ভূরি অঞ্জিয় ব্যাপার আর কত দেখা-ইব ? আই ঘন পলবার্ত নিবিড় রুক্ষের অন্তরালে যে এক পরম সুন্দরী রমণীকে দুটি কারতেছ, উহার পর কুৎসিত স্ত্রী আর বিভীয়নাই। উহার গাতে যে কত. ব্র৭, কত ক্ষত, ও কত কলঙ্ক আছে, তাহার সংখ্যা করা যায়না। কেবল কতক গুলি বেশ ভূষা কম্পনা দারা তৎ সমুদায় প্রাক্তর রাথিয়া আপনাকে শজীভূত করিয়া দেখা-ইতেছে; উহার নান কপটভা।

সমুদার শ্রবণ ও দশনি করিয়া আমি বিষাদ সনুদ্রে নিমগ্র ছইলাম, এবং চিন্তা করিলাম, এ অসার সংসার স্থভাবত শোক ছুংবেতেই পরিপূর্ণ, ইছিও জুই এক সন্তাপ

নিবারণের স্থান ছিল, ভাহাতেও এত বিয়ু ঘটিয়াছে : যাহা হউক, আপনার কর্ত্তবা সাধনে পরাঙ্মৃথ হওয়া উচিত নহে, এই বিবেচনা করিয়া সর্বান্তঃখ-নিবারণী অনেষ-হিত-কারিণী সম্ভাপ-নাশিনী বিদ্যাদেবীর পশাঘণ্ডী হইয়া গমন কুরিতে লাগিলাম ৷ কিয়ন্দুর গমন্যনম্ভর একবার পশ্চাৎ অবলো-কন করিয়া দেখি, যে যে সকল রাক্ষদ পিশা-চের অ্হিত আচার দৃটি করিয়া আসিলাম, তাহারাই আমার নিকটবর্ত্তি হইয়াছে, এবং বিশেষতঃ কাম ও পানদোষ এইছুই জন নানাবিধ সুমধ্র প্ররোচন বাক্য বলিয়। জা-মাকে তৎপথ হইতে নিরুত্ত করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল। পুর্বেষ গাহারদিগের অভি কুৎসিত বীভংস আকার দর্শন করিয়া-ছিলাম, তথন দেখি, তাহারা পর্ম মনো-হর ৰূপ ধারণ করিয়া আদিয়াছে। কি জানি তাছার। কি কুমস্ত্রণা দেয় এই বিবেচনা পূর্বাক শক্ষাভুর হইয়া আমার পার্ম হিতৈ-বিণা বিদ্যার পাশবন্তী হইয়া স্বিশেষ সমস্ত নিবেদন করিলাম। তৎক্ষণাৎ তিনি আমাকে অভয় প্রদান পূকাক ধৈয়া ও তিতিক। নামে ছুই মহাবল প্রাক্রান্ত প্রহরিকে আহ্বান করিয়া কহিলেন, "তো-মরা চই জনে ইহাঁর ছুই পাখে থাক, কোন শত্রু যেন ই হার নিক্টস্থ হইতে না পারে।" এইৰূপে আমরা বন প্রান্তে উপস্থিত হইয়া সন্ম খে এক ক্ষুদ্র প্রাস্তর দেখিতে পাইলাম ৷ তথন বিদ্যা অতি थनम वन्तन मूमधूत रामा कतिश कहिलान, " এই কুদ্র প্রান্তর শেষে যে মনোহর গিরি দর্শন করিতেছ, ঐ তোমার লক্ষিত স্থান, ঐ স্থান প্রাপ্ত হইলেই তুমি চরিতার্থ হই-বে ৷ " এই কথা শুনিয়া আমি পরম পুল-কিত হইলাম, এবং অরণ্য হইতে নিদ্ধান্ত হইয়া চিরাকাজ্ফিত কল প্রত্যাশার মহোৎ-मार मरकारत क्रकरवरण शम विस्कृत कहि-তে আরম্ভ করিলাম। অনস্তর প**র্বত সন্মিধা**-নে উপস্থিত হইয়া তথায় আরোহণ করিবা-র এক পথ প্রাপ্ত হইলাম। ঐপধের এক পা-শে এক দৃদ্রতা সুশীলা স্ত্রী এবং অন্যন্তর পাৰ্ষে এক বছ পরিস্কামী পুরুষ স্তায়মান

আছেন তাঁহারা যাত্রিদিগকে সমভিব্যা-**হারে করিয়া পর্বে**তোপরি লইয়া যাইতে-ছেন,ভাঁহারদিগের পরিচয় জিজ্ঞাসিয়া কা-निलाम, खीत नाम खेला, भू एरवर नाम यह। এই পর্বাচ আরোহণ করা অভিশয় ক্লেশকর ৰোধ হইল, এবং কিয়দুর পমন করিয়া মন্ত্র মনে বিবেচনা করিলাম যে সম্প্রতি এই স্থানেই অবস্থিতি করি 1 ভাঁহার মহীয়দী শক্তি দারা তাহ। ছা-নিতে পারিয়াকহিলেন 😷 হে প্রিয়তন ! এপর্বতের পার্শে কোন স্থানে স্থির থাকি बात मखादमा माहे, यनि आत उपात ना উঠ, ভবে অবশ্যই অবে: গমন করিতে ছইবে, অতথ্য সাবধান সংব্ধান !'' আ-मि काँहात এই मन्धरनम याता टेंडब्स आश्र रहेलाम: शत्र मू यत् विरुप्त अहे যে যত স্থারোচণ করি, ততই ক্লেশের লা-घ्र करेसा मुर्यंत दक्षि करेरक नाशिन। **অবলেদে যথ্ন প্রৱলোপ্রি উন্তার্ণ কই**-লাম. তথন কি অনিকচনীয় অনুপম সুখা-**নুভৰ হইল !** ভথাকার সুশতিল • মারুত হিলোলে শরীর পুলকিত হইতে লাগিল। फथाय द्वार, हिश्मा, विवास, विमयास, हार्था, **অভ্যাচার এ সকলে**র কিছুই নাই, কেবল আরোগ্য ও আনন্দ নিতঃ বিরাজ করি-(फट्टा इंग) मिथिस व्यामात व्यक्तकत् অব্পার আনেক সাগরে মল হইল, এবং বোধ হইল বিশ সংসারে এমন রমা স্থান আবার ভিতীয় নাই । কিয়ৎকাল ইতস্তঃ জনগানশ্বর দূর হইতে এক অপূর্বে সরো वत पृष्टि शाहत इहेल, धवर उन्नर्भनार्थ অত্যন্ত কৌতূহল উপস্থিত হইল। পরে करम करम निक्रवर्खी इरेश मृति कर्त-লাম, কতকগুলি পর্ম পবিত্র স্কাঞ্জ সুন্দ-রী কন্যা সরোবর তটে বিচরণ করিতেছেন <u>৷</u> ভাঁহারদিগের অসামান্য ৰূপ লাবণ্য প্রফুল পবিত্র মুখ্তী, এবং শার্ল্য ও বাহসল্য স্ভাব অবলোকন করিয়া অতুল প্রীতি **अश्र रहेलाम । जान्ध्या (म**िथलाम, जाँ-शांत्रिपर्गत भतीरत क्यान धनकात नाहे, व्यवह व्यवनकात्रहे काहातरमत व्यवकात हहे-রাছে। একপ বোধ হইল, যেন আনন্দ-

প্রতিমা গুলি ইতন্তর: ক্রীডা করিতেছে 🖠 অামি বিশায়াগায় হুইয়া মনে মনে বিবে-চনা করিবে শাগিলাম, ইঁহারা **দেব কন্যা** হইবেন তালার সংশয় নাল ৷ তথ্ন বিদ্যা দেবী সাতিখ্য অনুকল্প: পুর:সর **সহাস্য বদ**-নে কছিলেন . • হনি যথাৰ্থ অনুমান করিয়াছ, ই হারাদের কন্যাই বটেন, এবং এই ধর্ম্মান **छन के के दाम दाम द्वार है का बाम दा** ক গোরও নাম দয়া,কাছারও নাম ভক্তি,কা-হারও নাম কমা, কাহারও নাম অভিংসং, কাহার ও নাম মৈত্রা ইতঃ।দি সকলের নিজ নিজ গুণানুপারে নামকরণ হইয়াছে ৷ ये बादरमन क्या थव खुनस निस्तात स्थादक । ইতার। যে পর্যান্ত **সুশাল** তালা কি বলি-ব ৷ বিদারেণা যাত্রিদিবের মধ্যে ফাঁছা-র এই ধর্মাচল আত্রাহণ করেন, জীচা-विज्ञात्र हे लाग मकत उ क्रमा मार्थक। তোদার চরণ লক্ষিত স্থান সমাধিকুঞ্জ গ্রাপ্তির এখনও বিলগ্ধ আছে, অভএব এই मह्तावहत् मान क्रिया हा । " छनीय छेल-দেশানুসারে আমি শান্তি বাপীতে অবগা-হন করিয়াথে কপে শিশাও পবিত হইলাম, তাহা বচনাতীত : দেবকন্যা গণ্ড আমার প্রতিপ্রসন্ন হটয়া বিস্তুর সমূরাগ প্রকাশ ক্রিলেন। আছো তাঁছাদের কি ব্যংসল্যু, কি অমায়িক ভাব: ভক্তিস্বয়ং আমাকে সমভিব্যাহারে করিয়াসমাধি বৃজেল লইয়া ≽िल्टलग.। এপথ অত্যন্ত ব্রল, কার্ণ এপবিত্র তীর্থের যাতি প্রায় প্রাপ্ত হওয়। যায়না। পূর্বে ঐ স্থান অতি দূরবাড়ী: বোধ ছিল, ভক্তি প্রসাদাৎ নিমেব মাতে নিকট হইয়া আদিল। তৎ সল্লিধানে উ ত্তীৰ্ণ ইয়া কি আশ্চৰ্য্য ব্যাপার সমুদায় দশন করিলাম ৷ এমন নিজন, নিজল, নি-বিড়কুঞ্জ, এমন প্রেম-পূর্ণ, আমন্দ ধ্যম আর ক্থনও নয়ন গোচর করি নাই। সেপানে কি অভাব্য, কি আশ্চধ্য কি অনিকাচনীয় দৰ্শন! দেখি সে স্থানে নানা দেশীয় পর্ম প্ৰিত্ৰ-চরিত্ৰ মহালা স**কল অভি** নির্মাল স্থির সুখ সড্ডোগ পূধাক বিরাজ করিতেছেন। বোধ হইল যেন আমাকে তথার দর্শন করিয়া তাঁহাদের থিগুণ

यासक रुवेत । डाँशात्रितित ब्ला।-रिध-शृतं बानतमारकृत मुख्ने बराला-कत कतिरलं मुथान्त्व मध क्रेटक स्था পরে আমি কুঞ্জের যত অভ্যন্তরে প্রবেশ कतिलाम, उडर आमम श्रवाह तकि हरे-এবে কি অপ্রত্যক অনুপম তে লাখিল সুখবাম তাহা বচনাতীত। এছলে তৃংথের (अम गाई-" (वाश बाई. (मारू बाई. जता नारे, दिलाश नारे, मुड़ा नारे, क्रन्यन नारे, क्वत रागामतम्ब डियम, श्रमानतमत **উ**ৎস, त्रकानत्मव উৎস क्रमांगल हरमा-ব্রিত হুইভেছে ৷'' আমি এটকাপ পরমাণ্চর্যা व्यनिकिहनीय वानक माध्यत निमध हहेया ছিলাম: ইতি মধ্যে মিগাভক হট্যা দেখি. (महे मुजन्म-माक्ष - (यविष्ठ यम्ना कृत्ल हे শয়ান রহিয়াছি।

বাহ্য.বস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সমন্ধ বিচার

প্রাকৃতিক নিয়ম লঞ্জন করিলে মনু ব্যের কত ভূংখ উৎপন্নত্য তালার বিচার

> ৭৫ সংখ্যক দারিকার ২-৫ পৃষ্ঠের পর শার্টারিক নিয়ম লঙ্গবনর ফল

পূৰ্বে উল্লেখ করা গিয়াছে, যে শরীরী ব্সুমরীরাভর হইতে উৎপর হয়, **অয়** গ্রহণ দ্বারা সজীব খাকে, এবং ক্রমে ক্রমে তালার রুদ্ধি, পূর্ণাবস্থা, ক্রাস ও জঙ্গ কয় l গরমেশ্বর কি অনিঠাচনীয় অভিপ্রায়ে জীব সমুদায় সৃষ্টি করিয়াছেন, তাহা নিশ্চয় করা मूक्ति। किन्र कोशातरमत मूर्य काल-যাপন করা যে ভাঁহার অভিপ্রেড, ইহাতে সংশ্র নাই। ভাঁহণা এই অভিপ্রায় সী-কার করিলে ইছাও খঙ্গীকার করিতে হয়, যে তিনি তাহারদের প্রত্যেক অঞ্চ পূর্বেনা-क अध्िक्षात्र माधरनत ममाक् छेशरगानि করিয়াছেন। কোন শরীরি বস্তর উত্তম- का मन्त्राक्य कांब्रिट इक्ट्रेंटन ६३ भव्रम শুভকর নিয়ম্জ্য প্রতিপালম করা কর্ত্ব্যঃ প্রথমতঃ যে বীক্ত হইতে তাহার উৎপত্তি इस, खोड़ा मर्दीक्र-मुन्दर ७ गर्दाः (म अल्लुर्न থাকা উচিত, ছিতীয়ন্তঃ আজন্ম মর্ণ পর্যান্ত মবোচিত হলে বাযু, জ্যোতিঃ, অম ও ञ्यामा अरहाकत्मानरगति कवा नम्मास সেবন করা আবেশ্যক, ভৃতীয়তঃ সমুদায় শারারিক শাক্তিও মানসিক বৃত্তি যথা নিয়-(म हालना करा कर्डरा। (य मकल उडु-विके वाक्तित श्र**त्राध्तरक श्रत्र-मञ्ज्लाब**य বলিয়া জ্ঞান আছে. ভাঁচারদের সুত্রাং ইছাও বিশ্বাদ করিতে হয়, যে ভাঁহার নি-য়ম প্রতিপালন করিলে সমস্ত জীবের নিজ নিজ প্রকৃতি গুণেই সুখের উৎপত্তি হইবে ৷ মেই রূপ খাঁহারনের জাঁহাকে সর্বাঞ্জ সর্বা-শাক্তমান বলিয়া প্রতীতি আছে, তাঁ-शांद्रापद मुख्यार हेशाउ क्रमग्रकम शास्क, যে সমস্ত জীব যাখাতে প্রমেশ্বরের নিয়েম প্রতিপালনে সমর্থ হয়, তিনি ভাচারদের প্রকৃতির সহিত বাছা বস্তু নমুদারের ওছপ-যোগি সম্বত্তই নিৰূপিত কবিয়া দিয়াছেন ৷ এই পরম কলাণকর বিষয়ের ভূরি ভূরি উলাহরণ স্থলও প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে। জন यायि अर्थिका भर्गाय अष्टिं, विवर्ध ५ स्थ-काइ बारक अभेड अटनकारनक मनुषा पृष्टि গোচর হইয়াছে, এবং তদনুসারে মনুষ্যের আজন্ম মরণ পথান্ত সবল ও সুক্ থাকি-বার যে সম্জ্যন্তাবনা অ'ছে, ইয়া নিশ্চয় (वाथ करेरकरण। नर-कौल छ-घौभन्द ला-কের যেৰূপ বৰ্ণনা আছে, তাহা পাঠক-রিলে চমৎকৃত হইতে হয়। ভূমগুল-প্র-দক্ষিণকারী কুক সাহেব ও তাঁহার সমতি-ব্যাহারি সমুদার ব্যক্তি নব জীলও দীপে যতবার অবতরণ করিয়াছিলেন, ভত বারই আবাল বৃদ্ধ বনিভাযাবদীয় লোক ভাঁছার-দের দশনার্থ সমাগত হইয়াছিল, তল্লাে कान वाक्टिक दाशिकान एक्टबन नाहे। যাহারদের সর্ব্ধ শর্রার দৃষ্টি গোচর হইয়া-ছিল, ভাষারদেরও কোন অঞ্চেক্ত মাত্র ছিল না, এবং পূর্বেও যে কথন কোন ক্ষত হইয়াছিল তাহারও কোন নিদর্শন লক্ষিত হয় নাই ৷ ভাহারদের কোন অঙ্গ দৈবাৎ षारुष रुरेल विमा ঔषध श्राह्मारम जाहात আশু প্রতীকার হয়; ইহাও তাহারদের শারীরিক সুখ্তার প্রমাণ। উক্ত ছীপে ভূরি ভূরি কেশহীন ও দন্তহীন রুদ্ধ লোক দৃষ্ট হইরাছে, কিন্তু তথাবো কেহ বলহীন ও জরাএক ছিল না। সদিও তাহার। বল ও পরাক্রমে তরুণ-বয়য়্ক বাজিদিগের সম-কন্ধ ছিল না বটে, কিন্তু ভাহারদের নায় ফুর্তিযুক্ত ও প্রক্ল-চিত্ত ছিল। জল মাত্র তাহারদের পানীয়। তৎকাল পর্যান্ত্র সুরাক্ল বিষম বিদ্ধানি তাহারদের আ-মাদ্ উপ্রভিত্ত হয়নাই।

প্রায় সমস্ত দেশেই এরপ অনেকানেক লোক দেখা যায়, যেতাছারা দীর্ঘ আয়ঃ প্রাপ্ত হটয়া যাবজ্ঞীবন সুস্থ শরীরে কাল-যাপন করে * এইক্ষণে চুড়াগ্য বাঞ্চলা দেশীয় লোকের যেমন চর্কল ও রুগ্ন শরীর হইয়াছে, এমত আর কুরাপি নাই ৷ কোন মহাপাপ এদেশে প্রবেশ কবিয়াছে – পর-নেশ্বরের কোন প্রবল আজা লঞ্জন হই-(छट्ड-जाभाजरमय काम मान्य छत्रम्**छे** ঘটিয়াছে, ভাতাৰ দংশ্য নাউ! আন-কেই ক্ৰেন আমার পিভামত অভি বল-বান ছিলেন: অশীতি বংসর বয়সেও আ-মার দ্বিশুণ ভোজন ও পরিশ্রম করিছে পারিতেন। কেছ কছেন আমার পিতামছ-কে কখনত গুকুত্ব রোগে আক্রান্ত ইট্র শুনি নাই, এক্ষণে ভাঁহারদের সন্তান বলি-

য়া পরিচয় দিতে লক্ষা উপস্থিত হয়। ব-প্রতঃইহা চাক্ষ প্রত্যক **দারা অবগত** চ-अहा याहेरकरङ, अवर **घरतरक भूजः भूजः** এই (थरमाङ्घि s कतिहा शास्त्रम, सं **अ**मा।-পি ৭০ বর্ষের রুদ্ধ ব্যক্তির যত আন ভেজিন কুরেন, আমরা যৌবন দশারও ভাছা পারি না। ৪০ (৫০ বৎসত্তের মনেঃ কি কারণ বশতঃ এপ্রকার বিষম **অসমসল** ঘটিল, তাহার অং-নুস্থান করা সদেশ-চিত্তিয়ি মহাশয় ব্যক্তিদিগের সঞ্চতে ভাবে কর্ত্তব্য ! নিয়-মিত বিবাহ বা ব্যক্তিচার ধারা অপ্য নাজে প্রী সংসর্ঘ যে ইতার এক প্রধান কারণ ভাহার সংশয় নাই। পশ্চাৎ এবিষয়ের ञ्जानुमन्त्राम कता याहेरवक, अकरन या ध করণ আরম্ভ করা গিয়াছে ভাঙার বিবর্ণ কর' সাবশাক।

मनुगा व यावक्कीवस सूझ थांकिट लाउत हाडा अक श्रकात सश्चिमा इहेग्राए । श्रोकृष्ठिक निग्रस्यत दकान द्वाल अवानिश् साडे ; अकुल श्रान्ता सूथ माजातिक सा इंडेड. एटव दकान बाङ्गिएडडे हानुन श्रान्थायन प्रक्रिका। यान अक वाङ्गिरक असेटवाल अमेर्बकीवि एनण यात्र, एटव हेडा निक्ड क्षानटक इहेटव एम लवन

* জ. ক. প্রিচাত নাদের ভাঁচার . Researches into
the physical history of mankind atma gove
প্রথম প্রেক্তক জক ওলি দীর্ঘজীবি ঐপুরুষসত্ত বুল্লান্ত দ্বং
গ্রহ করিরাজেন, তলাগো ১১০ সর্চের আমধিক প্রহাযু
বিশিষ্ট কম্ভিপয় সাহিদ্দ স্থা বিস্কুণ করা নাইছেছে।

		क शहर ।	लाश दला	₹.			
ব্যঃক্র	r a				₹)fe	ا د. ۱۹ ۱ ۲ نو	١
বর্ণের জ	(পঞ	2	গের আন	'ৱক			
. 22.			220			2.9%	
25 0			2.2 "			69	
35.			>8 .			> 4	
>8.			>@ •			2	
>0.			>5.			¢	
27.			>9 .			8	
>4.			25.0	•••		8	
-	5 F 5						
						•	
3	প্রক াপ	ঞ্চাত বা	ট হরে ।প	ोश क	(M #	5	
	4	ামে বিব	ाद शिंग दर	us.			
22.			300		• • •	٩	

	িয়া						
	-	सम्ब	15 ·				5
				গভেষ কে			
22.				20.			5
200		,.		26 .			8
30 .				39+			*1
, 1 5	ণ্ডিয়						
३४० म	e স্	. दश	₹				2
wi	মেরি	8 1 ·	भएस्य	আন্দিয় :	र की	T CM	本
>>4	(3	a)			.,		٥
280	(3	. 4	ামী)				ì
AB CH	হে ব	平石)	क्रि ३:	» সং স ার	7 40	म প্র	318 e11
লাশ ভূম	14 40,	बिं द	म ।				
				7 477 77K1	- /9		ofar an

ভারত্বহাঁর লোকের মধ্যে কোন কোন ব্যক্তি ১০ বংসর পর্যান্ত জীবিত ছিলেন এনত তাবণ করা গিছাতে। মারের্কালোলো নামে এক তন বিনিল মেলীয় মনুষ্য মুনাধিক ৫৫৫ বংশর পুলে লাফিল্যন্তে আকিহাছিলেন। ডিনিক চিয়া গিমাছেন যে ভাগারার
অন্তানির জাতি দীর্ম ছাঁতি, কেচ কেচ সবল ও সুর্
পরীত্রে ২৫০ বংশরও স্থীবিত ভাতেন।—Marco
Polo's Travels translated by Maradien p. 663.

কারুণিক প্রমেশতের নিয়ম প্রতিপালন কবিলে সকলেরই তাদৃশ প্রম সুখ সড্ডো-গে অধিকার আছে)

चात्रक जीत्नारकत क्षेत्रव रामगाव छ-जाइद्रव जिल्ला क**्रिन. या अ जरमाद्र मन्**या যে বিনা ক্লেশে সমস্ত শারীরিক ও মানসিক ব্যাপারে সম্পন্ন করিবেন ইছা প্রমেশ্রের অভিথেত নহে; যেহেত্ ভাঁচার একপ व्यक्तिशास इडेल धानवकारेल (वपना ७ ७६-পরে দৌর্বল্য ও পীড়াউপস্থিত হইত না। किस धारियरमञ्ज यङ एव जाना निमारण. তদনুদারে বোধ হয়, যে এ যাতনাও পর-भावादात नियम लज्जानत कल। हेउद्रा পীয় চিকিৎসফেরা ও পর্য্যাটকেরা দেশ বিশেষের ইতর আতীয় ক্লাদিগের প্রসব বেদনা ও তদানম্ববিক ক্লেশের বিস্তর লাঘৰ দেখিয়া ভাষার স্বিদ্রেথ বিবরণ লিখিয়া-**ছেন।** এলিসর সাহেব *গে কয়েক উদাহরণ প্রদান করিয়াছেন, ভাচা পশ্চাৎ লিখিতে-**हि। " ১৮२२ शेकोरम क**रेनए ध्र अ-স্কঃপাতি কোন স্থানের† একন্ত্রী সন্থান প্র-সবের ২া৩ দিবস পরে সেই শিশুকে পৃষ্ঠ **(मटन लहेशा এक निवरंग क्षांस ३८) ठल्फन** ক্রোশ গমন করিয়াছিল। ফলডঃ প্রতি দিনই এপ্রকার ঘটনা হইয়া পাকে ৷ সচ-রাচর এপ্রকারও প্রতাক্ষ করা যায়, যে স্ত্রী-লোকেরা শস্যক্ষেত্রে শস্যক্ষেদন করিতে করিতে তথা হইতে অপস্ত হইয়া কিঞিৎ দরে গমন করে, এবং কাহারও সহকার ব্যতিরেকে সন্তান প্রস্ব করিয়া কর্মা স্থানে প্রত্যাগমন পূর্বক দিবাবলান পর্যান্ত তথার কর্ম করে । কিঞ্চিৎ কুলতা ও বিবর্ণতা বাতিরেকে ভাষারদের মধনীতে যাতনার চিছ্ল দেখা যায় না ৷ তানকানেক স্ত্রী প্রস-বান্তে ভদ্দিবসেই ৩।৪ক্টোশ পথ চলিয়াছে, এমত প্রমাণ প্রাপ্ত হওল গিয়াছে। নিয়-মাতিচারি ধনাটা লোকদিগের পরিবারে এথকার বিষয় দুর্ঘট বটে, কিন্তু চুর্বি লো-কদিগের মধ্যে এ সকল ঘটনা সর্বদাই ঘটে ৷ যথন একপ অনায়াস-সাধ্য প্রস-বের ভূরি ভূরি স্থল প্রাপ্ত হওয়া যায়, তথন যে আনেরিকা খণ্ডের পূর্বতন জাতীয় প্রীলোকের। পূর্ক্যদিগের সহিত বন পর্যান্তন করিতে করিতে কিঞ্চিৎ পশ্চাম্বর্তিনী হইয়া সন্তান প্রসব করে, এবং তাহাকে প্রতদেশ সংস্কাপন পূর্বক অবিলম্নে স্মান্তিরে সমভিবাহারিলী হইয়া অমণ করিতে থাকে, এসকল রুভান্ত অবশ্য বিশ্বাস করা স্থিতে পারে।"

লারেল সাহেব কহেন* "পর্যাটকেরা ভূরোভূরঃ উল্লেখ করিয়। থাকেন, যে আ-মেরিকার আদিম লোক, নিপ্রো ও অন্যান্য অনভা জাতীয় ক্রীদিগের অভ্যুপ্প প্রসব বেদনা হয়। সামান্য ও লঘু আহার ও ক্রমাত পরিশ্রম দ্বারা ভাহারদের শরীর দ্রাতিই ও বলিষ্ঠ হয়, এপ্রযুক্ত ভাহারা সাতিইয় ভোগশালি অলস মনুষ্যদিগের ভোগা ভূরি ভূরি ক্লেশ প্রাপ্ত হয় না। কিন্তু প্র ভোগাকর স্বাধ্য ইতর জাতীর বহু-পরিশ্রমি ক্রীদিগের প্রসব সময়ে পুথোক অসভা জাতীয় অবলাদিগের নায় অভ্যুপ্প ক্লেশ ঘটিয়া থাকে।"

দক্ষিণ আমেরিকাতে আরৌকেনিং
নামে একদেশ আছে, তথাকার ব্রীলোকেরা প্রস্বান্তে তৎক্ষণাৎ সর্ব্বাপেক্ষা নিক্টবর্ত্তি নদীতে অবতরণ করিয়া আপনার ও
সস্তানের অঞ্চ প্রকালন করে, এবং তৎপরে আপনার নিয়মিত কর্ম্ম সম্পাদন করিছে
গমন করে†।

প্রসব ছইতে কট হইলে সে স্থলে সিম্পন সাহেব: এক প্রকার ঔবধগু প্রয়োগ করিতে স্মারম্ভ করিয়াছেন, তাহাছে বেদনার প্রকান্তিক নির্ভি হয় ৷ তিনি সহক প্রসবের স্থলেও ঐ ঔবধ প্ররোগের পরামর্শ দেন ৷ যদি তিনি এবিধরে ক্ত-

^{*} In his Pricingles of the criminal Law of Scotland,

[†] Aberdeen

In his Lectures on Physiology, Zoology, and the Natural History of man. 1822.Vol.2nd, p. 190.

[†] Stevenson's Twenty years Residence in South America. Vol. 1. p. 9.

Professor Simpson of Edinburgh.

[¶] Sulphuric ether.

কার্য্য হয়েন, তবে প্রসব বেদনার বিস্তর নিবারণ ছইবেক। ইহাতে সর্ব-ছুংখ-নিবারক ও সর্ব-ছুংখ-দাসক পরম কার্ক্রণিক পরমেশ্বরের ভক্তিতে কাহার চিত্ত আর্দ্র হইবে? অভএব ইহা সম্যক্ সন্তাবিত বটে,যে মনুখা নিজ প্রকৃতি গুণে যাবজ্ঞীবন বল. স্বাস্থ্য প্রসার্থীরিক ও মান্সিক সুখ প্রাপ্ত হইতে পারেন। তথাপি কি কারণে এই সমস্ত শুভ সাধন না ছইতেছে. তাহার অনুসন্ধান কর্ত্ব্য

পূর্বের উল্লেখ করা গিয়াছে, যে বীজ नक्तिक-मन्त्र्वं ७ मक्त-मूलकव-मन्त्रेन मा इ हेरल **उद्य**रभन्न हुक्त दा श्रानी **मुक्**तक्ष म-তেজও ক্তিযুক্ত হয় না৷ ক্ষত, বানি-স্তেজ, বা জীন বীজ বপন করিলে ভদ্ধৎপন্ন वृक्ष्यः (काक्काकोम क्य. ७ अविनाम सर्वे कडेला बाखा मुनुषाणि यावकील क्षानित विष्ट्राउ अनिश्**टम**त किছू है **इ**त वि**टम्स** নাট। ম**নু**যোৱাকি এনিয়ম প্রতিপা**লন** করিতেছেন > পালন করা দূরে ধাকুক, দাঁহার৷ একাল পর্যান্ত ভাহার সভাও স্পর্যু ৰূপে নিৰূপিত করিতে পারেন ন'ই। যদিও অস্পষ্ট ৰূপে জ্ঞাত হইয়াই থাকেন, তথা-পি প্রতিপালনের আবশ্যকতা সম্যক্ জল-যুক্তম করিতে নমর্থ হয়েন নাই! এনিয়মের অজ্ঞান ও অবহেলন বৃশ্তঃ কত কত ভাস্প ব্যুক্ত, দুর্বাল, রোগাক্রান্ত, ও জরাগ্রন্ত 🔭 ব্যক্তি বিবাধ করিয়া কীণজীবি সম্ভান উৎ-পলকরে। তাহার কি নিকোধ। কি নির্দয়! ভাহারদিগের কিছু মাত্র স্লেহ নাই ! তাহারা একবার ভাবে না, যে তাহারদের সন্থানেরাও পৈতৃক ও মাতৃক গুণের এপি-কারি হুইবেক, রোগার্ছ ও নিস্কেজ শরীর প্রাপ্ত হইয়া চিরজীবন অশেষ যন্ত্রণা ভোগ করিবেক ও অচিরাৎ কালগ্রাসে পভিত **হইবেক। কেবল মৃততাও ইতর প্র**র্তির প্রাবলাই ইহার মূলীভূত কারণ ৷ বিবে-চনা করিলে যাহারা ঈশ্বরের নির্মে অগ্রস্কা করে, ও তিনি ঐ নিয়ম লঙ্গনের প্রতিফল স্বৰূপ ত্ৰুথ নিয়োজন করিয়া জন্মারা মনুষ্যের विवाह मश्कात विवरत यब्भ विधि ७ উপ-

দেশ প্রদান করিয়াছেন, তাহাও অব্রেলন করে,ভালারদের হইতেই এমত সকল বাা-পাব সম্ভাবিত হয়। বিচার করিয়া দেখি-লে কাম. ও লোভই এমত আবৈধ পাণি-গ্রহণের প্রধান প্রবর্তক। সম্ভানের ক্ষীণভা ও যাতনা ও পিতা মাতার উৎকঠা ও শোক **अहे अ**कर्छनः करमात्र मम्हिष्ठ कला । प्रुडी-গ্য বঞ্চ জুমি এবিষয়ের স্থাক্ উদাহরণ স্থলঃ যে স্থানে পিতামাতা সচেটিত ছ-ইয়া দশবধীয়ি বালকের, এবং অতি ক্ষীণ-कीवि চিররোগি সম্ভানেরও বিবাহ (দন, এবং যে স্থানে কন্যা ক্ষিপ্ত মংগ্রেগে এন্থ চ্ইলেও কলঙ্ক ভবে তাহাকে পাত্রস্থ করিছে হয়, সে স্থানের লোক যে এমত নি वी या, प्रमार्थ ३ व्यक्तमाना करेगाहि है। 'ঘাশ্চৰ্যা নতে! যাহা হউক, ইহা সিংগু জানা উচিত,যে পরম কারণিক পরমেশ-রের নিয়মের প্রতিপালনেই সুখ ও লব্দ-নেই ছঃখ।

অন গ্ৰহণ, জ্যোতি ও বায়ু সেবন, যথাযোগ্য বস্ত্র পরিধান, ইত্যাকার জড়-পদার্থ-ঘটিত ব্যাপার স্থারা শরীরকে নরল ও স্বস্থ ক্রিতে সত্ন ক্রা**ুস্কাতে**ভাবে কঠ-ব্যাঃ এই সমূদায় বিষয় যথোচিত ৰূপ সম্পন্ন করা দিতীয় শারীরিক নিয়ম। কিন্তু মনুষ্টোর: কোন কালে এনিরম সুচার: কপে প্রতিপ**ালন করিতে সমর্থ হয়েন নাই**। निशम् न। का निरदा उपमुमारत कार्य कता কথনত সম্ভাবিত নতে ৷ আমণ্ডদেন শাৰু রীরিক প্রকৃতির ভত্তানুসন্ধান না করিছে। কিক্রে তাহা জ্ঞাত ছওদ। নাম্ শারীর-चान ' अ भावीतिक निवन पक्ष निवस শিক্ষানা করিলেই বা কি প্রকারে শা-রীরিক প্রকৃতি জানা যাইতে পারে? আর বাছবন্তু সমুদায়ের সহিত শরীরের কি ৰূপ সম্বন্ধ ভাগা অবগত হওয়া উচিং, এবং ছৎ माधनादर्थ के मकत दस्त भन्ना ७ ६० मम्-দায় ভাতি হওয়া, ৩৫ প্রক্ষা ভারা মানব দেহের সহিত তাহার সমন্ধ নির্পণ করা

Anatomy দে বিল্যা ছাত্রা শ্রাতের আচলত কলি আত কওলা মানে বৈলাক শালে তাছার নাম
" শারীরহাম " বলিয়া উক্ত ছইয়াতে।

কর্ত্বা: আমরা এই সমুদার বিষয় থত দশন করিতে পারিব, ততই প্রমেশর ভাষাত্তদর শারীরিক কার্য্য সাধন ও সুখ বিধান নিমিত্ত যে সমস্ত শুভ-কর নিয়ম সং-স্থাপন করিয়াছেন, তাহ, নিরূপণ করিতে সমর্থ হইব, এবং ততই ওঁছেবে প্রাথ্পর দশলকর প্রম-সুখ স্কর্মণ ভপলক্তি করিয়া স্পার স্থানন্দ নীরে নিম্যা হইব ।

মহাভারত

'খাদিপৰ্বা

পৌলোম শর্মা—অফীম অধ্যায়

বিধ্ন প্রক্রিনর ২০০ পৃথে ছবল বা কুল না কিলেন ভূগু পুত্র চাবন সুকনা।
গর্বে প্রস্কিত নামে অভি তেজস্বী তন্য উৎপাদন করিলেন। এবং প্রমান্তিও ঘৃতাতী
গর্বে কুলু নামক ও কুকুও প্রমান্ত্র। গর্বে শুনক নামক পুত্র জন্মাইলেন। সেই সুপ্রসিদ্ধ মহাতেজাঃ কুকুর আদ্যোপান্ত ভাবং বৃদ্ধান্ত সবিস্তর বন্ন করিব, হে ক্ষি প্রবর শৌনক! শ্লুবিণ ককুন।

शुक्कारन ज्ञारकन नाम विद्याह, সরু ভূত হিতকারী, তপঃ পরারণ, বিদ্যা-दान अक मश्रि ছिल्लन । त्मरे नमस्त গন্ধার্জ বিশ্বাবসু সহযোগে মেনকা নামুট অক্সরাগর্ডবতী হৃইরাছিল। নিল্-🚁 निर्मा (ननका यथाकारण स्नारकणा-শ্রমে উপস্থিত হইয়া তথায় গর্ভ পরিত্যাপ পূর্বক নদীতারে প্রস্থান করিল। সেই शर्ड धक भत्रम मुक्ति कना कचिता कि-য়ৎক্ষণ পরে মহযি স্তাকেশ তথায় উপ-च्छिक इस्सः (**प्रडे (मदकना) प्रमुनी प्रमाः थ**-মূতা কনাকে অসহায়িনী পরিতাকা দে-शिता अठा ह क्रम्भाविष्ठे व्हेत्वन, आत তাহাকে কন্যা অব্বেশে পরিপ্রাহ্ করিয়া স্থান-স্থান নিবিবশেষে প্রতিপালন করিতে লাগি-**(सन ७वर यशाकरम विधिपृर्वक ठा**हात काठकामि नमस किया निकार कतिराम। কন্যা সেই শুভপ্ৰদ আক্ৰমপদ নথ্যে দিৰে नित्न वृद्धि शाहेरछ लाजिल । त्महे कना। কপে গুণেও শীলে দকল প্রমদা অপেক। বর: অর্থাৎ উত্তমা হইল, এই নিমিত্ত মহর্ষি তালার নাম ' প্রমন্তরা '' রাখিলেন।

এক দিবস প্রমাত নক্ষর রুক্ক আশ্রম বাসিনী প্রমন্তবাকে নয়ন গোচর করিয়া মদন বাবে আহত হইলেন এবং স্বীয় প্রিয় বয়স্য গণ দার। নিজ মনোরথ আপন প্রতার গোচর করিলেন। তদনুসারে প্রমাত স্থাকেশ সালিগানে উপস্থিত হইয়া আপন পুরার্থি নেই করায় প্রাথনা করিলেন। স্থাকেশ করেয়া করেলেন থাকার করিয়া করেলেন।

বিবাহের কিয়দ্দিবস পূর্বে এক দিন প্রন্থর স্থাপণ সমভিব্যাহারে ক্রীড়া করি-তেছিল; তাহার ক্রীড়া স্থানে এক সর্প সুপ্রতিত ছিল। আসয়য়য়ঀাপ্রমন্থরা অঞ্জাতমারে সেই সপ্রের উপর পদার্পণ করিল এবং পর্প কুপিড হইয়া তৎক্ষণাৎ বিভাল দশন লারা দংশন কবিবা নাজ বিঞ্জী বিবর্ণ বিচেতনা ও মুক্তকেশা হইয়া ভূতলে পতিতা হইল। তক্ষশনে তদীয় বক্ষণ নিয়ানন্দ সাগরে নিমা হইলেন। কিন্তু সে এইর্লেপ গত জীবনা ও ঞ্জীনা হইয়াও পুন্নর্বার রমণীয় দর্শনা হইয়া সুপ্রার নায় শোডা পাইতেলাগিল। কলতঃ প্রমন্থরা প্রারেশীয় স্থিকতর মনোহরা হইল।

এইরপে ভূতল পজিতা গতপ্রাণা প্রমদ্বাকে তাহার পিতা ও অন্যান্য তপস্থিগও
অবলোকন করিতে লাগিলেন ৷ অনভর
স্বস্ত্যাত্রের, মহাজানু, কুশিক, শঅ্মেথল,
উদ্ধালক, কঠ, শেত, ভরগাজ, কৌণকুৎন্য,
আর্কিবণ, গৌতম ও পুক্ত-দহিত-প্রমতি
এবং অন্যান্য বনবাসি তপস্থিগণ অনুকল্পা
পরহল হইরা তথার সমাগমন করিলেন ৷
তাঁহারা সকলেই সেই স্কাক সুন্দরী ক্ন্যাকে ভুজাল বিষ প্রভাবে কাল্যানে পভিতা
দেখিয়া বিলাপ ও পরিতাপ করিতে লাগিলেন ৷ রুক্ল তদ্ধনি পুর্বাপেক্ষায় অবিকতর কাতর হইয়া তথা হইতে প্রস্থান
করিলেন ৷

নবম অধ্যার বৌতি করিবলেন নেই সমস্ভ সহাত্মা

<u>जान्त्र गन ज्यात उपिति हे हेटल इन्स्</u>रि-তান্ত চুঃখিত হইয়া গছন বন প্ৰবেশ পূৰ্ব্বক উচ্চৈংশ্বে ক্রন্দন করিতে আরম্ভ করিলেন : এবং শোকাভিভূত হইয়া কাতর বচনে বছতর বিলাপ করত স্থীয় প্রিয়া প্রমন্তরাকে স্মরণ করিয়া কহিতে লাগিলেন "এক্ষণে আমার পক্ষে ইহা অপেকা আকেপের বিষয় আরু কি হুইতে পারে যে আমারও বান্ধব গণের শোকোদীপন কারিণী সেই কুশাঞ্চী ভূশব্যায় শয়ন করিয়া আছে, গদি আমি দান, তপ্স্যা অথবা গুরু জনের আ-রাধনা করিলা থাকি তাবে আমার প্রিয়া পুনজী বিভা হউক ; আমি জন্মাবধি সংবহ চইয়া নান। ব্রতানুষ্ঠান ক্লরিয়াছি একবে। (मडे भूगा बटल मर्खाक मुन्मते। अमधतः অবিলয়ে মৃত্যু শ্যা হইতে গাত্রোপান ক্ৰক " !

वकेबारण करना भएता कुकृतक खोषारिर्थ দুৰ্গখত ও বিলাপ পরায়ণ অবলোকন ক-রিয়া দেবদুত তিৎসম্বাপে সমাগমন পূর্বক किटलम " क वर्षाण्यम् सात्रा! जुमि छः-থিত চইয়া ঘটো বাসনা করিতেছ তাহা অসম্ভব ৮ যেহেডুমনুশা মৃত্যু গ্রাসে পতিত ছইলে পুনজাবিত হয় না। গন্ধানের ও-तम उ व्यन्महात शक्त मधुष्ठा अहे कना त আয়ুংশেষ হটয়াছে ৷ অভএৰ বংস! রুখা শোকে অভিভূত হইওনা! কিন্তু ম-হাত্মা দেবভারা পুর্বেষ ইফার এক উপায় স্থির করিয়া রাখিয়াছেন যদি তাহ। করিতে চাছ পুনর্বাছ প্রমন্তরাকে পাইতে পার ।" क्रक कहिलाने एवं स्मवनूष ! स्मवणाता कि छै-পায় নির্দ্ধারিত করিয়াছেন যথার্থ বল: আমি শুনিবা মাত্র ভদনুযায়ি কার্য্য করিব ; বিলয় করিও নাঃ ত্রায় ব্যক্ত করিয়া আমার পরি-ত্রাণ কর "। দেবদুত কহিলেন " হে ভৃগু मस्तः। जूमि च्छार्या अम्बदादक चीम जा-यूत्र व्यक्तिंग धानान कत्र छारा रहेलारे त्य भूनत्राय कीवन आश्र इट्टक् । अक् क हिटनन " आमि ध्यमबद्वाटक आयूद अर्थ-প্রদান করিভেছি দে 'পুনজী বিত হউক'। उथन शक्तर्राञ्ज ও स्विमू ७ छेड्टा धर्मात्।-**ब्बर विकटि शिश्व। निरंबणन करिएलन** क

ধর্মরাজ যদি আপনি অনুমতি করেন তবে
করুর ভার্যা মৃত প্রমন্ত্রা তদীয় অর্ধ আযুং
প্রাপ্ত হাইনা পুনর্জা বিতা হব '' ধর্মরাজ্য করিলেন হে দেওদূত। সদি তোমার ইছা কয় রুরুপত্নী প্রমন্তর কুলুন এর্দ্ধ আযুং পা-ইয়া পুনর্জা বিতা হউক''। দেবরাজ এই কপ কহিবামাত্র ব্রব্রিনা "প্রমন্তর কুকুর অর্দ্ধ আযুং লাভ করিনা সুপোপিতার নাম মৃত্যু শ্যা হাইতে গারেগপান করিল।

ভবিষা রুষাতে ইছা দু উ চইয়াকে যে ভার্যার্থে মহাতেজস্বা রুক্তর এইক্রপে অন্ধ আয়ুঃ লুপ্ত চইয়াছিল।

এই **র**পে রুকুর অর্ক আফুঃ লাভ ছার। श्रमधतात भूनकात कीतन श्रीक्ष इस्त ভাছাদের পিতার। পরম শ্রীতি প্রাপ্ত হই-য়া শুভ দিবসে উভয়ের উদ্বাহার্ধি সমা-ধান করিলেন; ভাঁচারাও পরস্পর হিতৈধী হুইয়। পরম মুখে কাল যাপন করিছে লা-গিলেন৷ রুকু এবপ্পুকারে ছুর্লভ: ভার্য্যা লাভ করিয়া দর্শ কুল ধুংসার্থে প্রতিজ্ঞা ক-রি**লেন। স**র্পদশন মাত্র কোণ প্রতন্ত্র **হইয়া শস্ত্র হা** €ার স্বারা ভাহার প্রাণ সংহার করেন। এই রূপে দর্প বধ প্রতিজ্ঞার্চ্ছ-ইয়া এক দিবস মহাবন প্ৰবেশ পূৰ্য**ব**ক **অ**ব লোকন করিলেন এক অভিবৃদ্ধ জীণকায় ড়গুভ†শয়ন করিয়া আছে, অনন্তর তিনি কাল দণ্ড সম দণ্ড উদ্ধৃত করিয়া তালাকে আঘাত করিতে উদাত হইবা নাত্র ডুগুড় কছিল হে চপোধন! আমি তোমার কেনু অপরাধ করি নাইঃ তবে তুনি কেন অক্টি রুণে রোষাবেশ পরবুশ হইর: আমার প্রা-ৰধের উদ্যম করিতেছ।

मन्य व्यक्तास ।

ক্লক কহিলেন "হে উরগ এক ছুই ভুক্লক আমার প্রাণ দম; ভার্যাকে দংশন
করিয়াছিল; তদবধি আমি সর্প ব্ধ বিষয়ে
এই অনুভজনীয় প্রতিক্রা করিয়াছি, যে
"দর্শন মাত সপের প্রাণ দণ্ড করিব;"সেই
নিমিত্ত অদঃ আমি তোমার প্রাণ দংহার
করিতে উদ্যত হইয়াছি" ৷ তুপুভ কহিল

^{*} अज़ु। श्रृक्ती औ।

[†] কৌড়াসাপা

ে হে হেশাধন! যাহারা মনুষ্যকে দংশন করে নে সকল সপ সভস্ক জাতি : ডুগু ভেরা সে কপ নহে : অভএব সর্পের নামগন্ধ পান্টরা নিনাপরাধে ডুগু ভদিগের প্রাণ হিংসা কর : ভোনার উচিত নহে। ডুগু ভদিগের বির্তি ও সুখভোগ অন্যান্য সর্পের সমান নতে : কিছু অনর্থ ঘটনা ও ছংখ ভোগের সমর সমান ভাগা; অভএন ভুমি ধর্মাক্ত হা গুডাভাদ্শ হডভাগা ডুগু ভদিগের হিংসা করিও না।

ক্র সপের এই মুক্তি মুক্ত কাতর উপ্পি
শ্রবণে তাহাকে ডুপ্তু ভ নিশ্চয় করিয় তাতার প্রাণ নধ করিলেন না অনন্তর প্রাণান্ত
বচনে জিজ্ঞাস করিলেন হে ভুজগ! তুমি
কে, কি নিনিভত্বা ভুমিসপ যোনি প্রাপ্ত
হইয়াছ বল। ডুপ্তু ভ কহিল পূর্ব্ব কালে
আর্মি সহলে পদ নামে ক্ষ্মি ছিলাম গারে
ক্রেমাপাপে ভুজগল প্রাপ্ত হইয়াছি। ইহশুনিয়া রুকু কছিলেন হে ডুপ্তুভ: ব্রাক্ষেণ
কি করেণে কুপ্তে হইয়। হোমাকে শপ দিয়াতেন এবং আব কত বালাই বা তেমোকে এই জলেবরে কাল যাপন করিকে তেইবেক । ইহার সাবদেশ শ্নিতে বাসনা
করি!

একাদৰ অধ্যায় ৷

पुषु छ करिल श्रांकारण गगम नारन এক সভাবাদী তপোনায়া-সম্পন্ন ব্ৰাহ্মণ খামার বাল্যকালের স্থা ছিলেন! এক দিবস তিনি আঁগুংহাতাানুভানে সাতিশয় ব্যাসজ আছেন - এমত সময়ে আমি বাল প্রতার সুলভ কে ভূচল পর চার চইয়া ত্ণ ৰ'র। এক ভুজজন নির্মাণ করিয়া তচেনক ভয় **প্রদর্শন করাতে তিনি মুদ্ধি ও হ**ইংজন : কিন্তু চেত্তন। প্রাপ্তি হইলে কোপানলে ৮% रुवेश। कहित्सन यांमादक उर अन्तर्भन कति-বার নিমিত্ত যাদৃশ নিবা য্যা সর্পনিশ্বাদ ক রিয়া**ছ আমার শাপে তুমি তাদৃশ** সপ *ত*-ইর। জন্ম আছেণ করিবে। আনি ভাতার ভপসারে প্রভাব অবগত চ্লাম : অতএব অতি শর উলিয় হইরা প্রণতি পূর্বেক কুতা-% लि भूरहे मणुर्य म्खाईशा निरंत्रम कति-লাম "ভাতঃ! আমি স্থা বলিয়া পরিহাস

করিবার নিমিত হাসিতে হাসিতে এই কর্ম করিয়াছি: এক্ষণে ক্ষমা করিয়া শাপ নিবা-রণ কর "।

খগম আমাকে এইনপ নিভান্ত কাতর দেখিয়া মুক্র্ম্মুছঃ উষ্ণ নিখাস পরিভাগি পুরুক বাাকুল চিত্তে কহিলেন "দেখ আন্মান কহিরাছি কোনক্রমেই জাহার অনমণ চইকে না; তবে এখন যাহা কহি অবধান পুরুক শ্রেণ করিয়া সর্বকাল শ্রেণ করিয়া রাগিবে। মহ্ন্মি প্রমাতির ক্লুক নামে এক প্রমা পবিত্র পুত্র জ্বিরার দানে ভোমার শাপ মোচন হইকে ।"আনপনি ক্লুক নামে খ্যাত ও প্রমাতিরও আছুল্ল বটেন। আপুনরে দশন প্রাইলাছি এক্ষ্রেল। আপুনরে দশন প্রাইলাছি এক্ষণে প্রার্থ হইয়া অংশনাকে ছিলোল প্রায়ে হইয়া অংশনাকে ছিলোল প্রায়ে হইয়া অংশনাকে ছিলোল প্রায়ে হইয়া অংশনাকে

শাপত্রতী সহস্রপদ ইহাকহিয়া ডুণ্ডুড কপ পরিত্যাগ পুরুকে পুরুকার স্বীয় ভাস্বর স্বৰূপ প্ৰাপ ক্টালেন এবং কহিলেন তেম -চাপ্রভাব **সর্বর জীবভোষ্ঠ রুরে**! অচিংসা পরম ধর্মা; মতএই ব্রাহ্মণের কথন কোন প্রাণি ছিংসা করে। উচিত নছে। বেলের আদেশ এই যে ব্ৰাহ্মন সদা প্ৰশান চিন্তু, বেদ বেদাঙ্গবৈত্তা ও নর্ব্বভূতের অভয় প্রদ হইবেন ৷ অহিংসা, সতা বচন, ক্ষা ও বেদ ধারণ ভ্রা**দা**ণের প্রম ধর্মা। জ্যুপ্রি डाभाग, डाफारभत्र कडिंग अर्थ व्यवस्य कत्रा বিধেয়নহে। দও ধারণ উগ্রাখভাবত। ও প্রজাপালন এ সকল ক্ষত্রিয়ের ধর্মা। দেপুন পূर्यकारण जनरमकरत्रत गरक मने कुरलंत হিংসা আরম্ভ হইয়াছিল। কিন্তু তপঃ প্রভা ব সম্পান বেদ বেদাক পারগ দ্বিজভোষ্ঠ আন্তীক মহাশয় হইতে ভয়ার্ড সর্পদিনের পরিতাণ হইল ৷

कामन व्यक्ताश

ক্ষক কালে হে দিজোন্তন কি নিমিত রাজা জনমেজর সপ্তিংসা করিরাছিলেন কি নিমিত্তই বা দিজ শ্রেত বীমান্ আন্তীক তালারদিগের পরিত্রাণ করিলেন, মামি তালা সবিস্তর শুনিতে বাসনা করি ৷ কিন্তু "আপনি রাজন দিগের প্রমুখাৎ মহাকল প্রদ্যাতীক চরিত আদ্যোপান্ত ক্ষম কবিৰেন "এই বলিয়া সেই ঋষি অন্তর্থান করিলেন। ক্রুল অন্তর্হিত গাধির অন্তর্থার করিলেন। স্বাস্থার বন ভ্রমণ করিলেন। পরিশেষে একান্ত ক্লান্ত, মোহবল ও বিচেত্র প্রায় হইয়া ভূতলে পতিত হইলেন। অনন্তর লক চেতন হইয়া নিরন্তর ঋষিবাকা চিন্তা করিতে করিতে আশ্রম প্রত্যাগমন পুর্বাক নিজ জনক সন্থিবনৈ সমুদায় নিবেদন করিলে তিনি ভাগোকে সম্পূর্ণ আন্তর্গিক। প্রাধান প্রবাধ করাইলেন।

ইতি সর্পদত্র প্রস্থাবনা নামক পৌলোম পর্বাদমাপ্ত।

অপূৰ্ৰ পুরের স্বটবতনিক পাঠশালা

এই পত্রিকায় বার্যার প্রকাশ কর। গিয়াছে, যে বাজালা ভাষার অনুশীলন ব্যতিরেকে এদেশে সাধারণ রূপে বিদ্যা প্রচার হইবার স্মুগ্র্না নাই: আঙ্এব এবিধয়ে কুত্রাপি কাহারও যত্ন দেখিলে প্রম আপ্যাধিত হওয়া বায় ৷ সিংহর ও তৎপাশ্ব বৰ্ত্তি কোন কোন গ্ৰামের কতি পয় ভদ্ৰ লোক ঐকাহইয়া অপুনৱপুৱে এক বাজল। পাঠশালা সংস্থাপন করিয়াছেন, ণবং আপনার্দিগের সাধ্যানুসারে তারস্থ বালকদিগকে শিক্ষা প্রদানার্থে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন। ঐ পাঠশালার বিবরণ সুস্তক **পাঠে অবগ্রত হ**ওয়া গেল, যে ১৭৭০ শকের **২বৈশাখে ভালা সংস্থাপিত লয়, অভা**জ কালেই প্রায় ১০০ একশত বালন **उथात्र शाठार्ट्य नियुक्त इत्त. এव**र जल्ब-সরের মধ্যে আবার একশত ছাত্র রুঞ্ হয়। সমুদায়ে দশ শ্রেণী আছে, তাহার প্রধান প্রধান শ্রেণীর ছাত্রেরা কিঞ্ছি কিঞ্চিৎ সংকৃতও শিক্ষা করে। প্রাঠশা-লার কর্মা সম্পাদনার্থে সৌহৃদ্যজনিক: না-মে এক সভা হইয়াছে, এবং ঐ সভার 🐠 ষ্য নিৰ্বাহাৰ্থে অধ্যক্ষ, কৰ্মাধ্যক প্ৰভূত করেক জন কর্মচারি নিযুক্ত আছেন। 🕫

দ্বাতিরেকে এক পুস্তকাগার স্থাপিত হট্রাছে. তাহাতে ক্রে ক্রে অপ্ অপ্ করিয়া পুস্তকত সংগৃহীত চইতেছে ৷ ক-স্তুতঃ ঐ সভার ও সৎ সংক্রা**ন্ত পাঠশালা**র নিয়ম ও বিবরণ পুস্তাক করেও সংস্থাপকদি-ণেৰ সমাক্ ছিত জিলাধ ও উদায়া স্ভাৰ প্রকাশ পাইতেছে। যাংগতে গ্রামশ্ব লো কের পরস্পর বিবাদ বিসয়াদ নাগাকে. তাহারও চেষ্ট। করা ঐ সদার এক প্রধান **উर्फिना। कंश्ता** (भागाय विपास কৃত দুর কৃত্কার্য) ≢ইতে পাহিবে ন তাহ। একাণে নিশ্চন করা কঠিন, কিন্তু ভাঁছারদের এ অভিগ্রায় অতি শভ-ञ्चाहक वृक्षित्व इंडेरवक्। भाष्ट्रवर्ग अ মস্ত ও দূরস্থ ১১৩ ব্যক্তি পাঠশলেরে আনু कुल (तर्थ भामिक, वार्थिक, बा धक कालीन দান স্বীকাপ করিয়।ছিলেন। হাদিও অবা ক্ষদি:গর ইজানুযায়ি ধন সংগ্রহের উপায় নাই, তথাপি কাঁচারদের স্বীণ যড়ে ৭ फैटमार्ट करम करम পार्रमालात छेर्नाह হুইয়া অবিষ্ঠেছে ৷ উচ প্রারন্ধ আছে, (य विकारणाद्यत पाकाम अवस्था वास कि আবোছ ছট্লে তাহার ভারিচের্র আবিক সঞ্জাবনা থ'কে, কিন্তু সূৰ্ভ, গ্ৰাপ্ত আমা द्राप्ततः (भर्म)या लाक अग्रन नि.च क्रेसाइक, যে গাঠশালার ছার্মিগের নিকট অস্ত্য পথ (রভন ঘলগের গ্র'মখ চিত্তির শক। ट्या म^{्या} स**प्टेक**,धामञ्जूल एकह शक्**ला**त् ঐক; হইয় যথ। শক্তি কিঞ্ছি কিঞ্ছি প্ৰদা-ন পূৰ্যবক্ত এ প্ৰকার শুভক।যা। সাধ্যে মনো যোগি হওয়া পরম মক্তলের চিক্লা বিশে ষতঃ ভাজার। যে বারোয়ারি পুরুত ও বিবা হোপলকে ধন নিজ্গীড়নের কঞালা সমস্ত রহিত ক্রিয়া এই নিয়ম ক্রিয়াছেন, যে শতৎপরিবর্টে গাঠশালান স্বাধের্থ বর ও * कन्या कर्छात्र भिक्ये किलिय्य 🙉 स्थ्य नाउसा যাইরেক'' ইছা অভ্যত্তরণ করীয়া যাদ यमामा अरियत (लाटक के हाब्राम्ब अहे माधु मृश्वे:एकत अनुविक्ति इ.स. **अदः कास** মনোবাকে: তদনুখায়ি ৬ নুঠখনে **যত্তা**ন্ হয়, তবে বাজলাদেশের বি**তর হিতোন্নতি** হইতে পারে, অন্ততঃ বিদ্যা**শিক্ষা করা যে**

समुता भारत्वज्ञ खरुतिशाक, हेश खरिण-८१२ प्रवेदपाधाद्वरत्व झ्मस्थम हहेरछ भारत्व ।

ইচ্ছাধাকিলে শামানা ব্যক্তি হইতেও डेशकात मर्ल्या आभातरमत तालाशुक् বেরা এক শত বাঞ্চলা বিদ্যালয় স্থাপনার অনুমতি দিয়া কি হাস্যাস্থাদই হইয়াছেন ৷ বোৰ করি ঐ ঋপূর্বাপুরস্থ বিল্যালয়েও যে ৰূপ শিক্ষা হইয়া থাকে, ভাঁহারদের শত পাঠশালার কোন পাঠশালায় সেৰুপও হয় না। যদি ভাঁহারদের এদেশীয় লো-**ককে** বিদ্যাদান করিবার মানস খাকে, ভবে ये शृत्काक भावेगानात हेन्नाक विगत्य कि-ঞিৎ মনোযোগ করা উচিত। বাঞ্চলাভা-यानुमीलान लालित कि भर्याम छेभकात **ম্ট্রার সাম্ভাবনা আছে, তালা ভাঁমারা** ও পাঠশালার ছারা অনারাদে পরীক্ষা করিয়াও দেখিতে পারেন। গ্রামবাষি লোকেরা সমাক্ উৎসাহি আছেন, তাহ্য েছ যদি ভাঁহারা অনুকল হয়েন,তবে জবি-वार्य के पार्ठमानात मुक्तत्रज्ञांक इहेटक भारत, धरः अभवाशत आरमत लारक उ আশাকে অবসরন করিয়া দেই দুফীতের অনুগামি হইতে পারে। গড় বংসর প্র-গণের বাণিক পরীক্ষা काइल, মহানুষ্ঠাব वीष्टेन माटकत अटमभीत लाटकन्न अकाणीत ভাষা শিক্ষা বিষয়ে যে ৰূপ অনুরাগ ও উৎ-লাভ প্রকাশ করিয়াছিলেন, উদনুসারে ভাঁকার বিশিষ্ট ৰূপ মনোযোগ দেওয়া ক ইব,। তিনি শর্মাপেকা বাজলা ভাষায় বিদ্যাপ্রচার ছার। এদেশীয় লোকের যন্ত উপকার করিতেও তদ্যারা যেপ্রকার ছি-তেঘিৰণে গণ্য হইতে পারিবেন, এমত . অ'র কি ছুতেই নছেঃ যেতেওু সাধারণ কুপে বিদ্যা প্রচার হইয়া সর্বর সাধারণ লোকের কুসংস্থার সমুদায় নম্ভ হইলে অপ্লাপ্র বিষয় অনায়।**দে সম্পন্ন হইতে প**ারে ৷

ঋথেদ সংহিতা —-প্রথমনগুলস্য অফীমান্বাকে

२७गरा असमानुदादक - व्यक्तेमः मृद्धः

কণুক্ষবিং গায়ত্ত**্তন্দঃ**• ক্রেচোদেবতা

¢02

> क्ष्मुखाय श्रदिनंतरम् श्रीष्टुनः । भाष वर्षातम् । त्वादिम् गर्श्वभः स्राम्

্'কথ' দলা প্রস্থাধ একছা মক ন দেশেন ক্ষমণ আভিশ্যেন সুৰ্কর্ম তেন্ত্রং 'ব্যাক্তম' গ্রাহ্ম আদু শাম 'প্রকেতনে' প্রকৃষ্টভাননুকাম 'র্যাহ্ম উমাহ লেক্ত্রমায় অভাষ্টভান্তরান ক্রাধ্য 'ক্রাহ্ম' অ ভিশ্যেন প্রকৃষ্ণাধ 'ক্রেম' অধ্যান্তর্মিস্কায

১ উৎক্ষ জান বিশিক্ত, অন্তই কাম দাতা, ও প্রবৃদ্ধ, এবং হুদরন্থিত রুদ্র দেব-তাকে কবে আমরা আনন্দ জনক স্তব্ ক-বিব।

\$30

२ यथी त्ना अपि जिः कत्र १ तथा त्ना विश्व क्रायथा गर्द । यथा त्नाकार्य क्रियर ।

২ 'অনিভিঃ 'ভূহিং 'নং' অঞ্জাঞ্চ 'কৃদুৰ্য্য' কৃদু সৃষ্ঠি ভেষঞ্জ 'যথা' যেন প্ৰকাবেণ সিচ্চান্ত ভ্ৰণা 'কৰম' করোডু কিঞ্জ' যথা'' পৰে 'অঞ্জীয়াখুমহি-কানিপশ্বে 'নৃভ্যঃ' পূক্ষেন্তাঃ গৈণেত্ৰে 'থাবে 'গো জাত্যে কৃদুিয়াং নিমান্তি কথা করোডু কিঞ্জ 'যথা' 'ভোকায়' অপভ্যায় নিসেতি তথা করোডু।

২ রুদ্রসাবলি ভেষজ আমার্রদিগের যে প্রকারে সকল হয় ভূদেবতা ভাষা করক। এবং যে প্রকারে আমারদিকের পথাদিতে ও পুরুষগোজাতিতে এবং সরানেতে সেই ভেষজ সকল হয় তাহাও করুম।

মিত্রাবকুলে কুলোদেবতা

655

ত ষ্থা নোমিত্রোবরুলোষ্থা রুদ্রশ্চিকেতিত। যথা বিশ্বে স-জোর্যায়

ও 'মিএই 'বক্সবই চ 'নই' আম্মান 'সথা' গেন প্রকাবেশ 'চিকেডজি 'জনুগ্রাহাজ্যন ফানাডি ক্সুই' আপি 'সথা' চিকেডডি 'সফোসফ' সমানপ্রীভ্যত 'বি বু' সহস্প দেবাং 'মথা' চিকেডভি তথা ভ্রতু ভ

ও মিত্র, বরুণ, রুদ্র, এবং সমান প্রীতি বিশ্বিত দেবতা সকল যে প্রকারে আমার-দিগকে অনুগ্রহ পাত্র বোধ করেন এমত হউক 1

• কুদোদবভা

623

8 गाथनिङ (मयनिङः कृषः क्रवीयट्यकः । ज्ञाः प्रमु-मुमीमट्यः ।

৪ কেনুৰ অভিলক্ষ্য দৰ্শ শ্ৰং চাং বিক্ৰাপ্ৰিপুৰ হা ' ১৯ ' প্ৰক্ৰিক সক্ষয়ক চেকাৰি ১২ 'সূচ্য' সুক্ ' ইয়াহে ' চাচায়াহে কৰিলৰ তদুৰ ' গাং পাছিৰ' ক্ষৃত্তি পালক ব ' মেপেডিএ' যা চাপালকৰ ' ফলাহাড সঞ্জ উদক্ষকেনীয়াধাপেডিএ'

৪ প্রশংসাঘোগ্য, যজ্ঞ পালক, জল ৰূপ ঔষধ বিশিষ্ট রুদ্র দেবতাকে লক্ষ্য করিছ: আমরা ত্রুস্পতিপুদ্রসম্বন্ধি সকল প্রজার হিত জনক সুথ প্রার্থনা করি !

670

a 'যা কৃষু 'সুৰ্যাঃ' 'ঈৰ 'সুৰ্যাবৰ 'খাতে, দীপিমান্ সমেৰাং প্ৰাধিনাং 'চিত্ৰভাং' 'ইচ' 'বোচতে 'প্ৰীভিকরং কৰতি তথা সচ কুচদুৰ্যি 'দে ৰানাং' মধ্যে 'থেকি:''বসু 'নিবাসছেপ্ৰচ চচত ১৮ ৫ যে কৃত্র দেবতা সূর্য্য সদৃশ দীপ্রিমান্ আর পুরনের ন্যায় সকল সনুযোর প্রীতি কর হয়েন, তিনি সকল দেবতা হইতে শ্রেক এবং নিবাসের কারণ হয়েন 1১৩২৩।

u 59

७ मझै कत्रठाहरू मुगर त्य-यार्थ त्यत्या । नृत्कानार्वतेत्का-गर्दा ।

১ নি আম্প্রাক্র আম্প্রতিত আম্প্রায় ত্থা, গ্রেম্ব মেসজ্ঞানি পুরুষাক (গ্রেকো ভিজ্ঞা ইফাল্লিক (নুমার) পুরুষেক্রা নারি ভাগ জাভাগ বিশে গ্রেম্বালিক নুধ্য মান্ত্রিয়াম (অম্পুরুষ (কর্তি (কর্মিক) নুধ্য

৬ ক্রদেবতা আমারদিগের অব সং কলকে ও মেথ সকলকে এবং গ্রে: সকলকে সুলভ সুখ প্রদান করেন।

সোমোদেব্ভা

000

৭ অংশ সৌম ত্রিষ্মহিনি ধৈহি শৃত্যা নূণাং। মহি জুবল্প-বিনুম্ণং।

ৰ ছে গোচ দেৱ গুলাং পুৰুষ্টা প্ৰক্ৰান্ত প্ৰজ্ঞ পৰিচাৰা পিন্ত কৈন্তে অকাসু আহি আছি কোন নিৰ্দেশ্য স্থান হল সৈতি সূত্ৰ কুলিন্ত্ মুণ অনুভ্ৰৱস্থাক্ত আহি আহে আহি নিৰ্দেশ্য

৭ হে সোম দেবতা তুমি শত পুরু-বের পর্য্যাপ্ত শ্রী অন্মদাদিতে অধিক স্থাপন কর, এবং প্রচুরবলবিশিষ্ট মহৎ সন্ন জা মারদিগকে প্রদান কর ৷

भ मा नेः त्माम পরিবার্গোম। রাতযোজ্ভরত । আ नेहत्मा-বাজে ভজ।

৮ ' সোমপ্রিবাধঃ' সোমদা পরিজোরাধকাঃ 'নঃ' অন্মান্ 'মা-লওবস্তু 'মাহিৎলভ তথা 'ল্যাভয়ঃ' প্র- সং মা' শুধর্ম। তে 'ইন্ফো' সোম 'বালে' জ্ল বিবয়ে 'ন: 'আমান্' আ' স্থতঃ 'ভ্জ' সেবর।

৮ সোম বাধক শক্ত সকল যেন আমা-রদিগকৈ হি°সানা করে এবং অন্য শক্ত-রাও যেন বিফুনাকরে। হে সোম দেবতা! অন্ন বিষয়ে আমারদিগকে সর্বতোভাবে ক্ষণকর।

यनुरों भ इन्हः

\$ 30

ন যান্তে প্রজাঅমৃত্বস্য পরশিন্ধানল্ডস্য। মৃদ্ধা নাভা
শোনবেনআভূবন্তীঃ সোম বেদায়তাহণা

৯ ছে থোম বিভ ভিব বার বিধান কোনে ক্রিকা প্রাথম ক্রিকা কালে প্রাথম ক্রিকার বার বিধান ক্রিকার বার বিধান ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার কালে ক্রিকার ক্র

৯ হে সোম দেবতা! মধ্ব রহিত ও ট-জম স্থান বাসী যে ভূমি তোনার স্তবকাবী যে সকল প্রজা তাহারদিগের শিরস্থানী। হইয়া সল্লন্মপুত্র যজ গৃহে কালনা বর : হে সোম দেবতা ' তোলার ভূষাকারী প্রজা সকলকে ভূমি স্কাতোভাবে জান্ম ৷ ১০০২ ১

বিজ্ঞাপন

পুর্বে যে সকল অক্ষর তত্ত্ববোধিনী প্রিকায় ব্যবহার হটত এইকংশ অন্দ নুতন অক্ষর প্রস্তুত হওখাতে তাকা বিক্রয় করা যাইবেক খাঁহার প্রয়োজন হয় তিনি তত্ত্ববোধিনী সন্ধার যন্ত্রালয়ে আফ্রো করি লে তাহার বিহিত মূল্য নির্দ্ধারিত হট-কেনা

> শ্রীন্পেন্ত্র । সম্পাদক।

বিজ্ঞাপন

শ্রীযুক্ত ব্রজনাথ মুখোপাধ্যায় মহাশযের পরিবর্ত্তে শ্রীযুক্ত অধিকাচরণ দত্ত গুপ্ত
মহাশয় রুঞ্চনগর অঞ্চলের কর্মা কর্তার
পদে নিযুক্ত হইরাছেন, তদক্ষলের সভ্য
মহাশয়ের: ভাঁহার স্বাক্ষরিত অঞ্চীকরে
পত্র প্রাপ্ত হইলে স্বীয় স্বীয় মাসিক দাতব্য
প্রনাম করিবেন।

औन्द्रशक्तनाथ टीकूर ! मन्त्रामक ।

বিজ্ঞাপন

নিমু লিখিত পুরাতন পুরুক সকল অংশ মূল্যে বিক্রার্থ প্রস্তুত আছে যাঁহার প্র-যোজন হয় চন্ত্রেবানিনী সভার কর্ম্যালয়ে মূল্য প্রেরণ করিলে প্রাপ্ত হুইবেন : জ্ঞানচন্দ্রিকা প্র পদার্থ বিদ্যাগার ৷// বিজ্ঞানসের্ধি ৷০ এক্সিন্সেন্সর্ব ৷০ ইংলিশ রাহর সং ৩ ৷০ ইংলিশ স্পোলিং নং ১ .০ শ্রীন্পোন্স্রাথ ঠাকুর : সম্পাদক ৷

বিজ্ঞাপন

যে সকল সভা মহাশয়ের। নিয়মিত ৰূপে পত্রিকাদি প্রাপ্ত না হয়েন তাঁহার: অনুগ্রহ পূর্বকৈ পত্র দারা অবগত করি-বেন।

> औन् रशक्तनाथ ठाकूतः। मण्यानकः।

আক্র এই তহংগোগনী পান্তিকা কলিকান্তা মহানগরে ঘোড়ালাঁকোন্ডিত তহগংগোগনী সন্তার কার্যালয় হট-তে প্রতি মানে প্রকাশিত হয়।—ইহার মূল্য একটাকা। ২৫ অগ্রহামণ সমূহ ১৯০৬। কলিগভাবাঃ ৪৯৫০।



তত্ত্যরোধিনীপ্রতিকা

ঋণৰ। ঋণ্টেৰে। গজুৰ ইন্নন মান্তৰ্গনাথকলে। বিজ্ঞাকা পাৰ্যক্রপ্ন নিজক্রপ্ন কিল্লেন্ড। ি অধী পরাম্ম, ভনতন্ত্রপ্রিত গাতে ১

ঋথেদ সংহিত।

প্রথম্মগুলস্য নর্মানুরাকে প্রথমং সূক্তং

প্ৰস্কল্পধিঃ অযুক্তোত্ততীছনকঃ অশ্বিনে, ১৯৭৩:

634

১ অগ্রে বিবিদ্যুষ্পশ্চিত রা ধো অমর্ত্তা। আ দাশুর্থে জাত বেদোবহা সমদ্যা দেবা উবর্ব ব

> ছে মরণ রহিত জাতবেদ। অগি '
ভুমি উধা দেবতার নিকট হইতে বিনিম্ব আবাসন্থিত নানাবিধ ধন আনয়ন ক্রিম-ভুবিদ্যান্তা ফজনানকে দান কর, এবং মুজ দিবসে উষংকালে প্রবৃদ্ধ দেবতা স্কল্পে কচুক্ত, সচোহণকীছক

663

২ জ্টোহি দূতো অসি হ্বা-বাহনোগলে র্থীরিধরাণা । স জ্বুজিভান্য্যসা সুবাধীদন্ম । ধ ভি অবেগ্রহৎ ।

ব্যাপ্তরে এই প্রক্রোলিন্নারে আন বি প্রক্রোপেলিকা নতা দেন কাম স্ক্রোর করা যান্ত্রী কমিলেকোর অঞ্চলনার অঞ্চল করা মন সমার সার্ব্যু আনিলার কেবলালার জিকলা মত্র ১৮৬ সাম স্বিভান্তর্মী স্বাধার ক্ষেত্র নির্বাধিক ক্ষেত্র স্বাধার ক্ষেত্র নির্বাধিক ক্ষেত্র স্বাধার ক্ষেত্র ভ্যাসুবর্গি একেন

তে সকল লোক সেবিত, দেবদুন্ত, হবিকরা হক, বজরণ ভূত আগি ৷ কুনি অধিনী
কুমার লয়ের এবং উবাদেবতার সহিত দি
লৈত ছইয়া আসারনিশ্বক কোন্দ্র বিধি
বিশিক্ষ প্রচুর জন্ম প্রদান কন্

'আংজার্কট্রন্দ। অগ্রিদেব্য

62 %

० जांगामुङ् वंशीयण्ड वर्म्य

গিং পুরুপ্রিয়ং। ধূমকেতৃং ভা ঋজীকং বৃৃষ্টিষু যজ্ঞানীমধর-

০ 'অন্য' অলা অফিন দিনে সংখ্ 'অগ্নিখ্' ব নীমহে প্রার্থনামহে কীদুশং অগ্নিখ 'দৃত্য' বাকালাক 'কেছু' 'নিবানহেত্তুখ' পুক্রপ্রিখ' সহনাম প্রিথ্য' ধ্য কেতু' 'পুমরুপর্যক্ষাক্রম্প 'ভারেন্ধীকর্ম প্রানিদ্ধানা লক্ষ্ত্য' ব্যক্তিয়' উলংমালেন্দ্র দ্রানাম 'সক্ষানামান 'অধ্বর্গ্রেম্বার বিলেশ্য
'অধ্বর্গ্রেম বার্গ্রেমিক'

ও বার্ত্তবিহ, নিবাস কারণ, বছপ্রিয়, পুমধুজ, উত্তম প্রভালস্কত, উদাকালে যক্ত মানের বাগ ধাধক অগ্রিকে আমন। যক্ত দিবদৈ প্রথমাকরি,

অয়ুজ: সভোরহতীঞ্জ

৪ শ্রেষ্ঠ থবিষ্ঠমতিথিং সা হতং জুটংজনীয় দাশুরো দে বা অচ্ছা যতিবে জাতবেদ মুদ্রি-মীলে বাফিষু।

গ্রাকীস্ট কাকোলেয়া কেবা টি ইবান নাবান জিলা সেবান কাকা আছিব বৈদৰ আছিব বৈদৰ প্রায়াক বিদ্যালয়ক বিদ্যালয

s অনাধা সকল দেবতাকে অনুকূল ক-বিবার নিমান্ত প্রেষ্ঠ,যুবতম, নিরন্তর গম-নক্ষন, প্রশস্ত হোমাধার, হবিদ্যাত। যজমা-নের প্রতি প্রীত, জাতবেদা, অগ্নিদেবতাকে উষ্কোলে ন্তব্ কবি ;

a> 2

৫ স্তবিষ্যামি স্বামহং বিশ্ব-স্বাম্ত ভোজন। অগ্নেত্রাতা-রম্ম্তং মিষেধ্য সঞ্জিতং হ্ব্য-বাহন চাতাহচ। ৫ 'জমুড' মরণর্যিত 'বিশ্বস' কুৎক্রসা আগছঃ
টোজন 'পালক 'কবাবাছন''য়িবেগট বজাই চে
'কর্মে''বিপ্রসা 'এতিবেং' রক্ষকং 'অমুডং' ইঞ্জিখং' অভিশ্যেন স্থাবিং 'আং''অচং' অনুষ্ঠাতা 'স্তুদি-লামি' ক্যিন করিয়ামি।১৩৮৮।

৫ ছে অমর,সর্বলোক পালক,ছবির্বা-চক, পূজনীত অয়ি! তুমি সকল জগতের বক্ষক, অমৃত স্থকপ ও সদা ঘাগামুঠায়ী অভ্যব আমি ভোমার স্তব করি । ১। ৩। ২৮।

020

अ मुन्दरमाश्टवाधि श्वाट यं
 विष्ठं मर्यु जिल्हा यं कि छहा। अर्थः
 श्वा अञ्जिहा यं की विटमं नमुमा
 रेमवा जर्मः।

৬ হে সুবলে প্রেছ অয়ি: ভ্রি গজ
মানের জবনীয় মাদেক শিখা বিশিষ্ট ৷ ভুরি
মূলর রূপে ছত হইরা আমারেদিলের অ
ভিপ্রায় বোষগম্য কর, এবং প্রক্রেণ খায়র
ভীবনার্থ আয়ুঃ রুদ্ধি করিয়া দেব সহন্ধি
জনকৈ পূজাকর।

Q 2 3

৭ হোতারং বিশ্ববেদসং সং হৈছা বিশইন্ধতে। স্থাবহ প্র রুহূত প্রচেত্রসাংখ্যে দেবা ইহ দ্ববং।

৭ 'হোতারং' চোমনিজপালকং 'বিগবেৰসং' সঞ্জং 'আ' জা' আগুন 'বিলঃ' প্রঝা' সাং ইছতে সমিছতে সমাজীপয়ন্তি 'হ' অসু। 'পুরুত্ত' ক্রুডি ভিরাতৃত হে 'অগ্রে' 'সং' আং 'প্রচেডপা প্রকৃতি জান্যুকান্ 'দেবাঁ 'দেবান্ 'ইছ' কর্মণি 'দুবহ' কিপ্রং, আংবহ' আভিযুকোন প্রাক্ষ

ৰ হে হোম নিষ্পাদক, সক্ষত্ত, অগ্নি।
সমস্ত প্ৰজা তোমাকে সন্যক্ষপে প্ৰদীপ
করে! বস্ত কর্ত্ক আছত তে অগ্নি। ভূলি
প্ৰকৃষ্ট জানবান্দ্ৰতো সকলকে এই কৰ্ণে
শীঘ্ৰ আনয়ন কর।

0.00

৮ স্বিতারম্বসম্প্রিন। ভগ মুগিং বুটিউষু কপং। কর্সিস্তা সূত্রেমান ইন্ধতে হ্বাবাইং স ধ্র:

চ খারব শোভন্যত্ন করে করে করে সারীকৃ উমকোলেন আন্ত ভিত্তপা, জন্য আদিলক। সারিভ বং শিক্ষাং কৈছিল আম্বানী ছল শিক্ষান করে এইনি দেবনে আম্বানী ভালি স্বিত্তলামান্ত শিক্ষান অধ্যিত্ত্যামান করুলো স্বানু করে করে শিক্ষান অধ্যান হৈ কিছিল ভালেত স্বানী করে। শিক্ষান

চ কে শেভিন বগেরুজ অগ্নি: ভুমি
উঘাকালে আছতি রূপ অগ্ন উদেশ করিও
সবিত্রাদি নিবত: সকলকে অনুষ্ঠন কর
সোমাভিধবকারী কৃণ্ডি মেধাবি ঋত্মিক
সকল তবিং প্রাপক তোমানে প্রদীপ
করে;

e: b

२ পতिर्राध्वतानामर्टः मृत्या विभामि । উषर्वुधव्यादेश सम मेनीलस्य स्मर्गा व्यक्त सर्माः ।

৯ বে 'অল্পে' বিশাং প্রস্লানাং 'অজবালা ' ল গানাং 'প্রতিং পালকং অং 'দুড়াং 'বিভাগের 'চ চি জবাল 'লি প্র্ 'উহর্ধঃ' উহরেলে প্র্যান ব্রুলাং 'সুর্যাদশিনং' দেবা 'দেবান 'অসা এছিন দিনে 'নামপীত্যে' দোমপানার্থং 'আস্ক '৯. ব্রুলাক্ষ

৯ ছে অগ্নি 'তুমি প্রজাদিগের ফল-পালক দূত হইরা থাক, অতএব উদাকালে প্রবৃদ্ধ সূর্যাদর্শি দেবসাদিগকে সোমপা-নার্থ যজনিনে লইয়া আইস।

429

১০ মণ্ডে পূর্ব। অনুষ্ঠোবিত।
বসেঃ দীদেও বিশ্বদশতঃ । অসি
আ্মেদ্বিতঃ পুরোজিতে। হসি য
তেত্তব্ব মান্ধঃ। ১। ১।২ ১।

তে দিয়াবলৈ বৈশ্বীধ্যনালন দদর, আগ্রা বিধাননীত দেবলৈ বিকাননীত দ্বিদ্যালনীত দিবলৈ ক্ষান্ত দ্বিদ্যালনীত দ

 তে উত্তম প্রকাশ কুপ প্রকাশ আরি। সকলের দর্শনীয় জুমি গ্রহীত ক শাকালি লক্ষা করিয়া দীপি পাইতত ভাতৃশাখুলি মনুযোগ নাবাস জানে চর্মার হঙা, এবং অনুষ্ঠেয় কর্মাতে বিদিন্ন পূর্মা দিক্ স্থানী জুমি সাল্বিন্যজমানের ভিতক বা হঙা াবান্ত্রী

6. 1

১১ নি স্ব) যজ্ঞসা সাধনমত্রে হোঠারমুলিজ[ি]। মনুগদ্ধের ধী মহিপ্রচেতসংজীরং দূতমমর্জ্যং।

১৯ তে আছো বিদ্যান হৈছে খান্ত দথা লাগদেশোলিকগতি চৰত বসং 'জে জাগালিক' নিজাকিক বাজিকালিক' প্ৰজান প্ৰতিভাৱ কৰিছে কি ভোজাৰত অভিন্ত প্ৰতিভাৱ কৰিছে কি 'জীৱন' শান্ত্ৰাত বালিকালিকত্ব দুভ্য দ্বানাত দু কল্পনিত 'আনহাত লাক্তৰতি হত্য ক্ৰানাত 'আনহাত লাক্তৰতি হত্য

১১ হে অগ্নি! দেখন ননু তোমাকে যজ্ঞ স্থানে স্থাপন করেন। সেই ৰূপ আনর। এই যজ্ঞ স্থানে তোমাকে স্থাপিত করিতে। ছি ৷ তুমি যজ্ঞ নিস্পাদক, ঋত্বিক্ স্থৰণ. বসন্তাদি ঋতৃতে যাপ কর্তা, প্রক্রম জান যুক্ত, শক্রবর্গের আয়ুং ক্ষয়কর, দেবতাদি-গের দুক্ত ও অমর।

>২ যদেবানাং মিত্রমহং পু-রোহিতাংস্করোযাদি দ্র্ত্যং। সিন্ধোরিব প্রস্থানতাসউর্মযো-গেপ্রাজন্তেঅর্চ্চয়ং।

১২ তে মিএমগং মিএগাৎ একিল্ডাৎ পূঁকা অপে বিং যদা 'পুৰোতিকঃ অং বেদেঃ পূৰ্কিন্যাৎ স্থাপি কঃ 'আছল টেন্দ্ৰ ক্ষেত্ৰ কালাছ' দুতাং দুক্তক লাদা প্ৰাথোৱা কদানিং অপ্তোঃ কৰ 'আক্ষঃ দিপুৰাং 'ভাল্ডাং দিপুৰাং 'সিকোই বিধান দুক্তাং প্ৰকৃতিক নিস্কাহ ক্ষিত্ৰ কিলাং ভূৱাকি ক্ষিত্ৰ কিলাং ভূৱাকি ক্ষিত্ৰ কিলাং ভূৱাকি ক্ষিত্ৰ কিলাং ভূৱাকিছে।

২২ তে ঋদিক্-গণ-পুজনীয় আগি। য-খন জুমি বেদির পুক্জাগে স্থাপিত ও যজ স্থানে আইন্তিত কইয়া দেবতাদিগের দূত-কর্মা সম্পাদন কর, তথন তোনার। শ্বা স-কল সমুদ্রের গভীর ধুনিযুক্ত তরঞ্জ সমূত্রের নায় দীপ্তি আপ্র হয়।

830

১৩ শ্রুধি শ্রুৎকর্ণ বক্লিভিদ্দে বৈর্নমে স্থাবভিঃ। আসীদয় ব হিষি সিত্রো অধ্যমা প্রতিষ্ঠাবা-নোঅধ্বং।

১० व्ह 'ब्राब्कम' क्षांतममध्यानगर कर्नाकार गुका 'काग्रा' क्षामानार तहसर 'ब्राक्ष' पुन् वः शिक्षा (मतः क्षा 'क्षार्गम' वन के क्षारम् 'क्षान्तीत्रातः 'शास्त्र काव्य तहराकार काक्ष्य क्षात्रात्राव करम् 'नगर्नाकः' क्षान्त्रसीमाग्रिया क्षाया मधानार्गकिकः करेगाः 'ताल चित्र वहरा मध्य 'क्षार्भकार्गक्ष करेगाः 'ताल चित्र वहरा 'मध्य क्षार्भकार्गक्ष करेगाः 'द्राव

১৩ হে আহবণ সামর্থ্য বিশিষ্ট কর্ণযুক্ত অধিঃ ভূমি আমার্লিগের বাক্য আহবণ কর, মিত্র, অর্থামা ও প্রাতংকালে যজ্জভূমি গানি অন্যান্য দেবতারা তোমার তুল্য গমনশীল অন্যান্য অগ্নি দেবতার সহিত যজ্য ভূমিতে আগমন করিয়া দ্রাসনে উপ-াশন করুন।

605

১৪ শৃণুষ্ব স্তোমং মক্লভঃ সুদান-বোংগ্লিজি জ্বাঋতাব্ধঃ। পিব-তু সোমং বৰ্কণোধৃতন্ত্ৰতোংশি-ভাগমুখসা সজুঃ।১১৩।৩০।

১৪ 'মঞ্চ: 'দেবাং অম্মনিদ 'শ্রেমণ স্থেমণ স্থেমণ বিশ্বন 'ম্বানসং' মৃদ্ ফলসা দাতাবং 'জখ্রিজনাং 'অগ্রিজ্যারানীগোমুন্গোদেবু মঞ্চ্মু তাদুশাং 'মডারেধং 'দজসা বর্জনাং। তথা 'পুতর্তঃ'
গৃহীত্রনা 'বঞ্দং' দেবং 'জবিস্ত্যাৎ' দেবাস্ত্যাৎ
খ্যস্তিবত হা সিঞ্চ সহ 'দোমণ' 'পিবস্তু'।১০৩০-

১৪ সুন্দর ফলদাতা, অগ্নি প্রধান, যজ্জ বর্জক, মরুদ্দেবত সকল আমারদিপের স্তোত্র প্রবিণ করুন, আর কর্মানুষ্ঠান রুত ব-রুণ দেবতা অধিনীকুমার মধের ও উবা দে-বতার সহিত সোমরুদ পান করুদ।১)৩,৩০

বৈক্ষব সম্প্রদায়

टिण्डना मन्त्रमान

নবদ্বীপ ও শান্তিপুরের কতিপয় বিষ্ণু-ভক্তি-পরায়ণ ত্রাহ্মণ এই নর্য সম্পুদায় সংস্থাপন করেন, তমধ্যে চৈতন্য,নিত্যানন্দ, ও অবৈতানন্দ সর্বাঞ্গিণা।

ু চৈতনের অবতার বিষয়ে বাকলা দেশীয় বৈক্ষবদিগের সহিত ব্রা ক্ষণ পণ্ডিতাদি
অক্যান্য লোকের অত্যন্ত বিবাদ আহে:
বৈক্ষবেরা চৈতন্যকে ব্যং ভগবান্ প্রক্ষকের
পূর্ণাবভার স্বীকার করিয়া তাহার প্রান্তগ্যাহেণ্ডার বহন বলিয়া ক্ষেক্

শোক ইজ্ত করেন°। তাঁহারদের প্রতিপক্ষ পণ্ডিভেরা কহেন,বেদ, স্মৃতি, পুরাণ, এবং প্রাচীন বা নবা সংগ্রুংকার দরের কোন প্রস্থে টৈচতন্যাবতারের প্রমাণ নাই, অতথ্য তাহাকে কোন প্রকার বিষ্ণু, বা অন্য কোন দেবতার অবহান নলিয়া অক্ষাকার করা যায়না। বৈক্ষবের। টেচতন্য দেকেই স্থাপনার্থে থেনন অনন্ত সংহিতার বচন প্রাচ করেন, অনেকানেক প্রতিবাদি পণ্ডিত পশ্চাল্লিখিত তন্ত্রব্রাকরের স্লোক সমুনায় উদ্ধৃত করিয়া সেইকপ্রাহার নিরাশ করেন; যথা

বটুক উবাত।
চতেতু জিপুরে দৈতে। দুর্জনে ভীনকর্মাধি জন্তানশাধ কিং কটাই। ডিকং সাংগ্রহাকণ
জন্তাক আত্তানিকার্য বদক্রেভিত্রত প্রক্রোত্র স্করাজ্ঞান করে।
বেস্তাহি সক্ষরাজ্ঞান করে। বিনা নাস্তি কক্রন ধ্

मावस जिलादारिक द्वारिक हर व्यक्त व्यक्ति। ক্ষমা প্রবাদিস্ট আছোনছ কলোভিয়া। শিবধর্মবিনাশার লোকানার যোততে হবে। বিশ্সার্থাৎ শিস্ভক্রানাম্পানান্যুথ্রচন হ व्य दलकारमाम क्योता थाः भागिताई अञ्चत माः। নিত্যানকোছি গালের প্রাস্বাদীগাছাবজঃ ছ व्यक्तिकान्य शिरमन कार्यम नन् कारियाः। প্রাপ্তে কলিছবোচেন্তে বিক্রারগদীরলে দ **ब्रह्म**काका किल्तः नवीरेनकिकाम्रैतः। উপপ্রতাস লোকানা মাতাল' মালাদিশত ৪ ব্দলৈর যলীভিন্ত সম্ভারে: পান্যোনিভিঃ। পুর্বিতর মহীৎ কৃৎস্লাৎ ফল্প গলছনীলম্ব। बहरवामामवाः क्रावाः म्हणार्के विज्ञानीताः। মানুষ্ দেহমাতিলে ভেড্ৰা- প্ৰিপুরাংশহান ও श्रहाशांक्रकिनः क्रिक्षिक । क्रिक्स भट्ट । শ্বনুপাত্রকিনস্টানো উপলা থকন: পরে । मर्क्यभाभवजाः (यिष्ठिर रेनकशाकावदाविषः) भद्रजाम दक्षपामामु म्हणाशध्या इतिस्रलाम । **क्षथप्रः व**र्धवाप्रः मुः माक्काविन्धः मनाउन् । **ষিতীয়মত্ল৲** শেষৎ তুদীয়ল মহেশবং র

ৰটুকভৈরৰ ভগবান গণেশকে মিজাদা করিলেন, যে বিশুরাসুর হত চইলে পর ভাগাব আসুর তেন্ত্র নইট

ধর্মদংকাপনার্থায় বিহরিস্যায়ি ইতর্হং।
কালেনকং ভর্জিপপংকাপনিস্যায়্যতং পুনঃ।
কৃত্বলৈসন্য গৌরালৌ গৌরচল্লঃ লচীমুতং।
প্রস্থুপৌরহরিপৌরো নামানি ভর্জিলানিয়ে।
শেষ সংহিতা।

লংপ্রতি কোন ব্যক্তি চৈচন্যাবভার ও উচ্চার পূ-লাদির প্রামাণ্যার্থে কুলার্নীয় উপানসংহিতা নামে এক গ্রন্থ রচনা করিয়া মুদ্রিত করিয়াছেন ৮ ভদ্ধির ইচন্যভাগরভাদি অন্যান্য আধুনিক গ্রন্থও আছে।

হটল কি লাচার নাশ চটল না, আয়াকে চে গুণ না-মক কছা, দেহেত ভোষা ব্যক্তিবেকে আনা সর্বজ্ঞ নাই। ভালাতে ভগবান গবেশ কলিকেছেন, ত্রিপ্রাস্ত মহা-দেবের বারা নিহত ছউদা শিরওমা নাশের নিমিত্ত তিন প্রের স্থানে ভৌকাল নিজ্যানন্দ, **আছৈত এই** ভিন রূপে **অ**বভীর্ষটল, গ্রেনারী ভাবে **ভর্নের** উপলেশ করিলা তা"ভচাধী ও কাভিচা**বিনী ও বর্ণ সঙ্ক** বের ছারা পথিনীকে প্রিপর্ন কবিয়া প্রসার মঙা-प्रतित (काल प्रेमील मतिल, खांच कांकात मन्नी तन দকল অনুর ছিল ওচোটা হনুলা এশ পারণ করিয়াঞা ত্রিপরের ডিন অবভারকে ভঞ্চা করিল। ঐ সকলের 🗮 গ্রে কের মহালাভনী, অভিলা নর্মী, উললাভনী, আনপাত্রী, আবে কেচ কেচ দক্ষ পাল্যক ছিল। काराता देवकार दिना शामन करिया कार्यस्य सदल्खक রণ লোককে মানারূপ অঞ্চকারে মুগ্র করিয়াছে। সেই जिल्लाहरू **श्रंभ कर** गाक गाकार तिक, विहीय कर শকে শেদ স্কুল বলবাম, তৃতীয় অংশকে মচাদের কপে ভাছার। বিশ্বাভ কবিল।

উভয় পক্ষীয় পণ্ডিতেরা এই প্রকার তর্কবিতর্ক কবিয়া থাকেন। কিন্তু একপ্রবিধান বিসমাদ সত্ত্বেও গৌরাক্ষের মত ক্রমে ক্রমে প্রবল হইয়াউঠিয়াছে ৷ ওয়া-ড সাহেব এক স্থানে কহেন, যে বাজলা দেশীয় লোকের পাচ ভাগের এক ভাগ * এই ধর্মাবেলয়া, কিন্তু স্থানাস্তরে যোল ভাগের পাঁচ ভাগে বলিয়াও নির্দেশ করিয়াছেন বা এই শেষোজ কথাই সমাক্ স্থাবিত বোধ হম, কিন্তু ভাহার অধিকাংশ ইতর লোকে ৷ অভাব বাজালা প্রতিমায় এসম্পুদায় ও তৎপ্রবর্ণক টেডনাের কিঞ্ছিৎ বির্বণ কর। অন্যানা সম্পুদায়ের বুজায় অপ্রকার প্রয়োজনীয় ৷

চৈতন্যের চরিত্র বিষয়ে ভূরি ভূরি এম্ব মংছে,তথ্য চেল্লাবন দাস্কৃত চৈতন্যচরিত্র সর্প্রাণেক্ষা পূজা ও প্রামাণিক বলিরা প্র-দিক আছে 1 তিনি চৈতন্য-শিষ্য মুর্রি গুপ্ত ক্ষত আদিলীলা ও দামোদর ক্ষত শেষ লীলা এই ছুই প্রস্তু হইতে আপন গ্রন্থ সংগ্রহ্ করিয়াছেন। আদিলীলায় চৈতন্য

Ward on the Handoos. Vol. 2. p. 175.
 † Ibid. p. 449.

[্]ব বুদাবন দাস এ সম্পুনায়ের বেদ্যাস **বর্প।** নিত্যানক্ষ কুপাপ তি বুদাবন দাস। টেডবন্য দীলার কেঁচ হয় আদিবাস এ টিডবন্য চৰিভামুতে আগ্রা **বছে** বিংশ্**তি পরিক্ষেত্র**।

প্রকর গার্হসাভাষের রন্তান্ত, শেব লীলায় অর্থাৎ মধ্য ও অন্যালীলায় তাঁহার সন্মা-সা**র্ত্তা**মের বিবরণ লিখিত হয় ৷ ১৫৩৭ শকে क्रकमान नाम। धक शत्रम रेवकव के रिष्टना **চরিতের** সারসংগ্রহ করিয়া চৈত্রাচরি-তামৃত নামক এন্থ রচনা করিলেন ৷ য-দিও গ্রন্থকার ইহাকে সারসংগ্রহ বলি-য়া উক্ত করিয়াছেন, কিন্তু এ এক বৃহৎ গ্রা-হু । ইহাতে চৈতন্য প্রভুও তাঁচার প্রধান প্রধান শিব্যের চরিত্র বর্ণনা, এবং এসম্পূ नारसंत्र मरञ्जल कारनक विवतन अः एह । এ**এছ বাঙ্গলা ভাষায় লিখিত, কিন্তু** তা-হার প্রামাণ্যার্থে মধ্যে মধ্যে ভাগবত, ভগবদ্গীতা, বিষ্ণপুরাণ ও ব্রহ্মসংহিতা প্রভৃতি বিশুর এবের ভূরি ভূার শ্লোক উদ্ভ হুইয়াছে। একণে ঐ গ্রন্থ <mark>অনু</mark>দারে চৈতন্যের চরিত্র সংগ্রহ করা যাইতেছে।

टेठणमा नवबीण वामा थक लाकात्वत भूखा शृद्ध जंदात शृद्धभूक्त्यवता क्री॰ छे वानि हिल्लन"; शदत नवबीर आण्यामता वमिठ कदत्रन । टेठण्डसात शिणात नाम क्षणतांथ विद्या ७ मांजात नाम मंग्नी । এই श्रकः त लिल खाट, य जिनि ज्याममामा माण् अट्ड वाम क्रित्ता >8०० मटक काखुन मा-त्म स्त्रीय हर्षात । এই श्रकात श्रवाम चाट, य जीवात जम्म काल हस्स् खर्म हरेताहिन, अ क्रिक्ट कट्या नाम खनान मा नामा श्रवात ख्रामेकिक व्याभारतत्र अ स्रोना हरेताहिन ।

> प्रतिकति माहीशन त्यसं छलाछति। स्टबं दोशा मृष्ठा क्ट्रह त्यदं कुसूबलो ह

শ্রীও ট্রনেশেতে সর উপেক্স মিশ্র নাম।
বৈত্তব পণ্ডিত পনী সাল্প্ প্রধান এ
লক্ষ্য মিশ্র পাঁর পুত্র সংগ্রহতীসর।
কংলার্মির প্রয়ামন্দ প্রফালত সংগ্রহত ভাগার।
রুমারির সালারান বৈলার নাম।
নামারতে সালারান বৈলার সালার।
আদি শক্তে অব্রয়দশ পরিক্রেদ।

ি চৌৰ শত ছয় শতে শেষ মাখা মানে। ৰগমাঞ্জন্মটা বেহে কুজের প্রকালে। চৌৰু শত বাছ শতে মাস ভান্তুৰ। প্রেই মানী সন্ধাকালে হৈল বতক্প। ব ইন্সাহি।

ाक्ष व्यक्ति आह्य ३० शहरकरम् ।

প্রদার হৈল দুশদিলা প্রদার নদী স্কল ।
স্থাবর স্কল্ম হৈল আনন্দে বিজ্ঞল ।
আদি খণ্ডে ১৩ পরিকেলে।

চৈতন্যের শৈশ্ব কালেই পিতৃবিয়োগ হয়, এবং তাঁহার ভাত<u>াবিশ্ব</u>প তাঁহার প্রকেই সন্ন্যাসাশ্রম গ্রহণ করেন, সুতরাং ভাঁহাকে নিজ প্রবৃত্তি নির্ত্তি করিয়াও স্থায় মাতার ক্লকণাবেক্ষণার্থে ক্লিক্রকা-ল গাংস্থাধর্ম প্রতিপাল্ন করিতে ইবল ৷ তিনি বল্লভাচার্যোর ক্রীা বিবাহ করেন. পরে ২৪বংসর বয়সে সংসারাজ্ঞম পরিত্যা গ পুরুক ৬ বৎসর কাল মধুরাবধি পুরু-বোত্তম ক্ষেত্ৰ পৰ্য্যন্ত নানা স্থান ভ্ৰমণ কার য়া সমতানুষায়ি কুফোপাদনা প্রচার ও শিষ্য সংগ্রাহ করিতে লাগিলেন। অবংশধে ৰূপ ও সনাতনকে মথ্রায় প্রেরণ করিয়া, এবং অধৈত ও নিত্যানন্দকে বাফলায়ু স্থাপিত করিয়া, আপনি লীলাচলে স্থিতি করিলেন৷ তথায় ১৮ বৎসর " অবস্থিতি করিয়া প্রেম ছব্তি প্রচার ও জগন্নাণ লে বের উপাসনা বিষয়ে প্রগাত কপে নিবিষ্ট ছিলেন, এবং এ প্রকারও বোধ হয় যে ভাঁহার ভারে। পরুবোক্তম ক্ষেত্রের মহিম।

উটলসন সাহের লিভিযালেন, যে টেডনা ৪০ বংগর জীবিত থাকির। ১২ বংগর লীলাচলে অবধিধি করিয়াছিলেন, কিল্টেডনা চরিতামুক্তর সহিত্ত ৪০ হার ঐকাক্য না।

हिमान बर्मद शक्त शृह व्यवस्थान। ভাছায় করিলা सीला चामि सीमा नाम **४** हिलाम बर्मा (गदह खाँडे मा**म शा**म। ভার-শক্ত্র পরেদ প্রস্তু করিলা সমসন ৪ मश्रक्षेत्र कति हिमान वर्गत व्यवदान। শ্বাহা যেই লীলা ভার শেষ লীলা নাম। শেষ লীলা মধা আন্তালুই নাম হয়। मील्हें (कदम देवखव नव नाम (कम कहा। ভার-ইয়ে ছয় বৎসর গ্রমাগ্রন। লীকীচল গৌড় সেড্রম্ভ বৃন্দারন 🛭 कार्य गिरे लीजा कार्य मधालीला साम । ভার পাতে লীলা অস্তা লীলা অভিধানঃ ष्पापि मीमा ग्रश मीमा ष्यक्षा मीमा ष्याहः। भारत यथा लीलात किन्नु कतित विन्नात 🛊 অন্টাদশ বৰ্ষ কেবল লীলাচলে স্থিতি। আপনি আচরি শিকাইজ প্রেম্ভরিন। कात घटना सम वर्ष स्थल वन नदल ! প্ৰেমভঞ্জি প্ৰবৰ্তাইক দৃত্য গতি রক্ষে হ क्षा बदक अध्य निवस्तान ।

র্দ্ধি হইয়া ধাকিবেল ৷ বিশেষতঃ শেষ ঘাদশ বংসর কেবল ক্ষান্রাগ এবং ত-मिषिक खेबाम ए अजाल शकारमंहे यालन করিয়াছিলেন। শেষাবস্থার ভিনে উমাত্ত প্রায় হইয়াছিলেন। এই একার আখ্যান **শাছে যে ভিনি সম্ভকে** যম্না ভাবিয়া ও তদীর শ্যামক জলে রন্ধাবনের গোপিকা, দিগোর সহিত জীক্ষেত্র জলক্রীড। দেখিয়া তাছাতে অৱগাহন কৰিলেন৷ প্ৰেমো-ক্মান্ত তপংকাঠ। দানা শ্রীরেণ ভার লাঘৰ ছওয়াতে ভাসিয়া উঠিলেন, নতবা (महे खात्महे क्वांगत थान वित्यांग वहेंचे । এক কৈবর্ত জাল প্রক্ষেপ করিয়া ভাঁচাকে সমুদ্র তটে আনয়ন কবিলেক, এবং তখন व्यक्तभ ଓ बामानन छुटे भिया घटिहना চৈতন্য দেবকে সচৈতন্য করিলেন ৷ এই উপাধ্যানের প্রথমাঞ্চ নিতান্ত অমলক না হইলেও না হইতে পারে ৷ চৈতনা প্র-ভর লীলাসয়ঃপের কোন সবিশেষ র্ভান্ত নাই: তিনি অন্তহিত চইলেন, কিন্তু কি প্রকারে হইলেন তাহার কোন বিশেষ নিৰ্দেশ নাই, অতথ্য তাঁহার এতাদৃশ **ৰমুদ্ৰ প্ৰবেশ ভারা মৃত্যু ঘটনা হ**ওয়া ব্দসন্তাবিত নহে। এই প্রকার লিপি আ ছে যে ১৪৫৫ শকে তিনি অনুষ্ঠি হই বাছিলেন * ।

আহৈত ও নিত্যানক উভয়ে বিফুর আংশাবতার †। তাঁহার ছুই জনে চৈত-ন্যের ছুই প্রধান অজ স্বরূপ ৷ যিনি কৃষ্ণা-

শ্রীকৃত্ব ইংডলা পৃথিবীতে আবতরি। আই চলিশ বৎসর প্রকট বিহারি। চৌলু লড সাভ শকে ঝাছের প্রমাণ। চৌল শত পঞ্চায়রে হইদা অন্তর্থান।

্থাদিবতে ১৩ পরিজেনে।

† কৃষ্ণনাল করুত টেডনা চরিভায়তে ইভারদেরও
আহতাছের প্রামাণ্যার্থে কডিপর লংক্ত প্রোক রচনা
করিয়াছেন।

মহাবিজ্ঞাণ-কঠা মাহবা বং সুভত্তার: ।

আসাবিতার্থবাঘনটোতাহার্যালপর: ॥

আদিপথ্ডে বন্ধ পরিভেচ্চে ।
রক্ষ্বাং কারপ্রেমশান্ত্রী গর্জেনশানী চ প্রেজিশাবী। শেষণ্ড মুন্ধাং শক্ষা স্বিত্যানন্দারা
রুম্বাং শর্পং মুন্ধাং শক্ষা স্বিত্যানন্দারা

व्यानिश्रंदश लक्ष्य लहिएक्टन ।

বতারে বলরাম, তিনিই চৈতন্যাবাভারে নিত্যানক এবং অধৈতও তাঁহার মূর্ত্তি বি-শেষ।

অবৈত ও নিত্যানন্দের কোন অলৌকিক ক্রিয়ার বর্ণনা নাই। এই প্রকার লিপি जारह, य बरेहडानम हेहडमा **अख्त छत्य**-র প্রার্ক ভাঁহার অবভাগ হুট্রার বিষয় বাক্ত করির।ছিলেন.এবং ঙাহার জন্ম কালে স্বকার স্তাকে তথায় প্রেরণ করিয়াছিলেন। শান্তিপুরে অধৈতানন্দের বাস ছিল, বোধ হয় তিনি এক জন সম্ভান্ত পনাঢা মানুধ। তিনি তিন প্রভার এক প্রভা; এখন তালার সন্তানেরা শান্তিপুরে বাস করিতেছে ! তাঁহার পরিবার ও নিত্যানন্দ পরিবার এসম্প দায়ের প্রধান গোস্বামী ৷ নিত্যা-নন্দ নরস্বাপের এক রাতীয় ব্রাহ্মণ ছিলেন: যদিও তিনি বিষয় ও সংসার সুখে আ সক্ত ছিলেন*, ভথাপি সৈতন্য ভাঁছাকে बाक्रना (५८ गंद देवसर्वाप्टशंद উপর প্রভৃত্ পদ अमान कतिरलन। अमापि जाहात्र বংশ আছে; খড়দহের গোস্বামিরা উল জার সম্ভান, জার বলগেডের গেলোমির: ভাঁহার দৌহিত্র সন্তানা তথ্যভিরেকে কবি-রাজ্ঞ ও আনি মগন্ত প্রেকৃতি অন্যান্য গো-স্থানিদের পরিবাবেরাও এদেশের নানা ভাবে বাস করেন; তাহার ও প্রায় ভত্তা माना ।

এ সাম্পু দারিক বৈঞ্বেরা চৈতনা,
অবৈত ও নিভানেক এই তিন প্রভু ব্যক্তিরকে কপ, সনাতনাদি ছয় গোস্বামিকে
আদি শুকু বলিয়া স্বীকার করেন ৷ ক্ষংকার অনেকানেক গোস্বামি-পরিবার

মৎস্যের বোল্কামিনীর কোলুঃ আনন্দে ভোরা সংয ছবি হছি লোক্র

কুলাগ লিখিয়াছেন, যে একদা নিত্যানদ আর আর অলদিগের সহিত বিবিও প্রকার আদ বাশ্বন ভোলেন করিছেছিলেন, তলগো পুলীন নামে এক দা মগ্রী ছিল। বছুনাথ লান চদুপলকে কোন পরিহাল অনক বাক্য বলিলে নিত্যানদ্দ এইরপ প্রভারর করি কোন!

গোপ ভাতি আমি বত গোপ সজে।
আমি সূবা পাই এ পূলীন লোজন কুছে।
এই পশ্চালিখিত বচনও উচাবাই উফা বলিয়া আডে আহে ধ

তাঁহারদেরই সন্তান ৷ তাঁহারা গোকুলছ रशाखामिकिरशद नात वर्गानुकरम अक् कर्म মানা হইয়া আসিতেছেন ৷ এপ্ৰকাৰ বোধ হয়, যে পুর্বোক ছয় জন গৌড়ীয় গোশামি মধ্রায় বসতি করিয়াছিলেনঃ তাঁহারদের সম্বান সম্বতিরা অদ্যাপি ত **शात्र व्यानकारनक मन्मिरत्र व्यथिकाति इ**ट्रेग़ा वान क्रिटिक्ट इन । चार्यत्र थेका, नगर्यत् জঁকা, এবং বিবিধ বিষয়ে মতের সাদৃশ্য ছারা ইল আভান্ত সম্ভাবিত বোধ হয়, যে চৈতন্য ও বল্লভাচার্য্য স্থাপিত উভর সম্পূদায়ের পরস্পর কোন প্রকার মূলীভূত সমস্ক থাকিতে পারে ৷ অনুমান ক্রি, একের প্রভূত্ব নিগাকরণার্থে অন্যের फेस्टन इट्टेंग थाकित्वका शृत्कां इस গৌড়ায গোস্বামির নাম, ৰূপ, সনাতন, জীব, রঘুনাথ ভট্ট ঘুনাথ দাস ও গোপা-ল ভটু৷ ৰূপ স্মাত্ৰ চুই ভাই বাজলা দেশের মোসলমান রাজ-প্রতিনিধির কর্মা ক্রিটেন ভিচ্চার: চৈত্রোর পবিত ধর্ম ও পরিশুদ্ধ চরিত্র দেখিয়া ভাঁগের শিষ্য ভ্উলেন,ও তদীয় সম্পুদায়ের প্রধান অপ্রায় ও ভূষণ স্কুপ হইয়া উঠিলেন৷ ভাঁহারা উভয়ে বছ-পরিশ্রাম সুপতি র এন্থকর্তাছি-लान। अध्यकात श्रवां प्रचारह, स वृन्नांवरन-त हुई अछार कृष्टे मन्ति । छा हा तरा द्वा वा ता दे সংস্থাপিত হয় * ৷ জীব তাঁহারদের ভাতৃ-স্পাত্র†। তিনিও গ্রন্থকর্ত্তা **ছিলেন,** এবং द्रमाद्राय द्वाधा मार्गामख्द मन्द्रित श्रीड-

ঠা করেন । রখুনাথ ভট্টুও রখুনাথ দাস উভ: এই গোড়ীয় তাক্ষর। ফীবনের শেষ ভাগে মথুনাও রক্ষাবন সমিধানে গিরা অবস্থিতি করেন। গোপাল ভট্ট রক্ষাবনে রখোরমণের মন্দির স্থাপনা করেন। তাঁছার সন্তানেরা অদ্যাপি তাছার অধিকার ও রক্ষণাবেক্ষণ করিয়া আসিতেছেন।

এই বড়গোন্ধানি বার্ক্তরেকে শ্রীনিবাস,
শ্রীবন্ধপ, গদাধর পণ্ডিউ, রামানন্দ, হরি
দাস প্রভৃতি বছতর স্পৃপিওত ও আজাবান্ব্যাক্ত চৈতনাদেবের শিখা। তাঁহারা
সকলেই ঐ সম্পুদারের পর্ম্নান্য। হরি
দাস প্রায় নিজ গুরুর ভুল্যঃ বাঙ্গলা দেশের
স্থানে স্থানে তাঁহার পূজা হইয়া থাকে।
তাঁহার বিষয়ে একপ লোক প্রবাদ আছে,
যে তিনি বছ কলে বনবাস করিয়া প্রত্যাহ
ভিন লক্ষ রুষ্ণ নাম জপ করিতেন। ভদ্তির
আট জন কবিরাজ ও চৌষ্ট্রিমহন্ত ছিলেন;
চৈতনাচরিতাম্ত-কর্ত্তা রুষ্ণদাস তাহার এক
কবিরাজ।

ब्रीहरू अनान्त्रमाहिक रेक्क्विमरश्रद উপান্ত দেবতা। এই মতে তিনিই স্বরং ভগবান্, "কুঞ্জ ভগবান্স্যং"। তিনি স্বাক্তিব্র কারণ প্রমেশ্র ৷ তাঁ-हात हान नाह, दृक्षि नाहे, धुःन नाहे। তিনিই ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ্বর রূপ ধারণ कतिशा मुख्यम, शालम. जः बात करतम । তিনি ভূত ভবিষ্যৎ সমুদায় বস্তু স্বৰূপ, এবং পৃথিণীর ভার মোচন ও প্রক্রাপাল-নার্থে কালে কালে অবতার, অংশাৰতার, অংশাংশাবতার প্রভৃতি অনন্ত ৰূপ গ্রাহণ ক-রিয়া অনন্তলীলা প্রকাশ করেন ৷ যদি-ও বিষ্ণুরাণে এইক অংশাংশাবভার ব-লিয়া উক্ত হ্**ইয়াছেন, ও মহাভার**ভে <mark>নানা</mark> স্থানে তাঁহার কঠোর তপ্**জার বিবর**ণ আহে, তথাপি বৈক্ষবেরা **ভাহাত্তেই** গ্রন্থান্তরের প্রমাণানুগারে পূর্নাবভার করি-রা বিশাস করেন। **বিভূজ মুরলীধর** পীতাহর নটবর ক্ষমণ ভগবানের কৃটস্থ तिहे बुक्तावनवानी (भौगानहे

শী অর্থাৎ গোবিদ্দ দেব ও মদনমোহনের মদ্দির।
একাণে ঐ উচ্চট নাট কট্টা ঘাটতেন্তে। গোবিদ্দ দেবের মদ্দিরে ১৯১১ শকের এক শিশুপ লিপি পাওয়া
গিয়াছে, ভাষাতে পিথিত আছে যে পূর্ণু বাও কুলোদুর মানসিংছ দেব ভাষা ভাপিত করেন। যেমল
টৈচনা চরিভামুদ ছারা জাত ভওঘা ঘাটতেছে, যে মুপ
ও সনাতন উক্তবে টিচনোর সমকালবর্ধী ছিলেন,
ভক্তপ রূপ পোছামি কৃত বিদক্ষ মাধ্যে লেখা আছে,
যে ভিনি ১৪৪৭ শকে অর্থাৎ টৈচনোর পরলোক প্রাপ্তের
প্রেতিন ১৪৪৭ শকে অর্থাৎ টিচনোর পরলোক প্রাপ্তির
গোবিদ্দ দেবের মৃদ্দির অ্বাং করাতনের প্রতিষ্ঠিত না
চব্রা মানসিংহেরই প্রাণ্ডিত ঘটতে পারে। ভ্রে
সনাতন নোন প্রকারে ভারার প্রশারা করেণ হুইতে
পারেন।

र्ग डैंग्डांत्रस्त्र कविष्टे खुष्डाव পूका।

৫৮ সংখ্যক পরিকার ২৫ পৃষ্ঠ ও ৭১ সংখ্যক
পরিকার ৪৯ পৃষ্ঠ কেথিবেং:

नरबीभ बानी शोहाक करभ व्यवजीन इहे-রাছিলেন, তদনুসারে শচী-নন্দনও গ্লোদা-নন্দনের ন্যায় সুতরাং পূর্ণাবতার ও প্রম দেবতা হইলেন ৷ চৈতনাচরিতামূত-কর্তা কৃষ্ণদাস মহাপ্রভুর অবতরণের সবিশেষ বৃত্তান্ত লিখিয়াছেন। তিনি যুগধর্মানু-সারে বিধি ভক্তির পরিবর্ত্তে প্রেমভক্তি প্রকাশ ও হরিনাম প্রচার করণার্থে অব-তীর্ণ হয়েন, কিন্তু এ তাঁহার বহিরঞ্চ কারণ, ত**ন্তিন্ন** এক অন্তরঙ্গ কারণ আছে। পূর্বের द्रन्माद्रस्य श्रीकृष्य ଓ श्रीद्राधिक। मीनाइटन प রস্পর পরম সুখ সম্ভোগ করিতেন, কিন্তু **জীরুকের অভুল মাধ্যারসানুভর করিয়া** জীরাধিকা যাদৃশ আনন্দ লাভ করিতেন, ক্লম্ভ তাহা অনুভব করিতে পারিতেন না? ইহাতে তিনি যৎপরোনান্তি ক্ল ছিলে-न, এবং আপনার পরম মাধ্যা রসা-স্বাদন নিমিন্ত ব্যাকুল হইয়া এবার পূর্ণ-শক্তি স্বৰূপা রাধিকা ও পূর্ণ শক্তিমান্ 🗐ক্ষণ উভয়ে এক দেহে মিলিত হইয়া নবদ্বীপে গৌরাঞ্জ রূপে অবতীর্ চইলেন; এই হেডু তিনি রাধার ন্যায় গৌরবর্ হইয়াছিলেন, এবং আপনাকে রাধা স্থানী-म काविया कृष्ण्याम केमाम ७ श्रमान প্রকাশ করিতেন^{*}।

প্রেমভক্তি এসম্পূলাযের সর্বধন তা-হার অনুষ্ঠানে সকল ধর্মের ও বাবজীয় ক-র্তব্য কর্মের অনুষ্ঠান হয়। পুরাণে এই নির্দ্ধেশ আছে, যে জীক্ষণ স্বয়ং কহিয়াছেন কর্মা, তপস্থা, জ্ঞান, বৈরাগ্য, যোগ, দান

শ্ব আমা হইতে রাধা পায় দে শ্বাভীয় সুধ।
তাহা আবাদিতে আমি সদাই উল্লখন।
নানা যক্তন করি আমি নাতি আবাদিতে
দে সুধ্ব মাধুয়ি তুবি লোক বাতে ডিতে ৪
রন আবাদিতে আবাদিক করে দেবার ।
প্রেম রন আবাদিক বিবিধ প্রকার ।
রাগ মার্পে ভক্ত ভক্তে মােরে থে প্রকারে ।
ভাহা দি ধাইর লীলাচরণ দুয়ারে ।
আদি ধাতে চতুর্থ পরিক্রেনে ।
ব্যথিকার ভারবর্ণ আদিকার করি ।
নাবধিপে দটা গতে তক্ত দুখা নিজু ।
ভূজাহাতে প্রকট হইলা কৃত্তা পুনি কুনু ॥
আদি ধতে চতুর্থ পরিক্রেনে ।

उ व्यन्ताना अकानुष्ठान वाता गारा किहू লক্ষ হয়, আমার ভক্ত ভক্তি-যোগের অনুষ্ঠান ভার৷ অনায়াসেই তৎ সমুদায় थाश्र रहान *। जिनि यनि दर्श वा मेरिक आमात्र रेतकुर्क वामद आर्थना करतेन. তাহাও লাভ করেন।ইহাতে আবে এক বিষয়েরও সম্যক পরিবর্ত্তন হইয়াছে 1 সধ্বজাতীয় লোকেই তক্তির অনুষ্ঠানে ममर्थ, व्यञ्ज्य भाजनमान ७ चनहाना त्मुक् जाकि अकृति मकत्तरे धमण्यु मार्य প্রবিষ্ট হইতে পারে। এপ্রকার লিগি আ (ছ. ए चन्नः महाञ्रक् अतः डांहात मह যোগি ভক্তেরা মোদলমানদিগকে উপ-দেশ দিয়াছিলেন; বস্তুতঃ তৎকালে আপ-मात्रिमरशत मन श्रुष्टित निमिष्ठ श्रेक्श को नन কর। আবৃশ্যকও হইয়াছিল 🚹

हिन्ह मखनीत अन्तर्गठ मकन रात्र अ धार्मात अधिकाती, विरम्भण्ड छेमात्रीन ?

শ্ৰক্ষাভিগ্ৰপনা জানবৈদাগাছদ্যৰ।
 লোগেন দানধ্যে চেন্তাভিদিকটুর পি ।
 শ্ৰক্ষ মছন্দ্ৰিলোগেন মছন্দ্ৰোলভত হং ক্ষা।
 শ্ৰ্পাপত গং মন্ধ্ৰম কথাকৰ সদি লাভিত ।
 ভাগতে ১১ ক্ষাক্ষ ।
 শ্ৰুষাগাদ্ৰেল ১১ ক্ষাক্ষ ।

় চৈত্রন্য পাঁচ জন পাঁচানকে মন্ত্র দিলা বৈষ্ণার করিবাছিলেন এবং তকল্পনা "পাঁচান বৈষ্ণার বলি হ-ইল উার খ্যাতি।" "ওবে নিক তক্ত কৈল শত মেত নাজি।" নবদিপের কাজি উচার মুল্প তাদিয়া ফেলে, তাহাতে টৈচন্য আহার্ল্ডর সভীনিন ও বিচার কবিচা ভাষারালগতে পারাজ্ঞ করেন। টেচন্স বর্ণাচিন্যান অংশক। উল্লেখ্য প্রায়ান অংশক। উল্লেখ্য প্রায়ান অংশক। উল্লেখ্য প্রায়ান আকার করিতেন। "দীবিরুর পুণা জাতি কুল নাহি মানে"। "বিনুরের অর্জ করিল ভোজন।" ভিনি খীম মতের প্রামাণার্থে সংস্কৃত লোজত পাঁচ করিতেন সথা

ব্যতিসম্ভলিদীপ্তাগ্নিদপ্তদুর্কাতিকল্ময়ঃ।

খপাকোপি বুবৈং প্লাছো। ন বেদ্ডোগ পি নাছিক।
সন্ধক্তি ক্লপ পৰিত্ৰ দীঙাগ্নি বাবা বাহাব দুৰ্ভাভি ক্লম্য পাপ নাই হুইডাছে, এমত চঙাল ও জানিলোকের আদ-রণীয় আর ভক্তি-শুন্য নাজিক গদি বেদজ হয়, তথাপি সে আনরের পাত্র নহে।

নমে অকল্ডবুর্নেনী মন্তক্য প্রপাচ প্রিনঃ।

তবৈ দেবং ততে গ্রিলং সচ পুচন্তা ঘণ্ডাছ্বং ব্
তবি ক্রিনি প্রিক হউলেও আমার গুকু বহু না, আরু
চণ্ডাল বদি আমার গুকু বহু, লবে সেই আমার প্রিয় ।
তীহাকে দাম করিবেক ও তীহার দান গ্রহণ করিবেক;
তিনি আমার নায় পূঞা।

টৈতনাচরিভাস্তে এই সমুদায় বাকা এবং এরপ অন্যান্য বচনও প্রাপ্ত হওয়া যায়। বৈরাগী হইলে ভাঁহারদের আর কোন বিযারে বর্ণবিচার থাকে না। ভাঁহারা সকলের সঙ্গ ও সকলের স্পৃত্ত আর ভাজন
করিতে, পারেন। শুনা গিয়াছে, ভর
গৃহস্তেরাও প্রজ্ম ভাবে পঙ্গতে বসিরা
ভোজন করেন। তাজিকদিগের চক্রেও
চৈতন্যানুযারি বৈক্ষবদের পদতে জাতি
ভেদের কোন চিছ্ল থাকে না, একারণে
এবং অন্যান্য কারণেও হিল্লুদিগের জাতি
ভাত ইইবার আর কিছু অবশেষ নাই।
অভএব এক্ষণে যে ধর্মে বর্ণাচারের আবশাকতা আছে, তাহার অনুতান করিবার
আর সন্তাবনা নাই।

এসাম্প্রদায়িক বৈষ্ণবের। পঞ্চবিধ রসে ছক্তি যোগ করেন, যথা শাস্ত্র, দাস্য, সখ্য, বাৎসল্য, ও মাধুর্য্য 1 সনক সনাতনাদি शूर्व शूक्त यां जी स नकरन य द्राप्त छ-পাসনা করিয়াছিলেন, তাহার নাম শাস্ত-রস ৷ সাধারণ ভক্ত সমুদায় দাসা ভাবে উপাসনা করেন। সথা ভক্তি তদপেকা শ্ৰেষ্ঠ; ভীমাৰ্জ্জুন এই ভাবে শ্ৰীফুঞ্কে প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। বাৎসলারস পিত: মতোর স্বেহ স্বরুপ; नम यरमामा वाद-সল্য ভাবে উদ্ধার হইয়াছিলেন। আর মাধুষা রস সর্বাপেক্ষা প্রধান, রাধিকা ध्यक्ठि शांशाक्रना गंग यामृग तरम क्र्यः সেবা করিয়াছিলেন, তাহার নাম মাধুগ্য। স্বয়ং চৈতন্য এই শেষোক্ত রসানুভব ক-রিয়া বাড়ল হইয়াছিলেন। গৌরাঙ্গ-**७७ देक्य फिर्मित विषय विरम्भय यर्थ-**ফীচোর ও সবিভাবাদি কুৎসিত ব্যাপার সকল এই প্রেমভক্তি হইতেই উৎপন্ন হয়।

বল্লভাচারি বৈক্ষবেরাযে প্রকার ভজিভাবে কৃষ্ণ সেবা করেন, তাহার সহিত গৌরাক তর্জাদগের বিশেষ প্রভেদ নাই; কিন্তু এসম্পূদায়ের গৃহস্থলোকে বল্লভাচারিদিগের নাম প্রভাহ অর্টবার বিহিত বিখানে কৃষ্ণ সেবা করেনা ৷ বাঙ্গলার জনেক স্থানেই কেবল পূর্বাহে ও সায়ংকালে ভাঁহার পূজা হয়, তবে ক্রান করন ভাঁহারের নাার অর্ট্ট প্রকার দেবাও হইয়া থাকে ৷ মাম সংকীর্ভন

এসম্পুদারের পরম সাধন, এবং কলিমুগে কেবল তদ্ধারাই পরস পুরুষার্থ লাভ হই-তে পারে; অন্য সাধনের প্ররোজন ক-রে না ৷

> ভরের্নাম করের্নাম চরের্নাইমর ফেবলং। কলৌ নাস্কোব নাস্কোব নাস্কোব গভির্নাণা॥ স্মাদিখনে মধ্যম পরিচ্ছেদে।

তদ্যতিরেকে রুক্ষ প্রীতিতে উপবাস,
নৃত্য, ও রিপু দমনাদি চৌঘটি প্রকার সাধনের বিধি আছে! কিন্তু গুরু-পাদাপ্রায়
সর্বাপেক্ষা আবৃশ্যক ও প্রেয়ঃ সাধক।
দ্বানান্য উপাসকের ন্যায় ই হারদের দেব
গুরু ও ভক্তের প্রকা জ্ঞান এবং গুরুনক
শ্বাল্প সর্বাহ্ব দান করা ভাবিশ্যক,
এবং তদ্ভিন্ন ভাহাতে প্রীরুক্ষ অপেক্ষাও শক্রিমান্ ও পূজা করিয়ামানিতে হুন্ন।

्यामञ्चः मस्त्रः मास्त्रः साधिकः भवतिः स्थः । उभागता हलाभूतः ।

মন্ত্রট লাক্ষাৎ প্রকৃষ্ঠপে, ও খিনি ওকে তিনিট ধ্যা হরি।

> अध्यमम् अकःशृकाष्ट्ररैकट यश्राप्रेतः । छत्रसम्बद्धाः ।

আগ্রে প্রকৃ পৃষ্ণ করিয়া পক্ষাৎ আমাকে অর্ক্তনা করিতেক।

র্জনের সদার ধ্যা ছেচোমন্ত্রাদভেদত:। ওরৌতুটো হরিপ্তটো নাম্যথা কম্পকোটিভিঃ॥ ভঙ্কনাযুক্ত।

সর্কান ধরু আরোধনা করিবেক। তিনি শ্রেষ্ঠ, নে-বেতু ওরু ও মত্রে বিশেষ নাই। ধরু তুউ ছইচেট তরি তুউ চয়েন। নতুবা কোটি কম্প আরোধনা করি-লেও হরিতুউ তন না।

হরৌরুক্টে প্রস্কৃত্রাভা প্ররৌরুক্টে ন কশ্চন। ভঙ্কনামূতে ।

হরি কৃষ্ট হইলে গুকু আগকর্ত্তা আছেন, কিন্দু গুকু কৃষ্ট হইলে আরু কেছু নাই :

শুরু করণ বিষয়ে পাত্রাপাত্র বিবেচনাও নাই। গোন্থানির সন্থান অতি ছুক্তিরাথিত ছুরান্ধা হউক, তথাপি তাঁহাকে শুরু রূপে বীকার করিছে হর। পোন্থানিরাএই প্রকার ছুর্ন্ধর্ম শুরুত্ব পদ ও একানিপতা প্রাপ্ত হইয়া. নিব্যদের প্রতি যথেক অত্যাহার করেন, ও নানা উপলক্ষ করিয়া তাহারদের ধন নিস্পাত্রন করেন। রাজার রাজন্ম আদারের অপেকা, তাঁহাদের বৃদ্ধি আদারের পাসন কঠিন। তাঁহাদের বৃদ্ধি আদারের পাসন কঠিন। তাঁহাদের প্রতি

হড়িদার থাকে, ভাহারা প্রভুদের আজ্ঞাপালনার্থে শিষ্যদিগকে বন্ধন ও প্রহার পর্যান্থও করিয়া থাকে ৷ গোল্বামিদিগের এইরপ আধিপত্য ও প্রেম ভতির অনুষ্ঠান এ সাম্পুলায়িক লোকের বিষম অনর্থের মূল হইয়াছে ৷ গোল্বামিরা অন্তঃপুর প্র-বেশ করিয়া পরিবারস্থ জীলিগকে উপদেশ করেন, যে এই স্থানকে রুলাবন স্বরূপ, আসাকে রাধিকা রূপ ও আমাকে জীকৃষ্ণ কপে ভাবনা কর ৷ এপ্রকার উপদেশ রূপ ক্রেকে যে প্রকার কল সম্ভাবিত হারী, ভাহা সকলেরই বিদিত আছে ।

গোস্বামিরা গৃহস্থদিগকে মন্ত্র প্রদান ক্রিয়া উপাসনার প্রকরণ উপদেশ করেন। কিন্তু ঘাঁহার: জাতিকুল পরিতাাণ পূর্বক গৌরাঙ্গ দেবের আশ্রয় গ্রহণ করেন, তাঁ-হার্দিগ্রে ভেক লইতে হয়৷ গোস্থা-মিরা প্রায় কৌজদার ও ছডিশার দারাই তৎকর্ম সম্পন্ন করেন। তাহারা উপস্থিত শিষ্যের মন্তক মুগুন পূর্বক স্থান করাইয়া ডোর, কৌপীন, বহিকাস, ভিলক, মৃদ্রা,ক-রক্ষা বা ঘটা. এবং জপমালাও ত্রিক্তিকা शलभावा धानान कतिशा मञ्जादनन कर्त्तु. ध्वः তাহার স্থানে অন্যান ১০ দক্ষিণা গ্রহণ করে। ভদ্তির অধৈত,নিত্যানন্দ ও চৈতন্য প্রভার ভোগ দিতে হয়, এবং মহোৎস্ব কুরিয়া নৈফাবদিগকে ভোজন করাইতে ₹ ३ 1

বিবাহেতেও এই প্রকার তিন প্রভুর ভোগ দিতে হয়, এবং গোস্বামি, ব্রাক্ষ-ণ, ও বৈষ্ণবদিগকে মালা ও বাতাসা দিয়া বরণ করিতে হয়। পাণি গ্রহণের সময় ছড়িদার উভরের গলছদশে মালা দান ক-

ট গোখামি কুলোছন কোম ব্যক্তির প্রমুখাৎ জত হওয়া গেল, যে অক্সের তিন অবছা, মধা, প্রবর্তন, সাধন ও লিছি। বে ছলে কোন স্ত্রী উপদেশ গ্রহণ করেন, দে বলে প্রবর্তনাবদ্বাত নাম ও মার গ্রহণ হর, সাধনাবছার ওক লিয়াতে ভাব ও প্রেমান্ত তল, অবশেষ নিয়াবদ্বাম দুই করে আক লেবা ছারা পর কলার পর কলার করে কালের নিয়াবদ্বাম হয়। এবিবয়ে দুই কল আছে, তত্মধ্যে এক দেলর নাম সহক্ষবাদি। ভীছারা কহেন, ওক বভাবত ই মামি হরণ, অতএর পর্বরুর রলাখাদনার্থে অব্যাপুরুরের সংস্কার্ক করিবের।

রিলে পরে পরস্পর মালা পরিবর্ত্তন হয়,
এবং কন্যার মস্তকে বরের সিন্দুর বিন্দু প্রদান করিতে হয়। ইহাতে গোন্ধামিরা
অন্থান ১া- দক্ষিণা এবং গুদ্তির ছুড়ীদারেরাও কিঞ্চিৎ ক্রিড়িং হয়। এসাম্প্রদারিক বৈরগগীদের নব্যে বিধবার বিবাহ
হইয়া থাকে, কিঞ্জাতি বৈক্ষবদিগকে তদনুধায়ি অনুষ্ঠান করিতে দেখা যায় না।

মায়িক সংসার হইতে পরিত্রাণ প্রাপ্তি সর্বপ্রকার হিন্দু বর্মের গরন পুরুষার্গ। এসাম্পু দায়িক বৈক্ষরের গরন পুরুষার্গ। এসাম্পু দায়িক বৈক্ষরের কির্মার করেন, ঐশ্বরিক ঐশ্বর্য লাভ পূর্বকে চিরন্তন স্বর্গ ভোগ, আর আনন্দ্রয় নৈতুঠগানে শীক্ষকের সহবান। রুঞ্চন্তিপরায়ণ বাজি এই শেঘোক্ত অবস্থা প্রাপ্ত হইয়া সালোক্য, সামীপা, সাফি, 3 সাক্রপ্য এই চতুর্বিব মুক্তি লাভ পূর্বক ভক্তিযোগ সাধন দ্বারা প্রম মুখ সভোগ করিতে থাকেন। কিন্তু ইহার। সাযুক্তা মুক্তির প্রাধানা শীকার করেন না।

সালোকা নামীপা নাঞ্জি দারপা প্রকার। চারিমুক্তি নিয়া করেন মানেব নিস্কার। ব্রহ্মসাযুক্তা মুক্তির ভাষা নাহি গতি। বৈবৃশ্ব বাহিত্রে হয় ভা সরার মিতি । আনিবন্দে পঞ্চম পরিকেনে।

সংস্কৃত ও বাঞ্চলা ভাষার এ সম্পূদারের মত প্রতিপাদক বিত্তর প্রত্থ আছে হ চৈত্রা, নিত্যানন্দ ও অবৈত প্রতু যে কোম প্রস্তু লিখিয়াছিলেন এমত বেধি হয় না হ কিন্তু কপ সনাতন উভয়েই রুচ্ছ রুচ্ছ গ্রন্থ করিবালেন ৷ এই প্রকার প্রবাদ আছে, যে বিদক্ষ মাধব নাটক; ললিত মাধব, উজুল নীলমনি, দানকেলি, কৌমুদী নামক কারা; বছ ভবাবলি নামক সঞ্চীত স্তুতি গ্রন্থ জাদশ লীলাকাণ্ড, পালাবলি, গোবিন্দ বিক্লাবলি ও ভাছার লক্ষ্ণ, মধুরামাহাল্যা, নাটক লক্ষ্ণ, লযুভাগবত, ও ব্রজবিলাস

ইবকুঠের পৃথিব্যাদি মনতা তিয়য় । য়াচিক ড়ুতের তাঁতা য়য় মাতি হয় ॥ চিয়য় য়ম দেই পরম কারণ। বার এক কথা গলা য়য়ৎ পারময় স্মাদিশতে পঞ্চম পরিজ্জের।

বৰ্ন এই সমূদ্য গ্ৰন্থ লোপামির কৃত ৷ স্নাতন গোদ্বামী হরিভজিবিলাস", রাসা-মৃত্যিকু, ভাগবভাষ্ত ও সিদ্ধান্তসার প্রস্তৃত করেন ৷ রাসামৃতসিন্ধু ও হরিছজিবিলাসে ভগবানের স্বৰূপ ও উপাসনার প্রকরণ লিখিত আছে। ভাগবভামূতে এ শশুদা-श्रुत कर्खवा कियात विवतन आहि, आह সিদ্ধান্তসার কেবল জীভাগবতের দশন-স্বলের ভাষা মাত্র। অপর ছয় গোস:-মির মধ্যে জীব গোস্বামী ভাগবত সন্দর্ভ, ভক্তি সিদ্ধান্ত, গোপাল চম্পু, ও উপদে-শামৃত রচনা করেন! আর বঘুনাধ দাস মনং শিক্ষা ও গুণলেশসুখর এই ছুই এস্থ প্রস্তুত করেন। এসমুদায় সংস্ত গ্রন্থ বাঞ্জাভাষায় রিপুদমন বিষয়ে রাগময়-কোণ নামক গ্ৰন্থ ৰূপ গোশামির কৃত, ও ক্লেড্ডিড বিষয়ে রসময়কলিকা নামক গ্ৰন্থ সনাতন গোস্বানি কুত বলিয়া খ্যাত আন্তে। অন্যান্য সংকৃত এছও এ সম্পূ-मारगृद्ध आभाषिक माञ्च करन अनिक आ-ছে। যথা বিশ্বনাথ চক্রবাহি ক্লত চৈতনা **চ**ट्यामग्रं नाहिक, अवशाला ७ खवाम्छ-লছরী: রামচন্দ্র কবিরাজ কৃত ভজনামৃত ও জ্রীমারণ দপণ : ক্ষণাস কবিরাজ কৃত গোপী-প্রেমামূত, এবং গোবিন্দদাস ও বি-मााशंक कृष कृष्णकीर्तन । रेहजनाहतिक तिष्ठ पूर्व ए नकल श्रास्त्र नारमास्त्रथ করা গিয়াছে, ভদ্তিল গৌরগণোদেশদী-পিকা ও লোচন কৃত চৈতনামকল নামক हुई अन्न आहर । उनारा अथरमान अरिष् চৈতন্যের শিষাদিগের রুক্তান্ত লিখিত আছে। আর বাঙ্গলাভাষায় লালদাসকৃত উপাসনা চন্দ্রামৃত, ঠাকুর দাস গোসামিক্ত প্রেম-ভক্তিচ क्रिका, ताथामाध्यक्त शाय अम्लब उ रेमवकी सम्मन क्रूफ रेवक्षव वर्षम नामक গ্রস্থ আছে। তথ্যতিরেকে টেডনা ভাগ-त्र अकृष्टि प्रमामा विखत अङ् भाष्ट्र । ३-হারদের সমুদার প্রামাণিক গ্রন্থ একতা ক-तित्व **खू शाकात इत्र**।

* হারভজিবিলান গ্রন্থ সনাতন মোবামিকৃত বলি হা প্রবান আছে বটে, কিছু চে হরিজজিবিলাস নচ-রাচর প্রচলিত লেখিতে পাই, তাহা লোপাল ভট্ট কৃত। এপান্দুদারিক বৈশ্বেরা নানামূল অ-ব্রিকেশ পর্যান্ত গোপীচন্দ্রের উদ্পুঞ্জ করিরা নানাথের সহিত তাহার সংযোগ করিরা দেন ৷ মন্দির, বাছ ও বক্ষং হলে রাদ্ধার্ককের নামান্ধন করেন, কঠদেশে তুল-লীকান্টের ত্রিক্ঠিকা নালা ধারণ করেন, এবং শত বা সহস্র সংখ্যক তুললী-মণি এবিত করিয়া অপমালাপ্রস্তুত করেন ৷ সর্ব জাতীয় লোক. এবং কোন কোন স্থানের মেছেরাও * এখর্ম অবলয়ন করিয়াছে ৷

মহাভারত

আদিপ**র্ব্ধ** আক্টোকপ**র্ব্ধ** ত্রয়োদশ অধ্যায় ৭৮ মংখ্যক পত্রিকার ২২১ পৃষ্ঠের পর :

শৌনক কহিলেন, হে সূত-মন্দন। রাজাধিরাজ জনমেজয় কি নিমিজ সপ সত্রাদ্ধান ছারা সর্পকৃল সংহার করিয়াছিলেন, কি নিমিজই বা জিতেন্দ্রিয়াগ্রগণা ছিজন্তের্জ আজীক মহাশয় প্রদীপ্ত ছত্যশন হইতে তুজগ গণের পরিরাণ করিলেন, তাহা সবিশেষ সমস্ত বর্ণন কর! আর খেরাজ, সর্পাস্ত অমুষ্ঠান করিয়াছিলেন, তিনি কাহার পুত্র, এবং ঐ মহাস্থা বাহ্মগই বা কাহার তনর, তাহাও তুমি আমার নিকট কীর্জন কর ৷ উপ্রজ্ঞান কহিলেন, হে ছিজবর! আমি আপনকার নিকট মহাকলপ্রদু আনি আপনকার নিকট মহাকলপ্রদু আনি আপনকার নিকট মহাকলপ্রদু আনি জাগোধ্যান আদেয়াপান্ত সবিস্তর বর্ণন করিতেছি, প্রবণ কর্মনী।

শৌনক করিলেন, হে সূতকুল-ভিলক!
অতি যশখী পুরাণ খবি আতীক মহাশরের এই মনোরল আব্যান প্রবণে আলার
নিতান্ত বাসনা জলিয়াছে। উপ্রক্তান কহিলেন,হে খ্যবর! আমার পিতা ব্যাসশিষ্য মেধাবী লোমহর্ণ নৈমিবারণ্যবাদি
ভাক্ষণ গণ কর্ত্তক অভ্যাধিত হক্রা ভাছার-

^{*} ঘথা পুরুলিয়ার পর্যন্তীর লোক

দিগকে ক্লকবৈপাসন-প্রোক্ত সর্বাপাপক্ষ-কারি এই পুরাণ ইতিহাস প্রবণ করাই-রাছিলেন। আমি তাঁহার নিকট থেকপ শুনিয়াছি, অবিকল সেইৰূপ বর্ণন করিভেছি, প্রবণ করুন।

মহর্ষি আন্তীকের পিতা জরৎকারু
সাক্ষাৎ প্রজ্ঞাপতি তুলা ব্রহ্মচারী বিষয়-বাসনা-শূনা কঠোর-তপজা-রত উর্দ্ধরেজ
যাযাবরাত্রগণ্য ধর্মান্ত ও ব্রত-পরারণ ছিলেন গৈত তপং-প্রভাব-সম্পন্ন মহাত্মা যত্র
সারংগৃচা হইয়া তীর্থ পর্যাটন ও তীর্কান
করত পৃথিবী মণ্ডল ভ্রমণ করিতেন ৷ এই
কপে বছকাল বাযু-ভক্ষ, নিরাহার, শুদ্ধকলেবর ও বীত-নিদ্র হইয়া ইতন্ততঃ ভ্রমণ
পূর্বক চঃসাধ্য ব্রতানুষ্ঠান করেন !

এক দিবস জরৎকার পর্যাটন ক্রমে কোন স্থানে উপস্থিত হইয়া উৰ্দ্ধান, অধঃ শিরাঃ, মহাগতে লয়মান স্বীয় পূর্বে পুরুষ- 🔻 जिश्ति अवत्व। क्रम क्रित्वन । उपनित्न অন্কন্সা-পর্বশ হইয়া তাঁহার্দিগকে জি-জ্ঞাসা করিলেন, আপনারা কে? কি নিমিস্ত উশীরস্তম মাত্র অবলম্বন করিয়া অবাঙ্গুখে भ**दे शर्फ नवमान व्यारहन** 🥍 গুড়বাদী এক মূবিক উদীরস্তাম্বের মূল প্রায় সমুদার ভক্ষণ করিয়াছে ৷ পিতৃগণ কচি-লেন, আমরা যায়বির নামে ক্ষি, এক্ষণে বংশ লোপের উপক্রম হওয়:তে অধোগ-তি প্রাঞ্চইতেছি৷ আমরা অতি হত-ভাগ্য, আমার্দিগের জরৎকার নামে এক সন্তান আছে, সেই মূঢ়মতি হতভাগ্য **সংশারাজান-বিমুখ হইয়া কেবল তপ্সাা**য় मदनामिरंतम क्रियारहः भूरकारशाननार्थ দার পরিগ্রহ করিতেছে না। সুতরাং বংশ-লোপ উপস্থিত হওয়াতে নহানত্তি লয়মান হ**ইয়া আছি ৷ আমিরা জরৎকারু র**প নাথ স**ভেত অনাধ ও পাপাত্মার ন**্যায় হইয়া-ছি ৷ যাহা হউক,ভূমি কে ? কি নিমিত্ত আ

মারদের এই শোচনীর অবস্থা অবলোকন করিয়া অনুশোচন ও অনুকল্পা প্রকাশ করিতেছ, আমরা জানিতে বাসনা করি!

জরৎকারু পূর্বা পুরুষদিগের এইরূপ काछत वाका अवन कतिया निरंतमन कति-লেন, হে ঋষিগণ! আপনারা আমার পুর্বা পুরুষ, আমারি নাম জর্থকারু, একণে আ-**छ। कब्रम, भागादक कि क**्रिक इंडे**दिक।** পিতৃগণ কহিলেন, ৰৎস! ৰংশ রক্ষা এৰং ভোমার ও আমার্দিণের পারলৌকিক मक्त मन्त्रापन वियस्य शङ्कतन् इत। श्रु-জ্বান্লোকদিগের যে ৰূপ সকাতি লাভ হর, ধর্ম কল ও চির-সঞ্চিত তপোবল দার: ভাদৃশ হয় না৷ অতএব তুমি আমারদি-निद्याभानुमाद्ध मात्रभत्रिश्चट् अ श्रकाष्ट्रशामत्न गञ्जवान् उ मत्नारयाणी इ.उ. তালা হইলেই আমারদিণের পরম মঞ্জ-ল৷ জরৎকার কহিলেন, আমি কদাপি ভোগাভিলাযে দারপরিগ্রহ ও ধরে:পা-ক্ষন করিব না, কেবল আপনার্দিগের হি-তার্থে দারপরিগ্রহে সমত হইলাম। কিন্তু তদ্বিষয়ে আমি এই প্রতিজ্ঞ। করিতেছি, যদি কন্যা আমার সনামুী হয়,ও তাহার বন্ধুগণ ব্যেকাপুর্বাক ভিক্ষা স্বৰূপ দান করিতে চ'চেন, ভবেই আমি যথাবিধানে তাহার পাণিপ্রহণ করিব। কিন্তু আমি দরিদ্রকোন্ ব্যক্তি দেখিয়া শুনিয়া আমাকে কন্যা দান করিবেক? ভবে ভিক্ষা স্বৰূপ যদি কেহ দান করিতে চাহে, আমি প্রতিগ্রহ করিতে অসমত নহি৷ হেপিডঃমহ্গণ় এই নিয়মে আমি দারপরিএতে যত্নবান্ত্ইর, প্রকারান্তরে তদিয়য়ে প্রবৃত্ত হটব না ৷ এই ৰূপে পরিণীতা ভাষ্যার গর্ভে আপনারদি-গের উদ্ধারক পুদ্র উৎপন্ন হইবেক, তথন **আপনারাও অক্য় স্**র্গলোক প্রাপ্ত হুইয় পরম **প্রমোদে কাল** যাপন করিবেন!

চত্ৰিশ অধ্যায়

উএআবাং কহিলেন, জরৎকার এই নপে গৃহস্থাক্রম প্রবেশে ক্ত-সঙ্গপ কইঝা ভার্যা লাভার্যে সমস্ত ভূমওল পরিজ্ঞমণ করিলেন,কিন্ত কোন ব্যক্তিই তাঁহাকে ক্রা দাম করিল না ৷ এক দিন ভিনি পিত্লো-

^{*} যে তুপৰিনিগের নিয়মিত হাল স্থান নাট, কেবল কানে স্থানে পরিভূমণ করেন, তীহার্চের নাম যাযা কব

[†] যত্রসায়ংগৃহ—যে স্থানে সায়ংকাল উপস্থিত হয়, তথায় অবস্থিতি করে যে।

क्त्र चारम् अधिभावसार्य रम अर्रम श्-র্বাক উচ্চৈংস্বরে ভিন বার কনা: ভিক্ষা করি-लन १ उथन वाजुकि जीत क्रिनी कानतन ক্রিয়া দান ক্রিতে উদাত হইলেন। কিন্তু मिट्रे कन्या प्रमाशी नरह, थहे विस्तृहना क-রিয়া তিনি ভাঁচাকে প্রতিগ্রহ করিলেন না৷ যেহেতু মহাত্মা জরৎকারু প্রতিজ্ঞা করিযা-ছित्यन, यनि कना मनाभी कत्र, ও তাকার বন্ধু গণ স্বেক্ষাক্রমে দান করিতে উদ্যত হয়েন, তবেই তাহাকে ভার্যা স্বরূপে পরি-এহ করিব ৷ অনস্র মহাপ্রাভত মহাতপাঃ জরৎকার, বাসুকিকে জিজাসা করিলেন, হে ভুজজন। সত্যক হ,তোমার এই ভগি-नीत नाम कि? वामुकि कहिलान, एर कब्रश-কারু, আমার এই অনুক্রার নাম জরৎকারু, আনি তোমাকে দান করিতেছি, ভূমি প্র-তিগ্রহ কর ৷ আমি ইহাকে তোমার নিমি-স্তুই এতকাল রাখিয়াছিলাম, একণে তুমি পরিএছ তর ৷ ইহা কহিয়া বাসুকি জরৎ-কারুকে ভগিনী দান করিলেন, তিনিও বেদ বিহিত বিধানানুসারে তাঁহাকে ভার্যাস্থাক-পে পরিগ্রহ কারলেন ৷

প্রাকৃষ্ণ অধ্যায়।

উগ্রন্থক হিলেন, হে ব্রহ্মজ্ঞ শ্রেষ্ঠ শৌনক! পুর্বেকালে সর্পেরা স্বীয় জননীর निक्रे इहेर्ड वहें भाश आश्र इहेग्नाहिल, যে জনমেজুয়ের যুক্তে অগ্নি তোমারদিগকে मक्ष कतिरवकः। नर्भकूल-þ्डामनि वासूकि সেই শাপ শাস্তি করিবার আশ**্**য়ে ব্রত-পরা-য়ণ মহাত্ম। জরৎকার ক্ষিত্র ভগিনী দান করিলেন ৷ তিনিও তাঁহাকে বিধিপুর্বাক ধর্ম্মপত্নী স্বৰূপ পরিগ্রাহ করিলেন। ভাহার গৰ্ডে আন্তীক নানে মহানুভব তনয় উৎপন্ন ৰ্ঞ তনয় তপত্ৰী মহাত্মা বেদ-(वनाक्र-भारत्भ अ मर्क्यकुठ-ममन्भी किलान, এবং পিতৃমাতৃ উভয় কুলের ভয় নিরাকরণ করেন। বছকালের পর পাওু-কুলোম্ভব वाका कनरमञ्जय मर्भगव नारम विशास महा गटका अनुष्ठान करतन। त्राहे मर्भकृत-मन्यातकाती युद्ध चातक स्टेटन शत छनः-প্রভাব-সম্পান জাতীক জাতু গণ, মাতৃল গণ ও'অম্যান্য বর্ণ ক্ষণের নিস্তার করিয়া-ছিলেন।

জরংকারু পুজোৎপাদন ও তপ্যা।
ভারা পিতৃলোকের উদ্ধার সাধন, বিবিধ
ব্রতানুষ্ঠান ও বেদাধ্যরন দ্বারা ক্ষরিগণের
পরিতোধ সম্পাদন, ও.নানা ঘজানুষ্ঠান দ্বারা দেবগণের তৃত্তি সমাধান করিলেন। এইরপে তিনি ব্রহ্মচর্যা, পুজোৎপাদন ও
সজানুষ্ঠান দ্বারা ক্ষরি শুণ, পিতৃক্ষণ ও দৈব
খণ রূপ গুরুজার ইইতে মুক্ত হইরা স্থীয় পূর্বে
ক্রিন্সদিগের সহিত স্থগারোহণ ক্রেন। হে তৃগুকুল শ্রেন্ড। আমি ঘণাজনে
আন্তীকোপাধ্যান ক্রিন্ডন করিলান, একণে
আর কি বর্ণন করিব আজ্ঞা ক্রুন।

ষোড়শ অখ্যায়

যাহ। বর্ণন করিলে পুনব্বার তাহাই বিভারিত করিয়া বর্ণনা কর, আন্তাকের সবিত্তর রুজান্ত প্রবণে আমারদিগের মহীয়সী বাসনাজন্মিয়াছে। ভূমি যাহ। কীর্ডন করিতেছ, তাহা অতি মুললিত ও মধুর বোগ হইতেছে। আমর: শুনিয়া পরম পরিতোষ পাইতিছে। কলতঃ ভূমি পুরাণ কীর্ডন বিবশ্রাপন পিতার ন্যায় পাণ্ডিত্য প্রকাশ করিতেছ। তোমার পিতা যেমন অনন্য-মনাঃ ও অনন্য-কর্মা হইয়া আমায়দিগকে সম্পূন্
কপে পুরাণ প্রবণ করাইয়াছিলেন, এক্ষণে ভূমিও সেইক্স প্রবণ করাইয়াছিলেন, এক্ষণে

উএশ্রবাং কহিলেন, হে মহাভাগং আমি আপন পিতার নিকট আন্তাকো-পাঝান যেকপ এবং করিয়াছি, আপনকার নিকট অবিকল সেইকপ কীর্তন ক্রিতেছি, এবং কর্মন।

সভাযুগৈ কজ ও বিনতা নামে দক্ষ
প্রজাপতির ছই সুভলকণা পরম সুন্দরী
কন্যা ছিলেন ৷ এ ছই ডগিনীর কশ্যপের সহিত বিবাহ হয় ৷ মহাজা কশ্যপ
সেই ছই ধর্ম-পত্নীর প্রতি প্রসম হইরঃ
ব্র প্রদান করিলেন ৷ তাঁহারাও কশ্যপের নিকট অ অ অভিলাবানুক্প বর প্রাগুইয়া সাভিশর হর্ম ও পরিতোব প্রাপ্ত
হইলেন ৷ কজ জুলা-তেকলী সহস্রনাগ

পুত্র প্রার্থনা করিলেন ৷ কিন্তু বিনহা এই বর লইলেন, যে আমার ছুই টী মাত্র পুত্র হউক, কিন্তু তাহার৷ যেন কজর পুত্রসহস্র অপেকা বলে বিক্রমে ও কলেব-রে শ্রেষ্ঠ হয় ৷ কল্যপ তাহাকে উক্ত অভিলাঘিত পবিত্র বর প্রদান করিলেন ৷ বিনতা স্থামির নিকট যথা প্রার্থিত বর লাভ করিয়া সাতিশয় সম্ভুক্তী ও চরিতার্থা হুই-লেন ৷ কজ্রও ভুল্য-বল সহস্ত্র পুত্র লাভ ঘারা আপনাকে ক্রতার্থা জ্ঞান করিলেন ৷ মহাতপাঃ কল্যণ পত্নীদিগকে ক্রতারা যত্র পূর্বক গর্ভ ধারণ করিলেন ৷ এই উপ-দেশ দিয়া বন প্রবেশ করিলেন ৷

বহু কাল অভীত চইলে পর কঞ অও সহস্র ও বিনতা অও জয় প্রসব করি-লেন৷ পরিচারিকাগণ ভাঁচাদিগের গ্র-স্ত অণ্ড সমুদায় উপস্থেদ-সম্পন্ন ভাও মধ্যে পঞ্চলত বর্ষ স্থাপন করিল। তদ-নহর কক্র-প্রসৃত সহস্র অবও মধা ছইতে এক এক পুজ নিৰ্গত ফইল। কিন্ত বিনতা প্রসূত অও তদবস্থ রহিল। পুরুচার্থনী দীনা বিনতা তদদৰ্শনে লক্ষিতা হইয়া কাল বিলয় সহিতে না পারিয়া স্বপ্রস্ত অণ্ডত্ব-য়ের অন্যতর ভেদন পূর্বক দেখিলেন, পু-ক্সের শরীরের পূকান্ধভাগ মাজ ঘণাবৎ সংঘটিত হইয়াছে, অন্যাৰ্জ কিঞ্চিমাত্ৰও সংঘটিত হয় নাই। তথন সেই পুজা ক্রোধে ष्यक्ष करेशा चार कनगैरक धरे भाभ पि-লেন, হে মাতঃ ! ভুমি লোভ-পরবশা হইরা শরীর সম্পূর্ণ সংঘটিত না হইতেই আমাকে **দকালে অও হইতে বহিষ্**ত করিলে, অ-ভএব তুমি যে সপত্নীর সহিত প্রতিশ্বন্তঃ করিতেছ, পঞ্চ শত বংসর তাহার দাসী **হইয়া থাকিবেঃ এই অপ**র অভ্নব্যে कामात रा भूक जारह,यनि काहारक अ:-মার মত অকালে বহিষ্ত করিয়া অঞ হীন অথবা বিকলাজ না কর, তবে সে তো মার দাসীভা**ৰ মোচন করিবেক।** অতএব যদি তুমি পুজের বিশিষ্ট বল বিক্রম বাসনা कत्र, उत्र देश्या **चरणस्य क**त्रिया देशात जग काल अर्छीक। कर । रेरात कटबात आत পাঁচ শত বংশর বিলয় স্থাছে।

অফণ ক্ষমন্ত্ৰীয় কৰি আকার কৰি প্ৰলানের পর অক্তিক্ষ আবেতে করিল
কুর্যা দেবের বংগর সার্থি ক্টলের ১ এই
নিমিন্ত স্বাকাল প্রভাত সমরে অরুণকে
দেখিতে পাওয়া লায় ১ নপা-ভোজী গ্রুড়ও যথা কালে জনা গ্রুন কবিলেন ১ তিনি
লাত মাত্র ক্রার্ড ক্ট্রা বিধাত্-বিহিত স্থান ভোজা বস্তু আক্রণার্থে বিনভাকে
প্রিত্যাগ করিয়া নভোমগুলে গমন করিলেন ১

বাছবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার

প্রাকৃতিক নিয়ম লজ্জন করিলে মনুষ্যের কভ জুংখ হয় ভাষ্যর বিচরে ৷

১১ জ প্রাক্ত পরিকার ২২৮ প্রেস প্র -শার্বীরিক নিয়ম লক্ষ্যের ফল

যথা নিয়মে শারীরিক শক্তি সম্লায় চালন। করা দৃতীয় শারীরিক নিয়ম। ম नुषा अन्ताना नियरमत नाय अनियरम अ अद-হেলাকরিয়া ভাষার প্রতিকল স্ক্রণ যথপ রোনাস্তি ক্লেশ প্রাপ্ত হইয়া অপনিতেছেন। দেখ, কর শত ব্যক্তি ব্যায়াম বা প্রকার ব্র ष्यक् ठालना ना कतिया कृषा मान्या, मोर्ख-লা, অস্বচ্নতা, সদা বির্ক্তি ইত্যাদি অ-भिष**्यकात राज्यना** एकाश करता हैका व्य-मिक्कारे चारह, य अरमभीय चरनकारनक ধনাট্য ব্যক্তি এবিষয়ে সমাক্সাপরাথ আ-ছেন! বিশেষতঃ ইহা অত্যন্ত আক্ষেপের विषय, य अरमनम् हे दाजी विमानस्यत **বছতর বি**দ্যাভিলাযি মাত্র শারীরিক **আ**য়াস পরিত্যাগ ও নিয়নাতীত মানসিক পরিকাম করিয়া জাপনারদের শরীরকে কেবল ব্যাধি-মন্দির ওনিভান্ত অকর্মণা করিয়াছেন ৷ এ বিষয়ের উপদেশ কর: যে সর্বাপেক্ষায় श्रदेशकनीय, जांका के मकल विमानित्यत **অধ্যক্ষে**রা কিছু বিবেচনা করেন না।

अक ठालमा केतिरल य भन्नीत मुद्द शीरक,
 हेहा हे भूनः भूमः अछिशवं केन्ना शिज्ञारहः

পর্ক্ত বির্মিত মনো বৃত্তি চাললাতেও লারী-दिकं या हा नार्छ रहा। क्लाक्ष मंखिक मत्नद যন্ত্র শ্বরপ,এপ্রযুক্ত মনোর্ভির চালদা করি-লেই মন্তিক্ষের চালনা হয়। যথন যে আজ স্ব্যাপার থাকে, তথ্নই তাহাতে রক্ত প্র-वार ७ कमोत्र माखिकी नाज़ीत श्वकाव इक्ति হয়,এবং জদ্দারা ভাহার শিরা সমুদায় ক্রমে ক্রনে ভঢ়িষ্ঠ ও পুঞ্চ হইয়া কাখ্য-তৎপর हरा। अहे नाधात्म निश्चमानुषादत यन अ-র্থাৎ মস্তিষ্ক চালনা করিলে তাহার রক্ত প্র-वाइ अवल इग्न", धदर उदमझ्क मालिकी নাড়ী সমুদায় সবল ও সতেজ হইরা আর আর অঙ্গের সুস্তা বিধান করে, কারণ স্বস্থ माखिकी नाफीत अपूत अधाव वाणित्तरक কোন অসেব স্বাস্থ্য ও স্কৃতি লাভ হয় না ! অতএব কায়িক কুশলের নিমিত্তেও মনো-वृक्ति त्रमुमास हालना करा आवगाक। दि-मा। **ठफ**ी, भिण्ल कर्या, तियस काशा, धवः লৌকিক ও শাত্তিক যাবতীয় কর্ত্তব্য কর্ম্পের যথোচিত অনুষ্ঠান করিলে আমারদের সম্-माय मत्नावृद्धि मत्ताशात इहेय। ममस म-विरक्षत हालमा ७ चाचा विधाम रहा। 'छ-দ্বিষয় সাধনার্থে মনুষ্যের বাল্যাবস্থাতে ভাঁহাকে বিহিত বিধানে শিক্ষা দান করিয়া তাঁহার মনোর্ত্তি সমুদায়ের যথোচিত ব-ক্ষম ও শাসন করা উচিতঃ এবং যাহাতে গুৰুত্ব কল্যাণকর কণ্ঠৰা কর্মা সকল সম্পন্ন ক্রিতে হয় এপ্রকার অবস্থায় তাঁহাকে স্থাপন ক্রা**সর্বতো**ভাবে কর্ত্তব্য । এইৰূপ শিক্ষাতেই বালকের যথার্থ উপকার হয়, এবং এই প্রকার সম্পত্তিতেই জাহার যথার্থ সুখ সঞ্য হয়!

৬১৮২১ প্রীক্টান্ডে এক ফরালীশ ব্রীর কপালের আর্থ্রদ্রাগ উল্লাক্টিভ হৎম্যান্তে ভাছার মন্তিক্ষ দৃটি গোচর
হিন্ত; পিরবর্তৃইন নামক এক ডাক্টার ভাছার চিকিৎনা
কর্মনা তিনি লিথিয়াক্লেন, যে গণকালে এ প্রা আকাডারে
নিসু গাইত,তথন হাছার মতিকে মূর্নু ও সপক্তীন হইত,
গণন নিশ্বিত্ব প্রানিধ্যা মন্ত রুপ্তিত, তণন চঞ্জ
ও স্লাটি হইত,এবং মথন সমাক্ রাপ্রশ্ব থাকিত ও বিশেমতঃ মথনা দিয়া বিশোহে প্রগান্তর্কা ভারন বা বা উৎসাহ
পুনক করে প্রথম করিত, তথন চরকেপ্রান্তর্কা ভারিত
উচ্চায়া উচিত। ক্রপ্ত করিত, তথন চরকেপ্রান্তর্কা ভারত
রাপ্র অনেক ক্রে এইর প্রশ্বিক ক্রিক্টেক্স গ

্ এট মবিক বুণ মানন বন্ধ বুক্ত কু-ত্তিৰুক্ত থাকিলে আৰু এক উপকায় আছে, তাহ। সকলে জ্ঞাত নহেন। মনৌরুতি চা-লনার প্রকারানুসারে শুভাশুভ কল প্রাপ্ত হওয়া যায়। এবিষরের ছুই এক উদাহরণ দৰ্শিত হইতেছে, তৎপাঠেই ইহা বিশি 🕸-ৰূপ প্ৰতীত হইবে ৷ বিপদ্ও অপমান উপস্তি হইলে আমার্দের সাৰ্ধান্তা, আত্মানর, ও লোকানুরাগপ্রিয়তা এই সকল বুত্তি যৎপরোনান্তি প্রবল হইয়ামহা ক্লে-শানুভব হয়, এবং তদ্যারা হৃদয়, পাকস্থলী उ उमनुष्टम धनाना व्यक्त धनुष्ट इसः क्षः भाना इय, गाड़ी छुर्वन इय, अवः সর্বে শরীর ক্ষয় পাইতে থাকে। কিন্তু य-थन भरनावृद्धि गामनाय मनस्रक्षि करम, जर्यन সর্বন শরীরের স্ফৃত্তি ও সুখানুভব হইয়া স মস্ত শারীরিক ক্রিয়া সুচারু রূপে সম্পন্ন হয়, এবং তথন যত মনে। রুত্তির ্যুগপৎ চালনা করা যায়, ভাছার সংখ্যা ও প্রাব-न्यानुत्रादत प्रदित्र ऋ छि ७ श्वाच्या विधान হয় ৷ যদি কোন দিবস অলস ও অবসন্ন শরীরে উপবিষ্ট বা নিজীবি-প্রার শরান হুইয়া থাকি, আর তখন যদি প্রবাসী পুত্র वक् निवरमत शत्र भूटक क्षाकाशमन करत. अवना यमि व्यक्तमाथ अक्त मरवाम भाहे, যে কোন পরম মিত্র মহাসঙ্কটে পতিত হই-ब्राह्म, ध्वर ठाँहात छेकात्रार्श यामाद जान डेम्राभी रुष्या चावनाक, छत्व छर ক্ষণাৎ আলসা পরিত্যাগ পূর্বক অসামান্য আগ্রহ ও উৎসাহ প্রকাশ করিতে থাকি ! आभातरमत वृक्ति-वृक्ति, अशिकिवीर्ग, अश्वा-স্নেহ্ বা আসফ্লিকা, লোকানুরাগপ্রিয়তা ইত্যাদি যে সকল বৃদ্ধি পুৰ্বে নিশ্চেষ্ট ছিল, তাহারা সব্যাপার হইয়া মনেতে উৎসাহ দান ও শরীরে বলাধাম করে। প্রভাভ, ঘৎকালে কেহ প্রকুলচিত্তে মহোৎসাহ সহকারে আমোদ-পরারণ থাকেন,অথবা क्यान रेवब्रिक वा छेश्मव-घष्टिक ब्राभारत সাতিশয় নিবিষ্ট থাকেন, আরু মদি আ-কন্মাৎ পুত্তশোকের সমাচার বা প্রাণাধিক প্রিয় পতির মৃত্যু সংবাদ ঋৰণ করেন, ভবে क्टक्सनाट कारात मक्क कावक उ नम्मात

উৎসাহ बके इहा छिनि लाएक श्रीकुछ. বিবৰ্ণ ও নিতান্ত বল-বিহীন হইয়া ভূতলে পতिত हरतन, अवः करम करम जनमाम अ कब्र थाथ रहेर्ड शास्त्रन। धविषरत्रत चात्र এক সুন্দর উদাহরণ দিতেছি৷ কোন ব্য-ক্তিপোতাৰ্চ হইরা দেশান্তর গমন করি-ভেছিলেন *; প্ৰমধ্যে মাংসাভাব হওয়া-তে ভাঁচার লোকেরা অভিশয় অস্ত্রোয প্রকাশ করিতে লাগিল। পরে ভাছার-দিগের প্রার্থনা ক্রমে তিনি লোক সমস্ভি-ব্যাহারে করিয়া মুগয়ার্থে এক বনাকীর্ণ ছ র্ম পর্বতে গমন করিলেন। কিন্তু তাহার। আরোছণ-ক্লেম ও প্রথর রৌদ্র ভোগে এ-কান্ত ক্লান্ত ইয়াঘন ঘন নিল্ছাস পরি-ত্যাগ করিতে লাগিল, এবং অবশেষে গতি-শক্তি-রহিত প্রায় হইল। কিন্তু কি আশ্চর্যা: এমত কালে দূর হইতে এক মূগ দৰ্শন মাত্রে তাহারদের মিঃশেষে আলস্য জ্যার ও শ-রীরে বলাধান হইল, এবং তৎক্ষণাৎ সক-লে দিখিদিক্ জ্ঞান-শুনা হইয়া মূগের প-ু न्हां थारमान इंडेल, ७ (मडे म्शर्क लक्ष्यु করিয়া উপর্যুপরি বন্দ্র করিতে লাণিল।

যদি কোন পৈতৃক-গনাধিকারি ব্যক্তি ভোগাসক্ত ও আলসা-পরবশ হুইয়া বিদ্যা বিষয়ে ও সাংসারিক হিতার্থে কোন শ্রম-সাব্য ব্যাপারে শিশু না গাকেন, এবং ব্যা-রাম ও শাস্ত্র চিন্তাদি কোন প্রকার পারী-রিক ও মানসিক পরিশ্রম না করেন, তবে ভিনি পরমেশরের নিয়ম লঞ্জনের সম্যক **প্রতিফল প্রা**প্ত হয়েন। শরীর চালনাভাবে ভাঁহার কুধা মান্যাদি নানাপ্রকার শারী-রিক রোগ উপস্থিত হয়, এবং মানদিক চে-**স্টাভাবে শরীরের উপর মনের বী**র্যাব্যাপ্ত নাহওয়াতে সেই সকল রোজের ক্রমণঃ বৃদ্ধি হইতে থাকে 🖺 এইৰূপে ক্ৰমে ক্ৰমে কায়িক ওুমানসিক শক্তি সমুদায় ক্ষীণ হয়: কাৰ্য্য-ছেৰ, অস্বাস্থ্য, অইস্থয়, অবসাদ ৫ অন্যান্য শত শত প্রকার যাত্রার উৎপত্তি হয়, এবং অবশেষে ভাঁহার জীবন ধারণ করা কেবল ক্লেশের বিষয় ছইয়া উঠে।

একারণ অনেকানেক ধনাতা ব্যক্তিকে সর্ব্ধ-मार्चे दिना मश्मर्ग ७ अवश मिवन कतिएक मृष्टि कता यात्र 1 रेका निश्चित्व निश्चित्व স্বদেশীয় কোন কোন ধনি সন্তানের অভান্ত অবিহিত চরিত্র অন্তঃক্রণে দেদীপামান অ-বভাসিত হইতে লাগিল ৷ সর্বা প্রকার নিয়ম লঞ্জন করা তাঁচারদের অভ্যাস পা-ইয়া গিয়াছে। সুখ্য এখন গগ্ৰ মণ্ডল আ-রোচণ পৃথ্যক অবর কিরণ বিজার করিয়া **চতুর্দিক্ আলোক-পূর্ণ করেন, তথন ভাঁছা-**রদের শ্যা হইতে গাত্যোপান হয়; পরে অতি মৃত্তভাবে অপে অপে অবশা-কর্বা নিত্য কিয়। সমস্ত সমাপন করিতে ক্রিতেই সূর্য্য দেব মন্তকোপরি প্রেখর কর বর্ষণ ক-রিচে থাকেন: তদনন্তর মহ কিঞ্জিৎ অনা-য়াস-সাধ্য কমা ও স্নান ভোজন করিয়া শ-নায় গাত্রপাত পূর্বাক আলস্য ত্যাগ করি-তেই দিবাব্দান হয়। আহা। ভোজনে ভাঁহারদের ভূপ্তি জ্ঞানোনা, ও শরীরে স্বঞ্চ লতে। বোধ হয় না৷ প্রাবই স্ক্রা মান্র মাছে,—অতি সুস্বাত প্রবাও ভারাদের বি-স্বায়ু জ্ঞান হয় ৷ এইকপ কোন জেমে কাল হরণ করা ভাঁহারদের নিত্য-ব্রুড হই যা উঠে ৷ ভাহার: দিবদে এইকণ শারী রিক ও মানসিক নিয়ম জন্ত্রন করিয়া পুন-বিশির রাজিজাগরণ ও অন্যান। বিস্তৃ আছি ভাচরণ করেন। হা৷ ত হার প্রমেশ্ব রের আজা লঙ্গন করিয়াই এইরূপ অন্শেষ প্রকার ক্লেশ প্রাপ্ত হয়েন ৷ ইত্যাক্ত ক-तिट**७ क्**नग्र विनीर्भ हम. त्य आमात्राहरूत एनः শের সমুদায় লোকই কোন না কোন বিষয়ে পরমেশ্বরের নিকট সাপরাধ আছেন, ন-जुवा जामातरमत अमन हुमाना कन घाउँ-

যত প্রধান প্রধান মনোর্ভির চালনা করা যায়, ততই নিশাল ও প্রগাঢ় সুখের উদয় হয়; অতথৰ উত্তরেন্ত্রে বিষয়ে উৎ-**সাক্ষ সহকারে হথা নিত্তে বুদ্ধি হৃত্তি ও** ধর্ম-**প্রকৃতি** সম্দায়ের চালনা রাখি**লে** শা-तीति**क दी**र्या ७ श्वाका भाषन श**रक दिख**त

নানা প্রকার প্রাক্তিক নিয়মের যেরপ

উপকার হয়।

^{*}Dr Sparrman's voyage to the Cape,

বিচার করা গেল, তাহাতে বাঁহার বুজির শেশ মাত্র আছে, তিনি আর কথনই আল্লানে সুথকর বলিয়া নির্দেশ করিতে পারেন না, এবং নিয়মানুষারি দরীর ও মন্নারুত্তি চলনাকে জ্ঞাপীখরের প্রসাদলল পরম সুখ-ব্যাপার ব্যতীত আর কিছুই কৃতিতে সমর্থ হয়েন না। নিয়মাতীত পরীর ও মনের চালানা করিলে ক্লেশ হয় বলিয়া নিয়মাত গরিক্তাম ও চিন্তাকে গৃথিত কহা কথনা তাঁচিত নহে ! নিয়মিত পরিক্রাম ও চাল্মাকে ছ্বংখ-জনক মনে করা কেবল মূর্থ-তার কর্মাণ

আমৰা চতুঃপাশ্বর্তি লোকের রোগ, শোক, মৃত্যু, জরা প্রভৃতি যাবতীয় ক্লেশ প্র-ভ্যক্ষ করি, যদি তাহার প্রভ্যেকের কারণ অনুসন্ধান কর: যায়, তবে তৎ সমুদায় ए कामातरमत जानतारभत कल,-नतम কারুণিক পরমেশ্বর আমারদের কল্যাণার্থে যে সকল হিড-জনক নিয়ম সংস্থাপন করি-য়াছেন, তাহা লজ্ঞন করিবার কল, তাহার বিতর প্রমাণ প্রাপ্ত হওর; যায়। ইহা অবশারিত জানা উচিত,যে পরমেশ্বর কোন व्यक्तिरफंगा व्यक्तीकिक कांत्रत्व छूच्य श्रमान করেন না,এবংলৌকিক কার্য্য কারণ বিবেচনা না করিয়া কোন বোধাতীত মনঃ-কম্পিত ব্যাপারকে ক্লেশ নিবারণের উপায় মনে করিয়া তাহার অনুষ্ঠান করিলেও উপস্থিত ফুংখের নিরুদ্ভি হয় না, ও শত বৎসর ব্যা-পিয়া ভাঁহার স্তব **স্তুতি করিলেও ভিনি ক**-দাপি নিয়ম ভঙ্গ করিয়া ভক্তের অনুচিত প্ৰাৰ্থনা পূৰ্ব করেন না 1

কৃষরের নিয়ম লজন করিলে কত ছুংখ হয়, তাহা এদেশ সমজীয় সকল বিবয়েই সমাক্ রূপে প্রত্যক্ষ করা যাইতেছে ৷ প-জীলামের অপেকা কলিকাতাব লোক দে অধিক ছুর্মল ও রোগাফান্ত হয়, এখানকার বিষম ছুংখদায়ক ছুরবস্থা এক-বার বিবেচনা করিয়া দেখিলেই তল্লার মুর্যার্থ কারণ অবধারণ করা যায় ৷ পুতি-গান্ধিক জল-প্রগালী, স্থানে স্থানে রাশীকৃত জন্তাল, সংকীর্ধ স্থানে বাল, অস্বাস্থ্য-দায়ক বাযু সেবন ইত্যাদি ভূরি ভূরি কারণে কলি-

কাভার লোক স্থা ও জীর্ণ শরীর হয়। এই রাজধানীর যে অংশে এদেশীয় লো-কের বস্তি, ভাছার জল-প্রণালী সকল ই-क्षेक-रक्ष ७ ममज्य नत्ह; जाहात मर्या মধ্যে গভীর গর্জ হইয়। তাহাতে যে সমস্ত তুৰ্গন্ধ শটিত ক্ৰব্য সঞ্চিত পাকে, তাহা কথ-নই সম্জ্ৰপে নিগত হয় না। ঐ সকল मल-পূर्न पूर्व्य जन-अगानी कनाशि यद সামান্য কুণেও পরিষ্ঠ হয় না, একারণ ভাষা হুইতে অনবরতই বিষ-ভুল্য বাস্পো কাম হইয়া লোকের নানা প্রকায় রোগোৎ-পুত্তি করে ৷ তিন্তিল স্থানে স্থাংন যে সকল অপরিষ্কৃত পুষ্করিণী আছে, তাহাও বিষম अनिके मात्रक । एक ममुनाय गर्माकाटन জল-পূর্ণ হয়, ভট়স্ত ভূগ ও গলিত রুক্ষ পত্র ও নানাবিধ মৃত জন্ত তাহাতে দগ্ৰা-কিয়। শটিত হয়, এবং অনন্তর তাহার জ্ঞল যত শুদ্দ হয়, ততই ছুঃসছ প্রাণ-ঘাতক বাস্প নির্যাত হইয়া চতুর্দিকে মরক বিস্তার क्रिंतिर्फ शास्त्र । अहेन्नर्भ नगंद्र मर्दा সুনির্মাল স্বাস্থ্যকর জলাভাবে যৎপরোনান্তি অকল্যাণ ঘটিতেছে৷ সর্ব্ব সাধারণের পা-নীয় যে গঞ্জল তাহা সামান্তই অস্বঞ্ ও পীড়াদায়ক দ্রব্যেতে পরিপূর্ন বিশে-ষত ৩1৪ মাদ যেৰূপ কৰ্দমান্বিত লবণাৰু হয়, তাহা পান করিলে সদ্য মৃত্যুর সম্ভা-বনা। বাজালি পলীতে উত্তম সরোবর প্রায় নাই, এপ্রযুক্ত ধনাট্য ব্যক্তিরা দূর হইতে পানীর জল আনরন করিয়ারাখেন; ছুঃখী ও মধ্যবর্ত্তি লোকদিগের সুতরাং গঙ্গাজন ও নিকটবর্জি অপরুষ্ট পুষ্করিণীর कनहे वावहात कतिएक हन्न। ইহাতে যে কলিকাতার অধিকাংশ লোককে সর্বাদ পীড়িত দেখা যার, জাহার আশ্র্য্য কি? বিষ পাদে কাহার না অপমৃত্যু ঘটে ?

যাহার। কলিকাতা ৰূপ কারাগারে রুদ্ধ আছে, তাহারদের জীবন স্থৰূপ কল প্রা-প্রি যেমন স্কুর, যথেকী নির্মাল বায়ু লাভ ভলপেকাও ভূৰহ। অপ্রতিহত সুলভ বায়ু প্রাপ্তির আবশাকতা বিবেচনা করিয়া বা-জালি পর্লীর পথ সমুদার নির্মিত হয় নাই, কারণ তাহার সমুদার পথই বক্র, ও অপ্র-

শস্তা নগরান্তর্গত জল-প্রণালী ও অন্যা-না নরক তুলা ঘৃণিত স্থানের বিষময়বাস্প দারা নগরের বায়ু অনবরভই দূষিত হই-তেছেঃ তাহাতে কলিকাভার দক্ষিণ প্রায়-রীয় নির্মাল বাযু অবকাশ-শূন্য নিবিড় গৃহ শ্রেণী দারা প্রতিবন্ধ হওয়াতে নগর প্রবেশ পূর্বাক তদীয়ে অস্বচ্ছ নাযুকে বহিগত করি-তে পারে না, এবং সুয়া কিরণও সমাক্ রূপে বিকীন হইয়া ঐ সকল প্রাণ-সংহারক वान्न्यरक उंध्विश्व कविद्वार ममर्थ रूप ना र বাষু ও রৌক্রাভাবে কলিকাতার गাবতীয় এक তाला गृह य अकात मजल ३ भी हा দারক, তাহা কাহার অবিদিত আছে? इंड। हिन्दा क्रिल हिन्छ वाक्रिल इत, (य न-হস্র সহস্র সহায়হীন ব্যক্তি এই প্রকার अकि कचना मकी १ शुरू वक्क थाकिया अ ्वाल कालीन भगाग्न लालुक्षेपान हरेशा প্রাণ পরিত্যাগ করে! কত শত ব্যক্তি द्भिमाचिक कुर्ममा कल-अनालीत मनिधारन উপবেশন ও শয়ন করিয়া নিঃশাস সহকারে তদীয় বাস্প রূপ বিষম বিষ অবিরতই শরী-রস্থ করিতে থাকে!

এই সমন্ত ভয়ানক ব্যাপার, মৃত জীব ও শটিভ ভ্লাদিপূর্ণ পুরাতন বাটা, বা-জারের অপরিষ্ত হুর্গন্ধ স্থান, নরক-ড্ল্য नाकात-अनक ४गाभावय, गृह नम्माटयत অপ্রাশস্তা ও অস্বস্থতা,লোকের ইন্দ্রির দোব, তাহারদের আলম্ভ স্বভাব, দারিদ্রা দশা, কুচিকিৎসা ইত্যাদি ভূরি ভূরি প্রত্যক্ষ কা রণে এরাজধানীর উৎসেদ দশা প্রাথির উপক্রম হইতেছে। বাজালি পল্লীর সর্বা-স্থানেই ভগ্ন দেহ দেখিতে হয়! কোন ना क्वान अकात द्वाश आह नकत्वत नती-রেই প্রকুপিত বা অন্তর্ভুত রহিরাছে! স-হস্র সহস্র লোকের মুখনী ভ্রম্ট হইয়া অগ্নি-মান্দ্য, উদরাময়,বাত ও স্বর রোগের স্পষ্ট **हिङ्क श्वकान क्रिंटक्ट् ! ब्लाटक** क्रांत्रिका দশায় এই সকল ঘাতনা শত গুণে বৃদ্ধি-হয়। সহস্র সহজ্ঞ নির্দান নিরাজ্ঞায় ব্যক্তি **চিকিৎসাভাবে, পথ্যাভাবে, স্থানা**ভাবে, ৰুজনাভাবে কাল গ্ৰাদে পতিত হইতেছে! नीरिक अक्र अवन इरेरक्ट्, ख्याणि धक

চীর বদন নাই! শাসাগত প্রাণ হইয়াছে, তথাপি জল বিস্ফু দিবার লোক নাই ! আ वाकि विक विश्व हिएक अनकन वर्नन। कता কালার সাধ্য 📍 এসকল ভয়ানক ব্যাপার— বিষম জুঃসহ যাতনা মনে করিলেও অস্তঃ ক-রণ শোকাকুল হয়, হৃদয় বিদীন হয়, অজন্ত অঞ্চ পাত হয় ' কেবল পর্মেশ্বরের নিয়ম লজ্বনেই এই সমায় ভাষের ঘটনা হইয়াছে ' এইক্ষণে এই যচিনা অনিকাচ-নীয় বিষম ছঃখ রাশির সম্কু প্রভীকার হওয়া সাধ্যাতীত ৰোধ কইতেছে ৷ আ-মারদের দেশীয় লোক প্রমেশ্বের নিগম 'ও তৎ **প্রতিপালনের** ফল স্বির্ভ্য জ্ঞা তই নহেন, আরু যদিও কোন কোন বাজি এক্ষ্যে তাহার মর্ম অবগত হইতেছেন্ তাঁহারদের স্বাড়ীষ্ট সাধনের উপাব নাই। কিন্তু রজেপুরুলেব। লোকের এই রপ ক্লেশ 3 মৃত্যু ঘটনা দেখিয়াও যে তৎ প্রতক্ষান রের যত্ন করেন না, ইহা ঘৎপ্রোনান্ডি আক্ষেপের বিষয়া যে নির্দয় রাজা পত্র-ভুল্য গ্ৰজাদিগকে মৃত্যু-প্ৰাচে পতিত হঠতে দেখিয়া শক্তি সত্ত্বে তাহারদের প্রাণ রক্ষানা करतम, काँशास्क कि करिश क्रम ताक। वनः যায় ? শক্তি সত্ত্বে মুমূঘ্ ব্যক্তির প্রান্থ রক্ষা না করা, আর স্বহস্তে গড়গ প্রহারে কাজারও মৃওক্ষেদ করা উভয়ই বুলা ৷ রা-জপুরুষের: এ বিষয়ের তত্ত্বাবগাবণার্থ কতিপর কমিধ্যন্ব নিথোগ করিয়াছেন वर्षे, किन्नु जाहा अ विकल इहेल। क्यामा-নরের। **স্বকী**য় পদগ্রহণ করিয়া কেব**ল সর্বা**-माधातत्वत हास्त्रान्त्रम हहेशास्त्र । शहानू-८माठना कदा द्रथा। ७कत्व वाक शुक्रविन-গের এবিষয়ে সম্যকরূপ মনোযোগি হইয়া প্রতি বর্ষে সহজ্র সহজ্র লোকের মৃত্যু ও **লক্ষ লক্ষ্ লোকের ক্লেশ বটনা নিবা**য়ণ করা **সর্বাভোভাবে কর্ত্ত**রা ।

মহাভারতীয়**লোকাঃ** বিসতত্ত্বধৈৰায়নস্তস্থ্য সঞ্জা<mark>বিদে।</mark> ভূ**হাত্ত্ৰ**রনাদ্যন্তত্ত্বধাদেহগ**তঃ সদা**।।

সূচ্য। সূত্রং যথা বজ্রে সংসার্যতি,বাফ্সঃ। তদ্বৎ সংসারসূত্রং হি ভূকাসূচ্যা নিবধ্যতে 🔃 व्यथाद्विधि**ञ्जुब्दःकातः भरतगिकरञ्जि**यः ! ঋজুকী সভাবাদী চ তক্ষাৎ সর্বতা পূজিতঃ 🛚 । ভেজসা যশসা বুদ্ধা জ্ঞানেন বিনয়েন চ। ক্ষমন তপসা হৃদ্ধস্থমাৎ সর্বতা পূজিতঃ।। সমস্ত্ৰাচ্চ প্ৰিয়োনান্তি নাঞ্ছিয়ক কথঞ্চন ৷ यत्ना ३ जूकृलवानी ह उत्पाद मर्बद पुक्रिकः ॥ বভঞ্তশ্চিত্রকথঃ পণ্ডিছোঙ্লালসোঙ্শঠঃ। অদীনোহকোধনোলুবস্তমাৎ সর্বত পূজিতঃ দুড়ভক্তির্নিশাসা এক্তবান্দুশংস্বান্। ইভিসমোহদোৰত তমাৎ সৰ্বত্ৰ পূজিভ**ং** 🕻 কুডপ্রানঃ কুডপ্রানেচ তৃপঃ সমাধিতঃ। নিতামুক্তোহপ্রমন্তক তমাৎ গর্মত পুর্কিতঃ। নাপত্ৰপশ্চ যুক্তশ্চ নিযুক্তঃ জেন্দে পক্ষে: অভেত্ত: পরগুহানাং তক্ষাৎ সর্ব্বর পুঞ্জিতাং। ছংখোপঘাতে শারীরে মানসে চাপ্যপঞ্জিত যঞ্জিলাক্যতে কছু ং যত্নকং নানুচিন্দয়েক।৷ ভৈষজ্ঞানেতদংখন্ত গদেতল্পানুচিন্তদেও। . চিন্দ্যমানং কি চাডেটি সুৰন্দাপি প্ৰবৰ্ততে। श्राक्षा गानमः हृत्यः हनगान्त्रातीत्रामोगः। এত विकास मामामर्थाः स वारिकः ममाजासिकः ।। প্ৰনিত্যং যৌৰসং ৰূপং স্বীবিতং দ্ৰব্যসঞ্চয়ঃ ৷ ক্ষারোগ্যং প্রিয়সংবাদোগুধ্যেত্তত ন পণ্ডিক: ৰ জাৰপদিকং ছঃখামকঃ শোচিতুমুছভি। অংশাচন্ প্রভিত্নব তি যদিপশোত্রপক্রমং 🔢 সুখাহজতাং ছঃখংজীবিতে নাক্তি সংশাসং ৷ निक्षमा किस्स्यार्थय साहायत्रभाक्षमः 🔃 পরিত্যকতি যোত্বঃখা সুখা বাহপুরুষা মুরঃ অভ্যোত ব্ৰহ্ম সোভ্যায়ংন তে শে চিন্তি পৰি গুৰুষ্ पुरुषमर्थीह युका**टक** शामरनन ह रह सूथे? । দ্রংখেন চাবিগম্যক্তে নাশ্রেষাং ন চিন্তবেৎ।। क्रिकार हेन्द्र अधिक क्रिकार का नार्वातमान्द्रिका कुः ४२ विमाञ्जभामानाम् किमानाम् वर्कारः ॥ ক্যাগাতে**ভানেরে।খং স্যাদি**রোণজো-বিষ্চাতে 🛭 हेक्किरांगाः **प्रकेरकव अन**ग्र**अख्या**त्रको ॥ ^{्र}्वः अश्ररतिविवान् स्थातकाञारक्यः। ংনেন্দ্রিয়**ানীন্দ্রিয়ার্থানোপদর্পস্ক্যত**র্জং।।

বিজ্ঞাপন ভাৰ্মনাল i

আগামী 55 ৰাঘ বুধবার অপরার ৬ ঘটার সমরে সাম্বেসরিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক !

> ক্রীআনন্দচন্ত্র বেদান্তবাগাশ। উপাচার্য্য 1

বিজ্ঞাপন

যে সকল স**ভা** মহাশদের। নিয়মিত ৰূপে পত্রিকাদি প্রাপ্ত না হয়েন ভাঁছার। অনুগ্রহ পূর্বকি পত্র ছারা অবগত করি-বেন।

> औन् পেक्सनाथ ठाकूत। मण्यामक।

বিজ্ঞাপন

'ঘাঁচারা তত্ত্ববোধিনী সভার সভ্য ছট্-বার মানস করেন, তাঁচার: পত্র ছার। জানাইবেন ৷

শীন্পে**মা**নাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

বিজ্ঞাপন

নিমু লিখিত পুরাতন পুরুক সকল অংশ
মূল্যে বিক্রমার্থ প্রস্তুত আছে যাহার প্রয়েজন হর তত্ত্ববোধিনী সভার কার্য্যালয়ে
মূল্য প্রেরণ করিলে প্রাপ্ত হইবেন ৷
প্রদার্থ বিদ্যাসার ৷১/ববিক্রমন্দেরধি ৷০ব্রিক্রমন্দেরধি ৷০ব্রিক্রমন্দের ৷০ক্রিক্রমার ৷০ক্রিক্রমার
ব্রিক্রমার ৷০ক্রিক্রমার ৷০ক্রমার ৷০ক্রিক্রমার ৷০ক্রমার ৷০ক্রিক্রমার ৷০ক্রিক্রমার ৷০ক্রমার ৷০

এই ওজনোধনী প্রিকা কলিকাভা মহামগরে প্রাকৃষ্ণিকোত্বিত তলবোধনী সভার কার্যালয় হই-ভেপ্লাকোত্বিত তলবোধনী সভার কার্যালয় হই-ভেপ্লাকি মানে প্রকাশিত হয়।—ইহার মুল্য একটালা। ২৯ পৌষ সমৃৎ ১৯০৬। কলিকাভারী: ৪৯৫০।

শান্তিপক্ষণি।



<u>তত্ত্ববোধনীপ্রতিকা</u>

জ্ঞানর। এপ্রেরেয়জুরেরের সামবেনোগ্রেরেয়ঃ শিক্ষা কম্পোরাকেরণং নিজ্কং জ্ঞোজ্যোতিস্থিতি ভ্রম্ম ভদ্মর্মিলিয়াতে ।

পথিকের দ্বিতায় স্বপ্ন দর্শন

আমি মথুরা সল্লিধানে ধাকিয়া যে অ পূর্ব্ব স্বপ্ন করিয়াছিলাম, তাহা সর্ব্ব সাধারণকে অবগত করিয়াছি, এক্ষণে আর এক পরম কৌতুক-স্থচক ব্যাপার বর্ণনা করিতেছি। আমিমধুর।মণ্ডল পরিত্যাগ পূর্বাক রুদাবন, কুরুক্ষেত্র, হরিছার, ক-নধল প্রভৃতি পশ্চিমোন্তর প্রদেশীয় বছতর স্থান পর্যাটন করিয়া সম্প্রতি বিস্ক্যাচলে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছি৷ এ প্রদেশে শীতের অত্যন্ত প্রান্ধুর্ভাব। প্রাতংকালে हर्जुष्किक् (प्रचात्रृङ्कदः घन्छतः कुक्क्यिष्टिकार्टः আচ্ন থাকে, অত্যন্ত শীতল চুংসহ প-শ্চিম বায়ু প্রবাচে কলেবর কম্পানান হয়. उद्रक शर्जत मिनित विक ममस सर्वत শব্দে পণ্ডিত হইয়া তলস্থ ভূমিকে অস্প অস্প व्यक्ति क्षिएक थाटक । 'सूर्यावित्र नर्याणहे-মান-মৃতি; গগণ মণ্ডলে বছদুর উপিত হ-ইলেও নীহনর প্রভাবে চক্রবিম্বের ন্যায় অ-তি মৃত্ভাবে অক্টাৰ্শ পান্ন, এবং মধ্যাত্র-কালেও তদীয় কিরশ **জাল সু**খসেব্যরূপে यनुष्ठ रह ! गांत्रः कारल अ तकनीत्व গুরের বহিভূতি হওয়া আতার্স্ত জুকর: ভৎকালে দার রোধ করিরা অগ্নি সেবন ক-রাই পরম জীতিকর বোধ হয়। গত দিবস যামিনী যোগে যোগমায়ার সন্নিহিত গুছে কতক গুলি উদাসীনের সহিত একত্র ব-সিয়া অগ্লিসেব। ও গরস্পার কথোপকগনে महा मुर्त्थ काल गाश्रम कतिरु हिलाभ । আমার বাম পাশে এক বিমর্থাক্ত মৃত্ভাবী তরুণ-বয়ন্ত সন্ন্যাদী উপবিষ্ট ছিলেন; কথাপ্রসঙ্গে ভাঁহার পরিচয় জিজাসিয়। অ-বগত চইলাম, তিমি বাঞ্চল। দেশীয় এক ব্রাহ্মণের পুদ্র। ভাঁহার পিভার পর লোক যাত্রার পরে ভাতার পিত্ব্য-পুত্রেবা প্রতা-রণা করিয়া ভাঁহাকে পৈতৃক বিষয়ে ৰ-ঞ্চিত করিব।ছে। তিনি খতি নিবিবরে।ধ भनुषा, दिवान विमशास कान करन व्यर्ख ছউতে চাতেননা। তথাপি **অংমীয় স্বজনের** পরামশ্রেমে রাজভারেও ইহার প্রতী কার চেন্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু প্রতিপক্ষের সহায় সম্পত্তিবল অধিক ছিল, অতথ্য কৃতকাৰ্য্য ছইতে পারিলেননা। অবশেশে यानाकृत्य मश्मात-वित्रक क्रेट्रेश महा।-সাম্রম গ্রহণ করিয়াছেন। ভাঁহার বা-ক্যাবদান না হইতে হইতেই আমাধ্যশ্ৰ-বন্ত্রী আর এক সুশীল শান্ত সভাব ধর্মা পরায়ণ উদাশীন হ।! নারায়ণ বলিয়া দীর্ঘ পৃকাক পরিত্যাগ ·· ভাই **ভোমার** দারুণ ছুঃখের কথা শুনিয়া আমি মহা খেলায়িত হইলাম, একণে আ-मात्र क्र्मिनात विषय किक्रू अवन कर 1 নি কোৰ বাজ-সংক্ৰান্ত সন্ত্ৰান্ত পদে নি- যুক্ত ছিলাম, এবং নির্বিদ্ধে কর্মনির্বাহ ক-বিরা যশোভাজন হইয়াছিলাম ৷ ইভিমধ্যে আয়ুার উপরিতন অধ্যক্ষের মৃত্যু ঘটনা হইলে. অন্তেক ব্যক্তি তৎপদে অভিষিক্ত হইলেন। প্রথমাব্ধি ভাঁহার আচরণ দে-थियः। ताथ इहेल, द्राक्रतकात्यव नर्द्धय হর**ে সংস্ক^ণণ করিয়াই তিনি একর্ম এ**হণ করিয়াছেন। আমাকে ভাঁহার অনুগামি করিবার নিমিত্তে বিস্তর কৌশল করিলেন, কিন্তু কোন ক্রমেই মানস পূর্ণ করিছে না পারিয়া অবশেষে আমাকে পদ্যুত করি-বার নিমিত্তে চেষ্টা করিতে লাগিলেন, এবং ক্রমাগত তিন বৎসর শঠতা, নিধ্যাক্থা, ও নানা প্রতারণার অনুষ্ঠান দারা চরিতার্থ হ**ইয়া আপন**"র কোন প্রিয়পাতকে আমায় পদে নিযুক্ত করিলেন ৷ প্রধান প্রধান রাজপুরুষেরাঅনেকেই তাঁহার ছুই ব্যবহার ও আমার নির্দেশি চরিত্র ভরাত ছিলেন, কিন্তু ভাহার। কেছই মনোযোগ क्रिलिन ना। अभक्त विषद्यंत्र (य क्रि इत्र क्लाक्ल (पशिशा आमिर्डिष, डागर्ड আমার নিশ্চয় বোধ হুইল যে ইহার প্রতী-কার করা এক প্রকার অসাধ্যা। অভএন নিডাস্ত অনুপায় ভাবিখা সংসারাজ্ঞমকে ধি-ক্লার দিয়া এই পরেধর পথিক হইরাছি 1''

এই সমুদায় শেচেনীয় ব্যাপার অবং করিয়া আমি বিধাদ সমুদ্রে মগ্ন হইলাম, এবং দয়া, ক্ষোভ, ও ক্রোধ পর্যায়ক্রমে আমার অন্তঃকরণকে ব্যাকুলিত করিতে লা-शिव। माश्मादिक त्यादकत अहे मकल अ-ন্যায়াচরণ ভাবিতে ভাবিতে সে রজনীতে আমার সুন্দর্রপ নিজা হইল না, করিণ চি-ष्ठाकुल हिट्ड मुहाक सुवृश्चि नमाशम नष्ठव নহে! পরেরাতি শেষে কিঞ্চিং নিদ্রাক্ষণ হইতেই আমি কি অপুর্ব্ব ব্যাপার সকল দর্শন করিলাম ! ভাহা আমার যে প্রকার প্ৰগাঢ়ৰপ **হৃদয়ক্ষ** এহিয়াছে, তাহাতে সে সমুদায় শ্বপ্ল কি বাস্তবিক, সহস্য অনুভব করা যায়না। আমি জন সমাজের যে প্রকার বিপ্রয়ায় দেখিয়াছি, ভাষা স্বিশেষ বর্ণনা করা তুঃসাধ্য**় ভৱে ভা**হার সাধারণ **ভাব ও স্বলেশ সম্মন্ত্রীয় মৃৎ কিলি**ং যাস্থা দৃষ্টি করিয়াছি ভাহাই যথাবৎ বিবরণ ক-রিবঃ কিন্তু স্বশ্নের সর্বাংশে সম্পূর্ণ সাম-ঞ্জন্ত না থাকিলেও না থাকিতে পারে ।

আমার বোধ হইল, যেন কোন তিমি-রায়ত রজনীতে ভ্রমণ করিতে করিতে অকুমাৎ আকাশ মগুলের পশ্চিমাংশ দাব-দাছ ত্লা অসামানা জ্যোতিঃ-পূৰ্ণ দেবিয়া সাতিশয় বিশয়াপর হইলাম। আই আং।-শ্চর্যা তেজোরাশি দ্রুতবেগে অধো **গম**ন করিতে লাগিল: এ **প্রকার অনুভব** হ*ই*ল, যেন স্থায় মণ্ডল কোন অনিকেশ্য অনিক-চনীয়কারণ বশতঃ স্থান-ভ্রম্ট হইয়া পতিত হট্তেছে! কিঞ্চিৎ সমীপক্ত হইলে আহার অভান্তরে এক পুরুষ ক্রায়া প্রত্যক্ষরৎ আভা-সমান ≆ইল ৷ তাহার কিছু কাল পরেই স্পাট ৰূপে দেখিলাম, কোন শুলকাছি ভ্ৰেমাল্যানুলেপন ভ্ৰালঙ্কার-ভূবিত *'* কেজঃ-পুঞ্জ পুরুষ এক মণিময় দও হত্তে পু-থিবীতে অবভরণকরিতেছেন। ঐদণ্ডের শিরোভাগে 'ন্যায়'এই অক্ষরদ্য় অক্ষিত ছিল, এবং দিবসে বিস্তাৎ প্রকাশের অপেক্ষাও **ঐ তেজামওল মধ্যে ন্যায় দণ্ডের** গ্রভা বিশিষ্টৰূপে প্ৰকাশ পাইতে লাগিল। कलाकः भी शुक्रापत ममल लाकन मृश्वि कति है। অমার নিশ্য় প্রতীতি হইল, যে ইনি ধর্ম পুরুষ, ন্যায় দণ্ড হত্তে করিয়া ভূলোক শা-मनार्थ जागमन कतिरङ्ख्या । जानतक्रे তাঁহা**র প্রথর প্রভা সহু ক**রি**তে** না পারিয়া সভয় চিত্ত হইল, আর যিনি যিনি সহি-ষ্টা প্ৰভাবে তাঁহাকে সুন্দর ৰূপে নিরী-ক্ষণ করিতে পারিলেম, ভাঁহারদের নিকটে তিনি পরম রমণীর ৰূপে প্রকাশিত হই-লেন৷ এককালেই তিনি ভয়ন্তর ভ্রভক বারা কাহাকেও ভরে কম্পানান করিলেন, কাহাকেও বা সুমধ্র হাস্য প্রকাশ ভারা পরমানন্দ নীরে নিমগ্র করিতে লাগিলেন। যখন তিনি ভূমওলের সমীপ**বন্ত**ি হইয়া मबूर्यात मृचि शर्थत अदर्गक इरेरलम, छ-খন চতুর্দ্দিকে কতক গুলি মেঘ বিস্তার দার তাঁহার মহা মহিমান্তিত জ্যোতিঃপূর্ব মূহি আহত করিয়া তৎপরি**বেশ স্বৰূপ আ**লো

[े] नुहारत श्रद्धां अंदेशन शृति वर्गना चारह ।

क्चो। नाम। वर्ग कृषिक ও मर्का लाटकत मूर्थ-मृक्षा कतिया विकीन कतिरम ।

ইতিমধ্যে যাবতীয় লোক বিষয়াপন ও শঙ্কাকুল হইয়া এক বিস্তীৰ্ প্ৰান্তৱে সমা-গত হইল৷ বোধ হইল, যেন সমুদায় ম-নুষা বৰ্গ একত্ৰ উপস্থিত দেখিতেছি। খন অকশাৎ " সতেরে জয় সত্যের জয়" বলিয়া ঘন ঘন আকাশ বাণী ছইতে লাগিল ৷ পরে ঐ মহামহিমায়িত পু-রুষ মেঘাভ্যন্তর *হইতে কহিতে লা*গি-লেন ''হেমানব গণ! রাজ্যের অবি-চার নিরাকরণার্থে আমার আগমন হই-য়াছে. তোমরা আপন আপন প্রাপা বিষয় প্রাপণার্থে প্রস্তুত হও"। এই আক্ষিক দৈবধুমি শ্রাবণ করিয়া জনসমাজ ভর আশা, হর্ষ থেদে যে প্রকার বিচলিত হইল, ভাহাবৰ্না করা যায় না৷ তদনভুৱ ধৰ্ম পুরুষ অনুমতি করিলেন, "প্রথমতঃ বিষ-भ्राविकारहरू विवस ममाथा कवि**राउ श्राहा** क्टेलाकः या धरमे याँकात खन्न जार्र्ड्, जिलि তাহাএই দণ্ডেই প্ৰাপ্ত হইবেন। অত-এব যাহার যত লেখা পত্র আছে, সমস্ত উপস্থিত কর ৷'' তাহা শুনিয়া যাবতীয় লোক স্বস্থ স্বস্থাবিকার সঞ্চমাণ করিবার নিমিক্টে বিবিধ প্রকার লেখ্য পত্র সমুদায় আহরণ করিলেক। অনন্তর কি আশ্চর্য্য मिथिनाम, जाहाद्वरमत छेशह नाएर मरखद জ্যোতিঃ পতন মাত্রে তাহারদের যথার্থ তব্বকাশিত হইল৷ ঐ দণ্ডের এপ্র-কার আশ্রহ্যা গুণ যে তদীর কিরণ স্পর্শ **মাতে যাবতীয় কুতিম পত দক্ষ হটরা যার** ৷ দহুমান পতের প্রজুলিত অগ্নি, মুদ্রার লা-**ক্ষান্তৰ ও অনৰ্গল ধূমোলান ছা**রা তৎ স্থান **জ্ঞি ভরানক ও পর্ম বিশায়কর হ**ইয়া কোন কোন পতের ছুই চারি পংক্তি ও কোন কোন পত্তের কভিপয় প্র-কিও অকর নত হইয়া তাহার অগ্নি-**বর্গি হইয়া সেল ৷ ক্রিস্ক শত** শত মুদ্রার **ক্টাম্প পত্র সকল দাবানল-দক্ষ্ম মহা**রণাের ন্যায় ভন্মীভূত হইয়া পর্বতাকার হইল ৷ **ঐ মণিময় দণ্ড ক্যোভিঃ কন্ত কন্ত পরুম** গুহু স্থানে প্রবিষ্ট হইয়া লক্ষ্য জনকিত

অপহ্নত ও সংগোপিত লেখ্য পত্ৰ প্ৰকাশ করিয়া কেলিলেক। ইতি মধ্যে আর এক অত্তে ব্যাণার দর্শন করিলাম ৷ প্রধান প্রধান বিচারাগারের সহস্র সহস্র **অনু**জ্ঞা পত पक्ष बहुन, बदः बेन्त्रानदक् काटिंद्र প্রার সমন্ত নিজ্তি পর ভশীভূত হইয়। शंल. ও य मकल मञ्जूमनालि छात्रादान् বাক্তি তাহার আশ্রেষ গ্রহণ করিয়া নির্মাক্ত পুরুষের ন্যায় বিহার ও ব্যবহার করিছে-ছিলেন, ভাঁচারা তথক্ষণাথ বনা চট্য়: দ গ্ৰায়মান ধ্ইলেন: ইতি মরে। উংকে। চ. **অপহরণ, প্রতারণা, ও বল**ংকার ধার: যাবতীয় ধন উপাজ্জিত হইয়াছিল, সম্নায় পর্বত-প্রমাণ রাশাহ্রত হটয়া মেঘ মণ্ডল স্পর্করিল, এবং তখন ধর্মা পুরুষ এপ্র কার ঘোষণা **প্রকাশ ক**রিয়া দি**লেন,** যে •• এই ধন রাশি হইছে যাহার যাহ। নাযে। ধন তাহা গ্রহণ কর।''

ইহাতে লোক সমাজের কি বিষম বিপ-यात्र चित्रा छिति ! সহজ্ঞ সহজ্ঞ ব্যক্তি অপূর্ব্ব বেশ ভূষণ গারণ পূর্ববক পরম রম-ণীয় রথারোহণ করিয়া মহাবেলে গমন করিতেছিলেন, তৎক্ষণাৎ অবভরণ পুরঃ-সর গাতা হইতে সমস্ত বস্ত্র আভরণ উল্লে: চন করিয়া এক সামান্য বসন পরিধান পূ আৰক পদক্ৰজে চলিলেন ৷ কোন স্থানে দেখিলাম, লক্ষপতি বা কোটিপতি ধনাচা ব্যক্তি পরন শোভাকর অট্রালিকার বছ-মূল্য অভ্যাত্তম আসনোপবিষ্ট হইয়া বস্তু वाञ्चविम्तात महिष्ठ आत्माम ध्रासारम পরম মুখে কাল হরণ করিতেছিলেন, ইভি মধ্যে এক জন সামান্য গৃহস্থ অকমাৎ উ-প্রস্থিত হইয়া ভাঁহাকে আসন-চ্যুত করিয়া দিলেক, এবং তিনি তৎক্ষণাৎ তথা হইতে নিৰ্মাত হইয়া আহতি প্রাতন রুক্ষ-মূল বিক্ষ ভগ্ন গৃতে বাস করিলেন ৷ কুকাপি দৃষ্টি कतिलाम, रय मकल धनामक महामाना मनू-য্য বাছলারপ ধনাগ্য করিয়া অতি উদা-রভাবে ব্যয় ব্যদন করিয়া আসিতেছিলেন, ও অভিশয় আড়মর পূর্বক ছর্গোৎসবাদি সমস্ক ক্রিয়া কলাপ সম্পন্ন করিয়া বিপুল কীর্তিলাভ করিতেছিলেন, সহসা ভাঁহার- দের সামান্ত্রপ উদরায় আছরণ করাও
কঠিন হইল, এবং কঠক গুলি নিরম্ন নির্বিধ্য
ধ্যা লোক আসিরা ভাঁহারদের সমুদায়
সম্পত্তি বিভাগ করিয়া লইলেক। তত্তিয়
ধনাধিকার বিষয়ে যে সকল অম্প অম্প
পরিবর্তন হইল, তাহার বিবরণ করিয়া দেখি
তেছি, তথন তাহার বিস্তুর অন্যধা ভাব
দৃষ্টি করিয়াছিলাম।

এব দূত অন্তুত কাও সমুদায় অবলো-কন করিয়া সাতিশয় বিশায় সাগরে মগ্র হইলাম, ইতি মধ্যে অপর এক পরম কৌ-ভূহল-জনক অভ্যাশ্চর্যা মহে:পকারী ব্যা-পার উপস্থিত হইল৷ ধর্ম পুরুষ মেঘা-ভাষ্তরে অবস্থান পুৰ্বাক পূৰ্বোক্ত ভাবৎ কার্য্য সমাধা করিয়া আদেশ করিলেন, যে অবনীস ওলে কেহ অন্যায় মান সম্ভূম লাডে সমর্থ হইবেন না, অদ্যাত্ধি সকলেই নিজ নিজ গুণানুসারে পদ প্রাণ্ছইবেন৷ এই অভুল হিভ-কর অনুমতি শ্রাবণ করিয়া লোক সকল যৎপরোনান্তি উৎকঠা-পর্য্যাকুল करेल । जशरान्, रलदान्, अधनरान् मनू (याहा मकाट्य धर्म (मट्वेय ममाथवर्खि इहे-য়া দণ্ডারমান হইলেন, কিন্তু ভাঁচার নাায়-দণ্ড জ্যোতি সহু করিতে না গারিয়া অবি-, লম্বেই পরামূখ হইলেন। তিনি কেবল তাঁহার সব্ধ-শুণ-ময় ন্যায়দণ্টের কিরণ বি- কার্ ছারা সকলকে পরীক্ষা করিতে লাগি-लिनः हेहार् याश्वतिन्तं विशिष्ठे क्रश्रेष्मं, বিদ্যা বা বিষয়-বুদ্ধি আছে, ভদ্তিল আর আর তাবতেই দণ্ড প্রভাদর্শন নাত্রে বিসুধ ও শঙ্কাত্র হইরারহিলেন ৷ ঐ সকল মহাত্মা ব্যক্তি প্ৰয়ায় ক্ৰমে ভিন প্ৰোণীতে বিভক্ত হইয়া দ্ঞায়মান ইইলেন 'পুণ্য-বান্লোকেরা প্রথম শ্রেণীতে, বিদ্যাবান্ লোকেরা দিভীয় জেণীতে, ও বিষয় নিপুণ ব্যক্তি সকল তৃতীয় শ্ৰেণাতে নিবিষ্ট শ্ৰই-লেন। প্রথম শ্রেণীর শোভা দেখিয়া মন ए हिठ हहेल। डाँहातरमत्र कि श्राकृत तमन, प्रकार नश्चम अ मधुत वहन! कि त्नी-জন্য কি কারুণ স্বভাব! তাঁহারদিগের প-तम পৰিত্ৰ জোভিঃ-পূৰ্ব মুখ 🖣 অবলোকন

করিলে অন্তঃকরণ প্রেমামৃত রুসে আর্ড হই-তে থাকে। কতক গুলি হীন জাতীয় এবং অজ্ঞাত-কৃল শীল মনুষ্যকেও এই শ্ৰেণীভক্ত **पिरिशा विकासी शब इड्लाम । जाख बकारेल** যাহারদের অঙ্গ স্পর্শ করিয়া আপনাকে অশুচি বোধ করিয়াছিলাম, তখন দেখি-লাম, তাহারা কত শত সহংশক্ত ব্রাহ্মণ পণ্ডিতের অপেক্ষা উৎকৃষ্ট পদ লাভ করি-য়াছে, এবং যাঁহারদিগকে পরম তপস্থি ঋষি ভুল্য হোধ ছিল, তাঁহারা এই শ্রেণীতে ধৎকিঞ্চিৎ স্থানও প্রাপ্ত ছইলেন না। কত কত দীর্ঘ-পুত্র-ধারিমতা দান্তিক ত্রাহ্মণ প-ণ্ডিত ও প্রধান প্রধান বিদ্যালয়ের শত শত আত্মাভিমানি বছভাষি ছাত্ৰ এই শ্ৰেণীতে ভুক্ত হইবার নিমিত্তে বিস্তর বাধিত গু৷ ক-तिरलन। व्यवस्थिय यथन मर्लकाती वर्णा श्रूकव মুখম ওলোপরি নাায় দও তাঁহারদের চালনা করিয়া তদীয় প্রচণ্ড জ্যোতি বিস্তার করিলেন, তথন ভাঁহার। তাহা সহ্য ক-রিতে না পারিয়ালজ্জায় অধোমুধ হইয়া তথা হইতে নিজান্ত হইলেন ৷

দিতীয় শ্রেণী সংস্থাপনের সময় বিষম বিধাদ উপস্থিত হইল৷ যাবৎলোক তৎ-ত্রেণীর অধিকারী, সকলেই নিজ নিজ গুণাপেক্ষা করিয়া উৎকৃষ্ট পদ প্রাঞ্চির নি-মিত্তে ব্যগ্র হইলেন। তাঁহারদিগের এই ৰূপ অবিহিত অনুচিত জিগাধা দেখিয়া ধৰ্ম পুরুষ দণ্ডাহস্তে স্বয়ং অগ্রসর হইয়া স কলকে যথোচিত সম্মান প্রদান করিলেন ! সর্বোত্তম ধীশক্তি-সম্পন্ন ব্যক্তি সম্দা-য়কে সর্কাথ্যে স্থাপিত করিলেন। যাহার-দের তাদৃশ স্বকীয় শক্তি নাই,যাহারা কেবল পর-রচিত গ্রন্থ পাঠ দ্বারা বিদ্যা বিষয়ে পা-व्रमांग हहेब्राएइ, छाहात्रनिगरक उৎপत्त्र অনেকানেক গ্রন্থপাঠ হইয়াছে,কিন্তু তাদৃশ বিচার শক্তি নাই, তাহারা সর্বাশেষে থা-কিল৷ এইৰূপ এক্ষণকার প্রত্যেক বিদ্যা-বান্ব্যক্তি ইহার কোন না কোন স্থানে निविधे इंहेलन । कलंड कि विभयांग्रहे टमिथलाम! याहात्रस्त्र विमा विवदः विल-ক্ষণ খ্যাতি আছে, তন্মধ্যেও অনেকানেক

ব্যক্তি অধম স্থানে সংস্থাপিত হইলেন। ক-তক গুলি বাঙ্গলা এস্কর্ত্তা এই শ্রেণী-ভুক্ত হইয়াদ গুয়েমান হইয়াছিলেন, কিন্ধু আক্ষেপের কথা কি কহিব, ধর্মপুরুষ তাঁহারদিগকে নিতাস্ত অনধিকারি বিবেচনা করিয়া তথা হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দিলে-ন ;— তৎত্রেণীর কোন স্থানে তাঁহারদের স্থান হইল না। তাঁহারদের এই দারুণ ছ-রবস্থাদর্শন করিয়া আমার অন্তঃকরণ ছুঃসহ ছুঃখ তাপে তাপিত হইতে লাগিল! ভাবিলাম, এই সকল অবোধ মনুষা ংং বিষয়ে যশঃ সৌরভ লাভের বাসনা করে,অ-ধিকারি না হইয়া তাহাতে কেন প্রবৃত্ত হর ! তবে প্রবোধের বিষয় এই, যে তিনি তাহারদিগকে শ্রেণী বহিভূত করিয়া ক-হিলেন: "তোমর। প্রতিপাত্তি লাভ ও স্বদে-শোপকারের যথার্থ পথ অবলয়ন ক্রিয়াছ; খদেশীয় ভাষার অনুশীলন ব্যতিরেকে কখন কোন দেশে জ্ঞান প্রচার ও বিদ্যা প্রা-ছুভাব হইতে পারেনা। কিন্তুতোমরা किছू काल भरेष्यभाग्न थाक, भरत बरबात्रथ পূর্হইলেও হুইতে পারে ৷ ভোমরাযে স-কল প্রস্তাব লিখিয়া গাক, তাহার পূকাপর ঐক্য থাকে না, ভাবের প্রগাততা থাকে নাএবং রচনাও শুদ্ধ ও পরিপাটা হয় না 🛚 বিদেশভঃ যিনি যে বিষয় রচনা করেন, তিনি তাহানিয়মিতকুপে শিক্ষা ও ভদ্বিষয়ের **শবিশেষ তত্ত্বানুসম্বান না করিয়াই তা**-হাতে প্রবৃত্ত হয়েন। আর অনেকে যৎ কুং-শিত অনুপ্রাদের অনুরোধে তাৎপর্যোর ব্যাঘাত করেন। ইত্যাকার সমস্ত দোধ শোধন পূর্বক স্থাভীষ্ট বিষয়ে পারদর্শি হ-ইতে পারিলে অবশ্য রুতকার্য্য হইবে l'' যাহার ভাষান্তরে সামান্য রূপ কথোপকখন শিক্ষা ক্লবিয়া বিদ্যাভিমান প্রকাশ করে,— যাহারদের কোন বিজ্ঞান শাস্ত্রে কিছু মাত্র ব্যুৎপত্তি হয় নাই, তাহারদের অপমান पिशा श्रम स विमेर्ग श्रहेर्ट मा शिमा । bi-হারা ধর্মপুরুষের বিস্তর সাধ্য সাধন। করিয়াও তথায় য**ৎ কিঞ্ছিৎ স্থান**ও প্রাপ্ত হইলেক না। **অ**ার ক**তক্র্যালি পণ্ডিতে**র ছরবস্থার বিষয় কি বলিব ? ভাঁছারা নিরু-

পবীত হীন জাতীয় শত শত ব্যক্তিকে আপনার অপেকা উচ্চ পদাভিদিক দেবিরা অতিশয় সম্ভপ্ত হইলেন ৷ হা! কত শত গুরুদেব ঐ শ্রেণী হইতে বহিছুত হইয়া লজ্জায় অবেশমুখ চইলেন, এবং তাঁচার শিবোরা তাঁচার উৎক্ষ থানে স্থিত করিনা গাঁচারদের দারণ চুর্ফশা দর্শন করিতে লাগিল।

এই শ্রেণীর লোক সংস্থান সমাপ্ত-हरेल धर्म भूक्ष विषशिनिगरक व्याहान क-রিলেন ৷ আহা শুনিয়া চতুঃপাধ বির্তি প্রতাপান্থিত মান-গবিবত বছ ব্যক্তি মহোৎ-নাহ সহকারে সদর্প পাদ বিক্ষেপ পূর্বক আগিমন করিলেন৷ ধর্মদেব দণ্ড প্রভাগ্র কাশ স্বারা ভাঁহারদের যথার্থ স্বরূপ অ-বলোকন করিয়া কহিলেন, '' তোমরা এবি-যরের উপযুক্ত বট : তোমরা উদ্বোগি, পরিশ্রমি ও কর্মদক্ষ, তোমারদের বিলক্ষণ বিষয়জ্ঞান আছে,কিন্তুধর্মা রক্ষায় যত্ন নাইঃ ভোমরা স্বার্থ পরবৃশ হুট্য়া পরপাড়াকর, উৎকোচ গ্রহণ কর, এবং স্বীয় প্রভ্র অপ-চয় করে। এসকল কুবাবহার পরিহাগে নাক্রিলে কোন প্রকারে তেনারদের সং ভ্ৰমজনক পদ লাভের সম্ভাবনানটো" এই কথা বলিয়া ভাঁচারদের মধ্যে শতকে এক দুইজনকে এইণ করিয়া অপরাপর সকলের আবেদন অগ্রাচ্য করিলেন৷ ত-দনন্ত্র তিনি সংসাধের বিষয় কার্য্য স-म्लाननार्थ भूरताङ्क छूहे (अनीव कडक লোক আছান করিয়া দেখিলেন, ভাঁহার-त्वत भर्षा चर्नरक्रे रामन छान। शन अ ধর্মশীল, সেৰূপ বিষয় পারদাশি নচেন, এবং বিষয়কার্যো ভাঁচারদের অভিয়াচিও नारे । फरव रा कष्ठकन जिल्ला-मन्त्रक्त দুতরাং তিন শ্রেণীর উপযুক্ত, ও পদগ্রহণে সম্মত ও অভিলাধি হইলেন, তাঁহারদিগকে অত্য**ংক্ট** সভ্রাস্ত পদ সমুদায় সমর্পণ করিলেন, এবং তুৎক্ষণাৎ ঘোষণা করিয়া पित्न रा जून खरेंन हैं हाता है म**र्स माना**, পরমপুজা, প্রধান মনুষ্য ।" তৎপরে অ-त्वकं भाविश विश्वित याँ शहा अन मन्त्रम् छ। हात्र पिशस्त उपरण्या जनस्र

शर्म द्वाशम क्रिटान, धदः अवटनटव या-शाहरमञ्ज त्करण विषय कार्य। रेनशृक्ष আছে, ভাহারদিগকে অতি অপক্ষট কুদ্র কুত্র পদে নিযুক্ত করিলেন, আর উৎকোচ-আহি পর-পীড়ক পাণাত্মা অপহারিদিগকে **७**था **११७ वश्कि**ण क्रिया मिलन। ७-व्याक्षा (मिवनाम, शृहकः याँ शाला छेक छक রাজ-সংক্রাপ্ত মান্য পরে নিযুক্ত ছিলেন, ভাঁহারদের অনেকে এই রূপ মান-চ্যুত ও ভিরস্ত হইয়া সে স্থান হইতে এস্থান क्रिलन 1 शूर्व काँशता याशाविषगरक মনুষ্য বলিয়া গণ্য করিতেন না, তাহার। পদস্হ ইয়া ভাহারদের এই ৰূপ বিষম যন্ত্রণা-দায়ক ছুর্দ্দশা দর্শন করিতে লাগিল। ক্তিপয় ইংরাজ জাতীয় রাজ কর্ম চারির অপমানের কথা কি কচিব? ভাঁছারা ক্রমাগত নামাতৃ্টাচরণ করিয়াও একাল পর্যান্ত কেবল সহাধ বলে ও বুদ্ধি কৌ-শলে সমুদায় প্রাক্তর রাথিয়াছিলেন, এফাণে थर्म श्रुक्रावत नाश क्ष मण का: कि मछ করিতে না পারিয়া মানভাষ্ট ও লক্ষাপ্রাপ্ত হইলেন, এবং কভিপয় বিচক্ষণ ব্যক্তি তাঁ हात्रामत्र भरम व्यक्तिक हहेरलन।

কিন্তু ইহাতেও বিস্তর মানা পদ শূনা थाकिन त्मिशा धर्माभूक्य अशम ও पिछोश শ্রেণীর কতক তালি জ্ঞানাপন্ন শাস্ত-স্বভাব পরিশ্রম-বিষুধ ব্যক্তিকে ঘণোচিত সম্বন্ধনা করিয়া মৃত্তাবে মধুরস্বরে কহিতে লাগি-लान, "रहामद्रा विकासवान् ७ धर्मानील वहे, किंद्ध अध्यकात्र खन-मण्डाच इहेग्रा ज्यान-**ভ্যের বশীভূত থাকা উচিত নহে** ! কতক গুলি পুত্তক সমভিব্যাহারে বিরলে কাল-याभनार्थ विमात मृष्टि इस नारे, अवः মঙ্গ ত্যাগ পূর্বকে সংসারের মঞ্চলামঞ্চল नम वृक्षि व्हेशा अननूतार्ग नमत्र त्कल क-রাও ধর্মের **উদ্দে**শ্য **নচে** ৷ ভূমগুলে জন্মগ্রহণ করিয়া যদি সংসারের কার্যাই না করিলে, ভবে জীবানের ক্রুলকি ? শিক্ষিত विमातक यमि कशरण्य अपकादार्थके नि-सात ना केतिरब, ^हण्डा रन विमात कारपाकन कि ? यहि नक्टन है कामाइटनद न्यात्र द्वा काल एत्रन नटन कर স্তি হয় **৷ তোমরা বলিয়া থাক, যে আ**-নরা আকাজকার হস্ত হইতে উদ্রীণ হইয়া সম্যোধ অবলয়ন করিয়াছি, কিন্তু তো-মার্দেব যে **প্রকার হীন অবস্থা দেখিতেছি**, তাহাতে এ**ন্ধুপ নিশ্চেষ্ট থাকা কথন**ই উচিত নতে। তোমরাকেবল কোন ক্রমে প্রাণ ধারণ করিয়া রহিয়াছ; সমুচিত অন্ধ-रञ्जामि बाहतरन्ड ममर्थ नहा यरथरे छै-পাদের অল্ল, অল্লেশ-জনক পবিত্র বস্ত্র, প্রশস্ত পরিষ্কৃত বাটা, এবং অন্যান্য আব-শ্যক জব্যাভাবে তোমারদের পরিবারেরা ক্লিফ্ট ও পীড়িভ-শরীর হইয়া অশেষ প্রকার **ছঃখ পাইতেছে, তাহারদের রোগ হইলে** বায়-সাধ্য প্রযুক্ত ভালার যথোচিত চিকিৎসা হয় না, স্বাক্ষ্যাভাবে তোমারদের স-ন্তানদিশের শরীর পুষ্টি ও মনঃ ক্রুতি হয় না, এবং ধনাভাবে তাহারা উৎকৃষ্টৰপ শিক্ষাও প্রাপ্ত হয় না। ইহাতে ভোমার-দের দারা বিবিধমতে প্রমেশ্বরের নি-য়ন লজ্মন হইতেছে৷ ক্ষমতা দত্ত্বে এপ্রকার অবস্থায় তৃতা থাকিয়া এই সমত ছঃধ नित्राकतरभव यञ्ज ना कता व्यवनारे प्रविश ৰলিতে হয়! আমার অঙ্গ স্বৰূপ যে সম্ভোষ, তাহার একপ স্বভাব নহে। আপন আপন ক্ষমতানুদায়ি অবস্থাতে তৃপ্ত থাকা এবং स्य ध्रःथ निवाद्ररावद्र উপाग्न नार्डे, তाहास्क बार्ज्ञालक ना इहेन्ना देश्यादलयन श्रृक्तक প্রসন্মভাবে সংসার যাতা নির্বাহ করাই মন্তোবের প্রকৃত লকণ;—এরপ সভোবে **भूगा अधिक। इहेरे जाहि। जब**बब खामा-রদের আত্ম হিত ও সংসারের উপকারার্থে महरू रेखना मर्सरलाखारव कर्खवा, ध्वर ভাহা হইলে ভোমরাই এই সকল মাদাপ-দের অধিকারি হইতে পার ১"

ধর্মের এই সকল মধুর উপদেশ প্রবণ করিয়া আমি অনিক্রচনীয় আনক প্রাপ্ত হইলাম, এবং সাতিশার প্রাক্তানিক ইইয়া মনে মনে প্রমেশরের ধন্যবাদ ক-রিলাম ৷ এমত সময়ে উদাসীন্দিগের স্থানান্তর বালার্থ উবোপ-ধুনি বারা স্থান্ত ইইলে সভাস্ত বিশাস্থানিক ইইলাক, এবং তবন চিতা করিলাম, যে এই পর্ম রুমণীয় শ্বপ্র-ব্যাপার সম্পূর্ণ সফল হওয়াই উচিত।*

श्राटशम मरहिङा

ध्यममधनमा नवमानुवादक विजीयः मक्जः

> প্রস্কৃথিয়ি অনুষ্ঠুপ্**ছক্ষঃ** অগ্নির্দেবত।

> > ৫৩২

५ वर्गता वर्मृ तिश्रक्ता औ-मिला छैल। यकी स्वध्र कनः सनकालः मृल्य, यः।

হত অলোঁ 'কৰে' বিচ ' ইচ ফ্রমি' বসুঁ ' বসুন 'ক্সুন' 'ক্সান 'আদিকান' আদিভান ' যঞা' যজ 'উচ ' অপিচ ' জনং' জন্য ' দেকোরপ্ যজ নীদুশং ব্যারং' শোভনযাগাসুক্রং ' মনুজাতং' মনু নাপ্রজাপতিনা উৎপাদিতং ' মৃতপুরং' উরক্ষা শেকার্থ।

১ হে অগ্নি! ভূমি এই কর্ম্মে বসু,রুদ্র,
আদিত্য দেবতা সকলকে এবং শোভন যাগ বিশিষ্ট, প্রকাপতি হইতে উৎপন্ন, উদক-সেক্তা অন্য দেবতাকে অর্চনা কর।

660

२ @ कीवारनाहि मा खर्य एन-वार्श्वरम्भ विरुद्धे विषयः । जारन्। हि-मस्य गिर्वनञ्जयेखिश्मञ्जावेर ।

্ হে 'রোহিন্দ্র' রোহিলামতৈর বৈরণেত 'আছে'
আছে 'বিচেডকঃ' বিশিউপ্রজাসা 'বেবাঃ' 'লাগুরে'
ববির্দ্ধরতে অজ্ঞানায় 'ঝান্তীরানঃ' ফলনা দান্দ ভঙ্কালং হি' ঝলু 'বির্দ্ধঃ' থাকিঃ কৃতিভিত্রননীযাঃ
'অম্জিংশত\' জনবা সংখ্যা 'ভান্' দেবান্'আন ২ হে রেছিয়ামক অধ্যুক্ত অগ্নি !
উক্তম প্রক্রাযুক্ত, হবিন্দাতা যক্তমানের কল
দাতা, স্তুতি ভার। সম্ভক্রনীয়, তায়ব্রিংশৎ
সংখ্যক যে দেবতা সকল তাঁহারদিগকে
ভূমি এই যক্তে আনয়ন কর !

4.38

ও প্রিয়মেগ্রদ ত্রিবক্ষা ঠবে-দো বিৰূপ্যথ । অঙ্গিরস্বন্ধ হিত্রত প্রস্কৃণ্যা শ্রুপীহর্বং।

ত হে 'মচিত্রড' প্রস্কুচকর্মন্ 'ঝাঙাবেনঃ' আগ্র জম' প্রভাগা 'সহজেঃ 'ছবম' আন্তানম' কালী 'লুল 'গ্রিস্টেমধন্ন' আরিবন্দ 'বিজপ্রন' আলিব্রন বিজ্ঞানি প্রিটিশ্র আলিবান্দ আলিব্রন্থ ভ্রন্থ

ও কে বছকর্মা জাতবেদা অগ্নি! তুমি মহর্ষি প্রস্কেন্ত্র আবাহন প্রাবণ করে, যেমন প্রিয়মেবাদি ঋষি সকলের আবাহন প্রাবণ করিয়াধাক।

৫৩৫

৪ মহিকেরবউত্তেখ প্রিযমে ধাঅহ্যত । রাজভিমধ্রাণাম গিং শুকোণ শোচিধা।

৪ ' মাজকেরবা প্রোচ্চকমান্য 'প্রিয়বমধাঃ' প্রি-নেন বক্তেন উপেতা: শুরুষঃ উত্তরে রক্ষার্থ ' আছি ' 'আহ্বত ' আহুবুর রে জীলুশ, আছি ' আর্মান্থ বন্ধান্য মধ্যে 'দক্ষেপ 'প্রক্রেন 'শোচিমা' প্রাক্রাশন বন্ধান্য নিশামান ৷

৪ বৃহৎ কর্মকারী প্রিয় ও যজ্ঞ বিশিষ্ট ক্ষম সকল যজেতে বৃক্ষার্থ শুদ্ধ প্রকাশ বি শিষ্ট প্রদীপ্ত অগ্নিকে আংবান করেন !

@**3**3

৫ वृठीहरान मट्डामा है वृद्धाः शी निन्नः। वाज्यः कर्नुमा म्नदा-हराज्यस्य वा । । । अक्टा

Rendered from a number of the Tatlet.

৫ হে ' স্ভাবহন ' যুচেনাত্যমান ' সভ্য ' ফলপ্রদ্ব অল্পে ' ইয়াঃ' জ্জাভিঃ প্রযুক্তমানাঃ' উ' জ্বপি ' রিরুঃ' জ্যোত্রপাঃ বাচঃ ' বৃক্ষধী ' কুক্ষধি শৃণু। ' কণ্রা' মঙাই: 'কুমহঃ' পুলাঃ ' মাজিঃ' গীর্জিঃ ' জ্বাসে' ব্যক্ষধিশ ' জ্যা' জাশ ' কথছে ' জ্যাক্ষয়বি । ১৩।০১।

৫ হে ঘৃত ছারা আছ্ড, ফলপ্রদ অগ্নি :
বুনি আমারদিগের উক্ত এই স্তবন্ধপ
বাক্য শ্রাবণ করে, মহর্ষি কণ্নের পুক্ত সকল
স্বীয় জীবনের নিমিত্ত যে বাক্য ছারা তোমাকে আহ্বান করেন 1১1৩1৩১1

609

৬ স্বাঞ্চিত্রশ্রবস্তম হবজে বি-ক্ষু জন্তবঃ। শোচিষ্কেশং পুরু প্রিয়ার্মে হব্যায় বোর্টবে।

৬ হে 'চিত্রশবস্কা' অভিশবেন বিতিধচনীরপান্ধ সূক্র'পুরুপ্রিল' সত্নাৎ সঞ্চানানাৎ প্রীতিকর 'অথে' 'ব্রংং' চথ্যাদ নোচতে তিনিকোটুৎ 'নিজুলন্ধবং' প্রান্ত্রশাল সঞ্চানাঃ 'ভাবত্তে 'আক্রমকি কীদৃশৎ 'শোচিকোশং'নীপ্রেপকেশেপেরৎ।

াহ প্রচুর বিবিধ হবিরপ অরযুক্ত, বস্তু যজ্ঞানের প্রীতিকর অগ্নি: প্রজা দার।উৎপদ্ধ যজ্ঞান সমূহ, প্রদীপ্ত শিখা বিশিষ্ঠ ভোমাকে হবিব্রহন নিমিন্ত আ-ক্রান করে।

607

१ নি দ্বা হোতারমৃদ্ধিজং দ-ধিরে বসুবিভামং। ক্রম্থেক নং স প্রথস্তমং বিপ্রাজন্মে দিবিফিয়ু।

্চে 'আংগে' 'হিপ্তাং' মেগাবিদাং 'দিনিসিমু' বাংলেবু 'কাং' আংম' নিন্দিনিত্ত হৈ পিতৃত হৈ প্ৰীচুপ্থ 'চোকাবং' আহোকাবং 'হাজিছেম' গুতুমু ফ্চনশীক্ষ্ম 'ব্যুবিক্তম' ধনস্য জন্ধাকিতাবং 'জাককৰ্ণং' প্ৰাণ্ড যোগাকৰোঁ পেকৃৎ 'স্পুথস্কুমণ' আতিশ্যেন প্ৰকাত হ

ং হে অগ্নি! মেধাৰি প্ৰাত্থাণ সকল বজৰ ভানে তোমাকে আপিত করেন, ভূম হোতা, ক্ষিত্ৰ অনুপ, বসস্তাদি ক্ষতুতে যাগ কৰ্তা, বনপ্ৰাপক, অৱধ্যোগ্য কৰ্ম বি-শিক্ত, এবং অভিশন্ন বিশ্বাত 1 なび3

৮ আ দ্বাবিপ্রাঅচ্চাবৃং সতসোমাঅভিপ্রমঃ । বৃহস্তাবিভূতোহবির্গে মন্ত্রীয় দাভবে ।

৮ হে 'অংগ' ' সুতসোমাঃ' অভিযুত্তসামযুকাঃ
'বিপ্রাঃ সেধাবিনঃ থকিছা: প্রথা হবিল্লকণ আদে
'আভি অভিলক্ষঃ 'জ্যা জাব 'আ অচুচারুঃ' আচুচা বুঃ আগময়রি । তীদুশ- ক্তাৎ 'বুচন্তাঃ' মার্চারুৎ ভাসমানং তীদুশাঃ বিপাং' দাখনে 'মন্তাম' হবিঃপ্রদ-দা যজমানসা ' চবিঃ' 'বিভূতঃ' ধার্যক্ষঃ।

৮ কে অগ্নি : হবিং প্রদাতা যক্ষমানের হবির্জারয়িতা, অভিনৃত সোমযুক্ত, মেধাবি ঋত্নিক্সমূহ উৎরুষ্টি প্রদিধি তোনাকে হবি অন্ন উদ্দেশ করিয়া আনগ্ন করেন।

680

৯ প্রাত্র্যাব্রী সহস্কৃত সোমন্প্রায় সন্ত্য। ইহাদ্য দৈব্যজনং বহিরাসাদ্যাবসো।

১ জে 'সহজ্য' সলেন মথিত 'সন্ত্য' ফলসাড়ং
'বলো নিবান্তে ভুত অয়ে 'টহ' দেখনজনদেশে
'আনা' অফিন্দিনে 'সোমপেযাল' সোমপানার্থ
'প্রাত্যাব্রং' প্রাত্রাগছ্তোদেবান 'দৈবাশ্বন
'আনামপি দেবভাশ্বন 'বহিঃ' বজং 'আসাদ্দ্রা'
আমাদ্র প্রাপ্তঃ

১ ছে বলমধিত, ফলদাতা, নিবাদের কারণ অঞ্ছি! তুমি অদ্য দেবতাদিগের যজ্জেতে প্রাতঃকালে যজ্জভূমি গামি দেবতা সমূহকৈ এবং অন্যান্য দেব গণকে সোম-পানার্থ যজ্ঞ লাভ করাও।

व्ययः मामरेगक्षिः प्रताप्तरण

685

১০ অর্বাঞ্চং দৈবঞ্জনময়ে যক্ষ সক্লতিভিঃ। অবং সোমঃ সুদা-নবস্তংপতি তিরো অক্ল্যং।১।৩।৩২ ১॰ বে 'অগ্নে' অর্থা আছিৎ' আছিমুখং ' দৈবা-এনং' দেবভারপে প্রাচিনং ' সফাডিভি: ' সমানা আনি ক্রেটার সহ ' মক্ক' যন্ত্র। কে ' সুদান বা' সুক্তুক্সলাভাবা দেবা সুঅন্ধ্র ' অন্থ' লোম্য' পূ রভোবরতে ভং' লোমং ' পাত ' পিব র কারুলং 'তি রোজকাং' এচয়ামকং ।১১৩ ৩২।

হে অগ্নি! তুমি অনুকূল দেবতা
সকলকে সমান আবাহন বিশিষ্ট অন্য দেবতাদিগের সহিত পূজা কর ৷ হে সুন্দর
কলদাতা দেবতা সকল! তিরো অহানা
মক অর্থাৎ যে সকল সোম পূর্কদিনে অভিবৃত হয় এবং পরদিনে ব্যয় হয় তালা
তোমারদিগের নিমিত্ত বর্তমান আছে তোমারাসেই সোম পান কর ৷ ১০৩২।

ভারতবর্ষের সহিত অন্যান্য দে-শের পূর্বকালীন বাণিজ্য বিবরণ

প্রথম অধ্যায়

উত্তরে ভূষার মণ্ডিত হিমালয়, দকিণে माशव्र-त्योछ कन्।। कुमात्रो, भूत्यं ममुम ७ ব্রহ্মব্রাজ্যা, পশ্চিমে পশ্চিম সমৃত্র ও সিন্ধুনদ পারস্থ হিন্তুকোত্ পর্বত, এই চতু:সীমাবন্ধ অতি বিস্তার ভারতবর্ষের অন্তঃপাতি বি-চিত্র দেশের বিচিত্র ভূমিতে বিচিত্র প্রকার স্থলজ জলজ দ্রবোর উৎপত্তি হয় ৷ कलभानि (मर्भात लाक मकन के ममख मा-মঞ্জীর পরস্পর বিনিময়ার্থে অবশাঅতি পূর্বকালেই অপে বাবিস্ত বাণিজ্যে নি-যুক্ত হইয়াছিল। যে অপরিক্রাত কালে বৰ্ বিভাগ হইয়াছিল, তথনও সামান্য ৰূপ ব্যবসায়ের আরম্ভ হওয়া সম্ভব, করিণ वानिकाविनयन देवभाषित्रत्र अधान दृष्टि । বেদ ভিন্ন আঁর কোন সংস্কৃত গ্রন্থ, মনুসং-হিতা ও বাল্মীকি রামায়ণের অপেকায় **था होन नरहः वे छेल्ड्रः अरन्दर तहन।** कारण ভারতব্যীর লোকেরা দেশ দেশান্তর গমন পূৰ্বক বাছল্য ৰূপ বাণিক্ষ্য ব্যবসায় সম্পা-**খন করিতেন ৷ মনু সংহিতা**য় যে রূপ হিন্দুদিগার উৎকৃষ্ট অবন্ধ প্রা-रेटफ्टर, ७ ब्रामायूटन नग्द व ब्राक्सधानीत

অভান্ত প্ৰশস্ত অট্টালিকা শ্ৰেণি, শত শস্ত বিমান ও দেবারতন, গৃহারত উভ্তীরমান বিবিধ পতাকা, রথ-হস্তি-ঘোটকাদি-দানা-यान-ममाकीर्न জল-সংসিক্ত বছার রাজদূত সমাগম, ধন-ধান্য-**রত্ন**-পূর্ণ দাম, নানাবিধ শিম্পকার ওবছতর বণিকের অবস্থান,সুরুষ্য উদ্যান, বিচিত্র বি-হ'র স্থান, বিদ্যার প্রাছ্কার, বাণিজ্যের আড়রর, মনোহর শোভা, জন সমারোহ, উৎসব ব্যাপার, আমোদ প্রমোদাদি স-ব্বাংশে যে প্রকারে অত্যুৎকৃষ্ট বৈভব বৰ্না আছে*, তাছাতে বোধ হয়, যে ঐ भक्त तादक। दिशांग ७ वर्गमात भग**र**त मा-যানবর্ত্ত ধন, ধর্মা, বিদ্যাতে পরিপুর্ব ছিল: সে অবস্থার সুখ-সজ্যোগোপযোগি শামতা কেবল বাণিজা যো**ে**গই প্রাপ্ত ছওয়। স-ন্ত্রাবিত হয় ৷ অরণ্যবাসি নির্দ্ধন অসভ্য লোকদিগের অন্তঃকরণে একপ ঐখ্যোর ভাব উদয়ই হইতে পারে নাঃ অতএব য-দিও রামায়ণ কাব্য বটে, তথাপি এ সমস্ত বর্ণনাকে তৎকালিক ভারতব্যীয় লোকের অবস্থা-মূলক বলিতে হয় ৷ ফলতঃ গামা-য়ণের ভূরি ভূরি স্থলে বছ ব্যবসায়ি খল-পথ ও সমুদ্র-পথ-গামি বণিক্লিগের রুক্তান্ত এবং মনু সংলিতাতে ভালারদের ব্যবসা-যের ব্যবস্থানিখিত আছে। অতএব শং कारक दासायन असारन असूनाय नाकिना-ভ। কেবল তুর্ম মহারণ্য, এবং বন্য ও প্**র্ব**-ভীয় লোকের বাস স্থান ছিল, এবং মনুসং হিতানুসাবে উৎকল ও দ্রাবিড়াদি দেশ ন্লেচ্চ ভূমি বলিয়া গণিত ছিল, তখনও আ্বা-ৰ্য্যাৰক্তে এবং বিশেষতঃ তাহার পশ্চিম ওং মধ্যভাগে বিশিষ্ট ৰূপ বাণিজা ব্যবসায় প্র-চলিত থাকা সম্ভব বোধ হয় 🕴 স্থায় 🚁

আনিকাতে পঞ্চয় ও বছ অধ্যায়,অংগাধ্যাকা:৩৭১
 আধার, সুক্রকাতে চতুর্থ পঞ্চয় ও বছ অধ্যায় ই ভ্যাদি।

[া] কিন্তু রামায়ণ রচনার সমধ্যে দান্দিগাতো ছিন্দু নিগের প্রমান্দ্রমন আন্তর্ভ ছইয়াছিল, ডাছার কংশক নাই; কারণ ভালতে নদা পর্মভানির বর্থার্থ সাংখ্যান লিনিক আহেছ। আর ইহাও বীকার কুর্তু কুর্তুত্ব, বে রামান্ত্রপর ভানে ভানে অনেকানেক। ক্রিক্টিয়া বছনৰ প্রাথাত্তরা যায়।

হাভারতীয় সভাপর্বে নানা দেশীয় ও নানা জাতার ভূপাল।দগের মহারাজ যুধটির-কে বিবিধ প্রকার সুভোগ্য সামগ্রী উপ-इति निदात (यक्षभ अवित्यय दर्गम आरश्, ভাহাতে **অ**নায়াসেই গোধ হয় যে এ 5-পাখ্যান রচনার পুরেষ ভারতবর্ষের পশ্চিন ও উত্তরবর্তি শক বুখারাদি বিবিধ জাতীয় লোকের সহিত হিন্দু।দণের বিশিষ্ট কপ বাণিজ্য ঘটিত সংস্থাৰ ছিল, এবং তথ্য ভা-রভবর্ষের ধন, সৌভাগ্য, সুখ, সভাতার বিস্তর উন্নতি হটয় ছিল ৷ বিশেষতাঃ দে कारण वाशिका दृष्टित ममामत हिल, এবং ব্ণিকেরা সন্ত্রাস্ত ও বিচক্ষণ লোক ছিল। ভাহার। নিতার মুর্ব ছিল নাঃ তাহারদের বেদাধিকার ছিলঃ সুতাংং শাস্ত্রাধান कता व्यवभारे व्यवमा कर्खना त्वाथ हिला ।

মনু এক স্থানে কহিয়াছেন*, যে বণি-কেরা নানা দেশের গুণাগুণ শিক্ষা করিবেক, ও নানা কাডীয় ভাষা অভ্যাস করিবেক, এবং অন্য স্থানে তাঁহারদিগকে দ্বীয় বিযো-চনানুসারে বাণিজ্য বিষয়ক ব্যবস্থা করি-বারও ক্ষমতা দিয়াছেন†।

যে দেশে কোন বিষয়েরই পুরানুত্ত নাই, তথায় বাণিজ্যের রুতাক লিপি জ शांकितात महातमा कि ! जत्व ष्मांड शृदर्भ বা এজ। রজি যে কিন্দুদিগের প্রিয় ব্যবসায় ছিল. ७ डेंग्झां**द्रएव (मर्म) (नना उद्ग प्रयना**-शमन हिल. जायात्रतनत आहिन अन् नम्-দায়ে যে তাহার যথ কি.পথ নিদর্শনও व्याश्व इ उस्। यास, अहे विष्ट्रता विविक्ति-ণের রুত্তিরকণাও বাণিজা ক্রিলার বিধান করামরাদিধর্ম শাজের অসাছিল। আব আনন্দর্কীয় *নী* তিসার **নু**সারে অবগত হ-अवायाय, य वाधिका विवास विषयु बांछी নামে এক শাস্ত্র ছিল,ভাগতে পাশুপাল্যা-দি সমস্ত বৈশ্য বৃত্তির নিয়ম থাকিত *। ইহা অত্যন্ত আক্ষেপের বিষয় যে ইদানীং সে সকল এন্থ নিতাও অপ্রাপ্য হইয়াছে— বুবি সুপ্ত হইয়া থাকিবেক! বিদেশীয় ইতি-হাস-বেক্তাদিগের গ্রন্থ ব্যাত*ে*রকে এবিধ-য়ের সবিশেষ বিবরণ প্রাপ্ত হইবার উপায়

অতি পুর্ন্ধে মিশরদেশীয় লোকের সহিত ভারতব্যা য় বণিক্দিগের বিস্তৃত বাণিজ্য প্রচলিত থাকিবার বিস্তর নিদর্শন
পাওরা যায়। সেই অতিপ্রাচীন সেটলাগ্যশালি সভ্যলোকে ৩০০০ সার্দ্ধ তিসহস্র বংসরেরও পুর্ব্বে ভারতব্যা র সুভোগ্য সামগ্রী সকল উপভোগ করিতেন। ৩৫৫৬
বংসর পূর্বে ঘ্যন যুযক ঐ দেনে উপনীত
হইরাছিলেন, তখন আরেব রাজ্যের ইস্মারেলায় বণিক্রো তথার ভারতবর্ধ-কাত ও
ভারতসমুদ্রবৃত্তি প্রাপেশের তেককর ভক্ষ্য
গক্ষরত্বা সমুদ্রুয় † বিক্ররার্থে লইরা যাইতেছিল: । এবং যথন ৩৩৫ বংসর পূর্বে

শন্কহিয়াছেল,""য়নুশ্প:দশ করিয়াছেল" এই
কলে বাকোর তাৎপর্যা এই দে য়মুসংহিতাতে দেই
উলি আলাছে। ইছাথলাহাতপাতে আলি য়নুহা বা
য়নুহা-পিতা বায়য়ুঽ য়নুয়ার মনুস্কৃহিতা রঞিত
হবগাকোন প্রকারেই নয়াবিত নহে।

[†] সারানারক ভাষানাৎ দেশানাক ওণার্থনান্। আঙ্গোরক পথানাৎ পশুনাৎ পরিবর্জনং। ভূডানাক ভূডিৎ বিদ্যাৎ ভারাক বিবিধানুণাৎ। ভূবানাৎ স্থানগোৎস্ক ক্রমবিক্রম্মের চ ঃ মনু ৯ অধ্যাবে ৩০১ ও ৩৩১ রোল।

বৈশোরা দুবোর উৎকর্মপন্ত দেশের গণার্থন, পদা পুরা বিজ্ঞা ছারা জালালাগেদের বিহন প্রপাদেগাই উৎকর্ম সাধন, ভূতাদের ভূতি। বিবিধ প্রপাদ ভাগান দুযোর বাম গোলা আর্থান কোন্দুবা নিকাপে ভাগান কবিলে বজনলা বাকে ত্রিসন্ত ক্রম বিজ্ঞান রাকি অবস্কৃত ক্রমেন ত্রানি অবস্কৃত ক্রমেন ত্রানি

সমূদুবানকুশলাংশেশকালার্থার্থনির। বাপার্যক্তি আংশ বৃদ্ধিশ লা ভারার্থিয়নপ্রতি । ৮ আধ্যারে ১৫২ মোক।

সমূল গমন বিৰুদ্ধে নিৰ্দুধ এইছ নেন্দ্ৰ কাল। ও লা-কালাক ল'লি তানকেল্লা কাম-কাটক বিৰুদ্ধে যে বাৰত্বা বেন, কাৰাই প্ৰমান।

আমীজিকী ক্রমী নার্ত্তী দত্তনীতিক শাহুতী।
বিষয়াশ্চতসু এইবত) লোকসং বিভিন্নেত্তমঃ
পাল্যপাল্যং কৃষ্ণিঃ প্রথং বার্ত্তানুমুম্বাবিনাং ।
লাল্যনোর্ব্তা সাধুন্বত্তেকমুম্ব্রতি ।
কার্মনকীয় নীতিসারে বিতীন্ত্রতের।

[†] গ্রম মশলা Spices. তাতা কেরল ভারতবরে ও বিশেষতঃ ভারতগমুসুবরি অভিগম্ব উপধীপেই উৎপদ হইরা থাকে, মুড্রাং মিশর দেশীর লোকভিন্যের ভারতবর্ধীয় বালিছা হোনেই জাহা প্রাথ হওছা সম্ভাবিত হর।

[‡] Bible Genesis kaxvii 29.

ও তাহার কিয়ৎকাল পরে ভূতীয় গোণ্-সি ও ভছত্তর-কালবভি ফিরেণ নামক मृপতिদিলের সমরে "তথার গৈদুর্ঘ: মণি প্রভৃতি বিবিধ প্রাকার ভারতবদ য়ৈ র বু. এবং ৰীল ব অন্যান্য সামগ্ৰী উপস্থিত ছিল. ক্তথন ইচা অবশাই স্বাকার করিতে হয়, যে ঐ বাণিজ্য বছকাল ধারাবাহিক নাপে প্রত-ভার ব্রেষের সাহত যে নি-लिख ছिल ‡। শ্র দেশের ব্লণ্ডা ঘটিত সমস্ব থাকি-বেক তাহা আৰুহান্তে; তথাকার বছ জর প্রাচান সমাধি-মান্দরে অনেক চীন দে भीय भाज क्षान्य इत्या भित्राहर, द्वर छा-ছাতে চীন আকরে চীন ভাষার শব্দ সকল लिथिक खार्टशा। हेडा मखन नरहे. (प মিশর লোকেরা একেশীয় বাণিতা গোগেই ভং সমালয় প্রাপে ছইতেন, এবং এই বাণি-জ্যা ছারা যে উচ্চোদের সুথ সৌভাগ্যোর বিশিষ্ট ৰূপ উন্নতি চইয়াছিল তালার সং-ম্যুন্টা এই সময় প্রাম:বিক ইতিহাস श्वातः (कवन छ। वडववी स व। विका मार धत थाहोत्द मथमान इट्टिट्ड मा, देशाउ ৩৫০০ ও ৩৬০০ বৎসরেরও পূরের ছিল্ছ-দিগের সভাত।ও সৌভাগোর উন্নতি কওয়া স্চিত হইতেছে ৷ যাহারা শারাকিক শো-ভার্থে রজু ব্যবহার কারত,যাহারদের মধ্যে ধনিখনক ও মনিকারের ব্যবসার প্রচলিত हिल, याहात। यञ्च त्रञ्जनार्ण नालामि अञ्च ক্রিত, যাহারা ভারতদমদ্র ছাপবাসি लात्कत निकडे इहेट्ड नाना विव प्रका प्रवा আহরণ করিয়া দেশ দেশান্তরীয় বণিকদি-

গকে বিক্রয় করিত, তাহার৷ কথুনুও নিডান্ত নির্দ্ধন ও অসভা ছিল ন**া**

আরবীয় বি-কেরা যে হিচ্ছদিগের নিক-টে ঐসকল পণা দ্রবা ক্রয় করিয়া মিশর (मर्ग विक्रवार्थ लहेता गाहेड, डाहा **ल्ला हेहे** বোধ হইতেছে; এবং যদিও হিন্তুদিয়ের ফুটনাধিক ছুই সহস্ত বৎসর পুরের মিশর দেশে গমনগ্ৰমন থাকিবাৰ ই.তহাস আন-ছে. এবং এক অ'ব্ৰীয় গ্ৰন্থকান্তান প্ৰামা-ণিক লিপি প্রমাণে ১২০০ শক পর্যান্তও হিন্দ্রবাসমার পথে অ'রব দেনে উত্তীর্ণ হ-हेश * भटत ख्लभटचं मिनत त्नट्रम शबन করিতেন†, কিন্তু ৩৪০০ ৷ ৩৫০০ বংসর পুর্বে ভাঁহারা এইরপ যাতারতে করিন্তেন কিনাতালানিকৰকরাক্টিনা অপর্ফি-निम्हा रमभाव महाध्याङ द्विकिपरवर्ष দ্বারাও ঐ সকল ভারতব্যার সামগ্রামি-শর রাজ্যে প্রেরত হওর৷ সম্ভব 🚼 অত-এব অপেকারত আধুনিক কালে যখন উক্ত রাজ। একৈ ও রোমানদিগের অধিকার ভক্ত इरेग़ाड्ल, उरकारला जावज्वस्य वान-का विवतन क तवात शूर्व किल महात বণিকদিগের সহিত হিল্পদিগের কি কুপ ব্যবসায় প্রচলিত ছিল, তাহার অনুস্কান করা কর্ত্বা 1

ফিনিসিয়া দেশীয় ভ্রন-বিধাত মহোৎসাহি বাণকের। এককালে ভারতবঘেঁও গননাগনন করিত। তাহারনের সমুত্র-পোতের ধুজা পশ্চিমে ব্রিটন দ্বীপ ও
পুর্বে ভারতবর্থ সমিহিত মহাসাগরে এককালেই উভ্ডায়নান থাকিত। এপ্রকার
লিপি ভাছে, যে স্থানাধিক ২৮৫০ বৎসর
পুর্বে হিরাম ও সগমন রাজার ভারুন্

রশর দেশাধিপতি ভূতীর খোখ্যিদ নামক ভূপ তি প্রীটালের ১৯৯৫ বৎদর পুরে এবং তদনুদারে এক্ষনতার ৩৯৯৫, বুৎদর পুরে রাছপদে অভিতিক ছইয়াছিলেয়

[†] মিশুরু রেকেন্দ্র হৈ প্রকার ব্যক্তর প্রার্ভাগে নীল বর্ণ ছিল, ১৯০০ বংশার পুরে তথায় কানুরপ বস্তু প্র-স্তুত্ত হউত। আভ্রেক অংকালের হুল্লেনীল কান গা কিলে ভারতবর্ষীয় বাদিকোর প্রাচীনকা আরও কত বৃদ্ধি হয়—Wilkinson's Ancient Egyptians. Vol. 3 rd p. 123—125.

[‡]Wilkinson's Ancient Egyptians Vol. 3 p. 316, and. 217,

[¶] lbid p. 107.—109.

তাহার। আরেবের পূর্ম ড'গে সমৃদু-তীরস্থ আবে দার নামক স্থানে উয়ার্ব চয়ত, এবং তথা ঘটতে পশ্চিম মিকে অক্ত ফুমি দিয়। বিশ্ব দেশে গমন করিত।

[†]Heeren's Historical Researches, Egyptiane. Chapt. 4 th Note 70.

[্] বিব্যুত্তাউনে ব প্রস্থ ও বাইবেল পুরুষ্টের প্রায়-গানুনারে নিলিক জনসভ চপ্রয়া যায় হে কিনিনিয়ার কৃষ্টিত নিলিক কেশের বিশিষ্ট রূপ মুক্তিয়া প্রচলিত বিশ্ব — Heeren Phonosians, Chief 4

नात ভाक्कु स्वयंत महिल निर्माण वानिका हा नाति है कि साम जानी में मिला कि सामित है कि साम जानी में मिला कि सामित है कि साम कि सामित है कि साम कि साम

আরবদেশ ও পারসীক সমুদ্রবন্তি দেদানদাপের যোগে ভারত বধীর লোকের সহিত যে ভালারদের বাণিজ্য প্রচলিত ছিল, ভালাও বাইবেল প্রমাণে সুন্দর কপ জ্ঞাত হওয়া যাইবেছে : 1 ভালারা আ-রবীয় বণিক্দিগের নিকট দাক্লচিনি, অচশু, রত্ম, ভক্ষনীয় ভেজক্ষর গক্ষ্যদ্রবা, ও কু হুরু (লোবান) ক্রম্বর্তি 1 কিন্তু প্রায় ইলার मम्बाग्रहे छात्र हरवी हा मामञी "! अ-ত এব যথন ২২০০ও২৩০০ বৎসর পূর্বকার গ্রাক গ্রন্থকারদিগের ব লিপি অনুসারে স্পাইৰূপে অবগত হওয়া যাইতেছে,ফেদা-কুচিনি, এলাচি, জটামাংসী, প্রভৃতি গ-দ্ধ দ্বা ভারত বর্ষ হইতে আরবদেশে প্রেরিড इन्हेंच्_{रे.} अवर यथन व्यन्तान छुन्ने महत्य वस्मन পূর্বকার এীক অন্তের 🎙 প্রমাণানুগারে তৎকালে আরবেরা অর্থাৎ তাহার দক্ষিণ প্রান্তবর্তি লোকেরা বাণিক্যার্থে ভারতবর্ষে গমনাগমন ও বসবাস করিত, 5 এবং यथेन नानाधिक ১२৮० वरमत शृरक्षत्र আত্ত্রে । ভারতবর্ষের স্থিত ভাষার্দের তদনুৰূপ বাণিছা ব্যাপারের বিষয় বর্ণিত ষ্মাছে, তথন যে তঃহার। তুই সহত্রেরও বছকাল পূৰ্বে ভারতবর্ব হইতে পূর্বেল্ফ সমস্থ প্রণাদ্রব্য আছরণ ক'রয়া স্থদেশে ল-हेश गाहेक, अबर आहबरमभी ग्रंथ वि**रम**् যতঃ তালার উত্তর খণ্ডস্থ স্থলপথগামি ব্-ফিনিসিয়ার বাণিজ্য বিশারদ বণিক্দিগকে তৎ সম্দায় বিক্রয় করিত, তাহা বায়বেল এন্থের সহিত এই সকল রু-র্থকা করিয়া সমাক্ সম্ভাবিত वाथ स्ट्रेट्ट्स ** 1

এই শেষোক্ত বীৰ্য্যবস্ত মহোৎসাহি বণিকেরা ইহাতেও তৃপ্ত না হইরা পারসীক

[·] Red Sea

^{াঁ}এই প্রকার লিপি আছে যে ফিনিসীয় ও ইয়ারেল बाहीत्यता अकत करण बामिशांकल। नाना ग्राप्त खे ছানের "দোফির" "দোফর"প্রস্তৃতি তদনুরূপ নান। প্র-काর নাম লি'লঙ আংছে। আংকিনার প্রাংশে দো-कला नारब जल मिन चा'रक्त अवर है स्वीय नायक विनात দেশার পণ্ডির সপক্ষর নাথে এক দেশ আর্থের অন্তঃ-পাতি ও মুপার নামে এক স্থান ভাত্ততর্যের পশ্চিম এতে ওত্ত্বাটের দক্ষিণ্ড কাম্বোর লাগবের তীর্ত্ব বলি-য়া উল্লেখ করিছাছেন। ইতাতে 'পুরার্ভ বিদ্যা-বিশা-क्षम घोटवास स घटमाला मारलरमना खेक्टरवरे अखद रह-শীয় ব্যক্তিয়কে আফিকাব্ধি ভারতব্য প্রয়ন্ত নানা স্থানের বাণিজ্ঞা বলিম; অনুযান করেন, (Heeren's Historical-Researches Phenicians. Chap. 3 rd, and Hamboldt & Cosmos, by Sabine, Note 18i) কিন্ত পুজোরু দুবা সম্দাব ভারততর্বে উৎপন্ন হওয়া-া ও হিন্দু গ্রন্থে কালাদের ভারতবলীয় নাম লিখিত থাকাতে ইহা এক প্রকার নিশ্চিত বলিতে হয়, যে সল-মন্ভ হিবাম বাজার প্রেরিত বণিকেরা ভারতব্যের পশ্চিমাৎলেও আলিয়াছিল।

Ezekiel. xxvii. 15. and 19-24.

[্]ৰ নাজ চিনিরি জাতি বিশেষ। ইনিত ভাষার ইহাতে তল বলে। ইংগ্লাফি Capile

[†] शिरमाक्षास अ हिस्तार डाक्क्

[ু] থিগোজাউন সাই লিখিয়া বি বার্চিনি, এলাচী, মটামাৎদী ও অন্যান্য তেমভুর গছমুব্য ভার ভারর চইতে আইসে।

[্] শ্লাগাথকাই ডিস নামক গ্রীক্ গ্রহকরার পুরুত : ইনি প্রীক্টাবের ১৬০ বংসর পূর্বে সুক্রাৎ এইজন-কার ২০১০ বংসর পূর্বে বর্তমান ছিলেব।

[§] Vincent's Commerce of the Ancients, Vol. 2. p. 328.

I Periplus of the Erythrean Sea.

[.] Heeren, Phenicipus, Chap- 4.

সমুদ্রে আসিয়া বস্তি করিলা ছিলেন *, এবং তথায় থাকিয়া বাছল ৰূপ বাণিজ্য নি-আহি। করিতেন। ভাঁচারা স্বয়ং তর্ণি যোগে ভারতবর্ষে ও সিংহলদীপে আগমন করিতেন, অথবা ভারতব্যীয় পোত ব্ণি-কেরাই তথায় গিয়া পণ্যদ্রব্য বিক্রয় করিয়া আসিত। বাইবেল শাস্ত্রে টায়র নগরের 🕇 প্রতি এই উক্তি আছে; যথা ''দেদান সস্তা-নেরা তোমার বাণিজ্য-নির্বাহক ছিল, দুরবর্ত্তি ভূমিতে তোমার হত্তের পণ্য দ্রব্য দকল পমন করিত, তাহারা তোমার পণ্যের সহিত বিনিময়ার্থে ভোমার নিকট म्बर, इस्तिमस, ७ (कम्छ) व्यावन्य काछे আনয়ন করিত ‡।" এসমুদায়ই ভারতব্যী য় দ্রব্য, এবং যদিও আফুকাখণ্ডে হস্তিজন্মে, তথাপি পার্মীক সমূদ্রে থাকিয়া কেবল ভা-রুতব্য হইতেই এসময় সাম্ঞী পাওয়া সঙ্গত বোধ হয়, ও ঐ সকল দূরবর্ত্তি ভূমি কেবল ভারতভূমিই হইতে পারে 🗓 ।

ফিনিসিয়ার লোকেরা যে কপ বাণি-জ্যোৎসাহি, তাহাতে পার্সীক দেশে থাকিয়া ভাষারদের ভারতবর্ষে ঘাতায়াত कता व्यवनाई मसुर**, तिस्तु उरकात्म हि-কুদিগেরও তথায় গমন করা অসম্ভব ছিল না৷ যদিও একাণে তাঁহারা নিতাস্ত निर्वी था ७ निक्रमाम रहेशाइन, এवং एननू-শ্বপ আধুনিক শাস্ত্র সকল কম্পিত হওয়াতে ভাঁহারদের সম্দ্র যাতা ও বিদেশ গমন এককালে রাইত হইয়া গিয়াছে, কিন্তু পূর্বের क्चनहे छ। हात्रापत शक्ष त्रवहात हिन्न। १ অভগ্র ভারতবর্ষের বাণিজ্য ইতিহাসের মধ্যে এবিষয়ের বিবরণ করা ক্রতির। পূর্বের যে ছিল্ছদিশের সমুদ্র যাতা ও দেশদেশাস্ত্র গমনাগমন ছিল, বেদ, রামারণ, মনু, মিতাক্ষরা, কাব্য নাটকাদি বিভর অত্থে ভাছার অনেকানেক

নিদর্শন আছে। এই পত্রিকার ভাষার किन्ननश्म अकाश्यिक व्हेलाटक्, व्यदः यज ष्पनुष्रक्षान कहा यात्र, उठहे ভূরি ভূরি প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। সংহিতায় সমন্যানের উল্লেখ আছে, তখন অন্তঃ ৩২০০ বৎসরেরও পূর্বে আমারদের সম্ভ্র পরে গমনাগমন আরকা হইয়াছিল। মনুসাম্ডিক ও দুরদেশগামি বণিক্দিগের বিষয়ে যে ৰূপ मानत वहन উল্লেখ করিয়াছেন, ভাষা পু-র্বেই ব্যক্ত করা পিয়াছে ৷ রামায়ণের नाना स्टारन प्रमुख-याद्यात निम्मीन धाउहा যায়, তন্মধ্যে কিন্ধিন্ধাকাণ্ডে কভিপয় পুরু-ম কৌতৃহল-জনক বচন প্রোপ্ত হওয়াগি-রাছে। তালতে এইৰপ আদেশ আছে, যে ''সম্ভান্তাত নগর ও পর্বত সমদায়ে গমন করিবে:. কোষকার দগের দেখে অর্থাৎ চীন দেশে যাত্রা করিবেশ, এবং ঘর-

रेकारक काल सक भारत्य शहरा करिया (विश्वास्त्र), रा श्रीकीत्मद भूत्य ठकुमण लडामीत्ह त्वम रा शुक् হয়। একপে ভবিসামের সভ্ ভতালুসদ্ধান ছটাতেছে জতট উংহার মানের প্রায়ানিকজ্ঞ হালিত হইছেছে '

ী সম্দ্যসংগদ ৭ ৯১ হাস হ'ল পৰ্নালি চ :

নিজিজাকাওে ৪০ গলেহন কোক। টাকাকান প্রের যে প্রস্কুলকগাটাল সমুদ্ধান্তরী 'समुप्रहणाङ राज्य कार्य सम्माद्यका' আৰু এওলে '' পদ্না'ন সম্ভূমীপ্ত্ৰীনি '' পঞ্ন শ-अह डाब्ल्यार्ग स्थान कोल किनावत ।"

🖣 জ্যামঞ্জেমিয়নারানাৎ স্পৃত্রিঞ্জ রক্ষরাভ্রতাৎ। কিষ্কিগাকাণ্ডে ৪০ সর্গে ২৩ স্লোক।

मिकाकार बहेकल कर्स स्टब्स, दश " क्षांत्रकाहाशः ङ्ग्रि^०, कोष्टम्डक्ष्यभावकस्यूद्रश्रवस्थातञ्ज्ञः स् মি৭।' "কোষকাবদিলের ভূমি এবাজের ভাৎপর্য अने रम स्कोरमञ्च तरचुड् प्रश्नुब्लामक रम् अन्तु, जोहाङ्ग উৎপত্তি স্থান।' व्यक्ति श्रुव्यकाशाव्यक्ष होन दन।गत दकाः रमञ रहा विभिक्तिल हिन्ताङ कारह. अवर क्षममुमाद्य मध्यात शुक्रकारत्वतात जाका होमाध्यक कहीनदहस्तक नाष्म निर्माण कहिशास्त्रन श्थाः

রক্ষতি প্রশেরীরং ধাবতি পশ্চাদসংক্তিও চেডঃ। চীনা**ংখকমিবকৈতোঃ প্র**তিবাতং নীয়মানলা । শকুস্কলানাটকে প্রথমান্তে।

नर्काक्रमञ्जलिद्याकः हक्तरम् मृतुर्देदः। **मुगछि** प्रालागण्डरेष्णीनक्तिः मृत्या**ण्टीनः** ॥ हाबदेवक समारेजक मीडरेमकाक्षेत्रस्था॥ বীয়াদে**ৎ পু**ওরীকালং সুভদুণ ব**লমের** 🛊 🛭

त्थुनक्रम् वृक्त शाजान्त्रा অসত্তর "কোহতার দিনের ভূমি" এরাজ্য চীন সেশে-ZE SIGNIEN CON ESCRICE)

[🗣] ভাহারা যে পারসীক সমুদ্রে আর্গিয়া বসাত ক विद्याद्विल, जान्यालि कथाकात श्राह्म संबंद्ध व विकार ভাছার বিস্তর নিদর্শন **প্রাপ্ত** ছ**ও**য়া ঘাঁছ ।

[🕈] ফিনিসিয়ার রাজধানী টায়র নগড়ের। ‡ Ezekiel xxxii. 15.

F Heeren. Phenicisns. Chap 4 th. Heeren. Babylomene. Chapt. 2d.

[•] १३ म *याक* भारतिका ।

ৰীপ ও সুবৰ্ দ্বাপেওগমন ক্ষাৰে।'' এই ছুই ছীপ যে ভাৰতসম্দ্ৰাক্ত কাৰা ও কু-মাত্রা দ্বীপ তাহা সম।ক্সন্তাবিভ°। বা-ল্মীকি রামারণে এই সকল ছীপের নাম ও তথার গমন প্রদক্ষ থাকাতে অতি পূর্বা কালে তথায় হিন্দুদিগের গ্রনাগ্রন থাকা ৰুচিত হইতেছে। মহাভ'র∵ত অবর্নিও নকুলের দিখিজয়ার্থে সাগরাস্তর্গত বছতর খীপ ও ভারতববের বহিভুতি অন্যানা বি-বিধ দেশ যাতঃ ও রঘ্বংশে রঘুরাজার পারসীকাদি পশ্চিম রাজ্য জয় করিবার या अकल दर्बना व्याटक्ष्म, कथाय शमनाशम-নের বিধি ন। থাকিলে তৎসমদায় কাব্য এত্রেও উল্লিখিত হুইত না। বরাহ পুরাণে এইৰূপ এক উপাধ্যান আছে, যে লোকৰ্ নামে এক নিঃসম্ভান বণিক ৰাণিজ্যাৰ্থে স-মজে গমন করিয়াছিল, পথনবে। প্রচণ্ড শ্রু উপস্থিত হট্য়া ভাহার পোত ভা:-প্রায় হয়: ৷ যাজ্ঞবলকঃ সংাহতায় সমুদ্রগানি विवक्षिरगत येशामात्मत वावस्य भाटश्या ब्रष्ट्रावनी नाहेरक ममुख्याका ध्वमक य्वर नमुज मर्था निश्म्ल जाकशुळी तज्ञावलीत পেতি ভঙ্গ ও কৌশাধী নগরাবাদি বণিক্ विट्नारयत कथा श्रहेरक व्यक्तागमन कःटल

কে: ব্যক্তিয়ার্থে ভার্যা সহ সুবর্ভুত্তি দ্বীপে যাতা ও পথমধ্যে ৰশ্বাবাতে ভর্নি ভঙ্গ হইয়। ছাহ্রেনের বিচ্ছেদ ঘটন, চতর্য छत्रक ममुद्रभूत ७ ष्या अक वनिरक्त वानिकार्श्व मूर्वन चीरन याजा अस्तोका छन्न, ও বঠচর*কে চন্দ্র* স্থামির স্বপুত্র।নুসন্ধানার্থে অনেকানেক পোত-ব্লিক্র সমন্ত্র যান আনরাহণ করিয়া সিংহলাদি বছতর দীপে গমন, এবং চতৰ্দাবিক নামক পঞ্ম লয়কে मक्टिप्तरवंद উপाधारित मध्य बर्धा अक পোতবণিকের ভঙ্গি ভঙ্গ, এক কাষ্ঠ-কলক অবলয়ন পূথাক আর এক নৌকীয় তালার পিতার সহিত সাকাৎ কার, ও সেই নৌ-কার পিতা পুত্রের হদেশ প্রত্যাগমন দশকুষার চরিতের পূর্বাপীঠিকায় রত্বভব বাণাক্র কালখবন ছালে গমন,এবং তথায় এক ৰণিক্ কন্যাকে বিৰাহ করিয়া তৎ স-মান্তব্যাগারে প্রভাগিমন কালে সমুদ্র পর্কে তরণি প্রবেশ,এবং ভাহার উত্তর পীঠিকায় মিত্রগুপ্তের ঘরন-পোড পারীেচণ পূর্বাক अवन वाह्नुदर्श विश्व शामि हरेहा ची-পান্তরে অবভয়ণ†ঃ আয় কৰিকছণোক

তাহাকে আনয়ন করা *, এই সম্ভ বর্ণার

াৰখারের ভার ভূরি নিদর্শন লক্ষিত হই-

ट्टर । उद्धित छात्र उत्रवंत चारनकारनक

উপক্ষা মধ্যেও হিচ্ছুদের সমুদ্র হাতা খা-

কিবার বিভার চিক্ল আছে; যথা কথা সন্ধিৎ-

সাগণে অলক রবতী নামক নবম লম্বুকর প্রথম তরকে পূর্গী ৰূপ ভূগাল ও তৎ প্রে-

বিত চিত্রকরেণ সমুদ্র পোত সহকারে মুক্তি

श्रुत दीरश शयन, विशेष कहरक अक वि-

ভ নাবৰ উলেমি জাবাছীপের সংজ্জ নাম যবছীপ লিবিচা পরে তৎপ্রজিপাদক গ্রীক্ শব্দে ভাগার ক্ষর্ব করি বাছেন : উৎরাজি গুছু কর্তারা(Barley Island) বলিগা নেই শব্দের অনুবাদ দরের (Humboldt's Cosmos. Note 297.)। আর ক্ষল্প বিস্লান নামে এক আরবি গ্রন্থকরী তৎ প্রবেশীত কৃতিকার উপরিপের প্রসালে লিথিয়াছেন,লে ভিন্দুরা ঐ সকল ছীপকে সুর-নাছিল লিথিয়াছেন,লে ভিন্দুরা ঐ সকল ছীপকে সুর-নাছিল বলে, এবং করাশাশ জাতীয় এক পুরার্ভ্র বেছা (Reinaud) ঐ শক্ষ লাবা ও সুলালা উভত ছীপে-রুই প্রভিশাদ্ধক বিভাগ বিশ্বন করিয়াছেন। (Journal Asiatique. Tiome IV, IVe serie. p. 265.) ভিন্দু রালায়কে বরজীপ ও সুর্বন ছিলের পুরবন্ধ পৃথক্ নির্দ্ধেশ আছে। আবা হউজ, এই সমুদায় বাচনে পুর্বা-লালো গ্রাছেন ব্যক্তি প্রবাদ প্রবংশ লাব। ও সুমানাদি ছীপ গছনের লগক্তি প্রবাদ প্রবংশ্ব। বাইতেছে।

[†]मकाश्रद्धकः क्षंबर्गेष्ठ मिथ्लिकः शर्व ଓ तस्वरूपण्ड इक्षे वर्षः।

[্]র ছিডায়ভাবে গোকর্ব মাহান্দ্র নাইক আখারে।
প্রিনেস্পুনা বৃদ্ধা ধনং পৃথিকা অধিলাকার্থং প্রাপ্রবাবনাশশভাবেনং সমুদ্ধং কাছবি তে বিংশং
শক্তকং বাদি বাদ্ধি মুন্নঃ।

विकासका सावसाहासाह समाप्ता समाप्ता ।

ত এই মাউকে র্জাবলী লিংহলাধিপতি বিক্রমন্ত্রীক করা বলিয়া উক্ত হইয়াছে। যৌত্রদিবের ছহাবংশে এইরপ ইডিহাল আছে, যে লিংহল জীপে বিশ্লকরাছ নামে এক রাজাছিলেন, তিনি ১৯৩ লচ্ছে রাজাছিলিক হড়েনা তীয়ার র্জাবলী নামে এক করঃছিল, এবং বিক্রমন্ত্রাহ নামে এক পুত্র ছিল। এই ই-জার ছাছের, পর্লভার হড় আইনকা থাকুক, কিছু কিছুল্প বিহার মধ্যে উল্লাহ্য বিভাগ কিছুল্প কিছুল্প বিহার মধ্যে উল্লাহ্য বিভাগ বিশ্বর স্থানিক। আইনিক আইন্তাহ্য স্থানিক আইনিক আইনিক আইনিক আইনিক।

র নাব্যাবর্গত তাপশত বর্গনাও যে প্রাকৃত ব্যবহার মুক্তে ভাষা এই উপাক্ষাক্রে ক্লাফ্ট রূপে প্রকাশ পাট্ট বেজে । ইয়া প্রানিদ্ধ জায়ের যে আর্থি ও পার্কীক

वाजनारम्मीत धनलि निमाणत 3 अभ प्रमाणतत्त्र निश्कलयाजा ७ जो लाकरम्त्र समावन्त्रा-जराज्य क्यांत्र ग्री हिम्सावन्त्र क्यांत्र ग्री हिम्सावन्त्र क्यांत्र ग्री हिम्सावन्त्र क्यांत्र हिम्सावन्त्र क्यांत्र हिम्सावन्त्र क्यांत्र हिम्सावन्त्र हिम्सावन्त्र व्याप्त क्यांत्र व्यापत क्यापत क्यांत्र व्यापत क्यापत क्यापत

বিদ্যাৎসাহী বিখ্যাত নেকেন্জ সাহেব দাক্ষিণাত্যের অন্তঃপাতি নানা দেশ জমণ পূর্বক বে সকল এন্থ সংগ্রহ করেন, তথারে চোলপূর্বপত্যম নামক প্রস্থে এই প্রকার আখ্যান মাছে. যে যৎকালে বীরচোলন রাজা দাক্ষিণাত্যের অন্তঃপাতি জিশিরপল্ল তে গিতা শালিবাশনকে বব করেন, তথান তৎসংক্রান্ত কচক গুল লোক ছুর্ন হইতে নির্গত হইয়া সমুবত্তে গমন পূর্বক পলায়ন করিয়াছিল "। আরেগক প্রস্থে এইকগ বর্ণনা আছে যে পূর্বের পাক্ষবিধ শিশ্পে লোক রাজ অত্যাচারে পীড়ত হইয়া সমুব পোত আরেগছণ পূর্বক চীনদেশে প্রয়ন করে ।

ৌদ্ধদিগের প্রায়েও বেদাবলম্বি হিম্ম-দিগের সমূদ্রথাতার বিস্তর বিবরণ আছে। महावः भ नामक जिःश्लीय हे छ हा (अ **প্রা**য় ২৪০০ ব**ং**সর পূর্বের বঙ্গ দেখায় বি-জ্ঞার নামক রাণ্কুনারের ও ভাষার व्यक्षणिरगत निःहमापि घोरश भयन शृर्वक वज्ञकि कर्न, भिश्रत्मां भिष्टिक मार्किनारका লোক প্রেরণ ও তত্ত্তা রাজবংশীয় ও चना चना छप्रदरभीय कमामिरगत गरिक ভাঁছারদের ও উত্তরকালবর্ত্তি অনাান্য ব্য-ক্রিদিগের পাণিগ্রহণ, ভারত বর্ষইইতে বিজয় রাজার ভ্রাতা সুমিত্রকৈ সিংহলে ল-ইয়া যাইবার জন্য দূতপ্রেরণ, ও সুমিত্র নৰ্দ পাণ্ড বাসুদেৰের তথার গমন পুৰাক ब्राक्तांकि (यक, रेकांनि शत्र कोकृहन क्रमक बाभाव नमुनारम् व विवत्र भारह 💵 विक्रिंगित विमन्नभादन अहे श्रकात अरू

উপাখ্যান আছে বে গোডম বৌজের সময়ে অর্থাৎ নাুনাবিক ২০৮০ বংসর পূর্বে পূর্ব নামে এক চিন্ধ ব পূর্ব দুলার সাম্মানিক বালেলা সম্পান্ধ করেরা সপ্তম বাবে আবাত কুলার সম ভায়াহারে সমুদ্রে যাগতেছিলেন ৷ পথ মধ্যে প্রাতঃ ও সাধংক লে ভারেনের শাস্ত্র পাঠাদি অবণ কিয়া সাভেগর আকাবি ই ইলেন, এবং আবিত্তি নগরে প্রভাগেনন পূর্বক বেজে ধর্ম আতার করেলেন ৷ এই উপাধ্যান নুদ্রের পূর্বত কাল চিন্ধুবর্মাক্রান্থ হিলেন, তর্মের, গাত বার সমুদ্র যাতা খাকার করেন।

পুককালে দিছুর। যে স্থলপথে ও ফলপথে দুরদেশ যাত্রা করিতেন, গ্রীক ও রোমীয় ও অন্যান্য দেশীয় গ্রন্থকন্থান্য করিতেন, গ্রীক ও রোমীয় ও অন্যান্য দেশীয় গ্রন্থকন্থিতি করিব ভাষার ভূবি ভূবি প্রনাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ জেনরস্থা নামক গ্রন্থকন্থিতি করিব পুর্বেক করম্মুশ্ ** নামক সীজিয়ার রাজ্যাধিপতির সহিত আদীরিয়ার লোকের অসেনাজ্যা উপস্থিত হইলে দিছুরাজা তাঁহারদের মাধ্যস্থা স্বীকার করিয়া মীজিয়ার রাজ্যকে পত্র লিবিয়াছেলেন, এবং (অন্য) এক দিছুবাজা তাহাব কিঞ্জিৎ কলেপরে ক্রথস্রোধানামক পার্মাক সমুটের কিক্টেকতিপর দুত ও ভাহার বায়ার্থেকতক গুলি মুদ্ধাপ্রেরণ করিয়াছিলেন !!!

মহাবংশ নামক প্রামানিক নিংছল ইতিহালা-লুগারে পুটিনিমর eso বংসর পুরে এবং এইজনকার ২০১০ বংসর পুরে গোডম বৌজের পরলোক প্রান্তি ছর।

পা একবে যে ছানে কয়জাবাদ নগর, পুরে সেই ছানে অথবা ভাষার পার্ববিহি ছানে আবন্ধি নগর ছিল্।

Journal of the American Oriental society.
Vol. 1, p. 284,

¶Zonaras

⁽ Cynnares) প্রতিথের ৩২৫ বৎসর পুরে এবং তলমুদারে এজনতার ২৪৭৫ বৎসর পুরে ভার রাজ্যাভিবেক লয়।

tt Cyrus.

Universal History from the earliest account of time Lyndon, 1748, A. D. Vol. XX, chapt, 3t. p. 80.

বনিকেরা ভারতবর্ষে গছনাগছন করিত, হবন পোচের প্রদক্ষে ভাষারট নিদর্শন প্রাপ্ত ছবনা হাইতেছে। • A. S Journal Vol 7. p, 3 76.

^{† 1}bid. p. 411,

[्]री-जवाव ६८न वर्ष, नथान, चार्येव & केनव्रक्ति चार्याप्र वृक्ति क्षित्रस्य ।

এই মুগ লিপি আছে, যে ন্যুনাধিক
২৩২০ বংসর পূর্বে যথন জক্সেননামক
পারসীক সমাট গ্রালরাল্য আক্রমণ করিতে গিয়াছিলেন, তথন চিক্তু সৈন্যেরা
কাপাস বস্ত্র পরিধান ও ধনুবাণ ধারণ করিয়া তাঁহার সমজিব্যাহারে গনন করিয়া
ছিলেন * ।

যৎকালে গ্রীকসমূটে আগ্রেজাওরর সহিত পারণীক রাজা দরায়ুবের যুদ্ধকর, তথ্য কিন্দুযোদ্ধারা তাঁহার সৈন্ডিল†!

এক হিচ্ছর জা ‡ সীরিয়া রাজ্যের আছিয়োকস** নামক রাজাকে কিঞ্ছিং মিউ
সুরা, কতকগুলি শুদ্ধ উড়ুমর ও এক এীক
পণ্ডিত পাঠাইতে লিখিয়াছিলেন। আছিয়োকসও তালার এই ৰূপ প্রত্যুত্তর লেথেন যে ''আমি যথে উ সুরাও উড়ুমর পাঠাইতে পারি, কিন্তু প্রীক পণ্ডিত বিক্রম
ক্রিবার বিধি নাইা।''

সাঁরিয়া দেশের অন্তঃপাতি হারের-পোলিস নগরে এক দেবী-প্রতিমা ছিলঃ ছিল্করা ভাঁহাকে নানাবিধ রুব্লোপকরে প্রদান করিছেন ৷ তরতা দেব-মুর্ত্তি সম্দারের আক্রতির বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখিলে ইছা কথনই অসম্ভব নছে। এ দেবীর সন্নিধানে এক দেব ও এক দেবীর প্রতিমৃত্তি ছিল, তর্ধো দেব সুধার্চ ও দেবী বিংহবাহিনী!!

এ প্রকার লিপি মাছে যে খ্রীকীন্দ আরন্তের পূর্বে কছক গুলি হিন্দু স্বদেশ পরিত্যাগ পূর্বক আর্মানি দেশে গিয়া ব- সতি ক্ষেম, ও তথার পিতলমর দেব অভি-মার্দ্ধ স্থাপন করেন। তত্রতা খ্রীফানদিগের স্থিত ভাঁচারদের ঘারতর সংগ্রাম হইয়া প্রিশেষে ভাষারাই পরাস্ত হন, ছই প-ক্ষের ১০৩৯ জন রণ-ভূমিতে প্রাণ ভ্যাপ করে তাতাদের সমাধি স্তম্ভে ত্রিবিধ অকরে এই যুদ্ধের তাৎপর্যার্থ লিখিত হয়, খ্রী-कीरमता हिन्दुरमत स्वालय मम्माय छश ক্রিয়া ভূমিসাৎ করে, ছয় জন ব্রাহ্মণ তাহা निवाद्रश कविएक शिया मिहे ऋार्तिहे इक ছয়, দেণ্ট গ্ৰিগরি নামক ধর্মাব্যক্ষ এইৰূপ বল প্রকাশ করিয়া এক দিবলে আবাল রন্ধ ৫০৫০ পুরুষকে খ্রাষ্টান ধর্মে অভিধিক্ত ক্লবেন, এবং কতক গুলি ব্রাহ্মণ সপরিবারে স্থাৰ্ম ব্ৰহ্মাৰ্থ প্ৰতিজ্ঞাৰত হওয়াতে তথা-কার এক রাজ। তাহা পদিগকে কারাকৃদ্ধ ক-রিয়া নস্তক মৃত্তন করিয়া দেন *৷

পাণ্ডা রাজ্যের এক রাজা রোম দ-মাট আগউদের সহিত মিত্রতা সক্ষা मनार्थ छुडे वात मूछ (ध्रत्न करतन ! ১৮२७ वष्मत शृत्क व्यथमकाव पृत्रता স্পেটন দেশে উপনীত হইয়া তাঁহার সা-ক্ষাৎকার লাভ করে, এবং তাহার ছয় বৎ-ষর পরে দিতীয় বারের দূতের। দেমদ ছাপে † গিয়াতাঁছার দশনি পায়। দীরিয়া দেশের অন্তঃপাতি দমিস্ক: নগর বাসী নি-কোলস নামক সুপণ্ডিত ইতিহাসবেন্ত। তা-ছার্বের তিন জনের সহিত আলাপ করি-য়াছিলেন ; তৎপূৰ্ব্বেই পথে আসিতে আ;-সিতে ভাহারদের করেক জন প্রলোক প্রাপ্ত হয়। তাঁহার এই প্রকার লিপি আ-(ছ, (य हिन्छ ताका पू उगरनत ममक्जिगहादत्त গ্রীক ভাষায় লিখিত এক পত্র প্রেরণ করে-न; हाङात अरे अकात गर्म, गर्था 🕶 व्यामि ছয় শত রাজার অধীশ্বর, আপনার সহিত মৈত্র লাভ আমার পরম প্রার্থনীয়, আমি সর্ব্ব প্রকার যুক্তি-সিদ্ধ বিষয়ে যথাসাধ্য আ -প্রকার কার্য্য করিতে প্রস্তুত আছি।" আট জন হিন্দু ভূতা গাত্ৰে গন্ধক্ৰৰা লেপন করি-

^{*} Herodotus translated by Cary, London. 1648. p. 434 · কার্ণাদ বস্ত্র পরিষ্ঠান ও মনুসার গারুর ভারত্তর্গির সোকের লক্ষ্য সটে ৷ † Arrian's History of Alexander's expudition. by Rooke, Book 3d Chapt. 11th & 13th.

[‡] গানার নাম (Amitrochutes) আছিট চেটিস হলি-ম: লিখিত আছে। জ শক্ষ আছিল।জটের অপস্তুৎশ ইতিত পারে: পুরাবে রাজা বিশেষের একপ নাম প্রাথ এবাবাস।

^{**} Antiochus.

^{††} Atheneus, cited in the Universal History &ca, Vol. XX. Chapt. 31st p. 100.

Lucien cited in the Universal History & on Vol. 3dap. 2840.

^{*} Journal of the Asiatic Society of Bengal.
Vol. 5th, p. 331 - 839. n the

† Samos.

† Damascus.

রা মহারাক আগউদের নিকটে উপহাব দ্বা সমস্ত উপস্থিত কবিলেক ৷ ঐ সকল অসামান্য সামগ্রীর বিবরণ নাগে। বৃহত্ বৃহত্ জরাযুক্ত সপ্,ও দশ হস্তাধিক দার্ঘ এক অণ্ড-ক্ত সপ্, অন্যান তিন হস্ত দার্ঘ এক নদ্দা-জাত কল্পে, এবং গুধু অপেকায় বৃহত্ এক তিরি-রি পক্ষির উল্লেখ আছে ৷ দুটিদিপের মধ্যে এক ব্রাহ্মণ ছিলেন, তিনে এবেজা নগরে অগ্রি-মৃত্যু স্বীকার করিষ। পরলোক যাতা করেন ৷ তাঁহার সনাধি স্থানে এই প্রকার দিশে লিপি ছিল বে শ্বানোসাবাসা ক্রমনোচাগসং নামক হিল্ড এই স্থানে স্থিতি কবিতেছেন; তিনি স্থান্দায় লোকের রীচান্সারে স্বয়ং প্রাণ্ডাণে করিখাছেন, ।"

এই শেষোক্ত হুজান্ত ও পূর্বেকাক আ-বিলোকসের নিকট একি পণ্ডিত আন-লনার্থে পদ প্রের- ইত্যাদি ভূরি ভূরি করেণে এনপ প্রভাতি হয়, যে পূক্তন হিন্দুর: গ্রীক ভাষা:শক্ষাক্রতঃ

ট্রেজন ন্নামক রোজায় সমুটি নানা দেশ কর করিলে পরে ছিল্ফ্রাফার ছিদ্ বরে উৎসাহ প্রকাশার্থে ভাহার নিকট দুতপ্রেণ করেন ়া

অরিলয়ন "নামক রেমীয় স্মাট্
ভাতমোর্ট্র দেশ জয় করিলে হিন্দুর। তাহার নিকট রাজদূত ও বহুমূলা উপহার
ডবা প্রেরণ করিয়াছিলেন, এবং মংকালে তিনি মহা অংড্যর সহকারে প্রম
শোভাকর জয়োৎসব সক্ষাকরিয়া রাজধানী প্রবেশ করেন, তথন হিন্দুর। আ
নন্দেৎসাহ প্রকাশার্থে তথায় উপস্থিত
ছিলেনাঃ।

একপ আভাস পাওয়া যায়, যে ভারত-বর্ষের ছই জন মগুলেশার ভাবোক্লীসিয়ন ও নেক্সিময়ন " নামক রোনীয় ভুপাল-দিগের আগ্রয় গ্রহন করিয়াছিলেন †, এবং এপ্রকার প্রানানিক ইতিহাস জীতে, যে সিংবলের হাজা ক্লাডিয়স নামক রোমীয় চক্রনাহির নিকট দৃত প্রেরণ করয়াছিলেন।

ধে সকল ভূগাল কান ইটা উইন ‡ নামক রোমাল রাজোপারের ♦ সহিত মিত্রভা সম্পাদনাথে উহিলে সমাপে রাজদুত সহ-কারে বছমুলা উপচোকন এবা প্রেবণ করেন তথাকো হিলু রাজারার ছিলেন। তজিল এপ্রকার আব এক লিপি আছে যে কোল তারতব্যাধি রাজা তাহাকে বিশ্বর আশ্চেষ্য আশ্চন্য সাম্প্রী উপহার দিরা-ছিলেন **।

তথ্যতিরেকে আনেকে জাত থাকিতে
পারেন, যে তারতব্যায় ভূপতে সকল এটনাইন্য পায়স, গিরো-ডোগিয়স, হিরাক্লাইয়স, ও জটিনিয়ন বু নামক রোগীয়
সমুটে গিগের নিজন দুহা প্রেরণ করিয়াছিলেন্ঃ এবং প্রীন্টালের প্রথম শতাক্ষাতে
ভারতব্যায় ভালতভোগতিববেতঃ গণ্ডি
করা রোমনগরে ঘরক্ষিত করিয়া ফলা
কলা গণন বে নিয়প গাকিতেন।

এই ব্রান্ড নি নি না সেত্য সমতের প্রথম শতাকী অবিধি নথ শতাকী গ্রহান্ত হিল্পুরা নে ব্যান্ত হিল্পুরা নে ব্যান্ত হিল্পুরা প্রকাশ করিছেন আছে হ্-ডান্ড ইতিহাস আছে হ্-ডান্ড ইতিহাস আছে হাক্রান্ত হাক্ত কে বেজি দেশে ভাঁহা দের বাতারাত ও তাকে বার সহত আহি নেবের মহিত উইন্যান্ড প্রান্ত বাহিলা ব্যবসায় প্রচলত থাকি

^{*} এই ব্রাক্ষণের নাম (Zarmanochaga) স্বাধ্ন নোটাগদ বলিয়া লিখিত আছে। ইয়া প্রাধানটো বা সদনুক্রপ কোন শক্ষেত্র অল্পান্তংশ হউতে পারে।

[†] Strabo cited in the Universal theory & a. Vol. XX P. 101 & 102. Journal of the R A. Society, No. VI, p. 200.

^{*} Trapan.

B Universal History &ca. Vol XX. p. 104.

^{**} Aurelian.

ff Tutmor or Palmyra.

[#] Vopiscus cited in the Universal History &ca Vol. XX. p. 104 & 105.

^{*} Dioclesian & Maximian.

[†] U iversal History & ca Vol. XX, p. 105.

[#] Constantine,

^{**} Universal History, Vol. XX, p. 105,

¹¹ Antonima Pers, Theodosius, Heraclius, Justinian,

[#]U. His ony Sea. Vol. XN p, 104 & 107, B Juvenal's Sa de. Sat. 6 th.

নার সুস্পর্ক প্রমাণ আছে । খ্রীটান্দের >৫) বৎসর পূর্বে সির্মাল দ্বীপে রোমীর সেনাপতি মেটেলস সিলর",ও কার্থেজীর সেনাপতি অস্কুবাল । উভরে ঘোরতর সংগ্রাম হইলে কার্থেজীয় লোকের বিস্তর ক্ষতি হয়, এবং তক্ষব্যে তাহারদের কতক-গুলি ভারতবর্দীয় হস্তী ও হিল্ছ হলিপ নৃত বা ধৃত হয় । অভএব হিল্ছ মান্ত্রেরা যে আজিকাও ইপ্টরোপ খণ্ডে গিয়া অব্স্থিত করিত, তাহার সন্দেহ নাই !। পরে সিনি নামক রোমীয় পণ্ডিত স্পাইই লিখিন্যাছেন, যে কার্থেজীয় লোকের। ভারত-বর্দীয় বাণিজা, যোগে ভূরি ভূরি অমূল্য পদ্মবাগ মণি প্রাপ্ত হই হ গু।

এবিষয়ে আর এক প্রমান্ট্য্য ইভিহাস আছে । খ্রীফান্সের ৬০ বৎসর পূর্বের
অর্থাৎ এক্ষণকার ১৯১০ বৎসর পূর্বের কতক
গুলি ছিল্ছ বাণক্ সমৃদ্ধ-যান আরোহণ
পূর্বের ইউরোপ খণ্ডের অন্তঃপাতি কর্ম্ম
নীয় সানরে উপস্থিত হয়, এবং তথায় ভয়ভর্নি হইয় কর্মানি দেশে সমুদ্ধ তটে উপনীত হয়,ও সুয়েবিয়াদেশের রাজাতাহারদিগকে গ্রহণ করিয়া রোমীয় রাজপ্রতিনিধিকে প্রদান করেম। ভূমগুলের অন্য
কোন প্রাচীন জাতীয় লোক পোতার্ক্

হইয়। এবপ দীর্ঘপথ গমন করে নাই—কিনিসিয়ার জগছিখাত ছংলাহনিক পোত বিদকেরাও বদেশ হইতে এপ্রকার দুরভর দেশ
দর্শন করে নাই! এই পরম প্রয়োজনীর
ইতিহাসের প্রামাণ্য বিষয়ে কোন আপেভির সূচনা নাই! অতএব তাঁহারদের উত্তমানা অন্তর্গীপ বা উত্তর মহাসাগর গমন
পূর্বক রুবতাতার বেইটন করিয়। তথায়
উত্তাণ হওয়া সন্তাবিত হয় কি না, এবং
এই সকল মহাসাহনিক হিন্তু ব্নিকের। ভুবনবিখ্যাত কোলম্বস ও বাক্ষডিগামার ন্যায়
অতুল যশোভান্ধন হইতে পারেন কি না,
তাহা পাঠকবর্গ বিবেচনা করিবেন*।

 এই আংশত ব্যাপার ভারতবর্ষীয় লো'কের স্মাদ নাত্রা ও বাণিজ্যোৎসাক বিষয়ে পরম প্রয়োজনীয় অন্তত্ত্ত্ব ইৎবাঞ্চি গুৰু হুউতে ভদিবৰণ উন্ধন্ত কৰিয়া দিতেছি। Pliny the elder relates the fact, after Corneline Nepos, who, in his account of a voyee to the North, says, that in the consulship of Quintus Metellos Celer, and Lucius Afranius (A. U. C 694, before Christ 60), certain Indians, who had embarked on a commercial voyge, were cast away on the coast of Germany, and given as a present, by the king of the Sucvians, to Metellus, who was at that time procoosular governor of Gaul. " Cornelius Nepos de esptentrionali circuita tradit. Quinto Metello Celeri, Lucii Afranii in consulatu collegæ, sed tum Galliæ proconsuli. Indos a rege Suevorom dono datos, qui ex India commercii causa navigantes, tempestatibus essent in Germaniam abrepti" Pliny, lib. ii. s. 67. The work of Cornelius Nepos has not come down to us : and Pliny, as :t seems, has abridged too much. The whole tract would have furnished a considerable event in the history of navigation. At present we are left to conjecture, whether the Indian adventurers sailed round the cape of Good Hope, through the Atlantic Ocean, and thence into the Northern seas; or whether they made a voyge still, more extraordinary. passing the island of Japan, the coast of Siberia, Kamechatska, Zembla in the Frozen ocean, and thence round Lapland & Norway, either into the Baltic or the German Ocean .- Tacitus translated by Murphy. Fhiladelphia. 1836. p. 606. Note 2.

^{*} Metalus Celer-

¹ Asdrubal.

[ৈ] এইকুপ বৰ্ণনা আছে, যে কার্ছেন্সীয় সোকেরা যুদ্ধ কালে হছিপুটে কাইময় আমারি স্থাপন করিত, এবং প্রতোজ ছব্রির উপরে ২২ জন করিয়া ঘোষা ও এক এক সাম হিন্দু হৃদ্ধিপ উপবিষ্ট থানিত। হিন্দুরা আভাস্ক अग्रवर्त मक्त्री कतिया विशवनत्मत् स्रोताक्ष्मामन कविक, अव घरणदानासि उग्नमाद मृद्य अवस प्रदेश प्रदाद रेज्यूना श्रकान श्रांक स्कर्म नयाया कविकः मानाधिक २०३६ वध्मद्र शृत्सं ऋदिएशकम ইউলেটর (Antiochus Eupator) লাবে দাবিয়া एमएन अक वासा शिक्षमितिशत मण्डि म<्शाम कारन আ্লাবি সমূলিত তওল ধলি ভারতবংশিব চাড়ি লইয়া থিয়াছিলের। প্রভাক ছব্তিতে ৩২ কন কবিয়া বোদ্ধা ও এক এক জন হিন্দু হস্তিপ ছিল: আর্কাকে অনুমান करवन, या आधिन सामाम बिस्त वादम, वादिनेन প্রভৃতি যে সকল ভলনুরপ নাম আছে ভাছা: দংখ্র वादन भारकत कालक्रम इंटेंड शादत !-- Universal History, Vol. XVII, p, 551. & 552.

⁴ Ibid. P. 529, & Note Y.

কর্নের উইলকোর্ড এই সমুদার প্রমান্বের অনেক ছার্য ও অন্যান্য প্রমান্ত সংগ্রহ করিরাছেন। যদিও তিনি কোন প্রভারক পণ্ডিত ছারা প্রবঞ্জিত হইরাছিলনে বটে, কিন্ধু তাঁহার যে বছ অবায়ন ও ভূরি দর্শন ছিল তাহার সংশর নাই, এবং মধন পূর্বোক্ত প্রমাণ সমুদায়ের সমূলর্ষ্ ছাপিত হইল, তথন অবনিক ভাগও অমু-লক বোধ হয় না; অতথব পশ্চান্তক্ত প্রমাণ সমুদায়ের কিয়দংশ তাঁহার কথানু সারেও লেখা গেল।

রীফান্সের তৃতীয় শতান্দীর প্রথম লাগে ভারতবর্ধীয় বিস্তর লোক মিশর রাজ্যের রাজ্ঞধানীতে " গিরা অবস্থিতি করিত । ব্রীফীর পঞ্চম শতান্দীতে সেবেরস † নামে এক বিদ্যাবিদ্যারদ রোমীয় পণ্ডিত পুক্রোক্ত স্থানে স্বকীয় গৃহত বভাতর ব্রাক্ষণের পহিত আলাপ করিয়াছিলেন, ও ভাঁভার-লিগের প্রতি যথেষ্ট সৌজনা ও সন্মান প্রকাশ করিয়াছিলেন। তণ্ডল ও যর্জুর ভাঁহারদের খাদ্য, ও জলমাত্র ভাঁহারদের পানীয় ছিল । ভাঁহারদের ব্যবহার বিষয়ে এইনপ এক পর্ম কৌভ্লেন্সক আখ্যান সাছে, যে ভাঁহারা নগরের পর্ম শোভাকর অট্যালিকাদি দর্শনার্থ প্রার্থিত হইয়াও ভাত্যা দৃষ্টি করেন নাই; ।

নোনস নামে এক মিশর দেশীয় কবিশ্ব স্থক্ত কাবা মধ্যে কথা প্রসঙ্গে লিথিয়াছেন, যে হিন্দুদিগের সমুদ্র যাত্রায় বহু অড্যাস লাহে,এবং হুল যুদ্ধ অপেকা সামুদ্রিক বুদ্ধে ভাঁচারদের অতিশয় বিক্রম বৃদ্ধি হয় ৷ বিদ্যা-বিশারদ সুবিচক্ষণ উইল্সন সাহে-বঙ এই কাব্যের ভাৎপর্যার্থ প্রকাশ করি-রা লিথিয়াহেন, যে খ্রীফীব্দের প্রথম ভাগে লারবি ও হিন্দু নাবিকদিগের পোত ভারা মিশর দেশের সহিত ভারতবর্ষের অভ্যন্ত যো-গাবোগ ছিল,ভাছাব কোন সংশয় নাই* ৷ আর অতি পূর্ব্ব কালাবধি হিচ্ছুরা যে আ-ফিক। **বণ্ডের পূর্বাংশে জোকতর্রদিউ অ**-র্থাৎ সুখতর দ্বীপে বাস করিয়া আছে,তাহা অনেকেই বিদিত আছেন। এপ্রকার লিপি আছে যে২০৩৯ বৎসর পুরের এক হিম্ম যন্তিপ বৃহৎ ফ্রিজয়ারা প্রায়বর্ত্তি কোন নণীতে পতিত হইয়াছিল, লঞায়স্ত সেই নদীর হিল্পুনাম হয়। ভাহার কিছকাল প্রক্রে গ্রীশ দেশে সচরাচন হিল্প দাস দাসী প্রাপ্ত হওয়া যাইত ৷ কাম্পিয়ান ও ক্র লাগবের মধাবর্ত্তি কলচিস দেশে অদ্যাপি হিন্তুদিগোর বাস আছে। আর দেসিটি-য়স নামে এক গ্রন্থকরা **লেবেন**,যে থেস দে-শের সিদ্ধিনামক লোকেরা ভায়তবর্ষ হই-তে গিয়া তথায় বাস করে 1

ভারতবভায় শাস্ত্রাধ্যাপনার্থে হিস্ক পণ্ডিদেরা আর্বি ভূপালদিগের সভার গ মন করিয়াছিলেন, ও তথায় অৱস্থিতি ক-विशा छे शाम अनाम कविशा किएनम जाहा व न्या है विकास व्यादिशा (सर् श्रुका तीका-नुपादत अन्तांशि अदनकारनक किन्द्र अय-গোৎসাজ-পর্বশ জইয়া দেশ দেশান্তর গ মন করেন৷ কিঞ্চিন শত বৎপর প্রেষ व्यानभुती नामक डेब्बराब्द मह्मानी भूख उ मिकर्ग मान्य (पट्म अ मि॰ इल घीर्भ. अदः পশ্চিম ও উত্তর দিকে হিংলাজ, পারশীক, थंतक बीश, जातव, जर्की, (वाशाता, क्रव छा তারের অন্তঃপাতি অস্ত্রাকান, ও ইউরো-পীয় রুষিয়ার অন্তঃপাতি মক্তোনগর প যান্ত প্রয়াটন কবিয়াছিলেন। এবং ভিনি বলিয়া গিয়াছেন, যে বসোরা নগরে গো-

चारमसमाधि प्रः नगरतः ।

[†] Severus.

[‡] Ptolemy & Damascius cited in the Asiatic Researches Vol. 10. p. 113 & 111.

র্থ ইনি খ্রীটাজের চতুর্থ শক্তান্ধীর শেছ ভাগে বা গঞ্জ শক্তানীর প্রথম ক্ষালে খ্যাড়াগল ছইয়াছি-লেন।

^{*}Asiatic Researches Voi 17th, p. 619 & 620. † In Asia Minor.

[;] Several Greek authors cited in the A. Researches Vol 10 p. 107.

খ ভজনের পি প কিনার ৪৭ সংখ্যা। এক প্রধান ফরাশাশ গণিতদেশ্র মতে উউরোপীয় জোকেরা আরমীদিশেরও পুর্বা চিম্পুন্থের দশভবেশজর সংখ্যার বাহি অবগত জিলেন। Humboldt's Cosmos by Sabine 1848, p, 226.

বিন্দরাও ও কল্যাণরাও নামক দুই বিষ মার্ত্তি স্থাপিত আছে, এবং বাসোর। মন্তট্ট, থরক, বোখারা ও অন্তাকানে বিস্তর হিন্দর বসতি আছে 1 এই ৰূপ এক ৭কার পর্যা-টকদিলের ভ্রমণ ব্রস্তান্ত পাঠ কবিয়া অব-গত হওন যায় যে অদ্যাপি ভাৰতব্যের বৃহিন্দ্র পারস্ক আর্থ প্রভতি বছতর দুর দেশে হিন্দুদিণের গমনাগমন ও বস-वाम थाटक 📢 माल्लाक ও (वाहाई धाः দেশীয় বৰিক ও না:বকের। যে সমত পথে যাতাশতে করে.ভাচা সর্বসাধারণেই বিশি-ইট ৰূপ ভাৰত আগছন ৷ আৰু আগমে,বৈকা থা এন অন্ধ্যাত পিৰুবিধা দেশীয় রাজার৷ य जाशमात्रामधार भूषा वः मीत वालग्रः थारकत, छ। हाब्रुट्रमञ्ज अक अधान धार्मा ६-স্ব যে ব্যাসভোগ নামে প্রাসন্ধ আড়েই. ও সম্পতি আমেরিক। গতে বৌদ্ধ ধর্মা প্র-চাৰ ছাত্ৰ সভাত **লোক দলেৱ সৌভা**লে ও সভাত ভালবাৰ বিষয়ে যে প্ৰস্থাৰ উপা-বিভি এইটান্ডেশ হদিও এইকানে এ সমদা-দের মামাংদা করা সংসাধা,তথাপি ভাছাও বিদেদমার যেগ্যে বলিতে স্টাবেক ৷ ভঃ ভ রতন্দার বে।দ্ধ ধর্মাবলায় মনুষ্টোর। अवर्ष क्ष्मारार्थ ७ किन्द्र वसीविनाम ली কের অভ্যাসারে সিংহল, চান, ভোট, তা-ভাল এভ তিনান। দেশে গমন ওবাস ক-রিয়া,ছল, তাহার বাস্তব ইতিহাসই আছে, ও একালে আদিয়া খলেওৰ বছ ভাগেই তা-হার্ডের বসতি আছে, কিন্তু তাহার বিবরণ করা এঞ্জাবের উ**ল্লেম্য নচে** চ

গ্রীক ও লাটিন ভাষায় লিখিত থাবৎ প্রত্যু কৈছনিগের বিবেশ থাকার প্রসঞ্চ আছে, তাছাতে কেবল ভারতবর্ধ রি লোক বলিয়া ভালারেদের নাম লিখিত আছে। তা-লারা কিছু কি বৌজ্ব ধর্মাবলার ভালার নি-কাপণ নাই কিস্কু ধে যে স্থানে ভাছ্যার প্রশার

अन्यत्क अना अना कथात छेल्लं साहि, তাহাতে হিল্প গর্মের নিদর্শন প্রাপ্ত হ-ওয়া ঘাইতেছে। মীডিরা রাজ্যাধিপতি ক্য়ক্যুংসর সময়ে ও ত**ৎ পূর্বের যে সকল** ভারতব্যার লোক নীডিয়া ও পার্দীক দেশে গতায়াত কণিত,তাহা<mark>র। অবশাই হিল্</mark>ক ধর্মাবলায় ছিল কারণ ত**খন সু নির্দিষ্ট বে**ছে প্রের সৃষ্টি হয় নাই ! পার্দাক সম্টে জন্মেদের সময়ে তাঁছার সৈন্য স্বৰূপ ত্র্র বি সকল। হত্তর এশৈ রাজ্যে গমন করিবার প্রদক্ষ আছে, ভাকারদিগকেও বেছা বাৰ হয় না: কারণ তৎকালেও বেছি शरमांत विराध्य क्षाप्त कत नाके। उदलरत त्य সকল পঞ্জাব দেখ্যীয় লোক আলেগজাণ্ডারের সমতিবাহারে গমন কবিয়াছিল, তাগার-দিগকেও হিল্ড বোৰ হয়, কারণ ভাঁহার खनारकादा ए। भगन्त भक्षानीत छेलामी-নৈর সাহত আলাপ করিয়াছিলেন, ভাঁছা-ম্বনের কণ: বর্ণ্ডা ভাব ভঞ্জিতে হিন্দু ধর্ণ্ডে-বুই চিত্ৰ প্ৰকাশ পায়, এবং তথকালে हिन्द्रामा अवस्थाकारु महत्रा (विरम-মতে যে উণাসীন ভাঁচার স**্লে** মাইডে যাইতে পার্স ক দেশে অভি মতা হাকার করেন, তিনি আগশ্যই চিল্ফু ছিলেন, কার্ণ কিন্দ্র শান্তেই অগ্লিমতার বাবস্থা আছে ! তদন্দারে যে বাহ্মণ এথেন্দ নগরে চিতা-রোহণ করিয়া প্রাণত্যাগ করেন, তিনি, ও বোৰ কৰি, ভাঁছাৰ সমভিব্যাহারি অন্যান্য पुरख्ता थ दिन्ह वर्षावन विकास हिर्देशन । या-হার: সারিয়া দেশীয় দেবী-**প্রতিমা সন্নি**-খানে উপহার প্রদানার্থে গমন করিত, ও যাতারা আর্মানি দেশে বাদ ক্রিয়া**দেব** প্রতিমার্ড প্রতিহা করিয়াছিল, তাহারা নি-क्छिड़े हिन्छू। राहाइ डेक, शुक्त कालीन किन्द्रिक्तित्र विद्यान याजा विषद् या मकन উদাহরণ প্রদান করা গেল, তাহার অধিক ভাগই প্রামাণিক তাহার সন্দেহ নাই; এবং হিম্ম শাস্ত্রের সহিত এই সম্প্ত ইতি-

Astatic Researches, Vol. 5tb.

[†] Itad 108 & Hf.

⁵ Ibid Vol I. P. 426.

[¶] Journal of the American Oriental Society. Vol. 1, p. 333.

Elphinstone's India. Vol. 1st, Greek according of India. Journal Asiatique, 4th Serie.
 Tom. 8, p., 287.

হাসের श्रीका করিয়া ইবা নিংসংশব্ধে নিক্ পিছে হাইল, যে পুথা কালে অপ্রতিহত-চিত্ত ঘহোৎসাই কিন্তুর। স্থলপথে ও অলপথে ভারতবর্ষের বহির্ভুত নানা দেশে গননাগ-মন করিতেন, ও তথায় ভূরি কাল প্রবাস করিয়া থাকিতেন।

যথন হিন্দুরা সম্দ্র-যাত্রিও সামদ্রিক ৰণিক ছিল, তথন তাহারা পোত-নিশ্মতা काक्रकते ७ हिल, छाहात मः भग्न नाहे । नि-স্পদ যানোদেশ এতে নানাবিধ নেক। নির্মাণ, তদীয় লক্ষণ, ও গুণাদির যে সবি-স্থর বিবরণ আছে, তক্ষবো সমত খানেরও নির্দেশ আছেও তৎ পাঠে প্রতীতি হয়, যে উক্ত এন্ত্রচনার পূর্বেরে ভে:জরুত ও অ-নামা মানকুত বলিয়া তদ্বিয়াক অনেকানেক গ্রন্থ প্রচালত ছিল *৷ চত্রক ক্রাড়াতে নোকা বলের গুয়োগ দেখিলা অবস্থাই একপ উদ্বোধ ইইতে পারে, যে গুয়ের হিল্প দলের নোকাবল ছিল, এবং সংট্রানা স্পর্যট্ট লিখি-য়াছেন, যে ভাহার। যুদ্ধ গেতিবল বাবহার করিয়া থ কে। ইহা নিতান্ত সম্ভব,যে হিন্দু শিল্পকারের:ই এ সমস্ত পোন ত নিশাণ কাতে; এবং বিশেষতঃ মৃৎকালে গ্রীক জাতীয় মিগাক্তেনিস এক গ্রীক ভুপ-তির দৃত অংশপ হইয়ামহারাজে চলু ওলুও রাজ হভার আগমন করিয়াছিলেন, তথ্ন সম্দ্র-যান নির্মাণ করা জাতি বিশেষের নি-ৰূপিত বৃত্তি ছিল:।

১৭ বৎসর পূর্বেজান এডাই "*
সাহেব ইদানিখন দাক্ষণতাও সৈংহল
পোত সমুদারের যে বিবরণ করিয়াছেন,
ছবিয়ের সুবিচকণ মাল্কোম সাহেব †
লিধিয়াছেন,যে ঐ সকল সমুদ্যান তদীর
প্রয়োজন দাধনের সমাক্রপ উপযোগি:
ইউরোপীয় শিশপকারের। এপর্যান্ত তাহার
কিছু উন্নতি করিতে পারেন নাই, আর

সতি পূৰ্বকাচনও হিন্দুদিনোর পোডবিকান বিদ্যা এইজপই ছিল * 1

সর্ক্ষমধারণ লোকের এই প্রকার ছাদর
ভাষা আছে যে ছিন্তুরা চিরকালই বিদেশযাত্রা বিমুখ্য তাহারা ছলপথে যা জলপথে
কথনই কোন দেশে গামন করে নাই । এই
কুসংস্কার নিরাক্রনাথে এবিষয়ের সবিস্তর্
বিগরণ করা গোল, এবং যথন চান রাজাাদি
পূর্বি প্রদেশীয় লোকের স্থিত হিন্দুদিগের
বাণিজ্য ধ্রেসায়েন রুদ্ধান্ত প্রকাশ করা
যাইবেক, তথন তাহারদের ততুংখ্যন গ্যানেরও প্রচুর প্রমণণ প্রাক্ষিত হইবেক।

यश्रे श्रेष्ठिः च चारत्वत एम मह हर-সরেরও পূর্বের হিন্দ্র ও পারসাফাদি পশ্চিত্র দেশে গমনাগমন করেত, এবং ওৎপরেও তত্ত্বদেশে তাহার্টের সচরাচর গভায়াও ছिल, उथम ७ वटवर्षाः। वनिक्षित्रात् जुल পথে পারস।ক সম্চের কূলে (গরা ফান্-সিয়ার লোক দগকে পথা।বক্রম কর।কোন ক্রমে ভসজত বোধ হয় ন।। বিশেষতঃ কারুলস্থানকাসে হিল্পুদের তথায় গমন করা अराज्य आगाम महा। য়াচিও এন্ত কালে भुष्य काकावरमञ् नग्रामग्राह स्टब्स्टर्स যাতায়ত করিবাং স্পান্ট প্রমাণ প্রাঞ্ क देश। गांध ना, किन्द्र शंक ता सक्तार है। क्रमाहित एक अभता चाहिलाई है है का छेचन মহাসাগ্ৰ অণিকেন বারা। জন্মণ দেশে উপনীত হইরাছিল, এবং যালার। গ্রীষ্টা-কের প্রারের বা কিছুকাল পূরের অংকিকা थर छत्र श्रृक्ववर्ष्टि सूथ उद है। एथ दान क्रिया ছিল, ও যাহারদের বেদাদি সমস্ত প্রাচীন

🖷 মালকোর দাং হলের মত আদি প্রাহালিক, অভারত

of their construction, are so admeably adapted to the purposes for which they are quired, that agreed which they are quired, that agreed to the purposes for which they are quired, that agreed to the purposes for which they are quired, that agreed to the non-ble, during an intercourse with India of two centuries to suggest, or at least to bring into successful practice, one improvement—Journal of the B. A. Society No, 1st. Art. 1st.

রাজন সাধনের সম্যুক্তন উপযোগি: তাহা কৈ কলা সাইনেডে । রোপীয় শিপ্সকারেরা এপর্য্যন্ত ভাহার — Many of the vessels of which be given as an account, illustrated by correct drawings

[•] শনবংশাক্রয়ের ১৯কা শন দৃষ্টি করিদেন। †Klphinstone's India Vol. 1, p, 459.

[‡] Arrian affis ory of India, Chapt, 12th.

¹¹ John Malcolm.

শান্ত্রই সমুক্রযাতার বিধান আছে,ভাহার-(मृत तिक्रमामित्शत वस माठाक शृहस्त পোতাৰত হইয়া পাংস'ক ও আংব রাছেট গ্ৰাম কৰে! মুগ্ৰাই অসম্ভাবিত নতে^{*} ! তাৰে हेह: अवन: य क"? कवित्त बहेत्व, स श्रीक ও রেখনীয় উভিতানবেভাদিলের **পুস্তকে** জার্ধি ন্যাব্রুদিধের ভারত্বধে আাসনার গেমন স্বিশেষ কুলান্ত আছে, হিচ্ছ পোত ব্লিক্দিলের আর্ব রুলভা সভত প্রায়াত কবিবার সেবপ প্রমাণ আনপ্র ইংয়া হায় মা অতংক ভদমুধারে অনেবৃদ লেকেরা ঐ স্কল শক্ষর রুটমার প্রেড সচর ডি ভারি-क्तर्रात ५ छत्। अति है। म राम्हम आरम-(* স্ভাপ্ৰসম) সভাগ্যন পূকাকে পাণ্ সংগ্রী সম্প জ্বা করিয়া ভারারদের भित्रभाकत (५२) त ५ ५ किन एक विकास कादक, एक ए मान्य माने। किन्नम्बाद्य স্লগণাম বাংগার এই প্রেল ছিলার **এবং** ভ¦ৰান্য, যাগন সম্দাধ সাবুলায়ােম ও ও পার্যার (দশ্র দিয়া তৎপশিংকে প্রোরাজ ৮উত্ বাবিলন (৮৫শব সহিত্ভ রতব্ষের ৰ ৭০ছা থেবন চক্ৰেব্যু সময়ে উদ্বিদ্য **व्यक्तिः।** सन्दर्भ संकेत्रस्य (

যে বাংগ্রে ভারত-ভূমি ক্ষমন্তান প্রকণ হিন্দু ভূপ প্রথম গারে প্রতিগালের হইনতন, যে বাংগ্রে জনত, বিধানান্ গ্রেক সকল বভারর গুরুষে শেনমাগনন করিল্ভু সাধ্য বাংগ্রেক্ত সম্পন্ন করিছেন, যে কালে হিন্দু বাংগ্রেক্ত বাংগ্রেক্ত প্রক্রিক্ত ক্রিক্ত নালা ভারতীয় সামাধন বাংলি প্রক্রিক্ত বাংগ্রেক্ত ক্রিক্ত নালা ভারার ক্রেক্ত কর্মক করতেন সে কালে আমার-দের প্রক্রিক স্ক্রেম্প্রেক করে প্রম্

ार्द्ध अधिकांत्रद्रधार सम्बद्धारहा क अरुप्रद्र हमारा

সভাপেক্ষাম প্রাংগন। তীচার গ্রন্থে ইচাও লিখিছ
আছে যে অনেকানেল পোড ভাবছবর্ম হইতে আবের
রাছে। গ্রহায়ত করিত। তথ্যসূচ্যা সে দেবলাই
আবার নাবিকামবের পোড এমন নিক্ষা করা হায়
না; বন্ধন ডাচার ভিজ্লাল পরেটী আফিছা এটের
পূল্যা শে চিন্দুদের বাস করিবার প্রমাণ পাওছা মাইচেত্রে তথ্য সমন্ত্র সমুদুর্গনের করুক হিন্দুদিবের করিত পারে।

সৌভাণ্যের কালই ছিল! তৎকালীন দৃতব্রত মহাবীর্যা হিন্দু দিগের সহিছু ইদানীন্তন নিরুদ্য, নিরুৎসাহ, আলস্যা-পরবর্শ
হিন্দুদিগের তুলনা করিলে আমারদিগকে
হিন্দুদ্যান বলিয়া পরিচর দিতেও লজ্জা
হয় ৷ আমরা এমন নির্বাধী ও এমন
কুদ্রাশর হইয়াছি, যে বিদেশ লমন করা
শাস্ত নিষ্কি বলিয়া প্রারণ্ডি হইয়াছে!
কেবল বিদ্যা প্রচারই এ রোগের এক মাত্র
উষধ!

(ক্রমশঃ প্রকাশ্য)

বিজ্ঞাপন

রতজ্ঞতার সণিত স্থানার করিছেছি, যে শ্রীণার্গজনস্তাং সাহের মনাশায় বাই-মান ব্রীকীকোন শ্রীকীয়ে প'গুরুরার এক থণ্ড এই মডায় প্রদান কংলাছেন।

> क्षेत्ररहस्याध प्राकृतः। मन्यापकः।

বিফা,পন

তজ্বোধিনী সভার পুরকালরে সভোর রা ধান এক প্রকান করেন, তাব তাহা উত্তম বাপে বজিব কইবে, এবং তদ্ধারা সভাব ২ফ উপকার এত হংবেক।

> बीन्ट॰ छनाथ शिकूत। मण्णामक।

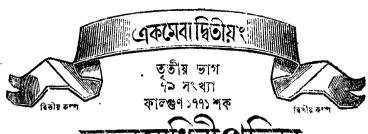
বিজ্ঞাপন

৭ চি 1 ১৪ 1 ১৫ 1 ৪৫ সংখ্যক তবু-বোধিনী পাত্ৰকার প্রয়োজন হইরাছে, যিনি উক্ত কর্থক সংখ্যক পত্রিকার এক এক খণ্ড সভার কার্য্য লয়ে প্রদান করিবেন, ভাষাকে ভাষার প্রভাবের মূলা এক এক টাকা দেওয়া যাইবেক 1

श्रीम् त्रिसमाथ ठाकुत । मण्यापक ।

ক্সে এই ওঅবোধনী পারকা কালকাতা সহানগরে হোড়াসাকোনিত হক্তরোধনী সভার কার্যালয় ছই-তে প্রতি যাদে প্রকাশিত হয়।—ইয়ার বুলা একটাকাং-২৮ হায় সহৎ ১৯০৬। কালগডাকাং ৪২৫০।

मेका शहर ने बान इमेटक रुक्तद्वरीयनो क्यांस अपिक संबोध और निविकास अक बात विस्ता । हुरतन शांक घटर वा



<u>্তভ্যরোধিনীপ্রতিকা</u>

অপরা ঞ্লেবানজুরেরন: সামবেলোথকবেদ: শিক্ষা কশেশার্যাকরণ শিক্ষত্ব ছংলাজ্যোতিষমিতি। অধ্য প্রাহ্যা তদ্দরস্থিয়তে ।

% रश्रम मे हिट्य

প্রথমমণ্ডলস্য নবমানুবাকে
তৃতীয়ং সৃক্তং
প্রস্কৃত্বনিং গায়তং ছক্কঃ
অবিনো দেবতা

685

১ এবো উষা অপূর্বা। বুচ্ছিতি প্রিষা দিবঃ। স্তবে বামশ্বিনা বৃহং।

১ 'এনো 'এনা এব ^{বি}উর। 'অফাজি: পরিদুল্যানা 'প্রিয়া' সর্জেরাং প্রিত্তিতে তুং 'অপুর্ক্টা' প্রেপ্ত্র্মধারাক্রাদিকালেরু হিদ্যামান করতি ভিন্দ উনানী-অনী উন্নারিকরে দ্বালিকর দ্বালাং আগতা 'রুফ্জি' তমা বছড়লতি হে 'অমিনা' অমিনা' বাং' যুবাং 'বৃহং' প্রস্তুত্তং বাণা স্করতি তথা 'ক্রাই' ক্রেছি।

১ আমারদিগের দৃষ্টি পথ সমার্ক্যা, সকলের প্রীতির কারণ,এই উঘাদেবত।মধ্য-রাজাদিতে অগোচর ছিলেন, কিন্তু এই-ক্ষণে বর্গ হইতে আগমন করিরা অস্বকার বিনাশ করিতেছেন। ছে অম্বিনীকুমার মন্ত্রী প্রামারদিগকে বিস্তর তব করি।

680

२ या एम्। निर्मु माछता मदना-

छत्री त्रयीनार । धिया त्म्वार्तमू-विमा ।

> 'দেবাং' 'বং' দৌ অবিনে বজামাণগুণসূকো
ক্রেরি। কীদ্দেশী 'নমুন' দম্বুন দশ্নিকো 'বিজ্ঞা-ত্রা' দিক্ষাক্রো সমুদুমাতৃত্রী 'র্থান্থ' ধনান্থ 'মুনোত্রা' মন্ত্রে মন্ম তার্থিত,বৌ 'পিনা' ক্রমান 'বসুবিদা' বসুবিদৌ নিবাসভান্য লঞ্জিভারো।

২ দেবতার বক্যমাণ গুণযুক্ত আধি-নীকুমার দয়কে ওব করেন, ই হার। ক-শনায়, সমুদ্রের পুত্র, ইচ্ছামাত্র ধনো-দার কর্তা ও নিবাস ভানের প্রাপক ব্রেন।

889

ত বচ্যন্তে বাং ককুছাদোজু-গায়ামধিবিফাপি। যদ্ধাং রখ্যো-বিভিস্পতাৎ।

ও লে জাবিনো 'বাং' সুসং লা: 'র্থঃ' ফ্রালাং নানাশারৈ: ক্রালাং 'আসিবিটাপি' বর্গলেকে 'বং' যদ। 'বিভি:' আবৈঃ 'পার্থ 'পার্থি গুলানীও 'বাং' নুব্যোঃ 'ক্রুগাসঃ' স্ত্রগঃ অ্আফি: 'বচাতে' উচাতে!

ও ছে অধিনীকুমারদ্বর! যে কালে তোমারদিগের রথ অশেষ শাস্ত্র দারা। বৃত্ত হটর। বুর্গলোকে গমন করে সেই কালে আমরা তোমারদিগের তব করি! C 50 G

৪ হবিষা জারো অপাং পিপ-তি পপুরিনর। । পিতা কুটস্য চ্যবিং।

৪ কে অথিনৌ দেবোঁ 'নরং' নরং পুকরং 'ক্তপাং, উদকানাং 'কারং' অনীবভাপেন কর্যিতঃ সুগাঃ 'কবিছা' অঅন্তলন পিপতি 'দেবান্ পুরুষতি উদিন দে পুরে ইবিপ্রনানং সুগাঃ পুরুষতংগ দুক্তিগাং। আরং সুগাালফলালে মুবাছাং আগপ্রসংহ কিন্দোল্লার কারং 'পপুরিং' উক্তর্থেণ পুরুষত্বে 'শিতা' প্রিকং কুল্যা'ক্রাণা গ্রনির সুনাঃ

৪ স্থার উদ্ভাপ ছ'বা ফলশোষক পুরণ
স্থান্ত, ক্যান্দশা স্থা অস্থপ্রদন্ত ইবিছার। দেবতাদিগকে পুরণ কবেন ৷ সেই হেতুহে পূর্যভাব দাপ্তিবিশিষ্ট অস্থিনীকুমার্ডয়! সুর্য্যাদ্য কালে
ভাপনার। স্থাগনন কার:ব্ন ৷

@8 N

৫ আদারোবাং মতীনাং না-মত্যা মতবচদা। পাতং সোম-স্যা ধৃক্ষুয়া চোতাততা

৫ সে 'ম হবচ্যা' য়ভবচ্সৌ অভিয়ভজোতৌ 'না-সভা' নাসভৌ অভিনৌ 'বাং' য়ৄবলোঃ 'য়ভীনাং' য়ৄড়ীনা৽ 'অ'দাবঃ' প্রেরকোহঃ লোয়ঃ অভি 'লোয়-য়য়' জং লোয়ং 'পাসং'য়ৄবাং পিবভং য়ৗদুশংলোয়ং 'য়ৢয়ৢয়া ধর্ষণশীলং য়দকরজেন হীর্মিত্যর্থঃ ২০০০।

৫ হে অভিনত স্তুতির যোগ্য সত্যবাদী অধিনীকুমারদয়! তোমারদিগের বুদ্ধির প্রেনায়তা যে সোম আছে সেই ধর্ষনাল সোম তোমরা পান কর ১১৮১৩১।

C89 .

৬ যা নঃ পীপরদশ্বিনা জ্যো-ভিন্নতী তমস্তিরঃ। তামস্মে রা-সাথানিষ্^হ।

'स्वाकिक्वती' इनदीर्गाविक्वभएकाखिषु का 'श'

ইউ আহম 'নঃ' আন্ধান 'পীপ্রৰ' পার্গেৰ ভূপ্তিং প্রাপ্তাৰ কিং কুলা 'ভয়ঃ' দারি দুরূপে আছকার্থ 'ডিরঃ'অখিডি চম বিনতীশ কুলা 'ভাম' ভাদুশীম 'ইথৰ' আলম 'অংফা আন্ধাচাম হে' অবিনা' অবিনো যুবাং 'রংসাধাম' দত্তং।

৬ রস্বীর্যাদিরপ জ্যোতির্বিনিউ থে আন দারি এরপ অন্ধক র পরিছার কার্যা। আনার্দিগকে তপ্তি করে, ছে অধিনীকুনার দর! তোমর।সেই অন্ন আনার্দি-গকে প্রদান কার্যাছ।

687

৭ আ নোনাবা মতীনাং যা-তং পারায় গন্তবৈ। যুঞ্জাথাম-শ্বিনা রথং।

ও চে 'অধিনা' অবিনে যুদ্ধ 'মটানাং' ফ্টোনা' পারান 'পারান' পারে 'এছেদে' গল্ধ 'নানা' নৌক্র পের গমনলাধনেন 'নং' অধ্যান প্রাটি 'অন্যাত্ত্ব' ল-মুদুদ্দাবালক ছব । 'ভূমো আন্তন্ত বদীয়াং 'রথা' 'যুদ্ধাগাং' সাধ্য কুক্তত্ব।

৭ হে অধিনীকুমানছয়! তোমরা অশেষ স্তৃতি লাভাথে নৌকাদার! আমারদিগের নিকট সমুদ্র হইতে আগমন কর ৷ ভূ-মিতেগমন করিবার নিমিত্ত তোমারদিগের রথ অধ্ব বিশেষ্ট কর ৷

689

৮ অরিত্র'ং বাং দিবস্পূ পুতী-থে সিদ্ধূনাং রথঃ। বিষা যুস্জু-ইন্দবঃ।

৮ তে অখিনে ' বাং ' যুবচ্যা: ' দিবঃ' দ্যুলোকাং
অপি ' পূর্থু ' বিস্তীনং ' অবিত্রং' গ্রমন্যাধনং নৌক প্রং' নিজুনাং' সমুসুনাং ' ওার্ডে' অবতর্ধপ্রদেশে নিদ্যানে ইতিশেষ: ' নথঃ' চ ভূমৌ গল্ডং বিষয়েও। ' ইন্দর: 'লোমা: ' ধিয়া ' ভবছিববেণ কর্মাণা যুৰুজ্বে' যুক্তাঃ বভূবুঃ।

৮ হে অখিনীকুমার দ্বর! বর্গ হইতেও বিস্তীন তোমারদের নৌকারূপ গমন যান সমুদ্রাবতরণ দেশে বিদ্যানান আছে এবং ভূমি গমন নিমিন্ত দ্বধও আছে, সোম-চর তোমারদিগের কর্মমুক্ত হউক। ¢ (0 0 '

> मिरकेशमहेर्नतारम् मि-स्न्नार शाम । सरवितर कृहं विश्-मथः।

১ ছে 'কণালঃ' দণ্পজা গ্রিক্স অগিনৌ ইন্থাৎ পৃঞ্জ কিবং 'দিবং' দাংলাকদকংশান 'ইন্দদঃ' সূৰ্যাবন্ধনা প্রাদ্পভূতাঃ 'দিছুলং' অপাণ দৃষ্টিকপালাং সান্দন্ধ ছারানাং 'পদে' স্থান অপ্রক্তিকা 'দৃষ্টি আদিবাদিবাদেহত্ত্বত উল্লেখন (কাণিকিং কোতিই আহিশোরঃ অগ্রেমক্সরে বুলং 'বং বরিং' অক্যান কোনে কুলং 'কুল' দিহদগা স্থাপনিত্রিজ্ঞাঃ আরু আগেহা প্রদানীয়াছি ভানপালিছা
অরু আগেহা প্রদশ্নীয়াছি ভানপালিছাঃ

৯ তে কণুপুত্র থাবিক্ দকল। তোমরা অধিনীকুমার ভরতে জিজাসা কর যে কি প্রকারে জালোক হৃততে সুর্যার ক্রাপ্র দকল আবিভূত হইয়াছে, এবং অস্মদাদির নিবাস কারণ উষ্ণ কালীন জ্যোতিং কি প্রকারে সমুদ্রে আবিভূত হইয়'ছে। এই সময়ে তে'মরা স্বাধীয় রূপ কোধায় স্থাপন করিবে অর্থাৎ এই স্থানে আসিয়াদেশাও।

662

> অভূদ ভাউ অংশবে হির-ন্যং প্রতি সূর্যঃ। ব্যথ্যক্তিহ্বযা-বিতঃ 151০1081

১০ 'ভাউ' সুর্যাস্য দ্বীপিক, 'অংশবে' উরং কালীনকৃষ্ণিনিকার্থং 'অসুহ' প্রাদ্পূতা 'উ' এব 'সুর্যাঃ
চ 'হিন্দাং প্রতি 'অকীদোদরেন চির্ণাস্দ্শাভূহ।
অগ্রিক্ষ 'অসিডঃ' অকীদাদরে সুর্যাপ্রবেশেন বযং
কৃষ্ণোভূতা 'ইক্ষাং অকীষ্যা ক্রালয়া 'বাধাহ'
ক্রাশিভবান ভ্রমং অহং অবিনোঃ আগ্যমকাল্যা ১০০৩৪।

১০ উবাকালে প্রকাশ নিমিত সুর্যাজ্যোতিঃ প্রকাশিত হইয়াছে, এবং সুর্যা
হিরণ্য তুলা হইয়াছেন, অমি ক্ষবণ
হইয়া বীয় কিরণ বালা প্রকাশিত হইয়াহেন, নেই হেতু অধিনীকুমার হয়ের
আগমন কাল এই ১১৬।৬৮।

665

১১ অভুন পারমেভবৈ পন্থা-ঋতসা সাধ্যা ৷ অদিশি বি সূতি-দিবঃ ৷

১৯৯ ক্ষ্মা স্পাস্য পোর্থ বাজে পার্জুত্থ উদ্দাল্থি এংবে প্রাথ প্রতা মাধ্য স্মীরীনা অভ্যানিক্ষর উ এব : 'বিবাং বাজে ভ্রার্ক্স সুস্থা স্থাত প্রত্থ নিক্ষি বিজ্ঞান কি ব্যাসক্ষ্ম কুলি ব্যাস্থান আন্তর্শাস্থা স্থান্ত

১: প্রয়াদেবের উদয়'চল গমন নিমিত্ত পর্ব উদ্ভম কইয় ছে, প্রকংশবান্ জুটোর সর্ববাপী দাঁপ্যি বিশেষ রূপে দৃষ্ট ক্ই-য়াছে, দেই কারণে কে অন্থিনাকুমার দ্বা! ভোন্ধ: আগনক ক্রিবে!

000

১২ তত্ত্তিদদশ্বিনোরবোজিরি-তা প্রতিভূষতি। মদে সোমদ্য পিপ্রতাঃ।

১০ ' এবিডা স্কেডা 'অবিনো: ' সম্ভি 'ভবদিই' প্রাপ্নাক্রাক্রাই সক্ষাপ 'অব্যাহিত্যাই বজাৰ প্রান্ত্রাক্রাই ক্রাক্রাই ক্

১২ হর্বেটে সোম পুর্রিজ্ অশিনী কুমার ছায়র বারয়ার ক্ত রক্ষণকৈ শুব-কারীরা প্রশংসা করেন ৷

899

১৩ বাবুদানা বিবস্থতি সো-মাস্য পীত্যা গিরা । মনুষচ্চ ডু আগতং।

১০ ছে 'শায় 'সুগরভার পিরবে বি আবিনো 'লাযুদুং'
মনো ইর 'বিবর' গানচরগরতি ফলমারে 'হারবানা' বাহগানে নিবাসশীলো গুরাং 'সোমস্ত' পীত্যা' পাননিমিত্ত 'গোরা' স্কৃতিনিমিত্ত 'আগতং'
আগক্তং ।

১৩ হে সুথ স্বভাব পালক অধিনীকুমার ছয় ! যেনন মনুতে সেই প্রকার পরিচরণ বিশিষ্ট বজনানেতে নিবাস শীল
ভোমরা সোম পান নিমিত্ব এবং স্তৃতি নিনিত্ত অংগমন কর 1

222

১৪ ষ্টোক্ষা অনু শ্রেষং পরি-জ্মনোরূপাচরৎ। শূতা বনথো-অক্তুভিঃ।

১৪ চে অবিনে । প্রিজ্যনে । প্রিড রান্যে।
গুরুষে । বুহলে । প্রিজ্য আন্সক্র প্রেলিছার
আনুস্তা উল । উপানে এই উল-কালনে বছর
আনাজ্যুর্বলোর চাহলে নে লোক প্রাক্রির ইবীংলোক ব্রুবলোর না তিতি । প্রতাবিক্রির ইবীংলি 'ত্রুগা কর্মনে । বাজিতি । প্রতাবিক্রির ইবীংলি 'ত্রুগা কর্মনে ।

১৪ হে সর্ব্যামী অধিনীকুমার ছয়। তোমার্যানরের অগ্যমনানম্বর উধাদেবতা আগ্রমন করুন, তোমরার।তিসংজ্ঞক যজ্ঞ প্রাপ্ত হবিঃ প্রার্থন।কারতেছ।

683

১৫ উভা পিবতমশ্বিনোভানঃ
শৰ্ম যচ্চতং । অবিদ্রিয়াভিকতিভিঃ ৷১৷৩৷৩৫।

১৫ তে 'অগিন' অসিনো 'উড়া' উচ্চো রুবাৎ 'পিব'রণ' সোনপান্ত কুফতত ততঃ উর্ক্ত 'উড়া' 'উচ্চো দুবাং 'অবিদ্বিধাতিঃ 'প্রশক্ষাতিঃ 'উত্তিরিতঃ' বন্ধাতিঃ না' আফড়াৎ 'শর্মা মুখৎ 'য়ক্তং' ১১:০০৫

১৫ ছে অখিনীকুমার দ্ব ! তোনরা উদ্দেশে নোমরস পান কর, তদন্ত্র উভয়ে প্রশাস্ত্রকাদার। আমার্দিগকে সূথ প্র-দান কর 121৩1 ৩৫1

ইতি প্রথমানকে ভূডীগোধ্যায়ঃ

देवकव मन्भूमात्र

চৈতন্য সম্পুদায়ের শাখা। নাজ বকারমুক্তির ক্ষেত্র প্রতিষ্

মধুরাও রুদাবনবাদি কতক গুলি চৈতন্য-সাম্প্রদায়িক বৈক্ষ্পুদ্ধর স্থাপিত মূর্ত্তি বিশে- বেব নামানুসারে রাধারমণি, রাধীপালি, বিগারিজি, গোবিদাজি, যুগলভক্ত প্রভৃতি ক.তপয় শাখা সম্পুদায়ের উৎপত্তি ছই-রাছে ৷ মূল সম্পুদায়ের সহিত ইহারদের নামান্ত । গ্রহণ বাতিরেকে ব্যবহার-পত বৈলক্ষণ্য কিছুই নাই ৷ কিন্তু তাহার সহিত স্প্টদায়ক ও সহঁজি প্রভৃতি কয়েক শাখার বিস্তর বিশেষ আছে ৷

স্পাইদায়কদিগকে ছুটি বিষয়ে অপ-রাপর সমুদায় হিন্তু সম্পূদায় হইতে ভিন্ন বলিতে হয়। ভাঁহারাদীকাগুরুর দেবস্থ ও সর্বা-শক্তিমত্র অস্থীকার করেন, এবং তৎ मान्त्रम शिक देवस्थत अदेवस्थ्वी शक्ष्मान (मास-শ্না সহবাস অঙ্গীকার করিয়া এক মঠেই অবস্থিতি করেন৷ সর্বজাতীয় গৃহক্রোই धमन्त्रामार्थ अवसे इहेट भारत, विसु স্ত্রীপুরুষ উভয় জাতীয় উদাসীন মাত্র গুরু পদ প্রাপ্তির অবিকারী ৷ ই ছারা কঠ-(मर्ट्स अक-कर्किका माला धात्रन करतम, खदः गृली कुछ टेइडना-मन्भुमारग्रत आरशका किशिष्ट কুত্র করিয়া ভিলক সেবা করেন। পুরু-যের। ক্টোপান ও বহির্বাস পরিধান ক-রেন, এবং ক্রীলোকেরা প্রায় সমস্ত সমৃত্ ম্ওন করিয়া এক ক্ষুদ্র শিখা মাত্র অব-শিষ্ট রাবেন। এসম্পুদায়ের সাতিশয় 📆 🖫 চারি ব্যক্তির। স্বধাম্পুদায়িক ভিন্ন অনিচ কাহারও অনুগ্রহণ করেন ন।।

শ্প উলায়কলিগের মতে এক্স বাস,
ভাত্ভগিনীবং প্রশাচনে, সম-ধর্মাও সমান্ধতা,উভয়ে মিলিত হইয়াক্ত্রক ও চৈতনাের
প্রীতিতেন্তা, গীত ও গুণ সন্ধার্তন ইত্যাদি
অনুষ্ঠানেই ত্রীপুক্ষের সংসর্গ সমাধান
হয় ৷ বৈক্ষবীরা ধনাচ্য লােকের ত্রীদিগকে মহল্লাপদেশ করেন ৷ অন্তঃপ্র প্রবেশে ওঁছারদের বারণ নাই, এবং পুব্রাক্ত ত্রীলােকেরাও সময় ক্রনে ভাঁছারদের নিজ নিকেতনে গিয়াদর্শন করে ৷ এই
ক্রপে কলিকাভা নধ্যে এসম্পুলায় বিলক্ষণ
প্রবল হইয়া উচিতেছে।

সহলিদিগের ভাব পুর্কেই রাজ করা বিরাটেছ; তাহারা শাপনাদের মত ক্ষম-কাশিত রাবে, অহনকে বলৈ বে জাকারণ বামাচারি শাক্তদিসের ধর্মানুষ্প শাক্ত উ-পাসনা করিয়া থাকে।

তদ্ভিদ বাউল লাড়া প্রভৃতি বছতর কুত্র কুত্র সম্পুলার এক চৈতন্য সম্পুলার হ-ইডে উৎপন্ন হইরাছে।

পরমেশ্বরের কৌশল বর্ণন

প্রাণির দেহালোচনা ভারা প্রতীত হইতেছে, যে তাহা প্রতিক্ষণে কিয়ৎ পরি-मार्गक्र इहेरछर्छ। बहेशकात्र भद्रीकार्ट নিশ্চিত হইয়াছে যে জীবাত্মার দেহ গেহ ঈদৃশ ক্রমক্ষ নিয়ম ছারা দিন দিন ক্ষয় হই-য়া প্রতি সপ্ত বর্য পরে তাহার এক অণু মা-ত্রও থাকে না, অতএব 'মনুষ্যের শৈুলবাবস্থার শরীরের এক অণুমাত্র প্রৌঢ়াবস্থার শ-রীরে থাকে না.' এবং প্রৌঢ়াবস্থার দেহস্থ কোন অংশ রুদ্ধ শরীরে সংপ্রাপ্ত হয় না। জীবের দেহান্তরাবান্ডি মত্যিক ব্যক্তিরা স্বমত প্ৰতিপোষক স্বৰূপ এই উদাহরণ नकाना अनर्भन कतिया शास्त्रन स्य 'मनूता যক্তপ পুরাতন পরিভ্রদ পরিত্যাগ পূর্যাক নৃতন ৰক্ত পরিধান করে, তজ্ঞপ জীবাত্মা মৃত্যুকালীন পুরাতন দেহ পরিবজ্জ নানস্তর অভিনৰ কলেবর ধারণ করত পুনর্বার क्रम् अरुन करत्रम कै।शत्रामत्र महस्क रेट्। प्य-क्ना कोकृहरलत विषश्च वर्षे, य कीवा-আর সংসারলীলা সম্বরেণর পূর্বেও আজন্ম শক্তিন পৰ্য্যন্ত প্ৰতি সাত বৎসৱে নৃতন দেহ নিৰ্মাণ হয়। বাস্তবিক কি সন্ধীৰ কি নিৰ্মীব अमार्थ बाटकरे वावशांत्र करम छेखत छे-**ভর ক্ষর পার,ইহা বভাব সিদ্ধ বটে;** বিশেষ **भरे यि निकीर्व दस्तत्र नके फ्रांट्र**नत च्रुडः অতীকার হইবার কোন সাধন নাই,—নি-মৃত সঞ্চালন-জনিত ঘটিকা-মৃদ্রের অঙ্গ প্রভূ-তি ক্রাপন হইতে লাগিলে আপনা হইতে ভাহার নকৌন্ধার হয় না,স্মার প্রাণিগণের অবিভিন্ন নিঃশাস ত্যাপ বাগাভোতাত ভার। काण्य रा कठिन अवद्वरामित्र वात्रशत हालना उ चर्यगामि सन्। अवर नमता नमता च्यू कृष रहेटच वर्षविषयं काबीब थानि-

দেকের যে অংশ বিরু**ড অবস্থান্তর প্রাপ্ত** অর্থাৎ নউ হয়, ভালার প্রতীকার হেতু कंगरकत निवन्ता भव्रम भूक्ष कर्ज्क वहे 🦫 পার নির্দ্ধিট হইয়াছে, যে পুর্টিকর-জ-ব্যের উপযোজন ছারা জীব সকল আপ-নারদিগের এই কণ্ডঙ্গুর দেহ যন্ত্রেক ষ্মকাল পতন হইতে নিরন্তর রক্ষা করিবে। এন্থলে বিবেচনা কর, যে এক অহোরাত্ত माज अनमन बाकिटल शत्रिक यथन आश-নাকে অভি ক্লশ ও ছুর্বল বোধ হয়, তথন আহারের নিয়মই না ধাকিলে প্রত্যে-ক জীবের উৎপত্তির অব্যবহিত পরক্ষণেই জলবিষ্বৎ বিলয় প্রাপ্ত হইতে কি অপেকা থাকিছ? ইহার দারা এই সিদ্ধান্ত প্রতি-পল্ল হইতেছে, যে কুধা বস্তুতঃ প্রাণিদিগের পকে रेननमिन काञ्चिक करशाकादवत्र नमञ् বোধক মাজ, व्यर्थाय स नमरत्र मिर नम-দ্ধীর ক্ষতি পুরণের আৰশ্যক হয়, তৎকা-लाहे क्थात छेटमक हम, আমারদের না আহারে প্রবৃত্তি হইত, না দেহই রক। হইত**। এছলে উদ্ভিক্ত** कांडित रेनहिक क्या विषया किश्रिय क्षरकन আছে ৷ বৃক্ষাদির স্থাত্তবৎ অথচ কঠিন অফাদি একবার পূর্ণাবস্থ। প্রাপ্ত হইলে व्यानित्मर जुना क्रमभः क्रम भारेमा भूनम् जन হর নাঃ তাহারা একবার পূর্ণদশা সম্পন্ন হইলে উপদুক্ত পোষণাভাবে বৃদ্ধি পাই-তেই কান্ত্ৰা মিয়মণে হয়, কিন্তু কয় व्याल हरेया भीनकाय हय ना। रेहा वा-**डाक वटहे (य ब्रटक**त পত स्ट्रेट विटमवडः স্থ্য মুখা পুষ্প হইতে বাস্প নিঃস্ত হয়, किन्छ रम बाल्ल छाशारमञ्ज रैमहिक व्यश्न নহে, অন্তরীকস্থ এবং ভূমিগত যে জলীর ভাগ ভাহার। শোষণ করে, ভাহাই বাস্প करण छेकारु इस । व्यक्ति धानि वर्श्व ন্যায় উদ্ভিক্ত জাতির অবয়বগত পুঞ্চি-বৰ্জন কাল জ্ঞাপক স্বৰূপ ক্ষুধা বোধও নাই; ইহার দারা আর স্পাঠ প্রমাণ হইতেছে, र्य छोहाता अवश्व कन्नभीन नरह दे। भः

াৰী বন্ধতঃ উদ্বিক্ষ ঝাতির মৃত্যু নিবস আইছিই ভাষা-রুমের অবয়বামি অপচয় ঘটতে এটুক্স (

রম্ব আমারদিণের ভ্রনার রুক্ষ গুলা লতা প্রভৃতি শারীরক কর ভারণেল সুত্রাং **চদনুসারে কুছোধ সম্পন্ন হইলেও ভাছা**রা ষ্ণিকাতে নিয়ত বন্ধান হওয়াতে আহা-রের উপযোজন ছার। উচিত পুষ্টিবৰ্দ্ধনে ৰঞ্জিত থাকিত; কারণ মন্তিকাই मि अकरणात्र कामन चक्षान, এवः उपस्तुत्र রসই পুটি জনক, অথচ সেই মৃত্কা ঋত-एडएम कर्मन महाम क्थन दा नीत्रम हहे-তেছে। বর্ণ একুপ বৈষম্য অবস্থায় স্থাপিত হ**ইলে পরস্পর বি**প্যায় ঘটনা ছারা क्रमाञ्जि अरकवादत छेटक्रम इन्त्रहारे সম্ভব কছক। অনিমিত্ত যিনি নরপণ্ড র-ক্ষবল্লী প্রভৃতির এক মাত্র কাংণ, ভিনি উদ্ভিক্ষ ক্লান্ডর স্বভাব ও অবস্থানুযায়ি বর্ত্ত-মান নিয়ম করিয়াছেন, তলুবো ভাহারা व्यात्रीयाद्यात्र नायकीतकनात्र क्रम विक-য়ের নিয়মাধীন হয় নাই, এবং একবার পূ-ব্যবয়বে প্রকাশ হইলে আর ভাহারদি-গকে পৃথিতার প্রতি একান্ত নির্ভন্ন করিতে **इम्र ना** १

পরস্ক জীবাদির দেকের যে অংশ ব্যবহার ক্রমে ক্ষর পাইরা যার তাহা কি নিরর্থক ও নকে, কেলে উদর পরিতোষণ কারণ ও নকে, কেলে গেই মকল বিধাতার মকল অভিপ্রার সক্ষাদন জন্মই হয় ৷ শারীরিক বিদাবিৎ পণ্ডি-তেরদের স্বারা নিক্পিত হইরাছে, যে দেক্স্থ যে অংশ বিক্লতি অবস্থাপন্ন হইরা অক্সাণ্ড হয়, তাহা দেক্তে থাকিলে প্রাণিগন্মে প্রাণাপ্র শক্তির হানি কারক নানা প্রকার রোগের আলার হর", এই নিমিক্তে এবক্ষ্পু-কার সুনিয়ম হইনাছে, যে আপনা হই-

(म्टब्र्ड्स मर्के प्यश्य श्रिष्टियायन विष्ट्र्स যক্রপ আহারের উপযোগিতা প্রদর্শিত হইল, ভক্রপ প্রাণি মাতের প্রথমাবস্থার তাহার অঞ্চ রুদ্ধি নিমিত্তে ভোকন ব্যাপা রেব সম্পূর্ণ আবশ্যকতা দেখা যাইতেছে ৷ মনুষ্য পশু পক্ষি প্রভৃতে তরুণাবস্থায় আ-হাবের জন্য যে অত্যন্ত বাথা হয় ভাহার **धरे कांगदा विद्यायकः प्रवं अध्यावन्ता**य সাধারণ: বিয়মানুসারে: বৃক্ষাদিব**ং ভা**হা-রদের দৈহিক ক্ষয়াতপকা বৃদ্ধির ভাপ অধিক; খদি একপ জা চইয়া ভৎকা-লীন ক্ষয়ের ভাগ অধিক কিয়া উভয় স मान करें है, छटव स्त्रीव भगटक हिन्न स्त्रीवन বাল্য শরীরে থাকিতে হইত, ভাহারদের দেহ সম্পূৰ্ব হৈছিল সম্পল্ল হইত না। নিমিজে যে পর্যান্ত প্রাণি গণের আঞ্চ সমন্ত পূৰ্ণবস্থাৰ প্ৰকাশমান না হয়, ভাবৰ ভা-शांतरमंत्र अहे काग्रवर्कान मक्ति वनवर बारक, সুভরাং পুর্টি বর্দ্ধনও অধিক পরিমানে প্র-রোজনীয় হয়। অতথ্য জগৎ ভ্রম্টা পর মেশ্বর জীবের সৈশ্ব কালীন এরপ স্বভাব করির। দিয়াছেন, যে সে সময়ে ভাছারুদের इंड चिं गढ़िर ग्रामानिक रहा, चाम ध**्** শাস ব্যাপার শীঘু শীঘু নির্মাহ হইতে थाटका, धवर व्योकावचाटशका एकाटल তাহারা ভুক্ত বন্ধ আন্ত পরিপাক করিছে পারে। পরত জা জাতির শ্বকীর অবস্থ বাংশের বর্জনশক্তি পুংস্লাতির ন্যায় অংপ

তেই সেই নত শরীরাংশ সমন্ত বিবিধ ধা কারে দেহ হইতে জনবরত নিংসারিত হই তেছে*, এবং ভুক্ত সামগ্রার সার ভাগ শোণিতে পরিণত হইরা পরস্পরা করিত অক্স প্রতাকে সমশীল হইতেছে, তন্ধারা মনুধ্যাদি জীব প্রেণি সুস্থ শরীরে জীবিত গাবেয়া বিশ্বাধিপের জানুক্তাত কার্য্যে আক্রাব রাপ্ততার বিভিন্ন সক্ষম হইয়াছে।

ক বছ প্রকার বোজে শরীর মধ্যে এই প্রকার জ্ঞাল-চয় জ্ঞালাছ কি ক্রেরে ভাষ্টা কোন এয়ে জ্ঞাল প্রভালে পুনং সমাশীল চফ না; এলারেও চেলার ক্রেরেড্রিপ্রাল বা বেচকেটিছা ব্যবস্থা নরেন, মন্ত্রাগ্র বোজে উপ্যাল বা বেচকেটিছা ব্যবস্থা নরেন, মন্ত্রাগ্র ক্ষেত্র অধ্যানিক বা বুলন সম্ভব্ন জ্ঞানাপার বন্ধ সমস্ত্র কেচ হ'বলে বিশ্লিষ্টা, ভাষ্মা সে সকল ব্যাধির শালি

^{&#}x27;প্ৰদেৱ যখন ৰথ থাকে, বখন এই সমন্ত্ৰ অসমান্ত্ৰন স্থায়ীসূত পালাৰ্থ জীবের রক্ষ সঞ্চল লন্দ শক্তি বাহা ক্ষীয় স্থানে বিভিন্ত ক্ষিত্ৰ।১৮৬ হয়- কুডবাং বোগের আল্যু হইছে পাল্যে না।

[ে] শী প্ৰাৰ্থিক যান ও আয়াম উৰায় দুখা উৎকৃতি উপায় স্ট্যাছে। ন

ণ বাল্য জীব সমন্ত ক্ষণকালা হৈ বৃদ্ধির থাকিচে পারে না অর্থাৎ প্রায়সর্বাল বে কাহারা কোন ন কোন এল বিষয়ে সংগাপার থাকে হাহা হাহারলিগের বাহ্য রুপক হুইচাছে।

किन कारी नारके काशाता यथा नित्राम पूर्वा-ৰস্থা সম্পন্না হইলেও ভাহারদের অবর-वाःटनत त्रुक्ति भीतका त्मव हरा ना, व्यवस्थ পুংজাতি অপেকা ত্রী জাতির মবয়ব বর্জন শক্তি অত্যন্ত প্রবলঃ এনিমিডের পরক্ষারা-शह এই উক্তি আছে, य "आहारताहि-क्षनः खीवार।" कि क्षर धनुशायन कदिएल বিলোকিত হইবে, যে জ্রী জাতির এৰপ স্থাব হট্যার এক আশ্চন্য তাৎপর্য্য भारह। शृक्ति क्रमक थाना अरव द উপ-क्काश बादा छाहा तमद चय त्मरह द क् সাধন এবং কভি সম্পুরণ নিম্পাদন হই-য়াও কিয়দংশ উত্তর্ভ হয়, এবং ভাষা স্ত্রী জাতির প্রস্থৃতি শরির এক প্রধান করণ **ক্ট্য়াছে। এই আত্তেরক দেহা শে ভূতন** দাবয়ব বস্তু উৎপন্ন হটবার সুমুদায় অধি-ভূত পদার্থ আছে। কলতঃ ক্রাজাতি যথন মন্তরাপত্যানা হয়, তখন উক্ত অতিরিক্ত অবয়বাংশ পুঞ্জিত হইয়া সময়ে সময়ে महीत इहेटड निःगृष्ठ हयः, अनस्र व वर्षिनी হুইলে ভাছারদের সেই উম্বর্গাতি বারা ক্রমশং গর্ভস্থ জীবের কায় নির্মাণ হইতে बाटक"।

পূর্বে প্রতিপাদন করা হইরাছে, ে যে কৈশোরকালে জীব জন্ত সাতের দেহ সম্পকীর কর প্রতীকার এবং অধিক ভাগে র্ছি সাধিবার উপলক্ষে বাররার পৃতি কর বস্তুর উপযোজন আবশ্যক হেতু তাহার-দের পুনং পুনং কুধা উদ্রেকের সম্যক্তাৎ-পর্য হইরাছে, তথাপি অনেক অবিষেচক পিতা মাতার দোবে মানব সন্তামদিগের ভোজন অভ্যাচরণ বিষয়ে উক্ত তাৎপর্যোর সম্পূর্ব বিরুদ্ধ ঘটনা প্রায় অনেক স্থানে ভূত হয়। বিবেতন করা উচ্চিত যে বাল-কেরা খান্যাখান্য বিষয়ে ক্ষথবা তাহার

[©] এছলে মানব স্ত্রী আড়ির ফুলনাছ ইতর কল্র বিশেষ এই যে ইয়ারদের সন্ধান উৎপান্তর মূপ কারণ মন্ত্রপ বে অবয়র অংশের অভিরিক্ত রুদ্ধি ভাষা বৃক্তা-বিবং বাফ ভাপাশে ব গালা, বছর প্রণান্তরে প্রতি নিভার নির্ভর, অর্থাৎ নারা গার্গের স্ত্রা মর্মের নায় ইয়ার রক্ত্রলা হয় না। অভ্যন্তর ইয়ার্ডিরারের এক প্রবার উৎস্কৃতিতর উভিন্তর যাক্ত বিভারের হন্তঃ

পরিমাণ কম্পে বিচার ক্ষমতা হীনঃ তা হারা কুথা অভাবেও ভোজন দ্রব্য দেখি लाहे थाहेबात निामटङ करेबर्या हत, वतक তাহার অপ্রাপিতে ক্রন্তন করে, ইহাতে পুক্ত বাৎসল্য পরবশ হইয়া প্রত্যেক বারে আংহার প্রদান পুরেক তাহারদের দৃষ্টি **क्**रो मान्द्रना कतिएउ शिरम क्षेत्रकि निष्ठ-মের ন্য তক্ষ করা হয়, এবং তাহার প্রতি-कन यक्ष थे मकन वालक वालिकात उँ६-कहें (तांश करबा". (कह (कह कुछन) अ-কালে কালগ্রাসে পতিত হইয়া অবৈজ্ঞ পিতা মাতাকে যাবজ্জীবন শোকাকুল করে৷ এছলে জানাউচিত যে এই ফুরেই क्रश्य मिस्रष्ठात विविध नित्तरभव भरता अर्थ-মতঃ মনু বেরে শার)রিক নিয়ম ভঙ্গের প্রারম্ভ হয়। প্রভাত এ অংশে পৃশাদি কি সুখী। তাহারা যদিও আমারদের ন্যায় বৃদ্ধিদ-স্তু'র অভিযান রাধে না, কিন্তু প্রস্টার সু-খাব দ্পারীরক নিয়ম প্রাতপালনে মনু-য্যাপেকায় আপনারদিগকে শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিতে পারে। তাহারদের শরীর আমা-त्राप्त नाम वाभित्र म'नात नरह, जामात-্দের ন্যায় অকালেও প্রায় শমন ভবন গমন करत्र ना। इंटा व्यामात्रामरशत्र व्यत्न द्वाका উচিত, যে যথন যে পারনাণে দেহগত জাস वृष्टित উপযোজন। নিমিত্তে পুটি প্রয়ো-कन रस, अन्यदित मूक्तिनल करम छथन **म्हिमार्व्ह क्**षात উक्तिक हम, छा-हात्र व्यवाश कमाशि हस ना, छट्ट व्यामा-व्रत्नव श्राहरिक छोटन नर्वर भक्तन करत्वत्र हेक्टे অভিথারে দৃক্পাত না করিয়া তাঁহার সুখাকর নিরমোলজ্বন করা সাধারণ চ্ইয়া-ছে, এনিমিত্তে কখন কখন রসনার লাল-সাতে বিষুশ্ধ হইর। ক্ধানুসারে আহারে পরিত্থ না চইয়া অতি ভোজন ছারা যৎপরোনাক্তি শান্তি ভোগ করি। কিছ এতাদৃশ নিয়ম ভল কালীনও বাঁহার

ই গ্ৰায় দুটাও অনেক পাশ হয়। অঞ্জীব উল্লাম্য প্লামাল ছাত্ৰা অনেককে অপশ বহনে ছুড মুইতে নেকা হাইতেছে, হলি বা কেন কেয় ভাগতে প্লামাল, কথালি বাল্যজাল হইতে দেই সকল হাছি আছি মন্বাহাই বাবজ্ঞানিন নামবালি ইউডে দুলাগ্ৰেছ

ক্ষার পার মাই, দয়ার শেষ নাই, তিনি
কামার দিগকৈ সতর্ক কারতে ক্ষান্ত নহেমা মনুলাদির যে কালে যতোধিক ভোক্ষানের পূর্ব সমন্তর রাখিয়াছেন, অতএব সাবধান চিত্তে সেই চিরন্তন অভ্রান্ত
নিয়মের অনুবর্তী হইয়া অয় এছণ করিলে মনেতে যে এক পারতোঘ ভাব উপস্থিত
চর, এবং তল্পিরীতাচরণে বিশেষ ক্লেশানুত্র হয়, ইছার প্রতি প্রনিধান পূর্বাক
ল নিয়মানুসারে চলিলে এ অংশে পশাদি
অপেকা হীন হইতে হয়না।

इंश निन्छ इडेल एग और मंत्रीदवत्र শুটি বৰ্জন আহাবেৰ মুখ্য তাৎপৰ্যাঃ কিছ এভদ্বাহীতও জন্য কারণে ভোজন ব্যাপা-রের প্রয়োজন পিন্ধ হইতেছে। যে প্রকার পোষ্ণাভাবে দেহ ধারণ হয় না. তজপ ইহাও নিশ্য় আছে যে অন্তর্ভ উত্তাপ बाजित्तरक कीरवन कीवन तका शाप्त ना। এট উদ্ভাপ সংরক্ষণার্ধে শারীরিক অংশ निवुख्य माक्स्यान विश्वारकः; अवियदा (प-হকে প্রাণি মাত্রিক উত্তাপের ইন্ধন স্বৰূপ श्राहितक हे इस्र। अभिष्ठ अन्तराना वस्तर नार्यः শ্রীরের স্হিত্ত বাঞ্দীত ও উঞ্চার নিয়ত সৰজ্ব আছে৷ তপ্ত লৌহ দও শী-তল স্থানে ভি্ত হইলে ক্রমণঃ তাহার উত্তাপ হ্রাস হয়, এবং উষ্ণ স্থানে রক্ষিত হইলে উফতা রুদ্ধি হয়; প্রাণির দেহ ও **हर्जिक्ट बीउन बायु बाता बाव्ड हरेल** উত্তর উত্তর শীতলতা প্রাপ্ত হয়, এবং উষ্ট ৰাষুতে বেটিত থাকিলে উপতপ্ত হয়। ইহা-তে কোম কারণ কশতঃ শারীরিক নিয়মের ব্যক্তিক্রম ঘটিয়া দেহ নিকেতনে আবশ্যক মত নিয়মিত উক্তার সভাব হইলে উৎ-करें। श्रीड़ा धवर व्यविनाय व्यागातात्र दृष्टि সমুদর*** অবশ হই**য়া স্ত্যু ঘটনা হইতে भारत ।

শ দুরু বন্ধর নার তাগ রকে পরিণত বই লা অস্ প্রভাকে সুন্দাল হক্তরা, নর্মশরীকে রক্ত নঞালন, খাস নিংবাল ক্রিয়া নিজ্ঞালন, ক্রাপল বা বর্ত্তন খোগা অবর-বাদির প্রতি পোরক বরুপ তিম ভিম্ন সম্বর্ত্ত ক্রম্ভ রক্ত রক্ত ব উত্তে পৃথক কর্মা,রক্তের অন্তর্ভূত অনিষ্ট ক্রমক পরার্থ

এইৰপ বাছলীত উক্তার সহিত আৰি **(मट्टिंग मश्का शाकाएड मियातत व्यवस्थान** ক্তির প্রতি মনোযোগ হইয়া স্বভাবতঃ জা-নিতে বাসনা হয় যে জীবের দেহস্থ ভা-পাংশ রকা হইবার জনাই বা কি নিয়ম ধার্য্য কইয়াছে। শারীরিক ও রুসায়ন বিদ্যা প্ৰসাদাৎ জ্ঞা**ত হ**ওয়া যা**ইতেহে যে** यामा वस्तरे काम्रिक छेखान तकरनत धक মাত্র উপায় হইয়াছে; অর্থাৎ খাদ্য দ্রব্যের অঙ্গীভূত অঙ্গার এবং উদজান * পদাৰ্থ যথন নাসিকা গৃহীত প্ৰাণ বাষুর 🛊 সহিত মিলিত হয়, তথন পূর্বোক্ত বস্তুদ্ধ দক্ষীভূত হইয়াদেহত উত্তাপ সম্ভূত হয়, অনন্তর দেই উত্তাপ হৃদয় পিতে সংযুক্ত तङ वहा नाड़ीहः तङ श्रवाह बाद्रा मसीटक পরিব্যাপিত হইয়া প্রাণি শরারকে উত্তপ্ত রাথে, যাহাতে জীবের জীবন অননার্থা ৰূপে চিরকাল রক্ষা পাইয়া আসিজের । পরস্তু আমারদের শাস প্রশাস ক্রিয়ার মূটনা ধিক্য অনুসারে যৎপরিমাণে অক্সজেন ৰপ্ত শরীরাভ্যান্তরে নীত হয়, তৎপরিমাণে তা-হার উত্তাপ বুদ্ধি হইয়া থাকে, সুতরাং তদনুযায়ি দাহোপযুক্ত আহার রূপ সমি-ধের ও প্রয়োজন, নতুবা অনশন ছারা ব্ উপযুক্ত খাদ্যাভাবে অক্সজেন পদাৰ্থ श्रीय श्रकात तमनः क्षीतिक एमहरूकई धुःम করিতে থাকে,এবং অচিরাৎ ভগ্ন দশা প্রাপ্ত করার। দেহে গত ঔত্তাপাংশের ঈদুদ তারতমা জনিত আছারের তারতম্য হও-য়াতে যে আশ্ৰুষ্য কৌশল শক্তি প্ৰকাশ পাইতেছে তাহা **পশ্চাতে** বিদিত হইবেক। গ্রীয়কালাপেক্ষায় শীভকালে হিম প্রভাৱে

সমন্ত বিলেগ করণ,দেহ হউতে আকর্মণা দেহাংশ বাসুক মল নির্গমন,পৃথিট ভারাদেহর সমুদ্ধ হয়ের ব্যবনিষ্টিট ব্যাপার সম্পাদন ইত্যাদি সার্গারিক হর্মের সাধারণ নাম প্রাণার্গ্য বৃত্তি।

ভ ইংরাজি শব্দে ইহাকে হাইডোলেন বা হাইডোলেন বাগানবলে, ইবা জলের প্রধান উপাধান কার্থ।

† অর্থান ভাহার অংশ বিশেষের সহিত বিলিড
হয়; ইংরাজি ভাষাতে এই অংশ অক্সজেন বা অক্-সজেনগ্যান শব্দে উক্ত হয়।

ইহার হারাই প্রাণ বাযুর
আধার্যাক শার্থাই ইহাছে।

‡ Artery.

অপোকাশে অধিক বাযু সঙ্চিত হইয়া थारक, मुख्तार याम शहर कालीन छम्ध-ভূতাংশ অক্সজেন বস্তু আমরা অধিক মা-ত্রায় প্রাস করি, এই হেডু প্রীম্মকাল হইতে শাতঋতুতে অধিক ভোজন করাযায়"; এই ৰূপ অত্যন্ত শীতাৰ্ত্ত দেশে দৈহিক তা-পাংশ অধিক ভাগে বিলয় হয় বলিয়া আহার দারা তাহা রৃদ্ধি করা আবশাক, এনিমিত্তে সেথানে কুৎশক্তি আত্যন্তিক প্র-বল খাকে; এবং মাংস প্রভৃতি যে সকল খাদ্যে উত্তাপ বর্দ্ধক অঙ্গার ও উদজান বস্তর প্রচুর ভাগ আছে, তাহাই তদ্দেশস্থ জীবের: অভিরুচি পূর্বক ভোজন করে, ভূমিজ শীতল সামগ্রীতে তাহারদের তা-দৃক্সপৃহাহরন। আর যে দেশ অভ্যন্ত উঞ্চ, তরস্থ প্রাণি সমাজের উত্তাপ অতি অপ্স ভাগে বিনির্গত হয়, একারণ আহা-রের অপে সাপেক্ষতা জন্য ক্ষুধানলের মান্দা থাকে, এবং **ই**ডল বা ঘৃত বিশিষ্ট মাংস অপেক্ষায় জল বিশিষ্ট স্লিঞ্ধ ফলাদিতেই তাহারদের বিশেষ তৃপ্তি জন্মে। এন্থলে পাণির সহিত উদ্ভিক্ত জাতির অনেক বিশেষ মাছে। যজ্ঞপ শীত দ্বারা জীবদিগের শ্রীরস্থ উত্তাপ অধিক বিন্**ষ্ট** হণ্য়াতে 🗄 তাহানিয়ত পূর্বাধিবার অভিপ্রায়ে উপ-যুক্ত খাদ্য আবশ্যক, হুক্ষাদি বিষয়ে সেকপ নচে। উদ্ভিক্ত জাতির প্রাণাশ্রর সামর্থ বরং শীতকালে অবসন্ন প্রায় হয়, এবং পত পুष्ण प्रमुप्त एक रहेगा यात्र अनिमिट्ड তাহারদের সে অবস্থায় পুষ্টিতার অংপ প্রয়োজন হেডু শাখা প্রভৃতিতে রুস পরি-চালনা অধিক হয় না, কিন্তু সূর্য্যের উত্তাপ ও আলোক ছারা বসন্ত বা গ্রীম কালে পরিপূর্ণ উত্তেজিত হইলে যখন প্রাণাশ্রয় র্ত্তি সমুদয় সব্যাপার হয়, নবপ্রস্থত শ্যা-नल मल পल्लव धारून कल खारवरक व्यवनक হয়, তথন প্রচুর ভাগে পুঞ্জির আবশ্যক वित्रा दृष्क माथानिए अभर्याश कर्ष

*গ্ৰীফ কালে অগ্নিমান্দা ও শী**ত লালে ভাহার** বৃদ্ধি ইছা প্ৰায় সকলেবই বিদিত আছে। রসের সঞ্চালন কইয়া থাকে"। শীত দেশা-পেকায় উফ্দেশে তর্জতা সমূহ এই প্রস্কু জ ই সতেড হয় এবং সব্যাপার থাকে।।

ইহা সঞ্জমাণ হইল যে দেহ য**ল্লের** ক্ষয় উদ্ধার বৃদ্ধি সাধন এবং উদ্ভাপ পরি-রক্ষণনিমিত্তে ভোজন কার্যোর প্রয়োজন সিদ্ধ হইয়াছে। এইকণে ইচা অনুসন্ধান করা আবশ্যক যে কোন্ জাতীয় বস্তু ইতি (मटन्त्र श्रुक्किकार्या मन्त्रामन ककेटन भारत, এবং ইহ।ও জানা কুর্ত্তরা যে এবিষয়েই বা জগৎ কর্ত্তা কি সুকৌশল প্রকাশ বরিয়া-ছেন৷ আমারদের জ্ঞাত হওয়া উচিত যে জলবায়ু লবণ এই তিন নিজীব‡ স্বভাব বস্তুভিন্ন রক্ষ পশ্বাদি সজীব-বস্তুর্গ অংশ ব্য গ্রীত কোন পদার্থ জীবদিগের খাদ্য নতে সুতরাং পুঞ্চি করও নতেঃ এবঞ্চ প্রাণি বর্গের এমত সামর্থও নাই যে অপুন্তিকর দ্রব্য ভোজন বার। আহা পুটি জন্মাইতে পারে: ফলতঃ নিজীব সভাব তাবৎ বস্তু শারীরিক অংশে যে সমণীল হুইতে পারে না ইছায়ুক্তি मृलक वटहे, अमिनिट छ इ आमातर एत उच-ন্যান্য প্রায় সমুদয় জীবের মৃত্তিকা প্রস্তর কিয়া ধাতু জবোতে রুচি হয় না ৷

যখন প্রতাক্ষ হইতেছে যে শরীরের ক্ষয়
প্রতীকার অক্স প্রতাক্ষর প্রকাশ, প্রাণি
নাত্রিক উত্তাপ রক্ষণ শ্বাদ নিঃশাদের প্রবাদ
ইত্যাদি সমুদ্র প্রাণাশ্রয় ব্যাপার রক্তের
উপরে সন্যক্নিউর, তথন সেই সকল সামগ্রীই আহারের উপযুক্ত অর্থাৎ পুক্তি
কারক রপেগণ্য হইতে পারে, যাহা উদর্শ্ধ
ইইলে রক্তে পরিণত হয়। রসায়ন শা-

শ্বলি এমত বিবেচনা করা যায় যে পাঁতিকালে মেদিনা নিরস হয় এই নিমিত্তে বৃক্ষ কাতির সম্বন্ধ একণ হাইনা সন্তব হয়। পরক্ষ পরাক্ষা করিলে নিশ্চয় প্রস্তাহ হই-কেবে যে একপ ক্ষান্ধান সমূলক নহে। প্রশ্বর গ্রীক্ষ কালে যে সকল বৃক্ষ লতা নহমু গুরিত হয়। শীতকালে বৃষ্টি বারা বা মূলে বার্লি গোচন করিলেও হাচারদের উদ্ভিম শক্তি কদাপি সতেক হাইনা, পর প্রশ্বর প্রশ্বর না, কিল্ব সম্প্রত্যাহলালে আগকে বারি বর্ষধ কিয়া উপযুক্ত রূপে মূলেতে হল সেন্দ্র না হই-লেও ইম্বারের নিয়হ মত ভারাদে প্রস্কৃত্যিত ছয়।

া ইংলও দেশাপেকা ভারতভূমি দাতিশয় উর্মর। ইতা প্রভাকত আছে

[#] Inorganic.

[¶] Organic.

ত্রের অনুযায়ি পরীক্ষা ভারা সুনিক্য হই-नार्ष्ठ य जीरवद प्रकट्ट य जश्रम চলংশক্তি অর্থাৎ প্রোণাশ্রর সামর্থ আছে অথবা যে অবয়ব সম্পূৰ্ণ-অবস্থাপন্ন হইয়াছে जाहार जरे नारेर<u>हो। उ</u>क्तन भागर्थ * (परहत অন্যান্য অধিভূত দ্রব্যাপেক্ষায় অধিক-ভাগে পাওয়া যায়: এবং ইছাও প্রভাক হ-ইয়াছে যে রক্তেতেও উক্ত বস্তুর সন্ত্রাআছে। ইহার দ্বারা এই উপপত্তি হইতেছে যে সেই সকল সামগ্রীই পুটিকর খাদ্যরূপে গ্রাহ্য হইতে পারে যাহাতে বিশেষ মতে নাই-টোজেন পদার্থ সংপ্রাপ্ত হয় : যেহেত্ নাইট্রোকেন বস্তুই শারীরিক অঞ্প্রত্যকের প্রধান পুষ্ঠি কারক হইয়াছে। ইহা ব্যতীত খাদ্য সামগ্রতি তাহার অন্য সকল অন্তর্ঞ পদার্থের সহিত অঞ্চার ও উদজান বস্তু দুয় প্রবিষ্ট আছে, তাহা খাদ্যবস্থুর সহিত উ-দরস্থ হইয়া রুধিরের অঙ্গীভূত হয়; এবং শাস প্রশাস গৃহীত অক্সজেন বাস্প সহ-যোগে দেহের উন্থাপ রক্ষাকরে। পরস্ক প্রত্যক্ষ হইতেছে যে প্রাণি গণের যাব-দীয় খাদ্য ছ্বন্ধ ভূমিজবস্থ মাংস এই ত্রিবিধ দ্রবোর অন্তর্গত । এইক্ষণে দৃষ্টি কর যে বিশ বিধাতা উক্ত ভিন দ্রব্যকে সামান্যতঃ জীৰদিগের খাদ্যৰূপে নিৰ্দ্ধারণ করিয়া কি সুবিজ্ঞতা পূর্বক তাহারদের রসেক্সিয়ের সহিত সুখসম্বন্ধ নিবন্ধ করিয়াছেন ! প্রত্যেক গ্রাসে ভৃত্তিরসে জঠরাগ্নি ক্লিগ্ন *ছই*তে থ}কে, তখন কি বোধহয় ০ তথন এইমাত্র প্রবোধ সহযোগে চিত্ত ফুরিত হউতে থাকে, যে জননী যেৰূপ স্থীয় সন্তা-নের বদনে তাহার সে অবস্থার জীব-নানক কারণ স্তন্য প্রদান পূর্বক তাহাকে প্রতিপালন করেন, তক্রপ থাঁহার নিকটে আবাল রুদ্ধ সকলেই আহার বিষয়ে, সদ্যঃ-প্রস্তুত বালকবৎ, এবং যিনি মাতার

মাতাও পিতার পিতা হইরাছেন,ভিনি স্বীয় স্নেহ স্থকণ জন্য বিধান দ্বারা অসংখ্য প্রাণি সমাজের রুদেন্দ্রিরকে সন্তুপ্ত করিয়া তাহারদের জঠরানলকে নিয়ত শীতল রাখিতেছেন ৷ তিনি রুদনার সহিত খাদ্য বস্তুর সুখসমন্ত্রনা করিতেও পারিতেন, কিন্তু তাহার প্রকৃত অভিপ্রায় স্থী জীববর্গের বিধিমত প্রকারে সুখ বর্দ্ধন করা অতথব এম্বলে ও তিনি আপনার অন্থিতীয় উদার উপচিকীয়া স্থভাব প্রকাশ করিতে ক্ষান্ত হুগ্রেননাই।

ইহার শেষ আনগামীতে প্রকাশিত চইতেক

-00 # E 00-

বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রক্রতির সম্বন্ধ বিচার

প্রাকৃতিক নিয়ম লঙ্কন করিলে মনুষ্টের কত ছঃখ হয় ভাতার বিবরণ ৷

৭৭ সংখ্যক পত্রিকার ১৪৩ পৃঙ্কের পর :
শারীরিক নিয়ম লঞ্জনের কল ৷

আরা শরীর মাত্র বিষয়ক নিয়ম লক্সন করাতে ভূমগুল যে প্রকার ছঃগছ ছঃখা-নলে দক্ষ হইতেছে, পূর্বের ভাহার সংক্ষেপ বিবরণ করা গিয়াছে ৷ এক্ষণে ভদনুরূপ অন্য প্রকার ছঃখ রাশির কারণ অনুসন্ধান করিতে প্রবৃত্ত হওয়া যাইতেছে ৷

বিশ্ব-নিমন্তার নিয়ম লজন বশতঃ পরম সুখোদেশ্য উঘাহ-ক্রিয়াও অশেঘ যাতনার মূল হইরাছে ৷ পরস্পার বিরুদ্ধ-শ্বভাব, অসম-বুজি ও বিপরীত-মতাবলম্মি স্ত্রীপুরুবের পাণিএইল হইলে উডরকেই যাব-জ্রীবন বিষম যন্ত্রণা ভোগ করিতে হয় ৷ মানসিক ভাব ও বুজি চালনা বিষয়ে কিঞিৎ বৈলক্ষণ্য থাকাতে কড কড দল্পতী মহা অসুখে কাল যাপন করিয়া থাকেন; ভাঁচারা আপনারাই আপনারদের অপ্রণরের কারণ বুবিতে পারেন না। কলতঃ উভরের মানসিক বৈলক্ষণ্যই অনৈক্য ঘটনার এক মাত্র কারণ ৷ যদিও প্রথম

শ্যবক্ষারের অর্থাৎ সোরার বাহবীয় অবস্থা বিশিষ্ট আদি কারণ বিশেষ। রসায়ন শান্তের পরীক্ষা ভারা বি-দিত চইয়াছে যে রকের শন্ত কাগের ১৭ চাগ নাই-টোনের, এবং আণিদিধের এমত কোন অক প্রতাল না পাওয়া বাহন।

উলামে ভাঁহারদের প্রণয় সঞ্চার হইলেও হইতে পারে, কিন্তু ভাহা অধিককাল স্থায়ী হয় না ৷ পরম সুন্দরী ভশ্লচার কুসুম সদৃশ মনোহর লাবণাও অবিলমে অভি মলিন বোধ হয়, এবং পুর্বেষ যে অপ্রণয় রূপ অগ্নি কণা নোহরপ নিবিড় আবরণে আছের ছিল, ভাহাও ক্রমে ক্রমে প্রজ্ঞালিত হইতে থাকে ৷

যদি স্বামী অভিশয় মিখ্যাবাদী, প্রতা-রক ও বিশ্বাস-ঘাতক হয়, আর স্ত্রী যদি ममाजातिनी, मजावानिनी, ও অভিশয় धर्म-ভীতাহন, তবে নিজ পতিকে পুনং পুনং অধর্মাচরণে প্রবৃত্ত হইতে দেখিয়া তিনি সর্ব্বদাই ক্লেশানুভব ও গ্লানি প্রকাশ করেন। रम ऋल साभी गम्छा लास्ड मसुके थाकिया কোন জ্রমে সংশার-যাত্রা নির্বাহ করিছে পারিলেই আপনাকে সুখি ও চরিতার্থ বোধ করেন, আরে ভাঁছার চির সহচরী ভোগাভিলাথিনী পত্নী পরম শোভাকর বেশ ভূষ: ও বৈধয়িক আড়মর প্রকাশার্থেই সতত ব্যাফুলা থাকে, সে স্থলে যেৰূপ অসুখের সম্ভাবনা, তাহা অনেকানেক স্থা-মীই প্রতাক্ষ অনুভব করিয়া থাকেন। কল-তঃ বিদ্যাবান্, উদার স্বস্ভাব, মহাশর शुक्ररवत महिङ कान विम्याशीना, कलश প্রিয়া, ক্রোশয়া রমণীর পাণিএছণ হওয়া অশেষ ক্লেশের বিষয়। ইহার উদাহরণ সংগ্রহার্থে আর অধিক দর্শনের প্রয়োজন नाहे; अरम्भीय घरनक विमाधि वाजिहे अविषरमञ्जू विभिक्ते **कुश मृकी स दल।** विम्रा-বান পতি মানব জলের সার্থক্য-সাধক জ্ঞান রদের রসিক হইয়া তদ্বিধের প্রস-**ক্ষেই পরম পরিভো**ষ প্রাপ্ত হয়েন, ইচাডে মূৰ্য জীয় সহৰালে কোন জনমেই তাঁহায় মনস্তুটি কক্ষেনা, এবং স্ত্রীও পতির ভিন্ন মতি দেখিয়া কখনই সন্তোষ প্রকাশ করেন न। वानी ए नक्ल दिवस भलीक ७ घ-পকারি বলিয়া জানেন, ভাঁছার কুসংস্কা-রাবিষ্টা পদ্মী তাহাই অবশ্যক্ষর্ত্বর রূপে অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন**় ধর্ম বিষ**য়ে উভ য়ের অতিশয় অনৈক্য ৰশভঃ একের অতি **অভে**র পরম পুরুবীর পদার্থও অন্যের

উপেক্ষাও অনাদরের আস্পদ ইইরাউঠে।
একণে এদেশীয় বিদ্যাবান্ মুবক মগুলীর
মধ্যে এইরূপ শত শত ঘটনা ঘটিতেছে,
এবং তাহা অনেকেরই মনস্তাপ ও ফুস্পুরতিরও কারণ হইয়াছে।

এইৰপে সৰু বিষয়ে একীভুত হওয়া যাহারদের পণ, কোন বিষ্ধেই তাহার-म्बर्ग क्षेत्र थात्क ना!—ङाङाइत्मत अस्तःक-রণ পরস্পর যত অন্তর,ভূতল হইতে অন্তরি-ক্ষও তত অন্তর নহে! কোন অপরিচিত বা-ক্তির—কোন অজ্ঞাত-কুল-শীল মনুযোর— कान विरम्भीस ल्यारकत्य मध्छ रा मक्न विवास करवालकश्च कृता गाय, शाहात अ ৰ্দ্ধাঙ্গ সৰূপ—একাত্ম স্বৰূপ হওয়া উচিত, তাহার নিকটে সে সকল কথার প্রসঙ্গও করিবার সম্ভাবনা নাই! কি আক্ষেপের বিষয়! যৎ সামান্য সাংসারিক কথা এবং কোন ইতর সুখের প্রদক্ত ব্যক্তিরেকে তৎ সন্মিধানে আর কোন বিষয়েরই উপাপন করিবার উপায় নাই! বিদ্যার অসক. धर्मात एथार्थ छञ्ज, সংসারের সুখ-জনক কোন মৃতন প্রথা সংস্থাপন ইত্যাদি হৃদয় ভাগুারের অমূল্য রত্ন সকল তাহার নিকটে প্রকাশ করা যায় না। ইছাতে এমন যে সুল-ভ-সুব সংসার ধাম, তাহাও বিবাদ ৰূপ विषम विष-पूर्विक इटेग्रा मक्तमार प्रःथ कर माक्रन রোবের উৎপত্তি করে।

এ সকল কারণে স্ত্রী লোকের বিদ্যা শিক্ষা যে কি পর্যান্ত আবশ্যক,তাহা বাক্যের বচনীয় নহে; তৎ পক্ষে যে শক্ত শক্ত যুক্তি আছে, তন্মধ্যে ইচাও এক্ষুজ্ব ওনীয় মৃক্তি স্বীকার করিতে হইবে।

অন্তথ্য থবিষয়ে পিতা মাতার উপর কি গুরুতর ভার সমর্পিত রহিয়াছে, তাহা সকলেরই বিবেচনা করা কর্ত্তবা। বাহারা কন্যাও পাত্রের শৃভাশুভ চরিত্র বিবেচনানা করিয়া সন্তানের বিবাহ দেন, তাঁহারা পদে পদে পরমেখরের নিয়ম লঙ্গন করি-তেছেন, তদ্ধারা সংসার রূপ অপার সাগ-রের হুংখ প্রবাহ প্রবল করিতেছেন, এবং আপনারাও সন্তানের হুংখে হুংখি হুইয়া সে অপরাধের প্রতিকল স্কুপ অশেষ যাতনা ভাগ করিতেছেন! তাঁহারা পুত্র ক্ন্যার সধক্ষ নির্থ কালে প্রাপ্তেব আব্দোলন করেন, কোঁলীনা মর্যাদার ক্ষার উপায় চিন্তা করেন, আর আর সকল বিষয়েরই বিবে চনা করেন, কেবল যালা পিতা মাতার নিতাপ্ত করিব। তাঁহারা ইহা জ্ঞাত নতেন, যে পুত্র ও কন্যা উভয়েকই শিক্ষা দেওয়া, ও ভাহাদের যেরপ সভাব ভত্পযুক্ত কন্যা ও পাতের সহিত বিবাহ দেওয়া পিতা মাতার অবশ্য-পরিশোধ্য ঝণ স্কর্লণ; তাহা নিত্রশৈষ্য কার্বিলে পরিশোধ না করিলে পরম ন্যায়বান পর্যেশ্বর স্মীপে সাপরাধ থাকিতে হয়।

সবিশেষ অনুসন্ধান ছারা এবং শির্থ-সামুদ্রিক* পণ্ডিতদিগের মত্তানুদারে মন্ত-কের ভাগ বিশেষের পরিমাণ ছারা লোকের মুভামুভ চারত্র অবগত হওয়া যা-ইতে পারে ।

এপ্রস্তাবের মধ্যে স্থানেশ সম্পর্কীর কোন বিষয় কেবল উদাহরণ স্কর্পে ও প্র-সঞ্চ ক্রমে অবহীন করিছে হয়, অতথব আরু বাজলা করা করিন নহে ৷ কলতঃ কাহার নিকটে কাদন করি ৷ কেবা আমা রদের আর্জনাদ শ্রবণ করে ৷ টেডনা শূন্য বৃক্ষ বা নিজীব পর্যাত সমিধানে রোদন ক্রিলে কি হইবে ৷ জন্মান্তের নিকটে প্রম মনোহর চিত্র-কলক উপস্থিত করিলে কি কলোদের চেত্র-কলক উপস্থিত করিলে কি কলোদের চহুবে ৷ কত কালে আমান্রদের দেশস্থ লোক এসকল বিষ্যের ষ্পার্থ ভত্তু শিক্ষা করিতে সমর্থ হইবেন!

হাবৈধ পানি গ্রহণের কল কেবল দম্পতীর ছুংগ ভোগ মাত্রে পর্য্যাপ্ত কর না, সন্তানের মঞ্চলামঞ্চল ভদ্ধুপরি বিহুর নির্ভর করে । প্রস্কাহ ভদ্ধুবরের বিবরণ করা বাইবেক।

মহাভারতীয়স্কোকাঃ

न कथा वलवीर्यग्राच्याः **क्यस्य विक्रिशे**सवः १ २०१ जलान्मः **ब्राच्याः यटमंटेनटकन** छान्य ॥

* Phrenologist.

দেহিনোহিশ্মন্ যথা দেহে কৌমারংযৌবন**ঞ্র**া তথা দেহান্তরপ্রাপ্তিধী রস্তত্ত ন মুছ্তি।। বাসাংসি জীৰ্ম্মনি যথা বিহায নব্যনি গৃহ্লাতি নরো ২পরাণি ৷ তথা শ্রারাণি বিহায জীবান্যন্যানি সংযাতি ন্বানি দেছী 🛭 জাতভাচি ধ্ৰেম্বুধিবং জন্ম্ভভাচ। তক্ষাদপরিহার্যোহর্ষেন স্বং শোচিত্রহৃসি॥ ছঃবেধ্নুভিগ্নমনাঃ সুবেধু বিগতস্পৃহঃ । বাতরাগভগকোবঃ স্থিতধীর্মানক্চাতে ৷৷ यः मक्तानिक्तिम्छ छ ९ द्यां भा सं जासकः । নাভিনন্দতি ন দেটি তম্ম প্রজা প্রতিষ্ঠিতা।। यम। मः इद्वटक हासः कृत्याकानीय मर्यामः। ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেড্যস্ত্রস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত। 11 ক্রোধান্তবতি সম্মোহঃ সম্মোহীৎ গ্রতিবিভ্রমঃ৷ স্মৃতিভ্ৰংশাৎ বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনাশাৎ প্ৰধৃশ্যতি। ताशरवर्षश्रेकण विषयानिक्तिरेण्यत्न् ! আত্মবশৈ।বিধেষাত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি।। প্রসাদে সঠাত্বংখানাং হানিরস্যোপজারতে! প্রসন্নচেত্রসাহ্যাশু বুদ্ধিঃ পর্য্যবতিষ্ঠতে 🛚 । নাত্তি বুদ্ধিরযুক্তসা ন চাযুক্তস্যভাবনা। ন চাভাব্যতং ৰাশিরশান্ত্রমা কুতঃ সুধং ৷৷ हेक्क्मिशशः कि हतः ः य**णात्माञ्जूविधीयत्छ।** তদস্য হরতি প্রজ্ঞাং বাযুনীব্যিবান্তসি 🛚 🗎 বিহায কামান্ যঃ সর্বান্ পুমাংশ্রুতি নিজ্প হঃ নির্মানের হলারং সশাস্তিমবিগছতি :। ন কর্মণামনারম্ভান্তৈক্ষ্মাং পুরুষোহ্ শ্বুতে ৷ ন চ সন্ন্যসনাদেব সিদ্ধিং সমধিগভৃতি।। कर्त्यास्त्रियाणि मश्यमा यष्पारस मनमा प्यवन् । ইন্দ্রিয়ার্থান্ বিমূঢ়াত্মা মিধ্যাচার: সউচ্যতে !! কাম এবক্রোথ এবর জোগুণ সমৃদ্ধবং ৷ महाभटनामहालाला विटकानमिह देवतिनः॥ ধূমেনাবিধতে বৃহ্লিখবা দর্শোমলেন চ। यरशास्त्रमाद्ररजागर्डखथा रज्यनमाद्रुकः ॥ इक्तियानि मत्नावृश्चिवनाभिकानमृहारक। এতৈ**বিমো**হ্যত্যেৰজ্ঞানমার্ত্য দেহিনং ॥ ই**ন্দ্রিয়াণি পরা**ণ্যান্ডরি**ন্দ্রি**যেভ্যঃ পরং মনঃ। মনসন্ত পরা বুজির্যোবুজেং পরতন্ত্রসং ৷৷

১৪ কালুৰ সমূহ ১৯০৬। ফলিগডাৰাঃ ৪৯৫০



অংশবা অংগু:দায়স্থুর্কেদ: দামবেদোগ্ধনে দে: শিক্ষা কপ্পোধ্যাক্ষরণ নির্ভণ ছলোছো।ভিযুমিডি অংশ প্রাখ্যা ভদক্রমধিগমাতে ॥

মহাভারত

আদিপর্বা

সপ্তদশ অধ্যায়—আন্তীকপ**র্বা** ৭৭ সংখ্যক পঞ্জিকার ২৩৯ পৃষ্টের পর।

উপ্রশ্রাঃ কহিলেন, হে তপোধন !
১মত সময়ে কদ্রুও বিনতা ছুই ভগিনী অব-লোকন করিলেন উচ্চৈংশ্রাঃ অস্থ তাঁহা-দের সমীপ দেশদিয়া গনন করিতেছে দেব-গ্রুইউচিত্তে তাহার সাতিশয় সমাদর করিতেছেন ৷ সেই সর্বোপ্তম স্বর্গক্ষণ সম্পন্ধ, শ্রীমান্, অজ্ব, অমোঘবল, দিব্য অস্বস্তু অমৃত মন্থন কালে উৎপন্ন হয় !

শৌনক কহিলেন, হে স্তনন্দন! তুমি কহিলে সেই পরম সুন্দর মহাবীর্যা অংখ-রাজ অমৃত মন্থন কালে উৎপন্ন হয় অতএব জিজ্ঞাসা করিতেছি বল, দেবতারা কি নিমিন্তে ও কোন্স্থানে অমৃত মন্থন করি-য়াছিলেন।

উগ্রন্থবার কহিলেন, সুমের নামে এক পরমসুন্দর ভূপর আছে ৷ তাহার অর্থমর উল্পুল শৃক্ষসমূহের জ্যোতিঃ প্রভাবে প্র-দীপ্ত ভূর্য্যের প্রভা মলিন হয় ৷ ঐ কনকা-লছ্ড অপ্রমের বিচিত্র গিরি দেবগণ ও গল্পুর গণের আবাস ভূমি ৷ অর্থপ্র পরা-রণ লোকেরা তাহার জিনীমার বাইতে পারে না । অতিত্থিত হিংস্ত ক্ষ্মণ ভত্ন-পরি জির্ম্বর পরিজ্ঞাণ করে । রক্ষীতে নানাবিধ দিবা ওবধি * দারা আলোকময় হয় ৷ উচতা ধারা স্থালোক অবের্থন করিয়া অবিভূত আছে ৷ বছলতর তরজিণী ও তরুমগুলা ঐ গিরিবরের শোভা সম্পাদন করিতেছে ৷ অশেষবিধা মনোহর বিহস্তমগণ চারিদিকে অনবরত কোলাহল করিতেছে ৷ ঐ স্থানির সামানা লোক দিগের মনেরও অগমা ৷ তপোনিয়ন সম্পর্ম মভাবল দেবগণ সেই স্থায় শৈলের শৃত্তম্পারত ও আসীন হইয়া অমত লাভ বিষয়ক মন্ত্রণ আরু ভ করিলেন ৷

এই রূপে দেবতাদিগকে মন্ত্র চিন্তুনে
সাতিশয় ব্যাসক্ত দেখিয়া নারায়ণ একাকে
সয়োধিয়া কহিলেন, দেখ দেবতারা ও
অসুরগণ একনতা অবলমন করিয়া সমুদ্র
মত্তন আরম্ভ করুন, মত্থন করিতে করিছে
সমুদ্র গত হইতে অমৃত উৎপন্ন চইবেক !
অনন্তর দেবতাদিগকে কহিলেন, হে
দেবগণ! তোমরা সক্ষ প্রকার ওয়ধি ও
সক্ষপ্রকার রত্ন পাইয়াও উদ্ধি মন্তনে বির্ভ
হইবে না, ভাষা চইলে তোমার্দিগের
অমৃত লাভ হইবেক !

अछोमन वधात।

উগ্রপ্রাণ কহিলেন দেবতারা অমৃত মন্থনের আদেশ পাইয়া মন্দর গিরিকে

*तका विदयम, इसनीएक छाषाह, दीनि **असान ना**म ।

श्रद्धानमञ्जल, त्रेरात्र निक्य क्रिंदरन्य। किन्द সেই উত্তৰ শৃক্ষসমূহ সু:েণাভিত, বছল न्छ। काल नकार्न, यहार्य विद्रश मध्य क्षाल (इन महत्त, बक्तवाल कृत ममाकृत, জ্জাঃ কিন্তু জ্মার্গণ দেখিত, একাদশ সহস্র ঘোদ্ধন উল্লক্ত, ও তৎপরিমানে স্কুগর্ডে অবস্থিত গিরি রাজের উদ্ধরণে অসমর্থ रुरेशा फीराता उक्ता उनाताग्रागत निराते ष्यानिश्रा विनय वहत्त्व निद्वतन कांब्रद्रकन আপনার। আমার্দিগের হিতার্থে কোন मञ्जूषात निर्द्धातन ७ मन्द्रात ऐक्द्रतर एउ क्क्न।

ष्यधास्य चक्त नोतास्य अ ব্ৰহ্মা ভাঁহারদিগের প্রার্থনায় সম্মত হইয়াভূজগ द्वाक व्यवदानवाक जनात्त्रः खद्रान्त्र भारतन व्यक्तानं क्रियान । सहाबन महावीया অবস্তুৰের ভাঁহারদিখের বিদেশানুটারে সমস্তৰম ও বনচরগণ সহিত সেই প্রিত ब्रांद्रक्ष्य केश्वत्र क.वटनम । जनमञ्ज *त्रे*य-शन अनुष्ठत्य मगोख्याहारत अन्यशिक्ष উপস্থিত হইলেন এবং অৰ্ব্যক সংবাৰিছ্ন। ক্হিলেন আনর। অমৃত লাভাবে তোনরে क्रममञ्चक त्रव । मयतं कं इटलन मन्त्र প্রিভ্রমণ ছার। আমাকে বিত্তর ক্লেশ मञ् कृतिक इट्रेट्टक खुड्ड आ।मङ राम ल रख्त थाःम क्यांत्रा बहे। व्यनचत समूनाय प्रवट। १ अमूत मधनो कूर्यतारजत মলর পিরির অধিকানার্যে আপন পৃষ্ঠ পাতিয়াদিলেন ৷ বেৰব্লাজ তৎপুটে স্বাধ-किंट रेनलबाबरक यश्च महकारत हालिङ काव्रामन ।

এইৰণে সময়গণ মন্তরকে মন্থান **৮৩ ও বাসুকিকে মন্থন রক্ষু করিয়া অমৃত** লাভাভিলাবে জলনিধি সমুদ্রের মত্ন আরম্ভ कितितन । महायण मानवागुत्रतम ब्रज्जू क्रांनीस नाशद्रारकद्र म्थरनम उ प्रवंशन काहात श्रृह्दमम थात्रव कतितन । ७॥- । दान् अनद्भरत बाद्रायर्थंद अभद्र मृद्धि **पहे निभिन्न जिल्ल की हाज क्**र्यापह विदयन र्वे प्रदेश क्षित्र विस्तान स्वादा मध्

नार्द्य नाभराज वासू करक बण इंबक बाक-ষণ করাতে তাঁগার মুধ হইতে বার্যার ধূৰ ও অনি শিখা সহিত অতি প্ৰাভূত খাস-ব্যু নিংস্ত হইতে লাগিল৷ ঐ সমস্ত শাসৰায়ু সনবেত হইয়া বিছ্যুৎ সহিত মেঘ मगृहकारण পরিণত हहेल; এবং आहा उ मध्य प्रवासन्तर्भागत छेशत वात्रिवर्षन করিতে অংরম্ভ করেল। অ'র সেই গৈলের শিধর দেশ হইতে সমন্তঃ পুষ্প বৃটি इहेट्ड ला जिल् ।

ध्रहेडरल सम्बद्ध गिति होता सूरासूत्राव कर्क्क मधायान सम् छत स्वयत्तानुकाती মহান্শক হইতে লাগিল। নানাবিৰ শভ শত কলচাগণ মন্দর গিরির মর্দানে निष्मिके हहेश भक्ष वाक्ष हहेता भाजा-লচল বাসি অন্যানা বছবিধ ফলীয় প্রাণিগণ মন্দ্রাঘাতে প্রাণভাগি করিল 📗 গিরিরাজ অনবর্চ এমোনাণ হওয়াতে তদায় অগ্রভাগাত্ত অতি প্রকাণ্ড মহীকুহ সকল পরস্পাব সংস্থি হইয়া প্তগগণ সহিত নিপণিত হইতে লাগিল৷ যেমন नौलदर्भ खल । इ.सामासिनी सञ्जनहात्रा प्रसा-রত হয় তদ্রুপ সেই সমস্ত ভূরুছের পরস্পর সংঘর্ণ সমৃদ্ভূত অতি প্রভূত ভতা-শरनद्र शिथात्रमृह खादा समाद्र्य हहेल 1 चे एठामन करनाः थवल इहेब्रा खत्रगा विनि-র্গত কুঞ্জর ও কেণরি সকল দল্পকরিল। নিকট প্রার্থনা করিলেন, তুমি এই গিরির । জ্বাতাও অনাান্য নানা বনচর ঐ হতাশনের অধিষ্ঠান হয়। কুমারাজ তথাস্ত্র বলিয়া বিত্ত হইল। হ্তাশন এইবংশে ইতত্তঃ क्षाठी व अनामा नाना रमहत्र के स्कामारमत দাহ আরম্ভ করাতে দেবরাজ ইন্দ্র মেঘ্ ষভুত বলিল সেক শ্বারাতা হার শাস্ত্রি সম্পাদ मन कद्रितान ।

তদনত্তর মহাজ্ঞম গণের নির্মাস ও चर्भव दिव अवविद्रम माभद्र मलिटन शनिया পড়িতে লাগিল৷ সেই সমস্ত অমৃতগুণ সম্পদ্ধ রসের ও কাঞ্চন নিজ্রবের প্রভাবে मूब्राण व्यवदा थाथ हरेलात। व्यन्ताहर, উক্তবিধ রস, কাঞ্চন নিত্রব ও অন্যান্য বছবিধ উৎকৃট রুসে মিশ্রিক হইয়া ক্ষীর-क्रा प्रतिगठ हरेला (जरे की इ. हरेएड **घृ**ड উৎপन्न **रहेता**.

भ्नडङ् रहरूप्रहाः शबागतन् भागीन

বরদ জন্ধার নিক্ট আাসিরা নিবেশন করিলেন, ভগবান্! দেব গিদেব নারারণ
বাতিরেকে আমরাসমুদার দেব গানব একাছ
আছ করাগিরাছে এখন পর্যন্তেও অমৃত
উন্তুত হর নাই! তথন ক্রন্ধা নারারণকে কহিলেন ভূমি ইহারদিগের বলাবান
কর; তোমা ভিন্ন এবিধনে মার গতি নাই!
নারারণ কহিলেন যাহারা এই ব্যাপাতে
ব্যাসক্ত আছ ভাহারদিগের সকলকেই
আমি বল্পান্ন করিতেছি; সকলে মিলিড
হইয়া মন্দার পরিভ্রমণ দ্বারা সাতিকে আলোড্ত কর!

সমুদার দেব দানব নার'রণের বচন হারণ মাত্র বলপ্রাপ্ত এক বাক। হইয়া পুনর্কার অতি প্রবল রূপে জলবি মত্ত্র আরম্ভ করিলেন৷ তদনন্তর মগ্যান অ-স্তোনিধির গর্ভ হইতে সতসহত্র শীতল মণ্থ সম্পন্ন সে,মাও প্রদন্ন নৃতি চন্দ্র উৎ-পল্ল হইলেন। শেতসরোজ সনাসীনা मक्ती, मूडा-रमवी ७ रत्रव्यवं व्ययंद्रष्ट्र. ५८८३ **ख्रा**वः घट हरेट चात्र पूरु व्हेरलन । ७९-পরে কোন্তভ নামা এমান্মহোজ্ঞল দিবা মণি ঘৃত হইতে সমৃত্ত হইয়া নারায়ণের बक्तः इत्त लश्यान क्रेस । लक्को, भूता, मन ধর ও মনোজব অধরাজ আদিত্য পথানু **লারী হইরা দেবতা পকে গমন করি**-অনন্তর ফুর্ডিমান্ ধলভারদেব अगृष्ठ পूर्व त्वक कमधलू रत्य कतिया यादि-🛫 ভ হটলেন। এই পরমায়তুত ব্যাপার च्यताक्त क्रिय़ गानद प्रग परे चम्छ **স্থামার স্থামার" বলিরা কেলোহন ক**রিতে লাগিল ৷ ওদনপুর ধবল বর্ণীদশন চতুকীর मन्त्रम, महाकान्न, जैदादक नामा महान् याज्य छैरभन्न स्टेम बक्तरात्री प्रवंताम जे नकत्राक अधिकात क्रिट्रिंग ।

দেবাসুর গণ এখনও কান্ত না চইয়া নাতিশর নত্ত্বন করাতে কালকৃট উৎ-পদ্ম চইয়া, ধুমবছল অভানত ভানলের ন্যায় সহসা জগন্ধ ওল আকুল করিলা। ঐপাতি বিষ্ম বিষের পদ্ধ আজাপ করিয়াকৈলোক্য বিচেতন ও মৃক্তি হইল। ক্রানাতন শনি সাতিশয় শক্তি হইটা অনুরোধ কৰ তে ভগৰান মন্ত্রসূত্ত মহেশার লোক রক্ষার্থে তৎকাশাৎ ভাষা গানকরয়া কঠ নেশে ধরণ কলিলেন ৷ তগৰাণ ভিনি নীলকঠনামে তিলোকে বিধা ত হইলেন ৷

দানবরা এই অন্ত ত চানা দলনৈ নিতাত নিরাশ চইয়৷ অমৃত ও জনী লাভাবে ছোরতর বিরোধ উপাত্মত করিল। তথন নারা এ মোহিনা নায়৷ অবলার ক্রিয়া জীবুপ পরি এক পুরুষ্ক দানব দলের নিকট উপাত্মত হইলেন! মুচমাত দৈতা দানবগৰ তাহার পর্মান্ত ও তলাহাচ্ত হইরা ভাহাকে অবলোকনে মোহিত ও তলাহাচ্ত হইরা ভাহাকে অমৃত প্রধান করিল।

ঊনবিংশতি অংগায়।

खेड खेराः करिस्तान कमनमत अञ्चलक है चानानन क्षेत्रम्का भवलप्रम १४६० न.मा-বিধ অন্ত্ৰ মন্ত্ৰে হতে লইয়া দেবতা-षिशदक आक्रमा कविला। महावारी छावान् विकृ नत्रत्व नमांचग्राहाद्व मान्दवस्य-দিনের নিকট হইতে অমৃত হরণ করিলেন। व्यवस्त (प्रवर्गन विकृत निक्छे प्रहेर्ड व्य-मृष्ठ व्याथ इहेग्रा ऋ है हिंद इ श नः क.व्रट ৰংসলেন ৷ দেংভারা ঋষ্ঃপান খার্ড করিলে রাজ্যামে এক ধূর্ক দানব স্বৰসর दुसिया एक क्षेत्र भित्र अस् भूक के अस-ভিবাহারে অনৃত পান করিল। অনৃত দান-(क्त कर्क (नम माख शमन कित्या**टक** थमञ मनदम हत्व ७ स्वा (म्बर्जानरभव हि-তার্থে ঐ গুড় ব্যাপার ব্যক্ত করিয়া দি-लामा अवस्थाम् हळ्यानि मुक्तम् व हरू दाता मानद्वत्र मिन्नटम्हन्न क्तिटलन।

রাহ্ব শৈলন্ত কম, চফছিয়, প্রকাণ্ড মতক হৎকণাথ নডোমণ্ডলে আরোহণ করিয়া অভিজয়কর শব্দ করিতে লাগিল ৷ ভাহার করক্ষ সবন, নপর্যত, সম্বীপ, মহীমণ্ডল কম্পিত করিয়া ভূতলে পাছিত হইল ৷ ভাহবিধি চল্ল ও স্থের্যার সহিত রুপছা-মুহার চিরন্তন বৈর নির্মান্ত হইল ৷ এই নিমন্তেই ঐ মুখ অন্যাপি তীক্ষ্যেকিগতে কর্মে মান্ত্রান করিয়ালগতেক। প্রাধান নারায়ণ নিরুপম নারীকপ পরিহার করিয়। নানাবিধ আর্থ ধারণ পূর্বক দানব দল অক্রমণ করিলেন 1

ভদনস্থর লবণার্নতীরে দেব ধানের ঘারতর সংগ্রাম আরম্ভ হইল। সহস্র সহস্ত ভাকু।এ প্রাস তোমর প্রভৃতি বিবিধ শস্ত্ৰ সমস্তঃ পতিত হইতে লাগিল ৷ অসুরগণ খড়গ চক্র শক্তি গদা প্রভৃতি শস্ত্রা-ঘাতে কিন্ন ও ভিল চইয়া ভূতল শায়ী হুৰ্ল ৷ তাহার্দিগের তপ্ত কাঞ্ন বিচিত্র মন্তক সকল অভিদায়ণ পাট্টশ প্রহারে কলেবর হইতে পৃথগ্ডুত হইয়া অনবরত ধরাতলে পতিত হুইতে লাগিল! সমর-নিহত মহাসুর গণ রুধিরলিও কলেবর হ**ই**য়াধাজুরাগ-রঞ্জিত গিরি শি**থ**রের ন্যায় ভূশয্যায় শয়ন করিল ৷ পরস্পর শস্ত্র প্রহার দ্বার) রণক্ষেত্রে হাহারব উপিত হ-ইল। দূর হইতে লোহমণ তীক্ষ পরিঘের জাঘাত ও সন্নিক্ষে মৃটি প্রহার ইতাাদি অংকার রুণ প্রবৃত্ত দেব দানব গণের কোলাছল নভেন্ম ওল ব্যাপ্ত করিল। চারি দিকে কেবল ছিহ্নিভিন্দি ঘাত্য় পাত্য় ইত্যাদি গোরতর শব্দ শ্রুত হইতে লাগিল ৷

এইকপে নহাভয় দায়ি তুমুলা সংগ্রাম আবার্ড হইলে নর ও নারায়ণযুক্তকেতে উপস্থিত হইলেন ভগৰানু নারায়ণ নরদে-रवत मिदा धनुः अवरलाकन कविया मानव कुल-दिलश्रकाति श्रीश ठक श्रात्रन कतिरलनी সেই অরাতিনিপাতন, সুহ্য সমপ্রভ, অ-প্রতিহত প্রভাব, ভীষণ মৃত্তি, সুদর্শন চক্র মৃত মাত্র অন্তরিক হইতে অবতীর্ণ হইল ! করি কর দীর্ঘাছ ভগৰান্ প্রজ্লিত ছতা-শন সম, পার পুর-বিদারণ, মছাপ্রভ চক্র বিপক্ষ দলে প্রকেপ করিলেন। ভগবৎ-প্রেরিত চক্র মহাবেগে গমন করিয়া সহস্র সহস্র দৈত্যদানৰ সংস্থার করিল; কোনস্থলে অতিপ্রদীপ্ত দহনের ন্যায় প্রজ্মিত হইয়া অ্সুর দল নিপাত করিল; ক্ধন ক্ধন নভাম ওলে ও ভূতলে বিচরণ পূর্বক পিশা-চর ন্যায় **ভাত্ারদের শোণিত** পান করি-(७ जा।शन।

नवकलध्द कदलब्द महादल निवाकास

অসুরেরাও গিরি নিংকেশ ছারা দেবদল
দলন করিতে আরম্ভ করিল! তথন স্থানক
ভূগর সকল পরস্পরাভিঘাত পূর্যক বছবিধ
জলগরের নায় সমস্ভতঃ পতিত হইতে লাগিল৷ এইকপ অবিরত অদ্রিপাতে অভিহতা হইয়া সদ্বীপা সকাননা পৃথিবীবিচলতা হইল৷ তথন নরদেব স্থানুধ শিলীমুপ* সমূহ ঘারা অসুর বিক্লিপ্ত গিরি শিধর
বিদারণ পূর্যক গগণ মণ্ডল আছেম করিলেন! মহাবল প্রাক্রান্ত ফুলান্ত অসুর
দল দেবগণ কর্তৃক ভ্যাবল হইয়া এবং
নভাম গুলে প্রকৃপিত অবলোকন করিয়া ভূ
মধ্যে ও লবণার্ব গতে প্রবেশ করিল!

দেবতারা এইকপে জন প্রাপ্ত হইয়া
সমুচিত সৎকার বিধান পূর্বক মন্দর গিরিকে পূর্ব স্থানে স্থাপিত করিলেন ৷ জলধরেরাও গগণমগুল ও স্বর্গলোক নিনাদিত
করিয়া যথাগত প্রতিগমন করিল ৷ তদনস্তর
দেবতারা আনন্দরাগরে মগ্র ইইয়া সেই
অমৃত ভাগু সুরক্ষিত করিয়া নারায়ণের
নিকট নিহিত করিলেন।

বিংশতি অধ্যায়।

উপ্রপ্রবাঃ কহিলেন, হে ঋষিপ্রবর ! যে অমৃত মন্তে শীলান্ অতুল বিজৈম অশ্বাজ উৎপন হইয়াছিল, তাহার সমুদার র্ভান্ত বৰ্নকরিলাম ৷ কক্রেনেই আন্ধার্ভুজ্ব-লোকন করিয়া বিমভাকে কহিলেন বিনতে! শাঘু বলদেখি উচৈঃশ্রবার কিৰূপ বুর্ণ। বি-নতা কহিলেন এ আখরাজ খেতবর্ণ; তুমি कि रल; चाहेत्र अविवास शन कता गाउँक। কক্ত কহিলেন হে চাক্লহাসিনি! আমি বোধ कति भेरे जार्चत भूक हम्पर्न, जारेन এ विषदम् अहे अन कता याष्ठेक,त्य हात्रित्वक ভাঁহারা এইৰূপে (म मानी इहेर्वक। দাসী হৃতি সীকার ৰূপ প্রতিজ্ঞাক্ত হইয়া कला अर्थ (१थिव अर्रे निक्तन्न कद्रिन्ना च च গুছে গদন করিলেন।

কজে গৃহে গিয়া ক্লতিম করিবার আছি-

• 🕈 তাণ

Maria di Barana

আরে সায় পুত্র সংত্রকে ম'হবান করিয়া কলিলেন কজল তলা কালত্বপ খারণ করিয়া শ্বরার ঐ ভবজ শ্রীরে প্রবেশ কর : रात आबारक मात्री इट्रेंट न। हरा। श সকল ভক্তসম ভাঁহার অ'জ। প্রতিপালনে পরায়া্থ হটল তিনি তাহারদিগকে এই नाश पितन शा शुकुत्लां हर धीमान् ताका ক্ষনমেল্লয়ের সর্পাসতে অগ্নি তোমারদিগকে ৰশ্ব করিবেন। সঞ্চলোক পিতামহ এক। এই নৈবাৎ কক্রনত অতিক্র শাপ স্বকর্ণে শ্রবণ করিলেন, এবং সর্প।ণের সংখ্যা অধিক দেখিয়া ঐ শাপ প্রজাগণের হিতকর ভাবিয়া দেবগণ স'হত হয় প্রকাশ করিতে লাগিলেন ; আর ক'হলেন এই সকল মহাবল সংগ্র বিষ অতি তীক্ত ও বার্যাবৎ : ইচারা স্বভাবতঃ হিংসারত ও অন্যান্য সমস্ত প্রাণির নিয়ত অভিতকারী; অতএব কদ্ৰু এই ৰূপ শাপ প্ৰদান উচিত বিবে-চনা করিয়াছেন। ভাহারা যেমন ক্রুর, দৈব তেমনি তালারদিগের উপর প্রাণাস্ত দও-পাত কবিয়া ছন ৷

ব্ৰহ্মা দেবতাদিগকে এইকপ সন্তায়ণ ও
কদ্ৰের সম্চত প্রশংসা কার্য়া কণাপকে
ব্যমাণে আহ্বান পূর্বক কহিলেন হে
পুণাআন্! যে সকল তাক্ষ্ বিব নহাকণ
দন্দপুক "তোমার উরসে জান্ময়ছে জননী
তাহারদিগকে শাপ দিরাহেন। বৎস!
তিবিবরে কোন কমেই তোমার মন্না করা
বিধের নহে। যক্তে সর্পক্ষসংহার পূর্বাবিশিক্তি আছে। বিধাতা মহালা
কশ্যপ প্রভাপতিকে এই কপে প্রসন্ধ কার্য়া
বিষহা বিস্যা প্রদান, করিলেন।

একবিংশতি অধ্যার।
উপ্রস্তার কছিলেন কদ্র ও বিনতা পরক্ষর দাস্ত পণ করিয়া অমর্থ ও রোবপরবশ হইয়াছিলেন। এক্ষণে রজনী প্রভাত।
ও দিনকরের উদয় হইবামাত্র, অনতিদুরবর্ত্তি ভূরগরাল উজ্জৈলারার দর্শনার্থ
প্রস্থান করিলেন। কিন্তুল্ব গমন করিয়া
ভাঁহার। অপ্রবের, অদ্ধিদ্ধনীয়, দর্শ্বভূত

ভাকর, অভলম্পর্শ, পরিত্র জল জলমিবি ष्यवरलाक्त कहिरलन् । कल्बिर छिमि, তিমিজিল, মীন, কুর্মা, নকর, প্রায় প্রভুঙ্জি সহত্র সহজ্র বছবিধ বিহুতাকার ভরত্তর জলচর সমূহে সতত সমাকীর্ণ; সমস্ত রজের আকর : জলাধিপতি বরুণ দেবতার আ**লয়** ; নাগগণের আবাদ স্থান; অসুরদলের পর্ম মিত্র; স্থলচর প্রাণগণের অভি ভয়ামকঃ অমূতের অন্তিতীয় আকর ৷ পাঞ্জন্য **শর্টের** উৎপত্তির **স্থানঃপ্রবল বডবানল ভাছার** গৰ্কে নিয়ত অৰ্শ্বিতি করিতেছে; গণ অনবরত ঘোরতর শব্দ করিভেছে ; প্রবল পরন বেগে নিরস্তর পরিসালিত হই-তেছে, সুত্রাং অবিক্রেদে পরতাকার তরঙ্গ উচিতেছে; বোধ হয় তরঞ্জনপ হস্ত উত্তোলন কণিয়ান্তা করিতেছে**; চল্<u>লে</u>য়** ক্রাসর্জি অনুসাধে তাঁহোর হাসহাজ ১র ১ অপ্রমেয় প্রভাব ভাবান, গোবিন্দ বরাছ রূপ পরে এই করিয়া অন্তর্জনে প্রবেশ পুর্বাক हेहारक बारला। इंठ ७ बादिल क्रांत्रश्न-ছिल्। ব্ৰতপ্ৰায়ণ ব্ৰশ্ব কবি শত শত বংসরেও উলোর তলস্পর্ম পারেন নাই; অপ্রমিততে লা ভাগবান্ পৰ্মাভ বিষ্ণু প্ৰলয় কালৈ যোগ নিদ্ৰা অব-লান করিয়া তাঁহার তরক শ্যায় শ্যুন করিয়া থাকেনঃ দৈনাক ভূবর দেবরাজের ব্যপাতভঃর কাত্র হট্রা ফইলে, তিনি তাহাকে অভয় প্রকান করিয়া-ছিলেনঃ অসুরদল অরজেক যুক্তে পরা-় 'জিত হটয়। ইঁহার আন্ত্রেয়ে আসিয়া পরি-আণ পায়; সহত্ৰ সহত্ৰ মহানণী প্ৰতি-ত্তন্ত্রি আভসারকরে শার পতত তাঁহাতে मसारवन क.ब्रट ७ रह

काविश्माक व्यथाय।

উথজ্ঞবাধ কহিলেন নাগেরা সাত্র শাপ অবগানস্থর বিবেচনা করিল আমার-দিগের জননীর অস্তঃক্তংগ মের সঞ্চার নাই সূত্রাং তাগার খনোরধ সম্পন্ন না ছইলো কৃপিত হইরা আমারদিগকে দক্ষ ক্রিবেন। কিন্তু তাগার অভীকী সম্পাদনী ক্রিতে

स्य नाशकः नाशक्त्र विक्र स्थल क्षेत्र क्रद्र ।

পারিলে প্রসন্ন। ছইয়া আমারদিগের শাপ মোচন করিতে পারেন৷ অতথৰ ভাঁহার আজা প্রতিপালন করা কর্তব্য, চল সকলে मिलशा উहेलानात भुष्क क्रक्वर्व कति। এই দরুপে করিয়া তাহারা ঐ অধের পুচ্ছ-কেশ ৰূপে পরিণত হইল ৷ এমত সময়ে দক্ষতনয়। কদ্ৰু ও বিনত। আকাশ পথে বায়ু-বেগে সাতিশয়বিচলিত, ঘোরতর নিনাদ সম্কুল. ভিমিজিল মকর সমূত সমাকীণ, বছ-বিধ ভয়শ্বর জক্ত সহত্রে পরিরত, অতি ष्प मृर्ज्जि, नमञ्ज समीमायुक, नकल तुज्जाकत्, অনৃতাধার, বরুণ দেব ভবন, নাগগণালয়, বড়বানলাভায়, ভয়ক্ষর, প্রাণি সমহ নিবাস, অসুরগণ বাসভূমি, বহুসন্ধ: নদীগণ কর্তৃক স্থানে স্থানে নিরন্তর পরিপূর্যামাণ অতিছ-র্দ্ধ, অতলম্পর্শ, অক্ষোভা, অপ্রনেয়, অচি-স্তনীয়,অতি মনোহর,প্রিত্রজল জলবি অব-লোকন করিতে করিতে প্রতিমনে তদীয় মপরপারে উপনীত হইলেন।

ত্ৰবেশ্বংশতি অধ্যায় ৷

উগ্রস্তান কছিলেন কক্র ও বিনতা সমুদ্র অভিক্রম করিয়া অনতিবিলমে অস্থা সনীপে
উপনীত হইরা দেখিলেন অস্থা শশাস্ক কির-ণের নায় শুভাকার কেবল পুচ্ছ দেশের কেশ গুলি রুফ বর্ধ! কক্র তদ্দর্শনে বিষাদ দাগরে মগ্রা বিনতাকে দাসী কর্ম্মে নিয়ো-জিতা করিলেন! বিনতাও পণিতে " পরা-জিতা হইয়াছেন সুত্রাং ছংসহ ত্বংখ দাবা-নলে দক্ষ হইয়া দাসী ভাব অবলম্বন করি-,

এই সময়ে গরুড়ও সময় উপস্থিত হওসাতে নাতৃ নাহায্য নিরপেক হইরা ব্রং
অওবিদারণ পূর্বক জন্মগ্রহণ করিলেন ।
মকামন্তু, মহাবল, মতাকায়, প্রলয় কালীন
অনল তুল্য ছুনিরীক্ষা,বিস্তাৎসম বিষম নেত্র,
কামনুপা, কামনীয়া,কামগম, বিহলমাল অভিপ্রনিপ্ত স্থতালন রাশির নায়ে আভাসমান ইয়া নভোমগুলে পারোহণ ও ঘোরতর নিনাল গরিত্যাল পূর্বক সহসা অভি

1-37-69-5

প্রকাও কলেবর ধারণ করিলেন। তদ্দর্শনে দেবতারা ব্যাকুল হইয়া বিশ্বরূপি আগনো-পবিষ্ট অগ্নিদেবভার শর্ণাগভ ছইলেন এবং প্রণিপাত করিয়া অতিবিনয়ে নিবেদন करितलन रह अरध ! आत मतीत दृष्टि कांत्र अना जूमि कि ज्यामात्र मिशतक मध्य कति-বার মানস করিয়াছ, ঐ দেখ় তোমার প্রদীপ্ত রাশি সর্বতঃ প্রসৃত চইতেছে। অগ্নি কহিলেন হে দেবগণ! তোমরা ঘাহা বোৰ করিভেছ, বাম্ববিক ভাষা নছে: আমার তুল্য তেজস্বী,বলবান্, বিনতা হৃদ্য নন্দন গরুড় জন্মগ্রহণ কবিয়া কলেবর বুদ্ধি করিতেছেন; দেই তেজোরাশি দর্শনে তোমরা মোলাবিষ্ট হইয়াছ: এই দর্প কুল সংহারকারী মহাবল কশ্যপসূনু সদা তে মারদিগের (হতকারী ও দৈতা রাক্ষম প্রভ-তির অফ্তিকারী হইবেনঃ অতএব কোমার: দের ভারের বিষয় কি; তণাপি আইস সকলে মিলিয়া গরুড়ের নিকট যাই।

এই রূপ নিশ্চয় করিয়া দেবতা গণ, ঋষি গণ সমভিব্যাহারে গরুড়ের সমীপে গমন পূর্ব্বক তদীয় স্তুতিবাদ আরম্ভ করিলেন : হে মহাভাগ পতগেশ্বর! তুমি ঋষি, তুমি দেব, তুমি প্রভু, তুমি সূর্য্য, তুমি প্রজাপতি, তুমি ইন্দ্র, তুমি হয়নীব, তুমি শর, তুমি জগৎপতি, তুমি সুখ,তুমি পদ্মজ, তুমি বিঞা, জুম অগ্নি,তুমি প্ৰন,তুমিই ধাতা ও বিধাতা, তুমি সুরভোঠ বিষ্ণু, তুমি মহান্, তুমি অভিভূ, ভূমি সনাতন অমৃত, ভূমি নহৎযশং, তুষি প্রভা, তুমি অভিপ্রেত, তুমি আমার-দিগের পরম রক্ষা স্থান, তুমি মহাবল, তুমি সাধু, ভূমি মহাআয়া, ভূমি সমৃ। জমান্, ভূমি इन्नद्दे (इ. बहाकीएउँ शक्रफ़ ! कवियार के বৰ্জমান সকলি তোমা হইতে নিঃসৃত হই-प्राट्म कृमि केखम, कृमि চরাচর मृर्खि कृमि বকিরণ পরিবেশ * ছারা দিবাকরে শোডা প্রাপ্ত হইতেছঃ তুমি স্বীর তেজোরাশি দারা नृद्र्यात्र श्रुषामथल नाक्ष्यक्रिक्ट । एमि অন্তক, ভূমি ছিরাছির সমস্ত পদার্থ স্থকপং হে হতাশ্ম এভ! ভূমি পরিভূপিত দিবা-

[💌] शकी ।

र्गकाष्ट्र के**का**।

करतत नाम थका जनगरक मध्य करिएकः; ভূমি লোক সংস্থারে উদ্যত প্রলয় কালীন सम्मात नाम खरकतः आयता मध्यतः, महाट्युकाः, विद्याद नमान कास्त्रि, व्यधिनम প্রভ, নভোমগুলমধাবর্ত্তি, খগকুলতিলক. পর বর, বরদ ছुर्कर विक्रम, विक्रम রাজ গরুড়ের শরণ লইলাম। তে ক্লগল্লাপ! তো-মার তপ্ত সুৰ্ণ সমান কান্তি তেজোরাশি দারা জগমাওল সম্প্র চইয়াছে : অত এব ভূমি মহাত্মা দেবভাদিগকে রক্ষাকর; দেব তারা ভয়ে অভিভূত হইয়া আকাশে বিনানারোহণ পূর্বক ইতত্তভ প্লায়ন করিতেছেনঃ হে খগবর। ভূমি দয়ালু এছাত্মা ৰুশাপ ক্ষরি সন্তান, রোধ পরিহার কর; জগৎকে দয়াকর ত্মি ঈশ্বর, শান্তি অব-লম্বন কর: আমারদিগের রক্ষণ কর: তো-মার মহাবজ্ঞ সদৃশ ভয়ক্ষর রবে দিল্লাওল, नष्टः चल, वर्गालाक, कुरलाक এवर कामात-मिट्रात ऋषत्र निवस्त काम्लाङ इटे**र्ड्ड** । ভূমি অনল ত্ল্য কলেবর সংহার কর; তো-মার কুপিত কুতান্ত তুলা আকার দর্শনে আমারদের মন অভ্রি হইয়াছে ৷ হে দ্পবান্পভগণতি! আমরা প্রাথনা করি-তেছি প্রসন্ন, শিবপ্রদ ও সুখাবছ হও। গরুড় দেবতাদিগের এইরূপ স্তৃতিবাদ প্রাবণ ক্রিয়া আছতেজঃ সংহার ক্রিলেন।

চত্বিংশতি অধ্যায়।

গরুড় দেবতাদিগের এইকপ স্তৃতি ও প্রার্থনা গুনিয়া এবং আপন কলেবর অব-লোকন করিয়া তৎপ্রতিসংহার করিতে ভারত্ত করিলেন এবং কহিলেন আমার দেহ দর্শনে সকল প্রাণিকে ভার ভীত হইতে হইবেক না ৷ সকলেই ভয়নক আকার দেখিয়া ভীত ইইয়াছে; অতএব আমি আস্তেকঃ সংহার করিতেছি! উএপ্রবাঃ কহিলেন কামগম কমেবীর্মা বিহলেম অমণকে আত্ম সূর্যে ভারতির পারব-রিলী ত্বীয় জননীর সমিষানে উপাত্ত হইলেন; এবং ঐ সমরে সুর্যাঃ উল্লেখ হইলেন; এবং ঐ সমরে সুর্যাঃ উল্লেখ করাতে মলাদাতি অৰুণকে পূর্বাদিকে স্থা-পিত করিলেন।

ৰুক্ত কহিলেন ভগবান্ সূৰ্য্য কি নিমিত্তে সমস্ত ভুবন पश्च · করিতে উদাত হইয়া-ছिलেন, आत एवकाताई वा काँकात कि অপরাধ করিয়াছিলেন, যে তিনি এত-কুপিত হইলেন প্ৰমতি কহিলেন যথন চক্ৰ 🕆 ও স্থ্যা রাছকে ছখবেশে অমৃত পান ক্রিতে দেখিয়া দেবতাাদণের নিকট ব্যক্ত করিয়াদেনঃ তদব্ধি ভাঁহারদের উভয়ের महिक ताहत रेवतः मूबस्त हरा। १८७ थे তুষ্ট গ্রহ সূর্য্যকে গ্রাস যন্ত্রণা দিতে আরম্ভ করিলে ভিনি এই ভাবিয়া ক্রন্ধ হইলেন যে আমি দেবতাদিগের মঞ্চল চেফী করিয়া রাছর কোপে পতিত হইলাম, এবং তলি-বন্ধন আমিই একাকী নানা অনৰ্থকর পাপ ভোগ করিতেছিঃ বিপৎকালে কোন ব্যক্তিকেই সহায়তা করিতে দেখিতে পাই না; যৎকালে রাছ আমাকে আস করে, দেবতারা অনায়ানে 🖣 সহাকরে; অত ৭ব আমি নিঃসন্দেহ সকল লোক সংহার করিব।

স্থাদেব এই মানস করিয়া অস্তাচল চূডাবলয়ী হইলেন; এবং লোক বিনাশ মানদে বীয় তেজ র্জি করিতে লাগিলেন মহ্বিগণ তদ্ধনৈ শক্ষিত হইয়া দেবতা-দিগের নিকট গিয়া নিবেদন করিলেন, অদ্য অর্করাত্র সময়ে সর্বলোক ভরপ্রদ মহান্দাহ আরম্ভ হইবেক; তাহাতে তৈলোকা বিনাশ-সম্ভাবনা ৷ তর্খন দেবতারা ঋষিপ্রদান করিলেন, ভগবান্। আদ্য কেথা হইতে মহহ দাহভর উপস্থিত হইল। নিবেদন করিলেন, ভগবান্! আদ্য কেথা হইতে মহহ দাহভর উপস্থিত হইল। মুর্য্য লক্ষিত হইতেছেন না; অধ্য লোকক্ষর উপস্থিত, জানি না, স্থ্য উদয় হইলে কি দশা ঘটিবিক।

পিডানক কহিলেন,কে দেবগণ! স্বামা-রদিশের স্থা লোক বিনালে উদ্যত কই বা-হেন; স্থা উদিত কই রাই বিরোজ জনমানি করিবেন। কিন্তু প্রেই ক্রিয়ের অভিত্তিশান করিয়া রাখিরাহি; ক্রিটেশ্র

অৰুণ নামে মহাকায় মহাতেজাঃ এক পুত্ৰ क्षांचित्राष्ट्र (म स्ट्रायात मन्यात्र काराहार ক্রিবেক ভাঁছার সার্থি হইবেক এবং ভদী-यु ८७% अन्द्रात कब्रियक ; **फाहा हरेटलरे** रमस्डा क्ष ७ मग ३ (नारक द्र मणन इरे :बक। প্রমাত কহিলেন তদনম্বর ক্ষক্রণ ব্রহ্মার আদেশানুৱপ সমন্ত কাৰ্যা:নুভাৰে সম্মত इकेटलम ध्वर सूर्य। छेषिक इक्षामाज छाहा-কে আৰুরণ করেবা ভ হার সন্মধে অবস্থিত **इट्टलन। ऋ्याय कात्रत्न कृशि**ड हहेन्ना ছিলেন অরুণ থে ৰূপে তঁংহার সার্থি इहेटलम रम ममुनाय कार्जन कतिलाम धक्करन পূর্বেরালিখিত অংশর জেশ্বের বিষয় অংবণ **₹**₹ }

কলিকাত। ত্রাক্ষসমাজের বজ্তা

क्रम ८१६८ छोड़ ८🐗

व्यान्यानस्यतं धिरमूलानीक

কোন কে ন ব্যক্তি অপেন্তি করেন যে ষ্থন বিপদ্কি অনা কোন সময়ে প্রমে-चरतत्र निरुधे व्यार्थना कतिरम रम व्यार्थना সিদ্ধ করিতে ভিনি আপনার অবও নিয়ম সকল কখন উল্লেখন করেননা, আরু ষ্থ্ন কোন পৃথিবীস্থ রাজার ন্যার স্তৃতি ধন্দনা ভাঁহার তৃটি কর হয় না তখন ভাঁহার উপাসনার থাবশ্যক কি ? একুপ আপপত্তি কারকেরা বিবেচনা করেন না যে যুগাপি ঈশবোপাদনার প্রতি কোন মাংদারিক कामनात्र भाषना निर्फत्र करत ना वटते. फ-থ:পি ভাহানিভাৱ করবা কর্ম: যিনি म्बल अधिशादत आकृष्टिक नकल नित्रम স্থাপন করিখালেছন, ছিনি জল বাযু আনা-लाक अञ्चि जडाब आराजनीत बस भकत अगरु क्षाहुत् करण मित्रारहर रय स्म गरुव मूला पिश्वा प्राहत्त कतिए इत ना, चिनि मरनेत्र पूर्ध नियोत्तन निम्नि विभान निरमान कृद्धिद्धिमा विकि छ।वि वालरकतः (भाषक किया मार्कात **चटके इंट्**बन स्थापन

उन्हर्निक कि माण्डिक नकासक्षक स्थाना वास বিভরণ করিভেছেন, আর এপিছা কর্মস্থ নিবাসিত চইলেও এংং অকুর কোলে कोविकाहार रहेरल । दिव हान के बोहिका अनान क्तिएक कांग्र क्रायन ना, क्रां खंडन হার প্রতি কি কৃতক **হওয়া কর্ত্তর কর্ত্ত** নহে 👌 ভাঁকার প্রতি আক্রিক আব্বা অূর্পৰ कता कि উচিত द्राथ सम्र ना १ स्थन भन्न-নেশরের অভিত্য মানিকে ছইল কথন পিজা, পাতা, ও বন্ধু সন্ধূপে ভাগার প্রাভ আমা-র্দিগের যে কর্ত্তরা কর্ম তাছাও সাধন क.इत इ इटेटनक । "बाद्द खब्द विद्वाकुर्याद मा मा जन्म निताकरहार ।" शतरमश्रत मा-मात्रिंगरक भावज्ञाश करतन बाहे, ज्याभ-রাও ছেন ভাঁহাকে পরিজ্ঞাগ না করি ৷ হে অন্তত্ত পুত্তর।! তোমারদিগের পিতাকে তোষরা শরণ নাকর ভাঁহার প্রতি কোনরা আন্ধা না করং কিছ ।তনি ভোষার-দিগের প্রতি যেরপ করুণা বর্ষণ করিতে-ছেন তাহ। বুখুণ করিতে ক্ষান্ত থাকিবেন मा। शहरमानात्त्र हेशामना (कवण कर्डवा কৰ্ম নৰে ভাষা অহান্ত আমল জনক হই-शादम् । জগদীশর যত নিয়ম স্থাপন করিয়াছেন ভন্নধ্যে এই এক নিয়ম যে ত্রন্ধ চিন্তাতে ঋত্যন্ত সুখোৎপত্তি হয়। বোধা-তীত সুকৌশল ফল্পন্ন মহৎ বিশকাৰ্য্য জা-লোচনা করিয়া ঈশবের জ্ঞান, শব্দি, ক্-কুণা প্রতিপক্ষ করা যে কি আনন্দ জনক जार। बाका भरवन **कठील। त्य मूर्य** त्य ব্যক্তি যথাৰ্থ ক্ৰপে আত্মদন করেন তাঁহার নিক্ট পুথিবাৰ বিজ্ঞীৰ সামাজ্য ও শোভ-नकत मुक्ति नकल फूक दाथ इस्। यर्थन यम केंबरब्र कार्या गरून चारनाहना कवि-प्ता कांक्षात्र महिमा चेख:वकः अहेकल कीर्छक करत्र (वे १५ व्हः भरतमा अन्। कामात्र मक-नागरमाध्याम धरे विचित्र समय कि चाल-र्या क्रम्पाः कि निकृतमा क्योननः कि चन महाबाद्यातः खान्न कृति गृह कार्याः महिक वाहे बंक कित्या कह कि काका के अकार्य। वाहे क्रेंबल करणका कडून श्रविवारण इंट्डिड कड कम्बा कम्बा लोकवश्र भग्ना विकास करतने विन विभूतिकोत् किनानी कि निव्यक्तिकारक । विव्यक्तिक विनिधिक वन

रिक्षिण चार्कारण चपूर्व क्यांकिः वेक्युम নক্ত গহন কি অগণ্য ক্ষপে প্ৰকাশ পান্ধ! নক্ষতের পর নক্ষত, স্ক্র্য্যের পর স্থ্যা: अवक क्षा मक्षा भारह याहाद्राम्टगत রশ্মি নিঃসৃত হইয়া পৃথিবীতে অভ্যাপি আ-সন্মুইতে পারে নাই! হে জগদীবর! ভোমার শক্তি বাকা মনের অগোচর এমড ব্রহ্মাণ্ড ভূমি এককালে দ্জন করিলে, ভূমি চিন্তা করিলে আর এ সমস্ত তৎক্ষণাৎ হই-তোমার জ্ঞানের কথা কি কহিব? यश्रेम एक दृष्क १,८७ त द्राप्ता चामता एकन প্রান্তও সমাক রূপে জ্ঞাত হইতে পারি নাই তথন আমরা ভোমার জ্ঞান সমূদ্র সম্ভরণ্যার। কি প্রকারে পার হইব ? দিবারাত বড়্রজুর কি সুচার বিবর্তন! পঞ্জ ভূতের প্রস্পার সামঞ্জ্য কি চমৎ-কার নিয়ম। জীবশরীর কি পরিপাটী শিশ্প-কার্যা: মনুষ্যের মন কি নিগৃত কৌশল! ভূমি সৃ**টির সময়ে যে সকল**ু নিয়ম স্থাপিত কারয়াছিলে অদ্যাপি দেই সকল নিয়মধারা জগতের কার্যা সুস্থালকপে নির্বাহ হইতেছে ;-প্রথম দিবসে ভোমার সৃষ্টি যেরপ মনোহর দৃশ্য ছিল অদ্যাপি ভাহা সেই ৰূপ মনোহর দুশ্য রহিয়াছে । মহৎ তোমার কীর্ত্তি, জগদীখর! অনন্ত তোমার ফহিমা ! কোন্মন ভোমাকে অনুধাবন করিতে পারে? কোন্ জিহ্বা ডো-मार्क वर्नम कड़िएक ममर्थ इस ! यथम ঈশবের কার্য্য আলোচনা করিয়া মন এঞ-কারে অাপনা হইতেই সেই পরম পাতার মহিলা কীর্ত্তন করিছে থাকে তথ্য সে कि विश्वन ७ विमनामन मरस्रात्र करतः। क-ুলতঃ সকল পুদাৰ্থ হুইতে যিনি ক্লেইডম তাঁহার স্থাপচিস্তা স্বভান্ত আনন্দ্রপ্রদার ইবে ইহাতে আন্দৰ্যা কি ? এমত প্ৰেষ্ঠতন পদা-র্থের প্রতি—এমত প্রীতিযোগ্য পদার্থের অভি যে পরিমাণে জীভি প্রগাঢ় হইতে ধাকে সেই পরিমানে ব্রফ্রোপাসনার আনন্দ वृक्ति वर्षेट्रण बाटका । व जानानत्त्रव श्रित्र-মুপাসীত।'' বিলি মজল মছপ্সজান, য়িনি নিৰ্মানানক্ষৰপ পদাৰ্থ ইছিলাৰ সহিত আ-मात्रिक्रिये विकामस्य स्थिन महमात्रिक्रम

শেষ গাড়ি,খিনি ইছকালে মকল বিতরণ করি-एउट्टम अरश शत्रकारण करण करण प्राप-কতর মঙ্কল বিভরণ করিবেন, যিনি অৰশেষে ष्पामान्निगरक एक ष्पानक शत्रिक्ष क्षामा क्तित्वम शाहा कथमहे कीर्न इहेटवर मा, ভাঁহাকে চিছ: করিলে কোন্ সুস্মন জীতি ৰূপ পুৰুষারাভাঁচাকে পূজা করিছে অং সের নাংইবেক ? মনুযোর শরীর কণ-ভঙ্গুর মনুহে।র মন পরিবর্তনের আংকর। পরমেশরের প্রতি যিনি প্রীতিকরেন ভাচার সুক্তের সহিত তীহার কথন বিছেদ হই-बाब मखाबना नाई " मध्याद्यानस्मव व्यव সুপালে ন হাস্য প্রিয়ং প্রমায়ুকং ভ-বভি ''৷ মনুযোর যে নিজোমভির বাসনা আছে তাঁহা মোকাৰত্ব বাতীত, প্রস্থ-পুরুষার্থ বাতীত,আর কিছুতেই তৃথ হইতে পারে না ? ঈশ্বরব্যতীত, আর কোন বস্তুর প্রান্ত প্রীভিস্থাপন করিয়া ভিনি প্রীভির সার্থকতা প্রাপ্ত হইতে পারেন না ত্র-শব্দ বাজি ইহা আপনার শত্যন্ত সৌভাগ্য छान करतन । य ८ हे श्रद्धश्ममान मश्मारत আমি এমত এক পদার্থ প্রাপ্ত ইইয়াছেন মাঁহার প্রতি প্রীতি স্থাপন করিয়া থাঁহার আছি নিবর করিয়া তিনি তাহাতে সুখির পাকিতে পারেন। যখন এক্ষনিষ্ঠ ব্যক্তি ভাঁহার প্রিয়°পরমাত্মাকে দর্শন করেন. সর্বাহ্যাপি রূপে আপনার নিকট আপনার অন্তরে প্রভাক্ষ করেন, ওখন ভাঁষার চিক্ষ শত্যেদ্রামতে চিক্ত হয় এবং বিশ্ব সংসার পরম মঙ্গল ও নির্মালানকৈর আলয়কপে প্রতীত হইয়া সকল বস্তু তাঁহার সমস্থে সু-খের আকর হয়। কর্ত্তব্য কর্মা অবচ शतम উद्दूष्के चारक्षमर उत्माणांत्रम बुहाक्क्यरश्रे अच्छात्रम कत्रा, देशरत्रत् अणि औषि गाहाटक छेड ह्या खत्र गांव इस केंद्रिक क्षक्रक कर्म करम व्यक्षिक्षत्र कृति হয়, এমত অভ্যাস করা, জীবনের সুখা কর্ম इरेब्राट्ड कात्र**ा शकील इरेट्डा**ई (य পর্মেশর যে নিতাপূর্ব সুবের সবস্থা জীয়া-अविकादक अमान क्षित्रन चाराह यूर्व क्षान पर मुच। (र नज्याचेन) बारि ्री मत्मन गारक कामान पारकाहमात

দময়ে যে সুবিধ সুনির্মান মহদানক বারা
চিক্ত কথন কথন প্রাবিত হয়, তোনার
নিকটে এই প্রার্থনা যে সেই আনক্ষ ভূমি
চির্ম্বায়ি কর তাহা হইলে আমি পরিনাত ও রুতার্থ হইলাম ৷ ঈশরের প্রজি
প্রীতি উত্তরোত্তর যত গাঢ় হইলে ভাহার
প্রত্যক্ষ উত্তরাত্তর যত অবিক শ্বায়া হইলে
তত্হ আনার্দিগকে মুক্তির নিকট্ডর জ্ঞান
করিতে হইবেক ৷

किन्छ ज्ञेषदत्रत्र छेलामनाटक अध्यकात्र আনন্দ প্রতিভাত হয় না, এপ্রকার ফল প্রাপ্ত इंडग्रा योत्र नी, यमालि (मर्टे डेलामनात्र এক অঙ্গ সাধন অর্থাৎ ভাঁহার নিয়ম প্রতি পালন নাহয় ৷ যেমত রাজার নিয়ম প্রকিপালন না করিয়া তাঁহাকে কেবল অ-ভিবাদন করিলে ভাঁহার নিকট তাহা প্রাছ হয় না তক্রপ ঈশ্বরের নিয়মপ্রাই পা-লন না করিয়া তাঁহার উপাসনা করিলে দে উপাদনাও তাহার গ্রাহ্ হর না। অ-स्त्र विमुक्त ना क्हेंदन ঈ बत्र ज्ञान काकारक উচ্ছালরপে প্রকাশ পায় না। 'জ্ঞানপ্রসা-त्मन विमुद्धमञ्ज्ञकञ्च ७९ भनारक निक्रमः **भावमानः'' हेहा ज्ञान्छ जाटकटश**व विषय (य এकर्प करनरकत बाता उत्रक्षान रकान चारमानकनक विमात नाम चारनाहिक ह-रेश पारक, कार्यात नमक खारा किहूरे প্রকাশ পার না। হে পাপাসক্ত ব্যক্তি । নর্ক অর্প ভোনার মনের সৃহিত সেই পরিশুদ্ধ অপাপবিদ্ধ পর্যেশরের রুশ্বুর্যে উপস্থিত হইতে কি প্রকারে তোমার ভরসা হয়? সুমধুর স্বরে অভি পরিপ্রাটীরূপে विष भाष्ट्रे कत बात जैभनियरमत जूति ज्ति (ज्ञाक कश्वरे शोकूक, जात मुहास-कटल क्षित्राम् दाजि पिरंगत मत्मह मुडक बाजा निजाकतगरे कत्र ख्यां शि व्यवत विश्वक ন। হইলে ভাহাতে কি কুল দৰ্শিতে शाद्व? रद्रक शद्रमध्द भक्त भाभी च-পেকা বিয়ান্ পাপীর প্রতি অধিক রুই भ्रत्य । अञ्चलाति कृत्न शृक्ति स्रेश रातः हकः विकटक कृत्य शक्ति रहेता কোন থকারে ক্ষার যোগা হইছে शाद्य ना। विद्यान् भाशी पर्वाची पक्ष

नायु मश्चत वाकि १ / ८१ विष्तृ! प्राप्ति मानिनाम य जुडि विदिध नाट्य पछि द्रार्भन, छात्माभद्रमा अमात्म प्रक्रिक, নানা শাস্ত্র হইতে ভুরি ভূরি সমীচীন প্লোক সকল উদ্ভূত করিয়া জ্বোক দিগকে আ-শ্ৰুষ্য স্বৰ্ক ক্রিতে পার কিন্তু যে পর্যান্ত ভূমি ভোমার চরিত্র শোধন না কর, ভোমার ব্যাখ্যাত উপদেশ সকল কার্য্যেতে পরিণত না কর, সে পর্যান্ত ভূমি কেবল এক এছ-বাহক চতুম্পদ তুলা ৷ " নায়মাত্রা वनशीतन नचाः ''। शत्रमाचा हेस्सिय-लाल वाक्तिषाता कर्यन लच्न इरम्ब ना। " নাবিরতোছকরিতালাশাভোনাসমাহি-**७:। नामान्त्रगमरमाराभि अक्षारनरेन-**ন্মাপ্লুরাং "। অংশান্ত অসমাহিত ছ-শ্চরিত্র ব্যক্তি কেবল প্রজ্ঞান ছারা ঈশরকে প্রাপ্ত হয় না। ঈশরের নিয়ম কি मुहाक कि मूर्वाव ह! मन ति भू नकल वरन वार्थिया ७ हिटेड्यनाषाता आर्ज थाकिया কি সুর্গ্থ প্রক্রতা ছারা জ্যোতিয়ান थार्कः। ইत्सिवनिश्चरः চরিত্র শোধনে প্র-थेमु अप्तक करी किंद्ध क्राम क्राम महस्र হ্ইরা পরিশেবে অপর্যাপ্ত সুখ লাভ হর। चना जूनि निठा चाठतित कूकम हरेक क्**डे** चोकांत्र कतिया निवृद्ध २७, कना निवृद्ध इंडब़ा व्यापिकाङ्ग्छ महक्र हरेरव, श्रद्रवाः তদপেকা এই ৰূপে ক্ৰমে ভূমি পাপৰপ পিশাচীর লৌহশরীরের আলিক্ন হইতে বিমুক্ত হইতে পারিবে ধর্মাচল আয়ো-হণ করিতে প্রথমে অনেক কফ্ট্রোধ হয় কিন্তু ভাষাতে আরোহণ করিলে শান্তির मूम्म हिल्लान त्रिविक शहरमार क्रके जा-নন্দ কুঞে অবছিতি করত মুম্পু ব্যক্তি কি প্রাপ্ত কুতার্থ হয়েন তাহা বর্ণনাতীত। ইহা নিঃসংক্ষেৎ যে সেই আনক্ষেত্র প্রথপ যদি এক বাব্ধ পাপাছা ব্যক্তির প্রতি প্রতি-खांक इब चेंद्र (म छरक्रनार भाभ इहेटक विक्रं इहेर्ड नगाक् (हकावान इस् । अर्ज कि ब्रम्भीत भागर्थ, धर्मन कि बाबाइन चन्ना । " धर्माः मर्द्भवार प्रकानार मनू, धर्मा । त्रवरं नाखि" नंकन वखत्र मत्या धर्म बर्भ प्रमुख रहेजाहरू वर्ण स्ट्रेस्ट पात

শ্রেষ্ঠ বস্তু নাই ৷ "হে পরমান্ধন্ মোকক্বত পাপ হইতে মুক্ত করিরা ও ছুর্মতি
হইতে বিরত রাখিরা তোমার নিরম পালনে
আমারদিগকে যত্ত্বলীল কর এবং জন্তা
ও প্রীতিপূর্বক অন্তর তোমার অপার মকিমা এবং প্রমমন্তর ও নির্মানান্দ বর্বপ চিন্তনে উৎসাহযুক্ত কর যাহাতে ক্রমে
নিত্য পূর্ণ সুধ্লাভ করিতে মুমুর্থ হই "1

বাছবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার

প্রাকৃতিক নিয়ম লক্ষন করিলে মনুষ্যের কড ছুঃখ হয় তাহার বিবরণ । ৭১ সংখ্যক পত্রিকার ১৭৮ প্রের পর। माजीविक नियम लक्ष्यत्ने कल। অবৈধ পাণিগ্রহণ দারা দম্পতীর যে-ৰূপ অনুধ উপস্থিত হয়, পূৰ্বেৰ্ ভাৰনেয विवद्ग कता शिवारहः मञ्चारमव सम्मण তাহার বিতীয় প্রত্যক্ষ কল্। ইহা এক ঞ্কার নিৰূপিত হইয়াছে,যে পিতা মাতার नतीत्र मुख् अ मदल इहेटल मछान् उ छम्नू-अभ श्रम् अ मदल महीत व्याश इस, धवः তবিপরীত হইলে বিপরীত কলের উৎপ-ত্তি হয়। সর্বা সাধারণেই অবগত আ-ट्रन त्य चात्र, यक्ता, कूछं, উन्नाम हेजानि नाना রোগ কোন বংশে একবার প্রবিষ্ট रुष्ट्रेटन शुक्रवानुक्टमरे हिनशा चारेट्न, धवः প্রত্যক্ষ দেখা গিয়াছে,যে কোন কোন পরি-বারে অন্ধতা রোগ ও অঞ্চ রুদ্ধিও পুত্র পৌख कोहिजानिकतम चत्नक शूक्त पर्यास रुरेशु व्याजिटक्टरः अहे वाक्ना (नटभंद्र हे चटनकारनक राक्तित्र इस भारम अधिका-কুলি ও বুজাকুলি হওয়াতে তাহারদি-গের সম্ভান-পরস্পরারও সেইকুপ অঙ্গ रेबलकना विज्ञादक । व्यक्त अकारमञ्जा পিতা মাতার বিষয় সহস্টারে ভাঁহারদের भातीतिक त्रारमञ्ज अधिकाति रहा। क-नकः काशाबा ब्रामाकाक स्टेब्रा कृषिक मा र्षेक, शिका माणान वर्षेण दिनीनाई पूर्वनी

প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়, যে শারীরিক নিরমের জ-ভাপে ব্যক্তিক্রম ঘটিলেই পীড়া ক্রজেঃ

শরীরের অপরাপর অঞ্চের ন্যায় क्षालक मिलक तानि अवर कमनुजादत मत्नात्रिक त्रमुकात्र श्रुक्तरानुकरम धक क्र हरेशा चारेरमे। धरेक्टम जनक जननीत জ্ঞান-জ্যোতি স্থকীয় সন্তানে অবভাসিত इय, अवर अहें ब्राट्भ हें कि भूग वन मन्ना-নেতে প্রকাশ পায়। ধদি পিতা মাতা উভ-য়েই অতি ছংশীল ও বৃদ্ধি অংশে অভ্যন্ত शैन रूटबन, ७८४ छ। हातुरमत मुखानिमारक প্ৰায় পরম ধার্মিক ও বিশিষ্টৰপ বৃদ্ধি-मण्यम हरेट एका यात्र ना। मम्मात्र **जूम अनरे रेहात मृखील ऋग। (य मिनी** प्र যে জাতীয় লোকের চরিতের বিষয় বিবে-চনা কর। যার,ভাহাতেই এই বধার্য ভত্তের ভূরি ভূরি উদাহরণ প্রাপ্ত হর্রা যায়; এমন কি,এই অথগুনীয় নিয়ম বৃশতঃ জাতি বিশেষের বিশেষ বিশেষ প্রাকৃতি সম্ভূত **ब्हेबारह 1**ं वाकानिरमत्र **चरेनका** ७ छीङ्ग च्छाव, जिल्लिए तत्र वीर्या ७ माहम, है द्वा-জদিপের ছুজ্য অর্জন স্পৃহা, ফ্রাশীন-দের শাতিশার স্বাভস্ত্যানুরাগ, কাঞ্চিদের বুদ্ধি-শীনতা ইত্যাকার এক এক জাতির थक थक ध्वकात चछाव काहात ना विभिन्न **चारह** ! यक्ति अनक अननीत रेপकृक वा বোপার্জিত সম্পত্তির ন্যায় তাঁহারদের শারীরিক ও মানসিক গুণাগুণও সস্তানে না वर्षिक, रूरव धक धक (मरमद्र अर्थमाधाद्रन লোকেরই এক এক প্রকার প্রকৃতি ছওরা क्लान करमरे मस्रावित रहेक ना। वसकः লোকের বভাব বাস্ত ভূমির গুণ এবং সন্তা-নোৎপাদনের নিয়মের উপর সমাক্ নির্ভর স্মানারদিগের পূর্ব পুরুবের। নিরূপত্তব ভার-স্বভাব ছিলেন, আমরাও তদমুৰণ বা তদপেক্ষায় অপরুষ্ট প্রকৃতি व्याख हरेग्नाहि, अवर साम्युहुत्मत्र मखादम्-রাও ব্যামারদের স্বভাব ও চরিত্তের উত্ত-ब्राविकाति **वरे**द्दक । यावर शत्रद्वाचत्र-व्यक्तिक नियम नमुमात भवनर हरेगा कर वार्क्तिका बाता अविवासत अवीकात किया केता पारेत, जावक विश्वाद्वत्वन - এখভাৰ এবং এইরপ খন্যান্য ভূরি ভূরি কুখভাব নির্মূল হইবার সঞ্জাবলা নাই 1

তন্তির পরশার-বিভিন্ন জাজীয় দম্পতীর সহযোগ-সমূৎপদ্ম সন্তানের প্রকৃতি পর্যালোচন। করেরা দেখিলে অবিবরের আরও দৃচতর প্রমাণ প্রাপ্ত হওঁয়া বার ! আনেকেই কছে, যে হিন্দু ও ইউরোপীয় প্রী পুরুবের সংসর্গ-জাত সন্তানদিগের বল ও বাঁর হিন্দু আপেকায় অধিক ও ইউরোপীয় অপেকায় কিঞ্ছিৎ ক্যুন হইরা থাকে। খানেরিকার বিবয়েও অনেকে অনেক প্রনাণ দিরা এইকণ উক্তি করিয়াছেন। তত্ত্র-জাদির লোকের সহিত ইউরোপীয় লোকের স্ংসর্গে যে সকল সন্তান জন্মিন্মাছে, আহারদের স্থাব এ আদিম লোকের সংস্কার ভিন্ত উত্তরাক্ষী ভ্রাকের অংপকায় বিশিক্তরপ উৎকৃষ্ট হইন্যাছে।

পারসীক দেশে এবিবংগর এক আশুর্যা উদাহরণ ছল উপস্থিত হইরাছে ৷ তর্ত্তা সম্ভ্রমশালি ধনাট্য লোকেরা সর্কেসিরা দে-শীয় পরম সুন্দরী রমণীদিগকে আনমন করাইরা তাহারদিগের পাণিগ্রহণ করেন; ইছাতে ক্রমে ক্রমে তাঁহারদের শার্মীরিক মৌন্দর্যা ও মানসিক গুণের যথেকী উন্নতি হইরাছে ৷

শিতা মাতার বভাব-সিদ্ধ গুণ দোব বৈ সন্থানে বর্ত্তে তাহার সংশার নাই ! কিন্তু ইহাতে একপ ছির করা উচিত নহে, যে সন্থান অবাধে জনক জননী উভরেরই যিলিত প্রকৃতি প্রাপ্ত হবরা তাহারদের দোব ভাগ ও গুণ ভালের অধিকারি হয়, ফলতা ইহাই প্রামানিক বোধ হয়, যে পিতা মাতার বিলেব বিলেব স্বাভাবিক গুণ এবং অপত্যোৎ পাদন কালে তাহারদের যে স-কল মনোর্ভি সম্বাদিক প্রকৃত্ত থাকে তাহাই অধিকার ক্রিয়া ভূমিক ছয়। এই নির-মের দেবার্ক্ক সম্ক্রিয়াণন পর্ক্ক থাকে গুটি বিষয় বিবেচনা করা ক্রিয়াণন পর্ক্ক থাক টি বিষয়

প্রথমতঃ কারণ বিশেষ ছারা শারীরিক প্রকৃতির অন্যথাভাব বৃদ্ধির জাকাও সভা-নেতে বৃদ্ধিতে পারে । বিশ্বী বৃদ্ধির কুড শার্মে অবিকাল লি ও মুকাল লি ক্রন

সম্ভানত যে ভদনুৱপ অধিকাক ও বিক্লাক रुप्त, रेरा भूटबरे केंद्रजर्ब कहा निवादर। কোন ব্যক্তির অধন পুত্র যথাবৎ খীর ও मुख्यना प्रदेशादिल: जनसमुत्र जन गुरु হইতে পভিত হইয়া তিনি শিরোদেশে আহত ও বিচলিত টিউ হন, ভদবস্থায় তাহার যে ছুই সম্ভান জল্মে ছুটিই জড় হয়: অবশেষে অন্ত-চিকিৎসা দারা প্রভী-কার হইলে ভাঁহার আর ছুই সম্ভান উৎপন্ন হয়, তা**হারদের কা**হারওচিত্ত-देवकला ७ तृक्षि-जः ग रत्न बारे । अहे-क्ष पंचा वाक्ति महारमत स देवान রোগ হয় ইহা সচরাচর প্রত্যক্ষ করা যাই-তেছে। করাশীশ দেশের সুপ্রসি**দ্ধ** ভয়া নক রাজবিমবের অত্যব্দ কাল পরে চুর্বল, কুন্ধ-স্বভাব ও অব্যবস্থিত-চিন্ত অনেকানেক ব্যক্তির জন্ম হয় : কোন সামান্য ক্রোধ ও উৎসাহ জনক ব্যাপার উপস্থিত হইলেই তাহারা এককালে উন্মন্ত হইত।

দ্বিতীয়তং অভ্যাস বশতং মেব, অখ, কুকুরাদির ভোজন গমন মৃগরাদি বিবরে প্রকৃতি সিদ্ধা ব্যবহারের অন্যথা কইলে তাহারদের শাবকেরাও তত্তৎ বিবরে শ্বশ্ব পিতা মাতার অনুবর্তি কইরা চলে ৷ তদনুসারে ইহাও সঞ্জাবিত বোধ হয়, যে মনুযোরাও পিতা মাতার অভ্যাস-কৃত গুব প্রাপ্ত ক্রম।

ত্তীগতং প্রীলোকেরা যৎকালে সস্ত্রা থাকে, ভাষারদের তাৎকালিক মান্
সিক্ ভাষানুদারে সন্ধানের শুভাশুত প্রকৃতির উৎপতি হয়। রক্ততং যথন জরাষ্
শ্যায় থাকিরা জীবের অবরব সংস্থান
হইতে থাকে, মাভার ভাৎকালিক মান্
সোদিত কোন প্রগাট ভাষ হারা সন্ধানের
স্ভাবেরও অব্দাই কিঞ্ছিৎ ইডর বিশেষ
হইবার সন্ধাননা। কটলও ফেলীর এক
চর্মকার-পত্নী সসন্ধা থাকিরা আপান আ
লরে এক জনকে দেখিরা অভিদর চ্যকিত
ইয়াছিকেন; তিনি কহিতেন " ঐ কিতের
মুর্জি আমার এককার প্রগাচকার ক্ষর্মন
হবীর, যে সামি ভাষাকে বিস্কৃত ক্ষরা
অব্য-বর্ম্বা হইতে পারিকার আধ্যাত প্রের

সেই গর্ডে ভাঁছার যে সন্তান লামিল, গেও জড় হইল !

তভিন্ন ইহাও দৃষ্ট হইরাছে, যে গারিবার মধ্যে দৈবাৎ এক জ্ঞান মৃক ও বধির ইইলে তৎপরে জন্য জন্য যাহারা জন্মে, তাহারাও সেইকাপ বিকলেন্দ্রিয় হয়। কিছু কাল পূর্বে সবিশেষ জনুসন্ধান তারা বিদিত ইইরাছিল,যে তৎকালে আরল্ গুরীপে জানকানেক পরিবারেই ছই, তিন, বা চারি করিয়া মূক ও বধির ছিল। কোন কোন পরিবারে একপ বিকলেন্দ্রিয় পাঁচ, সাত, ও দশ জনও ছিল, এবং এক মুদ্ধান্যবায়ি দরিদ্র বাজির বংশে উপর্যাপরি মূক ও বধির দশ সন্তান জন্ম। তত্বাচীত ইংলও ও ক্ট্লেও প্রভৃতি অপরাপর বহুতর দেশে এইকপ বিষম যন্ত্রণা-জনক ভূরি ভূরি ঘটনা ঘটিয়া থাকে।

কট্ল ও দেশে অন্ধের বিবরেও এই প্রকার সমূহ ছল উপস্থিত হইরাছে । তথাকার কোন ব্যক্তির ছয় সন্তান করে। ক্র পুত্র, চারি কন্যা। পিতা নাতার নেত রোগ নাত্র ছিল না, এবং পুত্র ছইটিও চক্ষুনান হইরাছিল, কিন্তু কন্যা গুলি সমূদারই অন্ধ্র হয়। এক পরিবারস্থ চারি সন্তানের তিনটি এককপ চক্ষুণ পীড়ায় পীড়ত হয়।

গ্রন্থ করে। এই প্রকার ভূরি ভূরি উদা-হরণ সংগ্রহ করিয়াছেন বটে, এবং যদিও তদনুসারে এই অনুভব করেন যে গুর্বিণী ন্ত্রী অন্ধ বধিরাদি দৃষ্টি করিলে তদ্যারা তাঁ-হার মানসিক ভাব বিশেষের প্রগায়তা হইয়া সেই বারের সন্তানও ভদনুরূপ বিক লেন্দ্রিয় হয়, কিন্তু বোধ হয় এবিষয়ের চর্ম সিদ্ধান্ত করিবার সময় আদ্যাপি উপস্থিত इ**त्र नाहे। करद खी लारकत व्यस्तः**मखा कालीन गरीत ७ वनः मश्कीर व्यवसानु-লারে লন্তানের গুড়াগুড় প্রকৃতি হওয়া অব-শ্যই সম্ভৱে ৷ অভএৰ এদেশীয় লোকেরা যে সগর্ভা স্ত্রীদিগের আতঙ্ক প্রাপ্তি ও অন্য কোন বিদু ঘটিবার আশকার তাহারদি-গকে কোন ছানে এবং বিলেষতঃ বন্ধুর ভূমিতে একাকী গমন করিতে দেন না, এ वाबकात कामाधिक ७ व्यानः ननीत वटि ।

চতর্থতঃ সম্ভান পিতা মাডার শারী রিক ও মানসিক নৈমিত্তিক গুণ সম্দায়ও প্রাপ্ত হ্ন । অপজ্যোৎপাদন কালে পিতা মাতার এবং বিশেষতঃ মাতার শরীর ও মনের যাদৃশ ভাব থাকে, সম্বানের স্বভা-বও কিয়দংশে ভদনুরূপ হয়। ইহা কা-হার অবিদিত আছে যে পাঁচ সহোদরের মধ্যে কেছ ন্মু. কেছ উগ্ন, কেছ লোভি. কেহ ভোগাসক্তা, কেহ বা পর্ম ধার্মিক শান্ত-স্বভাব হয় ৷ বিশেষ অনুসন্ধান ক-রিয়া দেখিলে প্রতীতি হয়. যে সন্তানোৎ-পত্তি কালে পিতা মাতার মানসিক অবস্থ: বিশেষই সন্তানদিগের এরপ প্রকৃতি ভেদের প্রধান কারণ। অলপ বয়ুসে সম্ভানোৎ-পত্তির আরম্ভ হইলে ফ্যেষ্ঠ পুত্রকে কনিষ্ঠ-দিগের অপেকায় প্রায়ই অপে বৃদ্ধি ও হীনমতি দেখা যায়। প্রত্যক ক্রেপিয়া-ছে, যে অনেকানেক ব্যক্তি মদিরিকা পানে আসক্ত থাকিয়া যতগুলি কন্যা পুত্ৰ উৎপন্ন क्रिशारहर, मक्रत्वहे भागामुक हहेगारह, এবং সেই চুক্জয় **চুক্ষা**রুত্তি পরিত্যাগ **রুরি**: লে পরে তাহারদের যত সন্তান জন্মিয়াতছ, मकरलाई अविवास निकास निकास हिला। কলিকাতার কোন কোন পরিবারস্থ সমস্ত ব্যক্তিই যে মদ্যপায়ি হয়, পৈতৃক দোৰ ও कुमृष्ठी ह छे छ इरे जाहात अवान कात्र । করাশীশ দেশস্থ ভুবন বিখ্যাত মহাবীর বোনাপাটির পিতা ঘোরতর যুক্ক বিঞ্চা-দির সময়ে ভার্য্যাপরিগ্রন্থ করেন। পরম সুন্দরী রমণীও বিলক্ষণ বীষ্যবভী ছিলেন, স্বামির সহিত ঐ সকল উৎপাত ও কলহ ব্যাপারে ব্যাপৃত কইয়াছিলেন,এবং তাঁহার অতুল কীর্তিমান্ পুত্র প্রসক্রে অত্যাপ কাল পুর্বেও অখারোহণ করিয়া স্থামি সমভিব্যাহারে যুদ্ধ থাতায় পিলাছি-লেন, অথবা ক্রভবেগে পলায়ন করিয়া-ভৎকাল-জাভ বোনাপাটির व्यक्तित्र मृत्रव सुम अलात नर्वाः मारे वि-শিষ্ট ৰূপে বিখ্যাত আছে ৷ সন্তান উৎপাদন সমরে ঘাঁহার যে বিষয়ে অনুসাম, উৎসাহ ও চর্চা থাকে, জারুরি महाद्वारा रव अविवास तथ व व्यवस्था वस्

ইহার ভূরি ভূরি প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া গি-রাছে।

এই সমস্ত বৃত্তান্ত দারা ইছা অতান্ত সন্তাবিত বোধ হইতেছে, যে পিতা মাতার প্রাকৃতিক ও উপান্ধিত গুণের উপর সন্তানের গুণাগুণ ও মঙ্গলামকল বিত্তর নির্ভর করে। ইহা কি পরম মক্ষকর মনোহর নিয়ম। ইহা কালা ভূমগুলের মুখ গৌভাগ্য সমুদ্ধতির কত আশা ও কত সন্তাবনা রহিন্ত রাছে। এই নিয়মের অনুবর্গ্ত হইরা শারীবিক ও মানসিক উৎকর্ঘ সাধনে চেতা করিলে মানববর্গের ক্রমাগতই শ্রীর্দ্ধি হইবেক। পুরুষে পুরুষে দ্রান, শক্তি ও মুখ স্কৃত্বেক্র আধিকাই হইতে থাকিবে।

কিন্তু অকর্তব্যের শতাংশের একাংশও কে অনুভান করে ? মনুঘ্যরা গো কুর্ম মেঘারি ভানতের ইংকর্ম সাধনার্থে যাদুশ বন্ধ ও কৌশল করিরা থাকেন, আপনার কুলোয়তি নিমিতে তদনুরূপ কিছুই চেন্টা করেন না! পালিত পশুর কুলোহকর্ম সাধন করিতে হুইলে পশুপালকের। কথমই তাছাকে চীন জাতি সমাগম করিতে দেয়না, এবং কুঘাণেরাও কথন সাধা পক্ষে বীয় ক্ষেত্রে অপকৃত্য বীজ বপন করে না! কিন্তু মনুষ্য সর্ব্ধ বিষয়ে এইরপ স্বার্ধপর ছইন্যাও কেবল অজ্ঞান দোযে স্বজ্ঞাতির উত্তম তা সম্পাদনে তৎপর নহেন।

উদাহ ক্রিয়া যে কি পর্যন্ত গুরুতর ব্যাপার তাহা কেই বিবেচনা করেন না। এই এক কার্য্যের উপর প্রায় ৫ । ৬ ভাবি জীবের মরণ, জীবন, রোগ, আরোগ্য, ছংখ, মুখ সম্যুক্ রূপে নির্ভর করে। ইহা অতি শুভ কর্ম্ম বটে, কিন্তু যাহাতে পরিণামে অশুভ জনক না হয়,—পুল্ল-পীডক, সন্তান-ঘাতক. ও ক্রথঘাতী না হইতে হয় এবিবেচনা করিয়া কয় ব্যক্তি পাণি গ্রহণ করে? সহস্র সহত্র ব্যক্তি অযোগ্য করা৷ পাত্রের সহিত প্র করার বিবাহ দিয়া এক কালে ববংশ ও দৌহিল বংশের মুখ সৌভাগ্যে কলা-কলি দিছেছেন, বা তাহার উৎসেদ-দশা সাধনের অযোঘ ক্রে সক্ষার করিকেছেন। এখনও সক্রেক্তন হর্মা উল্লিক্তি পর্যাহ

বিষয়ক ঞাশিক বিধান ফুক্সানুক্ত্ৰ্যান্ত কৰে।
শিক্ষা করিয়া সম্যক্রণে পালন কর। কর্জব্য ৷ বিশেষতঃ পশ্চালিখিত নির্মত্রয়
সবিশেষ মনোযোগ পূর্বার পালন করিতে
হইবে, এবং ইহা নিশ্চিত জানা উচিত,
যে যত দিন আমারদের তদ্বিরে তুটি থাকিবে, তাবং ঈশ্বর সন্নিধানে সাপরাধ
থাকিয়া অশেষ যন্ত্রণা ভোগ করিতে হইবে ৷

>—ভূষোভূগঃ উল্লেখ করা গিয়াছে,যে
অপ্পব্যসে ও বৃদ্ধকালে বিবাহ করা উচিত
নহে, এবং যক্ষা, শাস, বাত, ভূঠ, উআদ, ইত্যাদি উৎকট রোগ এয় ও বিকলাল ব্যক্তিদিগের কখনই পাণিএছণ করা
কর্তব্যনহে! আমারদের পূর্ব-পূর্ব প্রাচীন হিন্দ্রা এবিষয় অজ্ঞাত ছিলেন
না 1 ভাঁছারা আমারদের অপেকারত বিহিত
বিধানে উদ্বাহ সংস্কার সমাধান পূর্বাক
প্রমেশরের প্রসাদ-ভাজন ইইয়া স্ক্রাভির
বির্দ্ধি সম্পন্ন করিয়া সুথে কাল্যাপন
করিতেন। আমরা তদিপরীত ব্যবহার ক
রিয়া বিপরীত কল ভোগ করিতেছি।

২— স্বকুল-সমিহিত কোন বংশের কন্যা
এহন করাও কর্ত্বর নহে। যেরপ এক
ভূমিতে পুনংপুনং একরপ শস্য বপন করিলে
সূচারুরপ শন্যোৎপত্তি হয় না, সেইরপ
সম কুলোন্ডর ব্যক্তিদিগের পরস্পর পাণি
এহন হইলে সে কুলে অত্যন্ত দোবস্পালি।
তদীয় সন্তান সকল সর্বাংশে অশক্ত ও
নিবীর্যা হইতে থাকে, এবং ক্রমে করে
ভন্নংশের লোপাপত্তি হইবার উপক্রম
হয়। স্পেন রাজ্যের রাজবংশায় বছতর
ব্যক্তি ভাগিনেয়ী ও জাতুয়্ল্যাকে বিবাহ
করিয়া অতি হীন হইয়াহেন, এবং এই ওয়
তর দোবে তত্রতা ও পোর্তুগিশ ধনাচ্য
লোক্দিপের বংশে অনেকানেক ক্রত্তেরও
উৎপত্তি হইয়াহে। ইংরাজদিগেরও এই

শুকু কিটাছি রোগ্রের কর, আবর, অপন্যার, বির কুছু ক্টাছি রোগ্রের বাক্লিচিগের বংগে এবং আম্বর্জনি, রোগিনী, কলিজকেশা, অভিনোধিকা প্র-কৃত্তি লোমাখিত করাকে বিবাহ-করিবেন্দ না। মুনু ভূত্তীক্ ক্ষথায়-৭ ও ৮ রোক।

श्रकात निक्छे-मन्त्रकी त कमात शान-গ্রহণ করিবার প্রথা আছে ৷ কিন্তু আমার-দের পরম সৌভাগ্য, যে ধর্ম্মশান্ত্র-প্রয়ো-জক মহানুভৰ পণ্ডিতগণ আমারদের 🛰-পেক্ষায় এই অতুল মঙ্গলদায়ক ঐশিক निश्रम विभिक्षेक्टले व्यवश्र ছिलन, अवः তাঁহারদের সুখাবহ ব্যবস্থাক্রমে অদ্যাঞ্জি আমরা এই উদ্বাহ বিষয়ক নিরম প্রতি পালনে নিয়োজিত হইতেছি 🔭 তাঁহার-मंत्र निग्रमानुगादत अन्। शि वहे लाक-প্রবাদ প্রচলিত আছে, যে পিতা মাতার সগোত্রা ও সপিণ্ডা কন্যার পাণিগ্রহণ क्रिल कथनरे बल्मवृक्षित मञ्जादना पारक ना। किछ मनुषा कथनहे यथा विधारन শ্বকর্ত্তব্য সম্পন্ন করিয়া ঈশ্বর সন্নিধানে নি-রপরাধ থাকিতে পারেন না। ইহাঞা-ভ্যক্ষ দেখা গিয়াছে, যে এমত প্রবল শাসন সত্ত্বেও বাঙ্গলাদেশীয় কোন কোন ব্যক্তি এই কল্যাণকর নিয়ম উল্লক্তন করিয়া স্কু-লের লোপাপন্তি সম্ভাবনা উপস্থিত করি-मार्डन ।

কিন্তু আর আর সমুদায় নিয়ম পীলন ক্রিলেও যদি কোন দেশে বিজ্ঞাতীয় স্ত্রীর পাণিগ্রহণ করা নিভান্ত ব্যবহার-বিরুদ্ধ **হয়, তবে তত্ৰত্য লোকের বিশিঊৰ**প বংশোন্নতি হওয়া সম্ভাবিত নহে, কারণ তা-হারদের যে সমুদায় মূলীভূত প্রাকৃত দোষ থাকে, তাহা আর কোন ক্রমেই দুরী-ভূত হয় না। কোন জাতির কোন **অংশে বৈলক্ষণ্য বাকিলে তত্তৎ অংশে সুল-**ক্ণ-সম্পন্ন অন্য জাতির সহিত উদাহ क्टब नःशुक्त ना इहेटन जाहा निवाक्त ह-रेट भारत ना। धरेनभ रेवकाण विवा-হের প্রথা না থাকার আমারদের যে পর্যান্ত चनिके घरिकटइ, छाहा वनिवात नटह । यावणीय व्यक्तगारनंत वीक व्यामातरनंत्र मा-**নস ক্ষেত্রকৈ ছ্ব্ট করিয়া রাখিয়াছে,** এবং অন্যান্য নাৰা কারণ স্হ্কারে আমার-দিগকে ক্ৰমাগভই ৰীৰ্য্যস্থীৰ ও হত-চেতন করিতেছে, তাহা নির্দেবে নিক্ষাশিভ

হইবার আর ছিতীর পথ নাই। বর্ষান্তরীয় লোকের সহিত হিন্দুদিগের উদাহের কথা দুরে থাকুক, জারতবর্ষের অন্তঃপাতি বিভিন্ন দেশীয় লোকের পরস্পর বিবাহের প্রথা প্রচলিত থাকিলেও বিস্তর শ্রুপকার দর্মে।

এৰপ বৈদেশিক বিবাহ শাস্ত্ৰ-বিৰুদ্ধ ও नटर ; भूक्षकाटल इ हिन्छ् ता विना मः मटस মহোৎসাহ সহকারে বিদেশীয় স্ত্রীদিগকে পত্নী স্বৰূপে এছণ করিজেন ৷ ইছার আর অন্য প্রমাণ কি, সমস্ত পুরাণ ইতি-हामहे हेहात माकी चाटहा थातीन সম্পূদারি ব্যক্তিরা এপ্রসঙ্গ শ্রবণ করিয়া ক-**क्टित्म, यनिও हेहा भाजा-विक्रक मट**ह, বাবহার বিরুদ্ধ বটে ৷ এ কথাতে যন্ত্রণানল চতুৰ্গুন—চতুঃসহস্ৰগুণ 🕰 জ্বলিত হইয়া উঠে ৷ यतमा-स्टिकिय महाख महास्रादा शह-পীড়া পরিহারা**র্থে যত শুভ প্রস্তাব উত্থাপন** करतन, यरमरमञ्ज षश्चिकात्रि—याशमात অশুভকারি—আস্বহাতি নিদারুণ লো-কেরা কেবল ব্যবহার ব্যপদেশ করিয়া সমৃ-দার অগ্রাহ্ করে! স্বদেশের শুভা-নুরাগী ব্যক্তি স্বপরিবার স্বৰূপ দেশস্ব লো-কের হীনতা ও দারিদ্রা দশা দেখিয়াযে ৰূপ মৰ্ম-বেদনা প্ৰাপ্ত হন, তাহারা তাহা किष्ट्र अनुक्र करत ना। य मिन क्रय ভূমির দারুণ ছুরবস্থা মনে হয়, কত অসু-(यहे मिनि गालन इस्। धमन इः (यह দিন কত দীর্ঘই বোধ হয়! তাহার প্রতেন क मृहुई करु इश्मर याजनारे पिटल थाटक । नर्सरमनीय नयालू मिरावर थे यहाना आहर. किन्क वाक्रका प्रत्मन श्रिकेष वाक्रिन ছঃবের আর পরিসীমা নাই ১ তাঁহার অস্ত क्द्रर्ग क्रांक्रग द्राजद छेमस बादा महन যুগলে অবিরল অঞ্জল বিগলিত হইতে দেখিলেও অন্য লোকে ভ্রম্পে করে না তাহারদের পাযাণময় চিক্ত কিছুতেই আর্ত্রনাং তাহারা কুব্যবহার সমীপে पत्रायम् त्रभूनात्र वित्रक्रम निवादः ! ভाहात्रा ব্যবহার-বিরুদ্ধ বলিয়া ঈশ্বরের সাক্ষাৎ শাজাও ভুক্ করে ৷ হার! কুব্যবহার বুপ इट्डिंग लोर गृज्ल वस बाकिया जायदः

[ं] व मन् कृतीप्र व्यथाएत्वरं शक्षम स्माकः।

অচল-প্রায়—জীবন-শূন্য-প্রায় হইয়াছি!
আমারদের জড়ীভূত হইবার উপক্রন হইরাচে! মনুযোর আক্রা—মাচেতন পদার্থ
মক্ত দুর বিহ্নত ইইতে পারে, আমারদের
বিষয়ে জাহার পার কিছুই অবশিক নাই।
ফকপেলি-কিপিত কদাচারের অনুরোধে
পরম মজলালায় পরমেশরের নিয়ম লজ্জন
অপেজা হতজান হইবার স্পর্যতর চিত্র
আর কি আছে! হে স্বদেশস্থ ব্যক্তি সকল!
একবার স্থির চিত্তে বিবেচনা করিরা দেখ;
কুসংক্ষার পরিত্যাগ পুর্বক পক্ষপাত-শূন্য
হইয়া বিবেচনা করিলে কথনই এই সকল
পরম মঞ্চলকর নিয়ম যুক্তি বিরুদ্ধ বোধ
হইবেনা।

:ঋথেদ সংহিতা

अध्यम् ७ नवसानुवादक ठजूर्थर मृक्कर

প্রাক্তপ্রধিং অযুক্তোর্হতীক্তলং অধিনৌ দেবতা

@Q9

> ज्यः वार मधूमखमः मूजः मामेश्वाव्धा । जमिना । श्व-जर जित्तार्जेङ्कार धुखर त्रज्ञीनि मास्टर्ष ।

১ কে ' শুকাৰূপ। ' শুকাৰূপে শুকাৰ সঞ্জন্য বন্ধীয়িত।
কৌ ' 'আছিন। ' আদিনো ' বাং' মুবনোঃ ' 'আগম' পু-রোবলী ' সোমাম' ' মুকঃ ' আকিবুকঃ ঐটুলাঃ ' মধুম-হমঃ' আভিশাযেন মাধুম্যাবান ' ভিরোজ্ঞান' ভিরোজ্ ভূতে পূর্বাজনে দিনে আভিমুক্তম ' ভম। নাগম' শিক কম। ' কাম্বেষ' ইবিক্টিবতে সঞ্জননান ' বক্তানি' ক্মনীয়ানি ধনানি ' ধন্ধম' প্রমঞ্জক

ি হে বজাবর্জক অশ্বিনীকুমার হয় ! ভাষারদিগের পুরোবজী মধুররসো-পেত অভিযুত সোম আছে,পুর্বাহিন অভি-যুত নেই লোম তোমরা পান কর, এবং इशिक्षाण यसमामदक मदनातमः धन धानाम कत्र।

অযুক্তঃসতোর্হতীকৃন্দঃ

cer.

২ ত্রিবন্ধুরেণ ত্রিব্তা সুপেশ-শা রথেনায়তিমধিনা। কণাসেদ বাং এক কণ্ডাধ্বে তেষাং সু শ্ণুতং হবং।

২ চে 'অধিনা' অধিনো 'ত্রিবন্ধুরেন' উন্নতান-তরপতিবিধবজনকাষ্টুলেন 'ত্রিপুটা' অপ্রতিতখন ভিত্রা লোকএগে বর্ত্ত্যানেন 'সুপেশনং' শোভনগুর গ্রিকেন 'র্থেন' 'আলাডং' ইত আগক্ষতং। 'ক-গুলাং' কথুপুলাং বাং' বুংগোং 'অধ্যানে যাগে 'বুলা জোত্রসংখ নতং 'কুখুডি' কুজডি 'তেনাং' কথুনাং। তরং' আগ্রানং 'সুগুড্ডং' সুক্ আনিরেশ শ্রহা

্ব হে অখিনী কুমারম্বন্ধ। তোমরা উচ্চাদি তিবিধ বন্ধন কার্ড বিশিক্ত, তিলোক গামী, বর্তমান শোভন মুবর্ণ বিশিক্ত রথ ঘারা যক্ত স্থানে আগমন কর, কণু পুত্র সকল যক্তে ভোমারদিগের স্তৃতি করেন, উক্ত তাবকারী কণু পুত্রদিগের আহ্বান উত্তন কপে শুবন কর।

অযুজোর্হতীছনঃ !

ত অধিনা মধুমন্তমং পাতং সোমমৃতাব্ধা। অধাদ্য দিসা বসু বিভূতা রথে দাখাংসম্পর্ক-ছতং।

ও হে যজ বর্জক অবিনীকুমার ছর। ভোষরা মধুর রসোপেত লোম রল পান কর, হে দর্শনীয় অন্থিনীকুমার ছয় ! তো-মরা আমারদিগের আবাহনামন্তর যজ্ঞদি-বদে সোম পান নিমিত স্থীয় রবে আমা-রদিগের অভিপ্রেত ধন ধারণ করিতেছ, তোমর। হবিংপ্রদ যজমানের নিকট আগ্রামন কর।

অযুক্তঃ সতোরহতীত্কঃ ৷

690

৪ ত্রিষধক্তে বহিষি বিশ্ববেদ দ।
নধা যজ্ঞৎ মিমিক্ষতং। কণ্যসাবাং সূতসোমাঅভিদ্যবোনুবাং হবস্তে অশ্বিন।।

১ ১০ 'বিপ্রবেদ্যন বিশ্ববেদ্যা নাগজো আবিলো নিজ্ঞান কথান্ত্রস্থাকপেন আজীনতান বিধু নামন্ আর্থান্ত নাইছি 'নিজে ডিআলা আদা নাধানা কালা সভান' 'গিলিকাত্র' নেন আছিছাল নে 'আজিনা' আ বিনো 'বাব' ফুক্লেবিব 'মুক্লোআই' আকিস্ক্লো-মৃত্য' অভিনয়ন আছিলভানিপ্যত কণুমত' কণু পুলা মুব্যে' উল্লেখিয়া আছিলভানিপ্যত কণুমত' কণু পুলা মুব্যে' উল্লেখিয়া আছিলভানিপ্যত কণুমত কণু

৭ হে সর্বজ্ঞ অধিনীকুমার ছয়! তোমর: তিন স্থানস্থিত দতে স্থিত কারিয়
মধুর রস ছারা থজ্ঞ সেচন কর, হে অধিনী
কুমার ছয়! তোমারদিগের জনা খাভিযুত সোমযুক্ত,দীপ্তি বিশিষ্ট,কণ্ পুক্র সকল
ভোমারদিগকে আহ্বান করেন!

6.52

৫ যাভিঃ কণুমভিক্টিভিঃ প্রা-বৃতং যুব্ধবিধনা। তাভিঃ স্বস্মা অবতং শুভস্পতী পাতং সোম-মৃতাব্ধা (১)৪(১)

৫ ং ং অখিনা ' অখিনে) ' যুবং' নুবাং নুডে। ' হাভি: ' 'অভিটিভি: ' অপেজিভাভি: নুজাভি: ' কণুং' নাচাহিং ' প্রাবতং' নুজিভবন্তে) হে 'স্তম্ভস্ননি'। শোভনস্য কর্মাণঃ পালকে) 'ভাভি: ' রক্ষাভি: 'অখ্যা' অঝান্ অনুভাতুন্ ' সু-অবতং' ব্যতং সুধু নুজভং তে ' প্রতার্ধা' প্রত্থা ' সোমং' 'পাডং' পিরতং। ১৪।১ ৫ চে শেশিনীকুমার ধর! তোমরা উভযে যে রক্ষণ ছারা মহুমি কণুকে রক্ষা করি-রাছ, চে শোভন কর্মের পালক অন্থিনী-কুমার ধর! সেই বক্ষণ ছারা আমারদি-গকেও সুন্দর ক্রে বক্ষাকর, চে যক্ত বর্জক অশিনীকুমার ঘণ। সোমরস পাম কর। ১।৪।১

633

৬ সুদার্শে দৃদ্যা বসু বিভৃত। রথে প্রকাবহতমধিনা। রফি সমজাদৃত্বা দিবস্পাধ্যমে ধতং পুরুস্পাহং।

৬ ে ' দুগু' দেশনীয়ে ' অধিন' অধিনা ' কুদ' ক' কে ভনদানবুকাব রাজেহপি বাবনপুকাব ' বংগ' বন্ধ কণ ' বিভূতা' বিভূতারৌ যুবা ' পুজ' আমে বন্ধ কণ ' বিভূতা' বিভূতারৌ যুবা ' পুজ' আমে বন্ধ প্রাপিরবহাই। ' পুজুল' আরিজান ' উ-১বা' আবে ' দিবসপরি ' বর্ষাণ প্রাক্ষেত্র' পুকুলান কা বিভ্নাক্ত পুরুষ্টিব ' র্ষাণ প্রাক্ষেত্র' আবাত্র প্রাপ্তিব পুরুষ্টিব ' র্ষাণ ' ধন্ম ' আব্দা আবাত্র বিশ্বাক্তি পুরুষ্টিব ' র্ষাণ ' ধন্ম ' আব্দা ' বিশ্বাক্তি বিশ্বাক্তি বিশ্বাক্তিয়া বিশ্বাক্তি বিশ্বাক্তিয়া বিশ্বাক্তিয

দ্ধে দশনীয় অশিনাকুনার এই এই তোমর। শোভনদানমুক্ত, জবন রাজ পু
ভ্রাথে রথে ধন ধারণ করিছেছ, ভোমর।
আমানালিগকে অল্লাভ করা ও জন সম
হের বাঞ্জনীয় ধন অভারিক্ষ কিলা স্থাতি হাপ্ন
কব।

৭ যমাসত্যা পরাবতি ষদা স্থে। ভাষিতুর্বনো। অতোরথেন সূবৃত্তা নআগতিং সাকং সূষ্ঠাসা র শিন্তিঃ।

ও চোনাসভাট নাসচভাট অসভাবভিতেই আছিলেই নং বাদ পুৰাং প্ৰক্ৰেডি দুৰ্চেন্থ ছেই বহুছে বিদ্যা অথবাটু অভিত্ৰতে "অধিকে সমীপে ছঃ। "আ তে আছাদূৰাথ স্থাপালা "ক্ৰিছা" "ইছিছেই লাকং সুটোটন্যকালে সুবুভা "শোক্ষবক্ৰমুক্তিন বৈগেন নং "অস্থানু প্ৰভি আগ্ৰহণ আগ্ৰহ্ম ন কে শতবাদী অম্মিনীকুমার স্বয় !

গদাপি ভোমবাদুরে ব. অধিক নিকটে বর্ত্তমান আছ, ভথাপে দুব বা নিকট হইতে
ক্রান্যোদুয় কালে শোভন জীবনোপায বিশিষ্টরথ ছারা আমারদিগের নিকটে আন্ধান কর !

8.58

प्रविश्वि विश्व मुख्यारश्वतः विष्यावर्षः मृद्धान्ति । इष् प्रकृष्ठा मृद्धान्ति मृत्वान्ये विश्वः भीन्वर नता ।

৮ हर खिन्नदो 'ख्या हिन्दा 'या ग्राह्म दिना 'मल्या ' खता: 'मतना' ज्याननुष्ट्यानि जीनि मदनानि 'हूर ' এব 'উপ 'উপ লক্ষ্য' আঠাঞা' আঠাঞে। অভিমুখ্যী 'গাণ 'तुरा 'वरम' প্রপাদ্য। হে 'नदा 'नदा 'नदा ' ন্বা 'तुरुष्ठ' 'সুষ্ঠ আঁকারিণে 'সুদানবে ' শোভন-দানহুকাৰ মঞ্চনানাল 'ইবং 'আলং 'পুঞ্জা' পুঞ্জী সংঘোষদায়ী। 'সুবাং 'বহিং' সর্ভং ' অন্সীনভং' প্রাকৃত্তং'

চ ং থামনীকুমার ছয়! যজেল পকার-ক অশ্ব সকল আমারদিগের অনুটের সর্বন ক্রম উপলক্ষা করির: অনুকূল তোমারদিগকে বহন করে, হে আর্থনীকুমার ছয়! উত্তম কর্মকারি শোভন দান বিশিউ যজমানকে অম মুক্ত কর, তোমরা দর্ভ প্রাপ্ত হও!

000

२ ८० ने नामगार्गिष्टः तर्थन मृश्ये प्रकाः यन मन्नेमृश्ये प्रकारिक यु तम् मन्नः साममा भीवस्य ।

৯ হে অখিনীকুমার ছয়! যে রথ ছার। হবিদ্যাতঃ যুজমানকে সর্বাদা ধন লাভ ক্রাও, তোমরা সূহা তেজ তুলা সেই প্র-সিদ্ধ বব ভার। মধুর সোম-পানার্থ আগমন কর।

699

১০ উক্থেভিরির্বাগর্বসে পুরু-বর্দু অবৈশ্চ নিষ্ক্র্যামহে। শশ্বৎ কণানাং সদসি প্রিয়ে হিকং সো-মং প্রপ্রবিদ্যা ।১।৪।২।

'পুরুবসু প্রস্তুত্ত প্রনা অনিনো অবদো অফ্ল ক্রুক্র ভিত্তির উত্তির শইস্কা অফ্রিক্র আফ্রিকর আফ্রিকর জিলাইকর জিলাইকর জিলাইকর জিলাইকর আফ্রিকর আফ্রিক

১০ উক্থ শত্র এবং কোত্র ছার: প্র-চুর বনশালি অধিনীকুমার দ্বরকে অংমণ রদিগের রক্ষার নিমিত্ত অত্যে আহ্বান করি, হে অধিনীকুমাব ছয়ণ তোমর। কণু পুকা দিগের মনোজ থজে লকানা লোমরস পান কর 1218121

বিজ্ঞাপন

যে সকল সভ্য মহাশয়ের। নির্মিত কপে পত্রিকাদি প্রাপ্ত না হর্টেন ভাঁচার। অনুগ্রহ পূর্বাক পত্র ছারা অবগত করি-বেন ৷

> **बिन्ट्शब्ह**नाथ ठाकूत । मन्त्रामक।

বিজ্ঞাপন

বাঁছারা তক্রবোধনী সভার সভা চট-বার মানস করেন, তাঁছারা পত্র জারা জানাইবেন!

জীন্পেক্সনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

তত্ত্ববোধিনী পত্তিকার দিতীয় কলেপর ততীয় ভাগের নির্ঘন্ট পত্ত

পুৰু	1974
৬৯ সংখ্যা	नियालक 😁 ১০১
রনে শীয় ভাষায় বিদ্যাভ্যাস বিষয় · · ›	বাহুবন্দুর পহিত মানব প্রকৃতির সমৃদ্ধ বিচার
শংগুদ সংহিতা ৪২২ ৪৪১ ৪ক্ ⋯ ৪	প্রাকৃতিক নিয়মের উল্লেখন জন্য মনুযোর
रतस्य मन्युनाग्र— मध्याष्टाती >	কত সুঃশা হয় ভাহার বিচার 🕠 👑 🛶
ক্ষনগর্থ ব্যক্ষনমাঞ্চের বক্তা ১১	श्रदश्चन मर्श्विष्ठा ৪৯৯ -৫০৮ থক ১০৬
মহাভারত—আদিপর্ক-ভিতীয়াধ্যায়-পর্কদংগ্রহ ১৫	মহাভারতীয় ফোকাঃ [শাঝিপরা] ১০৮
বাস্ব্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সমৃদ্ধ বিচার	৭৬ সংখ্যা
মনুমোর প্রকৃতি নিগয় ও বাছসন্তর সহিত	
হাহার সম্প্র নিপরণ · · · · ২০	পথিকের স্বশ্ব দর্শন ১০৯
	বাছবন্দ্র সহিত মানব প্রকৃতির সম্ম বিচার
५० भःशी	প্রাকৃতিক নিয়ম ল্ঞান করিলে মন্যোর
মেব্দসংছিতা ৪৪২ ৪৫৬ ৪৫ ু ২৫	কত দুংশ উৎপন্ন হয় তাহার বিচার ১১৪
গালবস্থার স্থিত মান্য প্রকৃতির সমৃদ্ধ বিচার	মহাভারত – আদিপর্ন – অ্টমাখ্যায়
গনুষ্যের মান্সিক প্রকৃতি 🕠 👵 👵 🛂	পৌলোমপরা সমাপ্ত ১২৮
মহাভারত - আদিশক-ভিতীয়াখ্যায়-প্রকাশগ্রহ ৩৪	অপুর্য পুরের অবৈভনিক পাঠশালার বিষয় ১০১
৭১ সংখ্যা	श्रदग्रकम•दिङा ००० ०० ०० ०० ० ०००
কং কলংহিতা ৪৫৭৪৭১ ৪ক্ ৪১	৭৭ সংখ্যা
প্রতীন হিন্দুদিবের সমুদু যাত্রা ৪৪	श्राद्यम् म ्डि डः १०५-१००० श्रकः । ३२१
रिकार मन्भूमाग्न- रज्ञ छोड़ार्वी ৪৮	देवकव मन्युभाग—देवडमा मन्युभाग 🕟 🔻 🤌 🦠
াদ্রপদ্র সহিত মান্ত প্রকৃতির সমুদ্ধ বিচার	মহাস্তাহত আদিপঞ্জ-ত্রেদশাধ্যায়
মনুদোর মানসিক প্রকৃতি 👑 🔩 👑 ৫৩	न्धासीकशक >७५
বোভারত –আদিপজ - তৃতীয়াধ্যায়—পৌছ্যপর্ক ৫৯	বাল্যক্র সাহত মান্য প্রস্তৃতির সম্বন্ধ বিচার
५२ সংখ л	প্রাকৃতিক নিয়ম লঞ্চন করিলে মনুষ্টের
	কভ দুংৰ হয় ভাঘাব বিচায় 👑 🕟 ১৩৯
১৭০০ শকের সামুৎস্তিক আয়ে ব্যয় পুরুকের	মহাস্থার তায়লোকাঃ [শান্তিপর্ক] ১৪৩
ভূমিকা ৬৫ খল্পেক সংহিতা ৪৭২—৪৮১ এক্ ৬৭	৭৮ সংখ্যা
েত্ত দেৱ সহিত মানব প্রকৃতির সমৃদ্ধ বিচার	পথিকের দ্বিতীয় রপ্ন দর্শন 🕟 \cdots 🗀 ১৪৫
মনুয়ের সুকোৎপদির বিষয় ৬৯	থংগুৰ সমহিত: ৫৩২—৫৪১ ৬ক্ ১৫১
মহাভারত—আদিপঞ্জ তৃতীয়াধ্যায়—পৌষ্যপক্ষ ৭৩ ভক্তবোধিনীসভাব নিয়ম	ভারতবর্ষের সহিত অন্যান্য দেশের পুরুকা-
ভক্তবেদিনীসভার নিয়ম ৭৬ মহাভারতীয় শ্লোকাঃ [শান্তিপকা] ৭৮	লীন বাণিষ্ক্য বিবরণ >৫৩
মহাভারতীয় কোঁকোঃ [শান্তিপকা] ··· ··· ৭৮ বুকাসংগীত ··· ·· ·· ৭৯	৭৯ সংখ্যা
	NEW TATE AND ALL DITE
৭৩ সংখ্যা	ওংগুল সংহিতঃ ৫৪২-৫৫৬ থকু- ··· ১৬৭ বৈক্ষক সম্পুলায় চৈতনঃ সম্পুলায়ের শাশা ১৭৮
থংগুৰুসংহিত। ৪৮২-৪৮৯-থক্৮১ বৰ্ষমান বাবহার ৮৩	रैनकान सम्पूर्णाय रैठकार सम्पूर्णायात सन्धिः २५० अद्राप्तरहार कोमन वर्गसः २५১
বর্তমান ব্যবহার ৮৩	বাছব তার সহিত মানব প্রকৃতির সমুদ্ধ বিচার
বাক্বজ্য সহিত মান্য প্রকৃতির সম্ভ বিচার	প্রাকৃতিক নিয়ন্ত লক্ষ্যন করিলে মনুয়ের
প্রাকৃতিক নিয়মানুযায়ী ব্যবহার প্রণালী 👑 ৮৫	কত দুঃশ হয় তাহার বিবরণ ১৭৬
মহাভারত-জাদিপর্ক-ভৃতীয়াধ্যায়-পৌচাপর্ক ৮৯	বিভারতীয়লোকাঃ [ভীফাপর্ক] ১৭৮
१८ मः थ ा	
য়ংগুদ সংহিত। ৪৯ • — ৪৯৮ প্রস্তৃ ১৩	৮० मश्चेत
त्तकार मण्युमाश्र∸-पाहावाद्य ৯€	মহাস্তারতজাদিপর্ব্ধসপদশ অধ্যায়
বাজবন্ধর দাহত মানব প্রকৃতির সমুদ্ধ বিচার	আন্তবিক্সন্তর্ম ১৭৯:
প্রাকৃতিক নিয়মানুযায়ী বাবহার প্রণালী ১৩	কলিকাড়া ব্রাহ্মনখাঞ্চের বক্তা ১৮৬
মহাভারত—আদিপর্ঝ-চতুর্বাধ্যায়—পৌলোমপর্ক ৯৭	ৰাফবন্ধু সহিত মানৱ প্ৰকৃতির সম্ভ বিচার
৭৫ সংখ্যা	প্রাকৃতিক নিয়ম লক্ষ্যন করিলে মনুষ্টোর
देवकव मृत्युवाय-मनकावि मृत्युवाय-अर्थाद	কত দুৰ্বৰ ছয় ভাষার বিষয়ণ ১৮৯
ACT STANT STANTS	श्रद्धात गर्भक्षा १८४ १७७ श्रुव ১৯৪

অকারানি বাজিনুর ভদ্ধবোধিনী পাজিকার দিতীয় কলেপর ভূকীয় ভাগের নির্ধান্ট পত্র

			r. Are instrumented		t and to the second		-	
		म्यस्य	ু পুঠ	1			गरभग	3/8
चनुक्रभुरत्वं चरित्र	নিক পাচলাকা	,	* * :	1 P	100	गांगाय-चाडी	कर्मक ৮०	À 91
বিষয়		4 b	. 55 5	To the same	at.	े (गृतिभक्त)	941	2.0
. গুলুক সংহিত।	372885 BIZE	45.0	. 8	المراجعة المراجعة	1 5 ° C	00-10 ₈ 0	44 -	; >8∖
	883 - 845 4	9.	20		. ···	! मीम्बलकी	43	. 596
	Be 4855 &	93	33	र्वकार वा	erie. 🦠	lo	B-5-	40
	892855 3	45	<u>.</u> 9	विक्रमत	PER WHITE	প্রকৃতির সমূ	₩	
	844 - 355 3	ે 4 છ	5 5		ি বিচার	٠٠٠ نوټ	··· 45	» • ,
	ש עבפיייי בפ	.98	20		A	· 4	4.	> 10
M. Call	833-4 · b id	44	۵۰5	3			at	6.0
· à ·	4-2-059 #	+ 5	255	1			112	\$2
	6 20 mm 4 5	94	>26	i i			no	
4h	802RHS B	45	26.3	, a			48	39
∰ a	482-435 A.	45	> 69	É			9œ	24.
· A ·	B & & + 20	٧.	228	. .			95 `	>>1
্কজিড়াত: ব্রাক্ষমা	टक्क् वक्षका	¥	36.5	, di		. the	. 99	>0:
कृष्णस्य । वत्रः ज्ञाकामध		৬১	\$2.				45	241
कका र शिमी शस्त्र		92	45	Ma : . 2	1 . Oak	*** 5 5 1 ***	b. 0	367
PLACES ENVEN		4.6	592	🖟 হৈছেৰ সম্পূ	PP-PP	ছারা	yz	\$e
अधः विशेष वर	THE STATE OF	95:	>82.4			ही स	- 45.	30
প্রয়োগরের কৌশন		. 93	293		্মীর লাই	. 50	98	279
शाक्षेत्र किमामिटकान		, 5	88			मन्त्रभाग	. 44	101
সম্মানপী ত	dust .	92	92		C	ু শালা-	. 9.5	541
পা ৰত বহুৰ্বস্থা স্থিত।	क्ष्माना स्टब्स्ट शर	έr .		· ১५५० म्युट्र	হর লামৎদা	ু বুক আহার বাচ		
कान व शिविका		13.	202	পুত্ত হের	संभिका		45	٠,
धवा शासक व्यक्ति			A .	মনে শীয় ভা		লাস বিষয়	%3	> '
	।कस∗श्चर्दी	5.5).).e					
,		•	38					
in Wa	।यात्राम्बः - अक्रीसान्द	連程。	45					
A STATE OF THE STA		য় : িশ্6ঃ	100	acer with	*******	ী প্ৰক্ৰিকা কৰি	rastout men	লগ্ৰহ
1. BC.	িধার পৌলোমগ		≥ 1					٠,
	niens dionis					वाधिश्री क्लार	* 2	
ada .	Name of	46	336	তে প্ৰতি মা	न श्रेके निर	e eğ i — Eşt	र सुम्हा कर्	PIWI-
I Section 1	গ্ৰাৰ ক্ৰীড়ীক প্ৰ		200	১২ টেড া স ণ	(स्रोधेक ० ७ ।	কলিগড়াক	8>0-1	
- 1:04.12					,			

ক্ষাজ্ঞান ক্ষাৰ্থী ক্ষাৰ্থী কৰিছে বিশ্ব প্ৰতিষ্ঠান কৰি প্ৰতিষ্ঠান কৰি বৰ্ণ বিদা মূল্যে প্ৰাপ্ত হয়েন ৷ বিশ্বস্থান ক্ষাৰ্থী ক্ষাৰ্থী কৰিছে বিশ্বস্থান কৰিছে বিশ